अछूती धरती

(VIRGIN SOIL)

लेखक :

तुर्गनेव



प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा

अनुवादक
रामगोपालसिंह चौहान एम ए

प्रथम संस्करण
१९५८

मुद्रक
आगरा फाइन आर्ट प्रेस,
आगरा

मूल्य
छः रुपया

अछूती धरती के विषय में

तुर्गनेव रूसी साहित्य के अमर नक्षत्र थे। उन्होंने अपने उपन्यासों में अपने वर्ग तथा समाज की धीरे-धीरे प्रस्फुटित होने वाली राजनैतिक चेतना तथा आकांक्षाओं को सजीव अभिव्यक्ति प्रदान की है। फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति ने राजनैतिक चेतना की जो लहर उठाई उसमें बड़े-बड़े शक्तिशाली राज्य क्रम कर धराशायी हो गए। रूस १९ वीं शताब्दी में राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ तथा शोषित राज्य था और इस पिछड़ेपन का कारण थी रूस की दुर्दांत जारशाही जिसके दमन की चक्की में रूसी जनता न जाने कब से पिसती चली आ रही थी। इसी जारशाही बर्बरता का अंत करने और एकतन्त्रवादी राज्यव्यवस्था से मुक्ति पाने के स्वप्न को साकार करने के उद्देश्य से निहिलिस्ट पार्टी का निर्माण कुछ प्रबुद्ध रूसी नवयुवकों की अन्तर्प्रेरणा तथा उनके सामूहिक प्रयत्नों से हुआ। अछूती धरती के अन्तिम शब्दों—

'बहुत देर तक पाकलिन बन्द दरवाज़े के आगे खड़ा रहा।

"गुमनाम रूस!" अंततः उसने कहा।'

में न केवल उपन्यास का वरन् १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के रूसी नवयुवकों के स्वप्नों तथा आकांक्षाओं का सारांश भी सन्निहित है। रूस का यह प्रबुद्ध युवकवर्ग उस शक्ति का परिचायक है जो कि राजनैतिक अन्याय एवं अत्याचार से परिपूर्ण रूस के 'बन्द दरवाज़े' के सम्मुख

खड़ा था और किसी भी क्षण उसे ध्वस्त कर देने को तत्पर था ताकि रूस में भी राजनैतिक स्वतन्त्रता का पुण्योदय हो सके । इन राजनैतिक रूप से जागरूक एवं सुशिक्षित रूसी नवयुवकों ने सन् १८७० के आस पास गुप्त संगठन किए तथा अज्ञातवास करना आरम्भ किया । 'अछूती धरती' में निहिलिस्ट आन्दोलन की ऐतिहासिक संगति का मार्मिक विश्लेषण तुर्गनेव ने प्रस्तुत किया है तथा जीवन के प्रति जागरूक कलाकार के अनुरूप ही ऐसे आन्दोलन के जन जागृति के संदर्भ में गुण-दोषों को स्पष्ट किया है । तुर्गनेव ने इस आत्मबलिदानी क्रान्तिकारी दल की अनिवार्य दुर्बलताओं तथा विषमताओं का अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण चित्रण किया है । इस प्रकार यह उपन्यास रूस की तत्कालीन राजनैतिक स्थिति का एक सजीव प्रतिनिधि उपन्यास है ।

मरियाना 'अछूती धरती' की प्राण है । वह रूसी धरती की प्रतीक है । नेज्दानोव उसका पहला प्रेमी है, जिसके साथ वह अपने प्यारे देश के लिए आत्मबलिदान के अनन्त मार्ग पर निकल पड़ती है । नेज्दानोव निहिलिस्ट आन्दोलन की दुर्बलताओं और देश की अपरिपक्व स्थिति में इस आन्दोलन की स्वाभाविक असफलता का प्रतीक है । उसका आत्महत्या कर लेना और मरियाना को सोलोमिन को सौंप जाना इस बात का द्योतक है कि रूस की अछूती धरती की प्रतीक मरियाना का हाथ नेज्दानोव जैसे निहिलिस्ट नहीं सम्हाल सकते उसका हाथ तो सोलोमिन जैसे दृढ़, धैर्यवान और सरल स्वभाव के जनता के बीच के आदमी ही सम्हाल सकते हैं । तुर्गनेव ने पाकलिन के द्वारा इस बात को स्पष्ट भी कर दिया है—'इसलिए प्यारी मशुरिना इस सबकी चिन्ता मत करो, लेकिन एक बात मैं तुम्हें बताता हूँ और वह यह कि हमारा सच्चा रास्ता सोलोमिन के साथ है सीधे सच्चे समझदार सोलोमिनों के साथ ।"

हमारे देश भारतवर्ष में भी इस प्रकार के नौजवानों द्वारा संचालित अनेक आन्दोलन अपनी अनिवार्य असफलताओं को प्राप्त होकर

हमें यह अनुभव हो गए हैं कि भारत की 'अछूती धरती' का चरण भी वीर, गम्भीर, सरल जनता के बीच के भारतीय सोलोमिन ही कर सकते हैं।

'अछूती धरती' के समस्त पात्र अपने प्रतीक रूप में तत्कालीन रूस के राजनैतिक जीवन के सच्चे प्रतिनिधि हैं। नेज्दानोव 'अछूती धरती' का एक महत्वपूर्ण पात्र है। वह कवि है तथा अर्धअभिजात है। उसकी बौद्धिक बेचैनी वास्तव में शिक्षित मध्यवर्ग की बेचैन अन्तरात्मा का प्रतिनिधित्व करती है जो कि सदैव ही अपने आपको जनता के प्रति उत्तरदायी समझते हैं किन्तु अपने वर्गगत संस्कारों एवं सीमाओं के कारण वे न तो जनता तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं और न उनके साथ घुल मिल ही सकते हैं। नेज्दानोव जनता तक पहुँचने की असम्भवता से भली भाँति परिचित है। जनता के प्रति सहानुभूति रखने के कारण एक ओर वह स्वयं अपने वर्ग से बहिष्कृत है और दूसरी ओर जनता तक उसकी पहुँच है नहीं। उसके जीवन की यह स्थिति उसके मन में एक भयंकर आत्मघाती द्वन्द्व को उत्पन्न कर देती है और वह अपने पर से विश्वास खो बैठता है। मरियाना जो उसके लिए रूसी जनता का पवित्र प्रतीक है का हाथ पकड़ने में अपने को सर्वथा असमर्थ पाता है और इसी द्वन्द्व में वह मरियाना का हाथ सोलोमिन के हाथ में देकर प्राण छोड़ देता है। नेज्दानोव का यह निराशावाद तत्कालीन निहिलिस्ट आन्दोलन की एक मनोवैज्ञानिक विशेषता है। नेज्दानोव का इस प्रकार अंत उपस्थित करके तुर्गनेव ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि राष्ट्र का भविष्य किन्हीं अन्य प्रकार के क्रान्तिकारियों के हाथ में ही है जो कि हमें मरियाना तथा सोलोमिन के चरित्रों के रूप में देखने को मिलते हैं जनता का भविष्य ऐसे लोगों के हाथ में है जो कि जनता में से ही आते हैं।

मरियाना का चरित्र 'अछूती धरती' की जीवनशक्ति है। इस निर्दि

एक

बात सन् १८६८ की है। वसन्त ऋतु में एक दिन दोपहर को एक बजे एक आदमी जिसकी आयु ३७ वर्ष की थी और जिसने बड़ी लापरवाही से मैले-कुचैले कपड़े पहन रखे थे पीटर्सबर्ग नगर में ग्राफोस्स स्ट्रीट पर स्थित एक पँचमंजिले मकान पर पिछवाड़े की सीढ़ियों से चढ़ रहा था। वह व्यक्ति अपने जूतों को जिनकी एड़ियाँ घिस गई थीं आखिर पैरों से घसीटते हुए, अपने भारी भरकम बेडौल शरीर को ज्यों त्यों धीरे-धीरे घसीटता हुआ, अंत में सीढ़ियों के ऊपर पहुँच ही गया। वह एक अधखुले दरवाजे के सामने रुका जो अपने कब्जों पर से अलग झूल रहा था और बिना घंटी बजाये एक भारी निःश्वास छोड़ते हुए वह एक छोटी अँधेरी पौरी में घुस गया।

'क्या नेस्थानोव घर पर हैं?' उसने भारी और सम आवाज में पुकारा।

'वह तो नहीं है—मैं हूँ, अन्दर आ जाओ,' बगल के कमरे से एक स्त्री की आवाज आई, उसकी आवाज भी भारी और रूखी थी।

अनुवादक की बात

'अछूती धरती' प्रसिद्ध रूसी लेखक इवान तुर्गनेव के रूसी उपन्यास Virgin Soil का हिन्दी अनुवाद है। इस उपन्यास का एक और अनुवाद भी प्रकाशित हुआ है। उस अनुवाद में न जाने क्यों मूल उपन्यास के कुछ स्थलों विशेषकर जर्मन और फ्रेंच भाषा में दिए मुहावरों तथा कुछ गीतों को छोड़ दिया गया है। मैंने इस बात का ध्यान रखा है कि मूल उपन्यास की आत्मा अपने रूप में ही हिन्दी में प्रस्तुत हो सके, कहाँ तक सफल हुआ हूँ यह तो आप जानें।

डा० रामविलास शर्मा ने मुझे जर्मन और फ्रेंच मुहावरों का अनुवाद करने में सहायता दी है मैं उनका आभारी हूँ। अनुवाद के बीच में श्री घनश्याम अस्थाना ने जहाँ-तहाँ अपने सुन्दर सुझावों से अनुवाद को और भी सुन्दर बनाने में सहयोग दिया। मैं उनका भी आभारी हूँ।

४०१२ मोतीलाल
नेहरू रोड
आगरा

रामगोपालसिंह चौहान

एक

बात सन् १८६८ की है। वसन्त ऋतु में एक दिन दोपहर को ११ बजे एक आदमी, जिसकी आयु २७ वर्ष की थी और जिसने बड़ी लापरवाही से मैले-कुचैले कपड़े पहन रखे थे पीटर्सबर्ग नगर में आफिसर्स स्ट्रीट पर स्थित एक पँचमंजिले मकान पर पिछवाड़े की सीढ़ियों से चढ़ रहा था। वह व्यक्ति अपने जूतों को जिनकी एड़ियाँ घिस गई थीं आखिर पैरों से घसीटते हुए अपने भारी भरकम बेडौल शरीर को ज्यों त्यों धीरे-धीरे घसीटता हुआ अंत में सीढ़ियों के ऊपर पहुँच ही गया। वह एक अधखुले दरवाजे के सामने रुका, जो अपने कब्जों पर से अलग झूल रहा था और बिना घंटी बजाये एक भारी निःश्वास छोड़ते हुए, वह एक छोटी अँधेरी पौरी में घुस गया।

'क्या मत्वानोव घर पर हैं?' उसने भारी और खरज आवाज में पुकारा।

'घर तो नहीं हैं—मैं हूँ अन्दर आ जाओ,' बगल के कमरे से एक स्त्री की आवाज आई, उसकी आवाज भी भारी और रूखी थी।

'मधुरिना ?' आगन्तुक ने जिज्ञासा की।

'हाँ, मैं ही हूँ। और तुम—ओस्त्रोवुमोव ?'

'पिमेन ओस्त्रोवुमोव' उसने उत्तर दिया, और बड़ी सावधानी से अपने रबड़ के ऊपरी जूते उतारते हुए और अपने जीर्ण लबादे को एक कील पर टाँगते हुए वह उस कमरे में घुस गया, जिसमें से स्त्री की आवाज आई थी।

वह कमरा नीचे पटाव वाला और बड़ा गन्दा था। उसकी दीवालें धुँधले हरे रंग से पुती हुई थीं। धूल से अटी हुई दो खिड़कियों से होकर धुँधला प्रकाश कमरे में आ रहा था। फरनीचर के नाम पर कमरे के कोने में केवल एक छोटा सा लोहे का पलंग बीच में एक मेज कुछ कुर्सियाँ और किताबों से ठसाठस भरी एक आलमारी थी। मेज के पास एक स्त्री बैठी सिगरेट पी रही थी जिसकी आयु लगभग ३० वर्ष की थी सिर घुटा हुआ था और वह एक काला ऊनी गाउन पहिने हुए थी। ओस्त्रोवुमोव को भीतर आया देखकर उसने बिना एक शब्द भी बोले अपना चौड़ा लाल हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। वह भी कुछ न बोला, बस उससे हाथ मिला लिया और कुर्सी पर बैठते हुए उसने अपनी बगल की जेब से एक अधपिया सिगार निकाला। मधुरिना ने उसे जला दिया, और वह सिगार पीने लगा। वह दोनों ही आपस में बिना बोले और यहाँ तक कि बिना एक दूसरे की ओर देखे, उस बंद हवा में जो पहले से ही तम्बाकू के धुएँ से भरी हुई थी, नीले धुएँ के लच्छे छोड़ते, बैठे रहे।

इन दोनों में कोई न कोई साम्य था जरूर यद्यपि आकृति और रूपरूप में तनिक भी समानता न थी। उनके फूहड़ मलिन चेहरों पर—जिनके होंठ, दाँत और नाक बड़े फूहड़ और कुरूप थे (ओस्त्रोवुमोव के चेहरे पर चेचक के दाग भी थे।)—ईमानदारी आत्मसंयम और उद्योग शीलता का भाव विद्यमान था।

'क्या नेज्दानोव से तुम्हारी भेंट हुई ?' आखिरकार ओस्त्रोवुमोव ने पूछा।

'हाँ वह अभी सीधा यहीं आयेगा। वह किताबें लेकर जरा लाइब्रेरी तक गया है।

ओस्त्रोवुमोव ने दूसरी ओर मुँह करके पूछा।

'क्या बात है, वह सदैव इधर उधर घूमता ही रहता है? कहीं पता निशान तक नहीं मिलता उसका!

मशुरिना ने दूसरी सिगरेट निकाली।

'वह कुछ बेचैन सा लगता है, उकता सा गया है। उसने अपनी सिगरेट को सावधानी से जलाते हुए कहा।

'उकता गया है!' ओस्त्रोवुमोव ने मुँह बिचकाते हुए दुहराया। हमेशा अपने में ही खोया रहता है! कोई सोचेगा हमारे पास उसके लिये कोई काम ही नहीं है। और हम यहाँ यह खैर मना रहे हैं कि किसी तरह हमारा सारा काम सके पंगे ढंग से पूरा हो काम और यह है, कि उकता रहा है।

'मास्को से कोई पत्र?' थोड़ी देर की चुप्पी के बाद मशुरिना ने पूछा।

'हाँ 'परसों।'

'तुमने पढ़ा?'

ओस्त्रोवुमोव ने स्वीकृति-सूचना में सिर्फ अपना सिर हिला दिया।

'तो क्या खबर है?

ओह—किसी को शीघ्र ही वहाँ जाना पड़ेगा।'

मशुरिना ने सिगरेट मुँह से निकाली।

'क्यों? मुझे तो बताया गया था कि वहाँ सब ठीक-ठाक है।

'हाँ, ठीक तो है। केवल एक आदमी से ऐसा लगता है कि उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसलिये 'हमें उसे कहीं और

भेजना होगा, या फिर उसे एक दम निकाल ही देना होगा। ओह! और
भी कई बातें हैं। उन्होंने तुम्हारे लिये भी लिखा है।'

'पत्र में?'

'हाँ।'

मधुरिना ने अपने भारी घने बालों को पीछे की ओर झटका।
लापरवाही से पीछे जूड़ा बना होने के कारण बालों की लटें उसके
माथे और भौंहों पर बिखर गई थीं।

'ठीक है,' उसने कहा, 'जब आदेश दिया ही जा चुका है, तो अब
उस पर बहस करने से फायदा!

'बिल्कुल बेकार। सिर्फ यह है कि बिना पैसा के आदेश का पालन
नहीं किया जा सकता और पैसा आये तो कहाँ से?'

मधुरिना सोचने लगी। नेज्दानाव को कोई जुगाड़ करनी होगी।
उसने दबे स्वर में जैसे अपने से ही कह रही हो कहा।

'यही तो बात है, जिसके लिए मैं आया हूँ,' ओस्त्रोदुमोव ने कहा।

'क्या तुम्हारे पास वह पत्र है?' मधुरिना ने अकस्मात पूछा।

'हाँ। क्या तुम पढ़ना चाहोगी?'

'हाँ मुझे दो'   अच्छा रहने दो। हम सब इकट्ठे ही पढ़ें

'बाद में।'

'मैंने ठीक-ठीक ही बताया है,' ओस्त्रोदुमोव ने बुदबुदाया 'तुम्हें
पर सन्देह नहीं करना चाहिए।

'अरे, मैं सन्देह नहीं करती।

फिर दोनों चुप्पी में खो गए और पहिले की ही तरह
निःशब्द होंठों से धूँए के खम्भे तैरते हुए से निकलते रहे और धीरे
बलखाते हुए उनके बिखरे बालों के ऊपर उठने लगे।

ड्योढ़ी में ऊँचे जूता की धमक सुनाई पड़ी।

। मधुरिना ने फुसफुसाया।

दरवाज़ा थोड़ा सा खुला और उसकी सँध में से कोई झाँका। लेकिन यह नेज्दानोव नहीं था।

झाँकने वाले के छोटे से गोल सिर पर सख्त काले बाल थे, उसका माथा चौड़ा था और उस पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। घनी भौंहों के नीचे उसकी छोटी-छोटी भूरी अत्यंत पैनी आँखें थीं बतख की चोंच की तरह ऊपर को उठी हुई उसकी नुकिली नाक थी और उसका मुख छोटा सा लाल और विदूषकों सा था। इस चहरे ने भीतर झाँककर चारों ओर दृष्टिपात किया, सिर हिलाया, अपने छोटे-छोटे सफेद दाँत निपोरते हुए मुस्कराया और कमरे के भीतर आ गया। उसका शरीर नाटा गुलथुल, छोटे-छोटे हाथ और कुछ-कुछ घुटने पर से ऐंठे हुए पंगु पैर थे। मर्यूरिना और ओस्त्रोदुमोव दोनों ने ही उसे एक साथ देखा। दोनों के चहरों पर ही उसके प्रति उपेक्षा और घृणा का भाव था, जैसे मानों दोनों ही अपने मन में कह रहे हों—'धर! यह तो, यह निकला!' किन्तु उन्होंने कहा कुछ भी नहीं, उनके शरीर का एक जोड़ तक न हिला। फिर भी इस प्रकार के स्वागत से आगन्तुक हतप्रभ तो हुआ ही नहीं बल्कि प्रसन्न रूप से उसे एक निश्चित संतोष का अनुभव हुआ।

'क्या बात है?' उसने धीमी आवाज में कहा 'जोड़ा ही दिखता नहीं? तीसरा कहाँ है?'

'क्या आपका मतलब नेज्दानोव से है, मिस्टर पाक्लिन?' ओस्त्रोदुमोव ने चेहरे को गंभीर रखते हुए कहा।

'जी हाँ, मिस्टर ओस्त्रोदुमोव मेरा मतलब उसी से है।'

'वह अभी आता ही होगा, मिस्टर पाक्लिन।'

'यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ मिस्टर ओस्त्रोदुमोव।'

वह नाटा पंगु व्यक्ति अब मर्यूरिना की ओर उन्मुख हुआ। वह भ्रकुटि चढ़ाये बैठी थी और जानबूझकर सिगरेट के कश पर कश खींचे जा रही थी।

अनुमान है कि एक अनुभवहीन नागरिक को विश्व के प्रकाश में पहली बार प्रवेश कराने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता होगा ?'

'नहीं जरा भी नहीं, जब तक वह तुमसे बड़ा न हो,' मधुरिमा ने उत्तर दिया और मुस्करा दी। उसने अभी हाल में ही दाईगीरी का डिप्लोमा प्राप्त किया था। एक डेढ़ साल पहले उसने अपने परिवार को छोड़ दिया था। उसका परिवार दक्षिणी रूस में रहता था और एक गरीब किन्तु सभ्य परिवार था। उसे छोड़कर वह पीटर्सबर्ग चली आई थी। जब वह घर से चली थी, तब उसकी जेब में केवल छः रुबल थे। पीटर्सबर्ग में आकर वह एक प्रसूतिगृह में भरती हो गई और अनवरत कठिन परिश्रम के बाद उसने अपना चिर प्रतीक्षित एवं आकांक्षित दाईगीरी का डिप्लोमा प्राप्त कर लिया। वह अविवाहित थी। उसका स्वभाव अत्यन्त ही सरल था और आचरण शीलवान। उसके बाहरी रंग-ढंग के वर्णन की याद करके कुछ शंकालु व्यक्ति कहेंगे कि इसमें तो कोई अद्भुत बात नहीं थी। लेकिन हमें यह कहने की अनुमति दीजिए कि उसमें कुछ अद्भुत और अनोखापन है। उसका उत्तर सुनकर पाविलन फिर हँसा।

'तुम बड़ी तेज हो।' उसने कहा। 'तुमने बड़ी चतुराई से मेरी बात को पकड़ा, मैं इसी के काबिल हूँ। मैं ऐसा ऐंकड़ा बना रहा! लेकिन हमारे मेजबान का क्या हुआ ?'

पाविलन ने जान बूझ कर विषय बदल दिया। वह अपने नाटे कद और कुरूप आकृति की हीन भावना से कभी मुक्त नहीं हो पाता था। उसे अपनी यह हीनता और भी खटकती थी क्योंकि महिलाओं का बड़ा प्रशंसक होने का उसका स्वभाव था। वह उन्हें आकर्षित करने के लिये क्या कुछ नहीं कर सकता था। अपनी कुरूप आकृति के प्रति चेतना का भाव उसके लिए अपने निम्न वंश या समाज में अपनी हीन स्थिति से भी अधिक पीड़ाजनक था। पाविलन का बाप एक साधारण सौदागर था, जो कभी किसी के साथ तो कभी किसी के साथ इस-उस प्रकार की

चार सौ बीसी और धोखाधड़ी करके कौंसिल की तथाकथित सदस्यता के पद तक ऊँचा उठ गया था। वह कानूनी मामलों में बिचौलिए का काम करने और सट्टेबाजी तथा मकानों व सम्पत्ति की दलाली के काम में बड़ा पटु और सिद्धहस्त था। उसने काफी धन कमाया था किन्तु अपने अन्तिम दिनों में शराब में उसने अपना सारा धन फूँक दिया और मरते समय उसने एक कौड़ी भी न छोड़ी। पाविलन का नाम सिमासैम्सोनिच रक्खा गया, अर्थात् व्यक्ति, सैम्सन का बेटा। इसे भी वह अपने ऊपर व्यंग और अपना उपहास समझता था। बालक पाविलन की शिक्षा एक व्यापारी स्कूल में हुई थी जहाँ उसने जर्मन भाषा का भली प्रकार से ज्ञान प्राप्त कर लिया था। कहना चाहिए कि अनेक कटु, अरुचिकर अनुभवों के बाद वह एक व्यापारी के यहाँ डेढ़ सौ पौंड वार्षिक वेतन पर नियुक्त हो गया। इस वेतन में वह अपनी एक बीमार चाची और अपनी एक कुबड़ी बहन का पालन पोषण भी करता था। हमारी कहानी के समय उसकी आयु केवल अट्ठाईस वर्ष की थी।

पाविलन का परिचय अनेक विद्यार्थियों और नौजवानों से था, जो उसकी औघड़ हाजिर जवाबी और उसी प्रकार की धृष्टतापूर्ण बातों तथा उसकी एकांगी किन्तु यथार्थ और विद्याभिमान से रहित सरल ज्ञान की बातों को पसंद करते थे। लेकिन यदाकदा ही वह उनके हाथों उपेक्षित होता था। एक दिन किसी कारण से एक राजनैतिक बैठक में उसे पहुँचने में देर हो गई। वहाँ पहुँचते ही उसने अपने देर से आने के लिए जल्दी-जल्दी बहाने बनाने शुरू कर दिये

'बेचारा पाविलन डर गया है!' एक कोने में से किसी ने अलापा और सब हँस पड़े। अन्त में पाविलन भी हँस दिया हालाँकि दिल ही दिल में वह कुढ़ रहा था। 'बात तो ठीक ही कही, बदमाश ने।' उसने अपने मन में सोचा। नेज्दानाव से उसका परिचय एक ग्रीक रेस्तराँ में हुआ था, जहाँ वह भोजन करने आया करता था और जहाँ वह प्रायः अपने स्वतन्त्र और निर्भीक विचारों को प्रगट किया करता था। वह

कहा करता था कि उसकी बुद्धि की प्रजातांत्रिक बनावट का मुख्
कारण यह घृणित ग्रीक पाक विधान है, जो उसके पेट को बिगाड़
देता है।

'अरे' सचमुच ही न जाने कहाँ रह गया हमारा दोस्त ?
पाविलन ने गुहराया। 'मैं कुछ दिनों से देख रहा हूँ कि वह कुछ
उखड़ा-उखड़ा सा रहता है। कहीं वह किसी के प्रेम-व्रेम के चक्कर
में तो नहीं पड़ गया है ? खुदा खैर करे !

मरारिना की भौंहों में बल पड़ गये।

'वह कुछ किताबें लेने के लिए लाइब्रेरी गया है। उसे प्रेम में पड़ने
का समय ही नहीं है और न कोई है ही ऐसा जिसके प्रेम में वह पड़े।'

'और तुम ?' पाविलन कहते-कहते रह गया। 'मैं उससे मिलना
चाहता था', उसने जोर से कहा 'मुझे उससे एक जरूरी विषय पर
बात करनी है।'

'कैसा विषय ?' ग्रोस्त्रोवुमोव ने पूछा। 'हमारा विषय ?'

'शायद तुम्हारा ही वह हमारा सबका विषय है।'

ग्रोस्त्रोवुमोव मनमनाया, मन में वह शंकाकुल तो था, किन्तु उसने
प्रगट रूप से मन में सोचा, कौन कह सकता है ? वह ऐसा फिसलू
तनिहा साँप है ?'

'लो, आखिर हजरत आ ही गये' एकायक मरारिना ने कहा।
उसकी छोटी मसृण्वर आँखों में, जो निरन्तर पोरी के दरवाजे पर
अटकी हुई थीं कुछ ऊष्ण स्नेहसिक्त स्निग्धता और चमक थी एक
प्रकार के सघन अन्तर्मुखी प्रकाश बिन्दु की चमक'

दरवाजा खुला और इस बार लगभग तेईस वर्षीय आयु के एक
नौजवान ने कमरे में प्रवेश किया। उसके सिर पर टोपी थी और बगल
में किताबों का बंडल दबा था—यह नेज्धानोव था।



दो

अपने कमरे में आगन्तुकों को बैठा देखकर उसने एक क्षण को दरवाजे पर ही ठिठककर सब पर दृष्टि डाली टोपी उतारकर एक ओर फेंकी किताबें फर्श पर ही पटक दीं और बिना कुछ कहे सुने सीधा पलंग पर जाकर बैठ गया। उसका सुन्दर गोरा चेहरा जो उसके गहरे लाल सुनहरे घुँघराले बालों से और भी गोरा लग रहा था उसके असंतोष और क्षोभ को स्पष्ट व्यक्त कर रहा था।

मशुरिना अपने होठों को अपने दाँतों से काटती हुई एक ओर थोड़ा सा घूम गई ओस्त्रोदुमोव ने झुँझलाते हुए टर्रा कर कहा 'आखिर आ ही गये!'

पाक्लिन ने ही सबसे पहले नेज्दानोव से बात प्रारंभ की।

'क्या चक्कर है, रूसी हैमलेट, अलेक्सी दिमित्रिच? क्या किसी ने तुम्हें छेड़ दिया है? या फिर यों ही खा-म-खाँ भन्नाये हुए हो?'

'बस बन्द करो अपनी यह बकवास रूसी मैफिस्टोफेलीस,' नेज्दानोव ने कुढ़ते हुए

उत्तर दिया। 'मैं तुम्हारे साथ नीरस सरसता में होड़ नहीं कर सकता।

पाशिसन हँस दिया।

'बात यानी नहीं कुछ। जनाव, जो नीरस है वह सरस कैसे हो सकता है और जो सरस है वह भला नीरस कैसे हो सकता है।

'हाँ, हाँ, हमें मालूम है, तुम बड़े हाजिर जवाब हो।'

'और तुम अपनी हंसी-खुशी भूले हुये हो', पाश्मिन ने दुःख भरी आवाज में कहा, 'क्या सचमुच कुछ हो गया है?'

'कोई ऐसी खास बात तो नहीं है, लेकिन हो यह गया है कि इस गन्दे शहर पीटसबर्ग में बिना ओछेपन, कमीनेपन, मूर्खता, भयंकर अन्याय और गन्दगी से मुठभेड़ हुए सड़कों पर कदम रखना भी असंभव है। यहाँ तो अब रहना ही दुस्वार हो गया है।

'अच्छा तो तभी जनाब ने विज्ञापन निकलवाया है कि शिक्षक के रूप में आप कहीं भी जाने को तैयार हैं।' ओस्त्रोवुमोव फिर टर्राया।

'सोचता तो कुछ ऐसा ही हूँ। मैं यहाँ से जाने के लिए जिन्दगी के सारे सुखों को छोड़ सकता हूँ। शर्त है, जाने का अवसर मिले और कोई भीख का धन्धा और गाँठ का पूरा मुझे काम दे दे।

'तुम पहिले अपना यहाँ का कर्तव्य तो पूरा करो' मधुरिना ने अर्थ भरे स्वर में कहा। पर देख वह अब भी दूसरी ओर ही रही थी।

'यह कर्तव्य भला क्या है?' नेज्यानोव ने तेजी से उसकी ओर मुड़ते हुए जिज्ञासा प्रगट की।

मधुरिना ने अपने दोनों होंठ भींच लिए। 'ओस्त्रोवुमोव से पूछो।

नेज्यानोव ओस्त्रोवुमोव की ओर उन्मुख हुआ। किन्तु ओस्त्रोवुमोव ने सिर्फ खकार कर अपना गला साफ किया और असंतुष्ट स्वर में कहा 'अभी ठहरो!'

'नहीं अब मजाक रहने दो', पाशिसन ने बीच में ही बात काट दी,

'कोई गड़बड़ जरूर हो गई है।' नेज्दानोव पलंग पर से उछल पड़ा जैसे कोई शक्ति उसे ऊपर की ओर उछाल रही हो।

'तुम और गड़बड़ क्या चाहते हो?' वह चीखा। एकाएक उसकी आवाज बुलन्द हो गई। 'आधा रूस भूख से मर रहा है, 'मास्को गजट' खुश है। पुराणपंथ की फिर तूती बोलेगी। छात्र हितकारी संस्थाओं पर रोक लगाई जा रही है। हर जगह सी० आई० डी० का जाल बिछा हुआ है। सजा दगा झूठ और गद्दारी का बोलबाला है। किसी तरफ आगे नहीं बढ़ सकते   क्या यह सब गड़बड़ तुम्हारे लिए काफी नहीं है—और क्या चाहते हो? क्या चाहते हो कुछ और गड़बड़ हो?   समझते हो कि मैं हँसी कर रहा हूँ ‒ ‒   बेसानोव गिरफ्तार हो गया है   उसके स्वर का आक्रोश कुछ कम हुआ उसने बात पूरी की 'यह खबर अभी अभी मुझे लाइब्रेरी में मिली है।

ओस्त्रोदुमोव और माशुरिना दोनों ही एकदम चौंक पड़े।

'प्रिय अलेक्सी दिमित्रिच' पाक्लिन ने कहना शुरू किया 'तुम उत्तेजित हो गए हो—भाई आश्चर्य की बात नहीं   लेकिन क्या तुम यह भूल गए हो कि यह देश और काल कैसा है, जिसमें हम लोग रह रहे हैं? हममें से हर दूसरे को अपने बचाव के लिए खुद ही तिनके तक की खोज करनी पड़ेगी। भावुक होने से क्या लाभ? हमें भयंकर से भयंकर स्थिति का भी सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिये मेरे दोस्त, न कि बच्चों की तरह आवेश में आ जाना चाहिए—

'अच्छा, अच्छा बस रहने भी दो।' नेज्दानोव ने क्षुब्ध होते हुए उसकी बात बीच में ही काट दी। उसकी मुखाकृति से प्रकट हो रहा था मानो उसे बड़ी पीड़ा हो रही हो। 'हम सब जानते हैं कि तुम बड़े ताकतवर आदमी हो तुम्हें किसी का भय नहीं—

'हाँ, मुझे किसी का डर नहीं।' पाक्लिन ने कहा।

'बेसानोव के साथ किसने गद्दारी की होगी?' नेज्दानोव कहता गया 'मेरी यह समझ में नहीं आता।'

नेज्यानोव एकदम खिड़की की ओर से मुड़ा।

'नहीं नहीं कोई जरूरत नहीं। मै प्रबन्ध कर दूँगा ..
अपने मरा में स पेशगी ले लूँगा। उन पर मेरा कुछ चाहिए भी, ..
वहाँ तक मुझे याद है। लेकिन मैं कहता हूँ ओस्त्रोदुमाव, पत्र ता
दिखाओ।

थाड़ी देर तक तो ओस्त्रादुमाव निश्चल बैठा रहा फिर उसने
चारा ओर देखा, उठा दाहिनी ओर झुका और अपनी पतलून मोड़से
हुए सावधानी से नीले कागज के मुड़े हुए एक बंडल को अपने ऊँचे
जूते बाल पैर में से उसने बाहर निकाला। बंडल बाहर निकालकर किसी
अज्ञात कारण से उसने उस पर हाथ मारा और तब नज्दानोव को
द दिया।

नेज्यानोव ने उस ल लिया खोला और ध्यान से पढ़ा और तब
मशुरिना को थमा दिया। वह पहिले अपनी कुर्सी पर से उठ कर
खड़ी हो गई तब उसने भी उसे पढ़ा और पढ़कर नेज्यानोव को वापस
लौटा दिया, यद्यपि पाक्लिन उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाए हुए था।
ज्यानोव ने अपने कंधे उचकाए और वह रहस्यपूर्ण पत्र पाक्लिन
की ओर बढ़ा दिया। पाक्लिन ने अपनी आंख उस पर दौड़ाई, और
अपने होठ बड़े महत्व के साथ भीच और पत्र पढ़ कर गम्भीर शान्ति के
साथ मेज पर रख दिया। तब ओस्त्रादुमाव ने उस उठा लिया एक
बड़ी दियासलाई जलाई, जिससे दियासलाई के मसाले की दुर्गन्ध फैल
गई और कागज को अपने सिर स ऊपर उठा कर, जैसे मानों वह उस
सभी उपस्थित सज्जनों को दिखाएगा, जला दिया, पूरा का पूरा अपनी
उंगलियों को भी नहीं छोड़ा और राख को अंगीठी में फक दिया। सब
मूक बने देखते रहे कोई हिला तक भी नहीं। सब की आँखें नीचे झुक
गइ। ओस्त्रोदुमोव क चेहरे पर सघन एकाग्रता और व्यवहारिकता थी
नेज्यानोव के चेहरे पर क्षोम और पाक्लिन के चेहरे पर सटपटाहट

थी और मधुरिमा ऐसे लग रही जैसे गिर्जे की प्रार्थना में हो, सम्भवत गम्भीर उलझन में थी।

इस तरह दो मिनट बीत गए। तब सभी पर थोड़ी-सी सकुचाहट व्याप्त हो गई। पाक्लिन ने ही सबसे पहिले इस चुप्पी को तोड़ने की जरूरत महसूस की।

'तो फिर', उसने कहना प्रारम्भ किया, 'पितृभूमि के लिए मेरा बलिदान स्वीकृत हुआ या नहीं? क्या मुझे सामूहिक उद्देश्य के लिए पचास रुबल नहीं तो कम-से-कम पच्चीस या तीस ही देने की आज्ञा है?'

नेज्दानोव एकदम गुस्से में उबल पड़ा। ऐसा लगता था कि उसका चिड़चिड़ापन बढ़ता ही जा रहा है। पत्र के सवाल तक से उसका गुस्सा शान्त नहीं हुआ था, वह सिर्फ उबल पड़ने का अवसर देख रहा था।

'मैंने तुमसे पहिले ही कह दिया कि इसकी कोई जरूरत नहीं, कोई जरूरत नहीं ... कोई जरूरत नहीं! मैं यह कभी नहीं होने दूंगा और न कभी इसे मानूंगा। मैं रुपया ले आऊंगा ... सीधे ही ले आऊंगा। मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं है।'

'बहुत अच्छा जनाब', पाक्लिन ने कहा। 'मैं देखता हूं कि तुम क्रान्तिवादी तो हो पर जनवादी नहीं।'

'सीधे-सीधे कहो न कि मैं अभिजात्यवर्गीय हूं।'

'खैर तुम अरिस्टोक्रैट हो, सचमुच ... कुछ हद तक।'

नेज्दानोव जबरदस्ती हँसा।

'तो तुम्हारा संकेत मेरे अवैध संतान होने की ओर है! तुम्हें तकलीफ करने की जरूरत नहीं होगी, मेरे मेहरबान दोस्त! तुम्हारी मदद के बिना ही मेरे लिए उसे भूलना संभव नहीं है।'

पाक्लिन ने निराशा से हाथ झटका। 'अल्योशा, तुम्हें क्या हो गया है आज! तुम मेरी बात का ऐसा मतलब कैसे निकाल सके! मैं आज

'जहन्नुम में जाओ !' पाविलन ने सोचा। 'मैं तो चला।'

वह आया तो था विदेश से 'ध्रुवतार' को प्राप्त करने के सम्बन्ध में, नेज्धानोव को अपने विचारे बताने के उद्देश्य से, ('यन्टी' का अस्तित्व पहिले ही समाप्त हो गया था), लेकिन बात-चीत ने ऐसा मोड़ ले लिया था कि उस प्रश्न को न उठाना ही अच्छा था। पाविलन अपनी टोपी उठाने जा ही रहा था, तभी अचानक, बिना किसी आवाज़ या खटखटाहट के पौरी में अत्यन्त ही मधुर कोमल पुरुष स्वर सुनाई पड़ा, जिससे प्रगट हो रहा था कि आगन्तुक किसी अच्छे वंश का एक सुशिक्षित और सभ्य व्यक्ति है।

'क्या मिस्टर नेज्धानोव घर पर हैं !

सभी आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे।

'मिस्टर नज्धानोव घर पर हैं क्या ?' उसने फिर पूछा।

'हाँ' अन्त में नेज्धानोव ने उत्तर दिया।

बड़ी सावधानी और धीरे से दरवाजा खुला और धीरे से अपने कड़े छोटे छटे बाला वाले सिर पर से हैट उतारते हुए एक चालीस वर्ष के, लम्बे सुगठित शरीर वाले और दबदबे के व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया। यद्यपि अप्रैल का अन्त निकट था, फिर भी वह एक अत्यन्त सुन्दर सूती कपड़े का कोट पहने था जिसका कालर बालदार था, उसने सभी को नेज्धानोव, पाविलन, मशुरिना को भी " और ओस्त्रोदुमोव को भी, अपनी सुन्दर आत्मसंयत आकृति और निर्द्वन्द्व सम्बोधन से स्तंभित कर दिया। उसके कमरे में प्रवेश करने पर सब आप से आप उठ कर खड़े हो गए।



तीन

सुंदर पोशाक पहिने आगन्तुक नेज्दानोव की ओर बढ़ा और विनम्रता से मुस्काते हुए बोला अगर आप को याद हो, मिस्टर नेज्दानोव मुझे परसों थियेटर में आपसे मिलने और आपसे कुछ बात-चीत करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। आगन्तुक रुका मानों किसी बात का इन्तजार कर रहा हो। नेज्दानोव ने थोड़ा सा सिर झुकाया और लजा सा गया। 'याद आया आपको। 'आपने अखबारों में जो विज्ञापन प्रकाशित करवाया है, मैं उसी सम्बन्ध में आज आप से मिलने आया हूँ। अगर उपस्थित महिला और सज्जनों को कोई आपत्ति न हो (आगन्तुक ने मधुरिना को झुक कर अभिवादन किया और पाकिलन तथा ओस्त्रोदुमोव की ओर उसने अपने भूरे स्वीडिश दस्ताने वाले हाथ को हिलाया) तो मैं आप से कुछ बातें करने का सौभाग्य चाहूँगा।'

'नहीं आपत्ति कैसी! नेज्दानोव ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा। मेरे मित्र क्षमा करेंगे आप तशरीफ नहीं रखेंगे।

'जहन्नुम में जाओ !' पाविसन ने सोचा। 'मैं तो चला।'

वह आया तो था विशेष से 'घ्रू वतार' को प्राप्त करने के सम्बन्ध में, नेज्वानोव को अपने विचारें बताने के उद्देश्य से, ('घन्टी' का अस्तित्व पहिले ही समाप्त हो गया था)', लेकिन बात-चीत ने ऐसा मोड़ ले लिया था कि उस प्रश्न को न उठाना ही अच्छा था। पाविसन अपनी टोपी उठाने जा ही रहा था, तभी अचानक, बिना किसी आवाज या खटखटाहट के पौरी में अत्यन्त ही मधुर कोमल पुरुष स्वर सुनाई पड़ा, जिससे प्रगट हो रहा था कि आगन्तुक किसी अच्छे वंश का एक सुशिक्षित और सभ्य व्यक्ति है।

'क्या मिस्टर नेज्वानोव घर पर हैं!

सभी आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे।

'मिस्टर नेज्वानोव घर पर हैं क्या?' उसने फिर पूछा।

'हाँ', अन्त में नेज्वानोव ने उत्तर दिया।

बड़ी सावधानी और धीरे से दरवाजा खुला और धीरे से अपने कटे छोटे छोटे बालों वाले सिर पर से हैट उतारते हुए एक चालीस वर्ष के, लम्बे सुगठित शरीर वाले और दबदबे के व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया। यद्यपि अप्रैल का अन्त निकट था फिर भी वह एक अत्यन्त सुन्दर सूती कपड़े का कोट पहने था जिसका कालर खालदार था, उसने सभी को नेज्वानोव पाविसन, मशुरिना को भी ...और ग्रोस्त्रादुमोव को भी, अपनी सुन्दर आत्मसंयत आकृति और निर्द्वन्द्व सम्बोधन से स्तंभित कर दिया। उसके कमरे में प्रवेश करने पर सब आप से आप उठ कर खड़े हो गए।



सुन्दर पोशाक पहिने आगन्तुक नेज्दानोव की ओर बढ़ा और विनम्रता से मुस्काते हुए बोला अगर आप को याद हो, मिस्टर नेज्दानोव मुझे परसों थियेटर में आपसे मिलने और आपसे कुछ बात-चीत करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। आगन्तुक रुका मानो किसी बात का इन्तजार कर रहा हो। नेज्दानोव ने थोड़ा सा सिर झुकाया और लजा सा गया। 'याद आया आपको। आपने अखबारों में जो विज्ञापन प्रकाशित करवाया है, मैं उसी सम्बन्ध में आज आप से मिलने आया हूँ। अगर उपस्थित महिला और सज्जनों को कोई आपत्ति न हो, (आगन्तुक ने मशूरिना को झुक कर अभिवादन किया और पाक्लिन तथा ओस्त्रोदुमोव की ओर उसने अपने भूरे स्वीडिश दस्ताने वाले हाथ को हिलाया) तो मैं आप से कुछ बातें करने का सौभाग्य चाहूँगा।

'नहीं आपत्ति कैसी। नेज्दानोव ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा। मेरे मित्र क्षमा करेंगे आप तकलीफ नहीं रखेंगे।

आगन्तुक सौजन्यता प्रगट करने के लिए भुका और उसने शिष्टता के साथ एक कुर्सी की पीठ पकड़ कर अपनी ओर खींचली, पर यह देख कर कि कमरे में सभी खड़े थे, वह बैठा नहीं। उसने केवल स्पष्ट किन्तु अर्ध मीमिलित नेत्रों से अपने चारों ओर देखा।

'अच्छा, नमस्कार अलेक्सी दिमित्रिच', अचानक मसूरिना ने कहा, 'मैं फिर बाद में आऊँगी।'

'और मैं मैं भी आऊँगा बाद में ही।' ओस्त्रोवुमोव ने भी कहा।

आगन्तुक के पास से गुजरते हुए, जैसे मानों जान बूझ कर उसकी उपेक्षा कर रही हो मसूरिना ने नेज्दानोव का हाथ अपने हाथ में लेकर विभोरता के साथ उससे मिलाया और बाहर चली गई। अपने जूतों से अनावश्यक आवाज करते हुए, और बार-बार अपनी नाक सुड़कते हुए, जैसे मानों कहता हो—'तुम्हारे बालदार सुन्दर कालर मेरे ठेंगे पर!' ओस्त्रोवुमोव भी उसके पीछे-पीछे बाहर चला गया।

आगन्तुक ने उन दोनों को सभ्य किन्तु कुतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा फिर पाक्लिन की ओर नजर फेरी मानो उससे भी यही आशा कर रहा हो कि वह भी उन दोनों का अनुकरण करेगा। लेकिन पाक्लिन, जिसके मुख पर आगन्तुक के आगमन के समय से ही एक अजीब बरबस मुस्कान व्याप्त थी, एक कोने की ओर खिसक गया। तब आगन्तुक कुर्सी पर बैठा। नेज्दानोव भी कुर्सी पर बैठ गया।

'मेरा नाम सिप्यागिन है—शायद आपने सुना हो' आगन्तुक ने गर्वीली विनम्रता के साथ बात आरम्भ की।

लेकिन पहिले हम थियेटर में उन दोनों की मुलाकात की घटना का वर्णन कर दें।

मास्को से मशहूर अभिनेता सादोवस्की के आगमन के उपलक्ष में ओस्त्रोवस्की के एक ड्रामे—'दूसरे आदमी की गाड़ी में मत बैठो' का प्रदर्शन हो रहा था। रुसाकोव का अभिनय, जैसा कि सर्वविदित है,

इस प्रसिद्ध अभिनेता का प्रिय अभिनय था। सबेरे जब नेख्लानोव बुकिंग आफिस गया था तो वहाँ लोगों की भीड़ लगी हुई थी। उसने नीचे दर्जे का टिकट लेने की सोची थी लेकिन वह जैसे ही खिड़की के पास गया, एक अफसर ने जो उसके पीछे खड़ा था, नेख्लानोव की बगल से हाथ बढ़ाकर एक तीन रूबल का नोट आगे बढ़ा दिया और चिल्लाकर क्लर्क से कहा 'इन्हें —(अर्थात् नेख्लानोव का)— निश्चय ही सस्ती की जरूरत होगी और मुझे नहीं है, इसलिए कृपया मुझे अगली सीट का एक टिकट दे दीजिए, जल्दी से मुझे बड़ा जल्दी है।'

माफ कीजिएगा' नेख्लानोव ने भी तीखेपन से तुरन्त कहा, 'मुझे भी अगली सीट का ही टिकट चाहिए' और उसने खिड़की में तीन रूबल, जो ही पैसे उसके पास थे डाल दिए। उसके पास कुल इतने ही पैसे बचे थे। क्लर्क ने टिकट दे दिया, और शाम के समय नेख्लानोव ऐलेक्जेन्ड्रिन्स्की थियेटर में अभिजात्यवर्गीय सीटों पर बैठा दिखाई पड़ा।

उसके कपड़े अस्त व्यस्त गन्दे और जर्जर थे। उसके जूतों में कीचड़ लगी थी और उसके हाथों में दस्ताने भी नहीं थे वह अपनी अशोभनीय हुलिया के कारण घुटन और परेशानी का अनुभव कर रहा था। उसकी दाहिनी ओर तमगों से सुसज्जित एक जनरल बैठा था, बाईं ओर शानदार पोशाक पहिने प्रीवी काउन्सिल का सदस्य सिप्यागिन बैठा था, जिसके आगमन ने दो दिन बाद गधुरिना और ब्रोस्मोदुमोव को इतना उद्विग्न बना दिया था। जब-तब जनरल नेख्लानोव पर उड़ती हुई नजर डाल लेता था, जैसे वह कोई अनुपयुक्त अनाधिकृत और उस जगह अनचाहा व्यक्ति हो, दूसरी ओर सिप्यागिन उस पर कुपित किन्तु कृपापूर्ण नहीं दृष्टि डाल रहा था। नेख्लानोव के चारों ओर बैठे व्यक्ति रौबदाब के लग रहे थे साधारण व्यक्ति नहीं, वरन् श्रेष्ठ व्यक्ति, और फिर सभी एक दूसरे से घनिष्ठ रूप में परिचित थे। वे आपस में छुट पुट बातें या सिर्फ सम्बोधन और स्वागत-सत्कार कह रहे थे—कुछ तो नेख्लानोव को बीच में धरा कर आपस में लम्बी चौड़ी बातें कर रहे थे,

मय कि वह अपनी आराम कुर्सी पर मूर्तिवत् मौन और सकपकाया सा बैठा था। जैसे कोई अछूत हो। उसके मन में तलखी झेंप और घृणा का भाव उत्पन्न हो रहा था। उसे ओस्त्रोवस्की के सुखान्त नाटक और मादोवस्की के अभिनय से कोई विशेष आनन्द नहीं हो रहा था। इन्टरवेल में एक बड़ी दिलचस्प घटना हुई—उसके बाईं ओर के पड़ौसी ने, पदक,सज्जित जनरल नहीं, बल्कि दूसरे ने, जो पद का कोई निशान नहीं लगाए था, उसे बड़ी सौजन्यता के साथ सम्बोधित किया। उसने ओस्त्रोवस्की के ड्रामे पर बात शुरू की और नेज्यानोव से, 'नवयुवक वर्ग के प्रतिनिधि होने के नाते' ड्रामे पर उसकी राय जाननी चाही। आश्चर्य चकित और लगभग भयभीत नेज्यानोव ने पहिले तो सीधे-सीधे हाँ हूँ में उत्तर दिया — निश्चय ही उसका दिल धड़क रहा था, लेकिन बाद में वह अपने पर ही नाराज हो उठा, आखिर मैं इस कदर उत्तेजित किस लिए हो रहा हूँ? क्या मैं भी और सबों की तरह ही आदमी नहीं हूँ? और फिर वह ड्रामे पर निद्वन्द्व रूप से अपनी राय प्रगट करने लगा बिना किसी संकोच के और अन्त में इतने जोर से बोला इतने जोश के साथ कि निश्चय ही उसने सितारे वाले जनरल पड़ौसी को नाराज कर दिया। नेज्यानोव ओस्त्रोवस्की का बड़ा प्रशंसक था किन्तु इस नाटक में लेखक की कला कुशलता का प्रशंसक होते हुए भी वह विहोरेव के विदूषक-चरित्र में सभ्यता के महत्व को जान बूझ कर कम करने की नीयत से वह सहमत नहीं था। उसका शिष्ट पड़ौसी बड़े ध्यान और सहानुभूति से उसकी बातें सुन रहा था। दूसरे इन्टरवेल में भी उसने नेज्यानोव से बातें आरम्भ कर दीं। इस बार ओस्त्रोवस्की के ड्रामे पर नहीं वरन् अनेकों आम विषयों पर जीवन, विज्ञान और राजनीति के विषयों पर भी। वह निश्चय ही उस वाकपटु और तेज नौजवान से प्रभावित हुआ था। नेज्यानोव ने भी संकोच करने के बजाय कहना चाहिए कि दिल के बन्द खोल दिए थे कि 'अच्छा फिर अगर तुम जानना ही चाहते हो तो लो फिर!' उसने अपने पड़ौसी जनरल के मन में साधारण असुविधा से भी बढ़कर निश्चित रूप से

क्रोध और सन्देह उत्पन्न कर दिया था। ड्रामा समाप्त होने पर सिप्यागिन ने नेज्दानोव से बड़ी शिष्टता विनम्रता और बड़े प्रेम से विदा ली पर उसका नाम जानने की कोशिश नहीं की और न अपना ही नाम उसे बताया। जब वह अपनी गाड़ी की प्रतीक्षा में सीढ़ियों पर खड़ा था तो अपने एक दूसरे मित्र राजकुमार ग० से जो जार का अंग रक्षक था, भेंट होगई और उससे बातें करने लगा।

'मैं अपने बौक्स में से आपको देख रहा था' अपनी सुगन्धित मूँछों पर ताव देते हुए राजकुमार ने मुस्कुराकर कहा। 'जानते हैं आप किस से बातें कर रहे थे?'

'नहीं तो, क्या आप जानते हैं?'

'वह युवक मूर्ख नहीं है न?'

'बल्कि उससे विपरीत। कौन है वह?'

तब राजकुमार ने उसके कान पर झुक कर फ्रेंच भाषा में फुस फुसाया 'मेरा भाई,—हाँ, वह मेरा भाई है, मेरे पिता का एक अवैध बेटा उसका नाम नेज्दानोव है। मैं किसी दिन आपको उसके बारे में बताऊँगा। मेरे पिता ने उसके होने की आशा नहीं की थी तभी उन्होंने उसका नाम नेज्दानोव रखा—यानी अनाशित। फिर भी उन्होंने उसका पालन पोषण किया। हमने भी उसके रास्ते आदि में बाधा नहीं डाली। वह दिमाग का तेज है। पिताजी की कृपा से उसने शिक्षा भी अच्छी प्राप्त कर ली है। लेकिन उसका दिमाग फिर गया है, एक प्रकार से वह जनतन्त्रवादी हो गया है। हम उसे अपने घर नहीं बुलाते। बिल्कुल असंभव। अच्छा अब नमस्कार! मेरी गाड़ी आ गई।' राजकुमार ने विदा ली। दूसरे दिन सिप्यागिन ने अखबार में नेज्दानोव का विज्ञापन पढ़ा और वह उससे मिलने चला आया।

'मेरा नाम सिप्यागिन है,' उसने बेंत की कुर्सी पर बैठते हुए नेज्दानोव को बताया और स्निग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। 'मैंने अखबार से जाना कि आप एक शिक्षक का काम चाहते हैं और मैं

उसी सम्बन्ध में एक प्रस्ताव लेकर आपके पास आया हूँ। मैं विवाहित हूँ मेरे एक लड़का है—नौ साल का कहना चाहिए जिसमें असीम योग्यता है। हम ग्रीष्म और शरद् ऋतु के अधिकांश दिन स० प्रान्त के गाँव में ही बिताते हैं—प्रान्तीय राजधानी स० से करीब चार मील दूर है वह गाँव। क्या आप छुट्टियों में वहाँ हमारे साथ चलने का कष्ट करेंगे—मेरे लड़के को रूसी भाषा और इतिहास पढ़ाने के लिए वही विषय जिनका उल्लेख आपने अपने विज्ञापन में किया था। मैं आशा करता हूँ कि आप मुझे, मेरे परिवार और उस जगह के वातावरण को पसन्द करेंगे। वहाँ एक बड़ा सुन्दर और सुहावना बाग है, झरने हैं, नदिया बहती है और मकान भी खुला हुआ और बड़ा है। क्या आप चलना स्वीकार करेंगे? अगर हाँ, तो मुझे सिर्फ आपकी शर्तें जानना है, हालाँकि मैं यह आशा नहीं करता' सिप्यागिन ने थोड़ा मुँह सिकोड़ते हुए कहा, 'कि उस सम्बन्ध में हमारे और आपके बीच किसी प्रकार की दिक्कत पड़ेगी।'

अब तक लगातार सिप्यागिन ही बोलता रहा और नेज्दानोव एकटक उसकी ओर देखता रहा उसके पीछे की ओर उँछगे हुए छोटे सिर और सँकरे चतुर माथे को कोमल रोमन नाक सुन्दर सुहावनी आँखें, सुगढ़ होठों को जिनसे मधुर प्रिय शब्द झरने की तरह निकलते और उसके लम्बे अंग्रेजी फैशन से कटे गलमुच्छों को वह एकटक देखता रहा और आश्चर्यचकित होता रहा। 'इसके क्या मानी है?' उसने सोचा। यह आदमी मुझ पर इस तरह कृपा करने को क्यों तुला हुआ है? यह एक कुलीन घराने का है—और मैं! हम दोनों में क्या मेल? और यह आया मेरे पास क्यों कर?'

वह अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि जब सिप्यागिन ने अपनी बात समाप्त कर दी और उसका उत्तर पाने के लिए चुप हो गया तब भी वह मूक ही बना रहा। सिप्यागिन ने उस कोने में एक छुपी नजर डाली, जिसमें पाकिलन चुपचाप बैठा था। उसकी आँखें भी वैसी

ही एकाग्रता के साथ निप्यागिन पर पड़ी थीं जिस एकाग्रता के साथ नेज्दानोव की नज़रें लगी थीं। क्या इस तीसरे आदमी की उपस्थिति की वजह से भी नेज्दानोव कुछ बोलने से नहीं सकुचा रहा है? सिप्यागिन ने अपनी भौंहों को ऊपर उठाया मानो परिस्थिति के अजीब पन का जायज़ा ले रहा हो जिसमें वह स्वयं अपने ही व्यवहार से पड़ गया था और अपने स्वर को थोड़ा ऊँचा करते हुए, उसने अपना प्रश्न दुहराया। नेज्दानोव ने कहना आरम्भ किया। 'जी हाँ' उसने जल्दी से कहा 'मुझे मंज़ूर है। मैं खुशी से ... हालांकि मैं मानता हूँ ... कि मुझे कुछ आश्चर्य सा अवश्य हो रहा है। ... मेरी कोई सिफ़ारिश तो है नहीं ... और उस दिन थियेटर में जो मैंने अपने विचार प्रगट किये थे वह भी कुछ ऐसे थे कि आपसे मुझे पसन्द न करने की ही सम्भावना अधिक थी।

'यहाँ तुम भूल कर रहे हो प्रिय अलेक्सी ... अलेक्सी दिमित्रिच। क्या ऐसी बात नहीं है?' सिप्यागिन ने मुस्कराते हुए कहा 'मैं मुझे कहना चाहिए, कि मैं अपने उदार प्रगतिशील विचारों के लिए प्रसिद्ध हूँ बल्कि इसके विपरीत तुम्हारे विचार युवकों की अपनी विशेषताओं के अनुसार के साथ—जागरूक मत हो—अभिव्यक्ति के लिए—तुम्हारे विचार मेरे अपने विचारों के विरुद्ध नहीं हैं और अब मुझे उस तरुणाई के उत्साह से प्रसन्नता है।

सिप्यागिन बिना किसी संकोच के बोलता गया। उसकी स्निग्ध बातचीत तेल पर पड़ने की बूँदें के समान थी।

मेरी पत्नी भी मेरे ही विचारों की है वह कहता गया, 'और उनके विचार तो सम्भवतः आपके विचारों के और भी निकट हैं, यह स्वाभाविक भी है वह मेरी अपेक्षा युवा है! हमारी मुलाकात के दूसरे दिन, जब मैंने आपका नाम अख़बारों में पढ़ा—आपने अपना नाम अपने पते के साथ प्रकाशित करवाया था—जो कहना चाहिए, आम रिवाज के विपरीत है, हालांकि मैंने आपका नाम वहीं थियेटर में ही जान लिया

था—तो भी 'उस पर मेरा ध्यान गया। इस अजीब संगति में मैंने देखा अन्धविश्वास के लिए क्षमा कीजिएगा 'कहना चाहिए, भाग्य का निर्देश ! आपने सिफारिशों की बात कही, लेकिन मुझे किसी सिफारिश की आवश्यकता नहीं है, आपका व्यक्तित्व मुझे आकर्षित करता है। मेरे लिए यही काफी है। मैं अपनी आँखों पर विश्वास करने का आदी हूँ। तो क्या—मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ? आप सहमत हैं?'

'हाँ 'निश्चय ही नेज्दानोव ने उत्तर दिया 'और मैं आपके विश्वास को निभाने का भरसक प्रयास करूँगा। सिर्फ एक बात कहने की आज्ञा दीजिए अब मैं आपके पुत्र को पढ़ाने के लिए तैयार हूँ लेकिन उसकी देख भाल करने के लिए नहीं। मैं उसके लिए उपयुक्त नहीं हूँ—और सच तो यह है कि मैं अपने आपको किसी बात से बाँधना नहीं चाहता मैं अपनी स्वतंत्रता नहीं खोना चाहता।

सिप्यागिन ने हवा में अपने हाथ हिलाए जैसे मानो मक्खी उड़ा रहा हो।

'घबड़ाओ मत। तुम उस मिट्टी के ही नहीं बने हो और फिर मैं भी नहीं चाहता कि कोई उसकी देख भाल करे—मैं तो एक शिक्षक की खोज में हूँ और मैंने उसे पा लिया है। अच्छा तो फिर शर्तें क्या होंगी? वैसे तो रुपये-पैसे की मिन भिन बेकार की सी बात है!

नेज्दानोव सकते की सी हालत में था—क्या उत्तर दे।

'कोई बात नहीं' सिप्यागिन ने अपने सारे शरीर को आगे झुकाते हुए और स्नेह और आत्मीयता से नेज्दानोव के घुटने छूते हुए कहा 'सभ्य मनुष्यों के बीच ऐसे प्रश्न थोड़े से शब्दों में ही तै हो जाते हैं। मैं तुम्हें मासिक सौ रूबल दूँगा आने जाने का खर्चा मेरा अपना है तुम्हें स्वीकार होगा।'

नेज्दानोव पुन: शर्मा गया।

'यह तो मैं जितने की माँग रखना चाहता था, उससे कहीं अधिक है मैं—

'ठीक है, ठीक है ' सिप्यागिन ने बीच में ही कहा 'तो फिर मैं समझता हूँ बात पक्की हुई और अब तुम भी मेरे परिवार के एक सदस्य हुए। वह अपनी कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ। एकाएक उसके चेहरे पर एक चमक और सन्तोषपूर्ण आभा आगई, जैसे उसे कोई सुन्दर उपहार प्राप्त हुआ हो। उसके समस्त हाव भाव में एक निश्चित अपनत्व टपकता था और विनोद प्रियता भी। 'हम लोग एक-दो दिन में ही यहाँ से चलेंगे', उसने कहा 'मैं गाँव में ही वसन्त का स्वागत करना पसन्द करता हूँ, यद्यपि अपने पद के स्वभाव से तो मैं बिल्कुल नीरस व्यक्ति हूँ और नगर के जीवन से ही बँध गया हूँ। अच्छा तो हम तुम्हारा पहिला महीना आज से ही समझे! मेरी पत्नी और मेरा बेटा पहिले से ही मास्को में हैं। वह लोग मुझ से पहिले ही चल चुके हैं। हमारी उनकी भेंट वहीं गाँव में ही होगी प्रकृति के खुले हुए सौन्दर्य के बीच। हम लोग साथ-साथ चलेंगे अविवाहितों की तरह ह ह ह !
सिप्यागिन ने अनुनासिक हँसी-हँसी और अब—

उसने अपने ओवर कोट की जेब से एक काली और चाँदी की सी सफेद डायरी निकाली और उसमें से एक कार्ड निकाला।

'यह मेरा यहाँ का पता है। आना उधर कल-सुबह। हाँ बारह बजे। हम लोग कुछ और बातें करेंगे। मैं शिक्षा पर कुछ अपने विचार बताऊँगा और तभी अपनी यात्रा का दिन भी निश्चित करेंगे।' सिप्यागिन ने नेज्दानोव का हाथ अपने हाथ में ले लिया। 'और हाँ! एक बात और', उसने जोड़ा उसकी आवाज धीमी होगई थी और सिर जरा तिरछा, अगर तुम्हें कुछ एडवान्स की जरूरत हो तो तो कृपया हिचकिचाना मत? एडवान्स में केवल एक महीना।

नेज्दानोव नहीं समझ पा रहा था—क्या जवाब दे, और उसी उलझन के साथ उसने सौजन्यता और अपनत्व से दीप्त उस चेहरे को

देखा, जो उसके लिए उसमा अपरिचित था जो उसके निकट इतना भुका हुआ था और उसकी भार इतना अनुग्रह पूर्वक मुस्करा रहा था।

'तुम्हें नही चाहिए ? हूँ ? सिप्यागिन फुसफुसाया ।

अगर आप मुझे आज्ञा दें, तो मैं कल ही आपको इस विषय में बताऊँगा,' नेज्यानोव ने रुकते-रुकते कहा।

'बहुत ठीक ! अच्छा तो जब तक हम फिर मिल ! कल तक के लिए ! विदा।

सिप्यागिन ने नेज्यानोव का हाथ छोड़ दिया और जाने ही वाला था

'मुझे पूछने की आज्ञा दीजिए' एका-एक नेज्यानाव ने कहा 'आपने अभी कहा था कि आपको मेरा नाम थियेटर म ही पता लग गया था ? आप को मेरा नाम किस ने बताया ?'

'किसने ? ओह, तुम्हारे एक दोस्त ने और जहाँ तक म समझता हूँ एक सम्बन्धी ने राजकुमार राजकुमार ग० ने।

'जार के अग रक्षक ?'

'हाँ।'

नेज्यानोव पहिले स भी अधिक लाल हो गया। उसने अपना मुँह खोला पर कहा कुछ नहीं, सिप्यागिन ने फिर उसका हाथ दबाया पर इस बार मौन रहते हुए ही और पहिले उससे और फिर पाक्लिन से झुककर विदा लेते हुए, उसने चलते चलते अपना हैट पहिना और चला गया। उसके चेहरे पर आत्म सन्तुष्टि की मुस्कान अब भी थिरक रही थी जिसमें उसक इस मुलाकात म अनुमर्या की अनुभूति पढ़ी जा सकती थी।

— o —

चार

अभी मुश्किल से सिप्यागिन ने मकान की देहलीज पार की होगी कि पाक्लिन अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा और नेज्दानोव की ओर लपकते हुए बधाई देता हुआ बोला।

'तुमने बड़ा ऊँचा हाथ मारा है!' उसने खीसें निपोरते हुए और पैरों से ताल देते हुए कहा, 'जानते हो वह कौन है? सिप्यागिन! हर कोई उसे जानता है, समाज का एक स्तम्भ एक प्रकार से भविष्य में होने वाला मन्त्री।'

'मैं उसके बारे में बिल्कुल नहीं जानता,' नेज्दानोव ने उदासीनता से बताया।

पाक्लिन ने निराशा से अपने हाथ फेंके।

'यही तो हमारा दुर्भाग्य है अलेक्सी दिमित्रिच कि हम किसी को नहीं जानते! हम लोगों को प्रभावित करना चाहते हैं, दुनियाँ को बदलना चाहते हैं, लेकिन हम उसी दुनियाँ से बाहर रहते हैं, हम सिर्फ अपने दो चार मित्रों के घेरे में ही कुएँ के मेढ़क की तरह सारी दुनियाँ समझते हैं और उसी में चक्कर काटते रहते हैं—'

है कि वह त्याग करना जानता है, अगर जरूरत पड़ जाय तो वह मृत्यु का भी सामना कर सकता है, जो हम तुम नहीं कर सकते।

पाव्लिस्न के चेहरे पर एक दयनीय विरूपता आगई और उसने अपने बेकाम पगु पैरों की ओर इशारा किया।

'क्या मैं लड़ाई के लिए उपयुक्त हूँ, मेरे मित्र अलैक्सी दिमित्रिच ? खुदा की पनाह! लेकिन कोई बात नहीं मैं फिर कहता हूँ सिप्यागिन से तुम्हारे इस सम्बन्ध पर मैं हार्दिक रूप से प्रसन्न हूँ, और अपने उद्देश्य के लिए मैं इससे बड़े-बड़े लाभ देखता हूँ। तुम्हारा सम्बन्ध उच्च वर्ग में स्थापित होगा। तुम उन सेरनिया को देखोगे स्पाती स्प्रिंग के बने मुलायम शरीर वाली उन औरतों को जैसा कि 'स्पेन की डाक' में कहा गया है, उनका अध्ययन करो मेरे प्यारे बच्चे उनका अध्ययन करो। अगर तुम इन्द्रिय सुखों में निरत रहने वाले होते तो मुझे निश्चय ही तुमसे डर होता ! लेकिन निश्चय ही इस काम को स्वीकार करने में वह तुम्हारा लक्ष्य नहीं है ?'

'मैं यह काम स्वीकार कर रहा हूँ' नेज्दानोव ने उसकी बात को पकड़कर कहा 'रोटी के लिए' और इसलिए भी कि मैं कुछ दिनों के लिए तुम सबसे अलग होना चाहता हूँ। उसने अपने मन में कहा।

'जरूर! जरूर! और इसीलिए तो मैं कहता हूँ, तुमसे उनका अध्ययन करो! कैसी सुगन्ध छोड़ गए हैं वे महाशय अपने पीछे ?' पाव्लिस्न ने हवा में सूँघा। इसी इत्र को तो श्रीमती मेयर ने स्वप्न देखा था।

'उसने राजकुमार ग० से मेरे विषय में पूछा था' नेज्दानोव ने खिड़की के पास होते हुए भर्राई आवाज में कहा 'सम्भवतः उसे मेरे बारे में पूरी बात पता लग गई है।'

'सम्भवतः नहीं बल्कि निश्चय ही! लेकिन उससे क्या ? मैं तुमसे शर्त लगा सकता हूँ कि उसी वजह से तो उसने तुम्हें शिक्षक रखने का विचार किया है। और तुम क्या चाहते हो ? तुम खुद खून से एक

अभिजातीय हो । और निश्चय ही इसका मतलब है कि तुम भी उनमें से ही एक हो। लेकिन मुझे यहाँ बहुत देर हो गई, इस समय तक मुझे आफिस में पहुँच जाना चाहिए था अपने पाठक के पास। अच्छा, फिलहाल के लिए नमस्कार मित्र।

पाविलन दरवाजे की ओर बढ़ा पर, बीच में ही रुक गया और पीछे घूमा।

'सुनो, अल्योशा' उसने आग्रहपूर्ण स्वर में कहा 'तुमने अभी मना कर दिया था और अब तुम्हें रुपया मिल भी जायगा मैं जानता हूँ लेकिन उद्देश्य के लिए, जो हम सब का है मुझे भी थोड़ा त्याग करने का अवसर दो भले ही वह कितना भी कम हो। और कोई तरीका नहीं है, जिससे मैं मदद कर सकूं तो कम से कम पैसे से ही करने दो? देखो यह मैं दस रुबल का नोट मेज पर रख रहा हूँ। स्वीकार है?

नेज्धानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया और न अपनी जगह से हिला ही।

मौन स्वीकृति का लक्षण है। धन्यवाद। पाविलन ने प्रसन्नता से कहा और चला गया।

नेज्धानोव अकेला रह गया वह अपनी खिड़की में से बाहर के अँधेरे तंग दालानों में जिसमें गर्मी के दिनों में भी सूरज की एक भी किरण नहीं गिरती थी घूरता रहा। उसका मुख भी मलिन हो रहा था।

जैसा कि अब हम सबको विदित ही है कि नेज्धानोव एक अमीर सैनिक जनरल राजकुमार ग० और उसकी बेटी को एक सुन्दर आयाम धाय का नेज्धानोव के जन्म के दिन ही मर गई थी का बेटा था। नेज्धानोव ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा स्कूल के बोर्डिंग में रहकर एक योग्य और बड़े स्कूल मास्टर से प्राप्त की थी और उसके बाद वह विश्वविद्यालय में दाखिल हो गया था। उसने कानून पढ़ना चाहा था लेकिन उसके जनरल पिता ने जिस निहिलिस्टों से घृणा थी, साफ

हिल-मिल जाते थे, और वह भी उनसे स्नेह करने लगता था। नेज्धानोव जिस घुटन का अनुभव कर रहा था, वह हर भावुक व्यक्ति के मन में हर स्थान परिवर्तन के समय उत्पन्न होती है। जो लोग निर्भीक और आशावादी होते हैं, उन्हें ऐसा अनुभव नहीं होता। वे तो जीवन में ऐसे परिवर्तनों का स्वागत करते हैं और आनन्दित होते हैं। नेज्धानोव अपने विचारों में इतना मग्न हो गया कि वह अनजाने रूप से उन्हें तरन्नुम में गुनगुनाने लगा।

'ओह, शैतान ?' वह जोर से चिल्लाया यह तो मैं निश्चय ही कविता के राजमार्ग पर बढ़ता जा रहा हूँ।

उसने अपने को झकझोरा और खिड़की पर से हट गया। मेज पर पड़े पाक्लिन के दस रूबल के नोट को देखते ही उसने उसे जेब में ठूस लिया और कमरे में इधर-उधर टहलने लगा।

'मुझे पेशगी लेना चाहिए उसने अपने से कहा अच्छा है कि वह महाशय अपने आप ही देने को तैयार है। सौ रूबल और अपने भाइयों से सौ रूबल पचास कर्ज में निकल जायेंगे पचास या सत्तर यात्रा के लिए और रहे बाकी सो ओस्त्रोदुमोव के लिए हो जायेंगे। और जो कुछ पाक्लिन देगा वह भी वह ले सकता है। और हमें मकु सोव से भी तो कुछ आना होगा।

जब वह अपने मन में यह सब जोड़-तोड़ मिला रहा था तब भी वही मधुरता उसके मन को अभिभूत कर रही थी। वह रुक गया और स्वप्न सा देखने लगा " 'और उसकी आँखें दूर पर स्थिर थीं। वह उसी स्थान पर जड़वत खड़ा था। थोड़ी देर उसी स्थिति में रहने के बाद उसने मेज की दराज खोली और उसमें से एक पांडुलिपि निकाली।

वह कुर्सी में धँस गया, उसकी आँखें अब भी कहीं दूर देख रही थीं। उसने कलम उठाया और गुनगुनाने लगा। कभी-कभी वह अपने बालों को पीछे झटकार देता। काफी काट-पीट के बाद वह लिखने लगा।

पीछे का दरवाजा आधा खुला और उसमें से मशुरिना का सिर झाँका। नेज्दानोव ने उसे नहीं देखा और अपने काम में व्यस्त रहा। मशुरिना गौर से देर तक उसे देखती रही और अपने सिर को दाँए-बाँए झटका देकर पीछे हट गई। लेकिन तभी नेज्दानोव ने अपना सिर उठाया और मशुरिना को देखकर घबराहट के साथ बोला 'ओह तुम !' उसने झट से कॉपी मेज की दराज में बन्द कर दी।

तब मशुरिना लम्बे कदमों से कमरे में घुसी।

'ओस्त्रोदुमोव ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' उसने शब्दों पर झटका देते हुए कहा, 'यह पता करने के लिए कि तुम पैसे का प्रबन्ध कब तक कर सकोगे। अगर आज ही कर सको, तो हम लोग आज शाम को ही रवाना हो जायें।'

'आज तो मैं नहीं कर सकता,' नेज्दानोव ने उत्तर दिया और त्योरियाँ चढ़ाते हुए बोला, 'कल आना।'

'कै बजे ?'

'दो बजे !'

'अच्छा।'

मशुरिना थोड़ी देर के लिए चुप हो गई। तब एकाएक उसने अपना हाथ नेज्दानोव की ओर बढ़ा दिया।

'शायद मैंने तुम्हारे काम में बाधा डाल दी—क्षमा करना, और फिर... मैं अभी जा रही हूँ। कौन जानता है हम फिर मिल भी सकेंगे ? मैं तुमसे विदा लेना चाहती थी।'

नेज्दानोव ने उसकी ठंडी लाल उँगलियों को दबाया।

'तुमने उन सज्जन को यहाँ देखा था न ?' उसने कहना प्रारम्भ किया, 'उनसे मेरे काम की बात पक्की हो गई है। मैं उनके साथ उनके लड़के के शिक्षक के रूप में स० प्रान्त के स० नगर के पास ही स्थित उनकी जागीर में जा रहा हूँ।'

हिल-मिल जाते थे और वह भी उनसे स्नेह करने लगता था। नेज्दानोव जिस घुटन का अनुभव कर रहा था, वह हर भावुक व्यक्ति के मन में हर स्थान परिवर्तन के समय उत्पन्न होती है। जो लोग निर्भीक और आशावादी होते हैं, उन्हें ऐसा अनुभव नहीं होता। वे तो जीवन में ऐसे परिवर्तनों का स्वागत करते हैं और आनन्दित होते हैं। नेज्दानोव अपने विचारों में इतना मग्न हो गया कि वह अनजाने रूप से उन्हें तरन्नुम में गुनगुनाने लगा।

ओह, शैतान ?' वह जोर से चिल्लाया यह तो मैं निश्चय ही कविता के राजमार्ग पर बढ़ता जा रहा हूँ।

उसने अपने को झकझोरा और खिड़की पर से हट गया। मेज पर पड़े पाक्लिन के दस रूबल के नोट को देखते ही उसने उसे जेब में ठूंस लिया और कमरे में इधर-उधर टहलने लगा।

'मुझे पेशगी लेना चाहिए उसने अपने से कहा 'अच्छा है कि यह महाशय अपने आप ही देने को तैयार हैं। सौ रूबल और अपने भाइयों से सौ रूबल पचास कर्ज में निकल जायेंगे पचास या सत्तर यात्रा के लिए और रहे बाकी सो ओस्त्रोदुमोव के लिए हो जायेंगे। और जो कुछ पाक्लिन देगा वह भी वह ले सकता है। और हमें अकु ओय स भी तो कुछ लाना होगा।

जब वह अपने मन में यह सब जोड़-तोड़ मिला रहा था तब भी वही मधुरता उसके मन को अभिभूत कर रही थी। वह रुक गया और स्वप्न सा देखने लगा " और उसकी आँखें दूर पर स्थिर थीं। वह उसी स्थान पर जड़वत खड़ा था। थोड़ी देर उसी स्थिति में रहने के बाद उसने मेज की दराज खोली और उसमें से एक पांडुलिपि निकाली।

वह कुर्सी में धँस गया उसकी आँखें अब भी कहीं दूर देख रही थीं। उसने कलम उठाया और गुनगुनाने लगा। कभी-कभी वह अपने बालों को पीछे झटककर देता। काफी काट-पीट के साथ वह लिखने लगा।

पोरी का दरवाजा थोड़ा खुला और उसमें से मधुरिना का सिर उभरा। नेज्दानोव ने उसे नहीं देखा और अपने काम में व्यस्त रहा। मधुरिना गौर से देर तक उसे देखती रही और अपने सिर को दाँए-बाँए झटका देकर पीछे हट गई। लेकिन तभी नेज्दानोव ने अपना सिर उठाया और मधुरिना को देखकर घबराहट के साथ बोला, 'ओह तुम !' उसने झट से कॉपी मेज की दराज में बन्द कर दी।

तब मधुरिना सधे कदमों से कमरे में घुसी।

'मौस्तावुमोव ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' उसने शब्दों पर झटका देते हुए कहा, 'यह पता करने के लिए कि तुम पैसे का प्रबन्ध कब तक कर सकोगे, अगर आज ही कर सको, तो हम लोग आज शाम को ही रवाना हो जायें।'

'आज तो मैं नहीं कर सकता' नेज्दानोव ने उत्तर दिया और त्योरियाँ चढ़ाते हुए बोला, 'कल आना।'

'कै बजे ?'

'दो बजे।'

'अच्छा।

मधुरिना थोड़ी देर के लिए चुप हो गई। तब एकाएक उसने अपना हाथ नेज्दानोव की ओर बढ़ा दिया।

'शायद मैंने तुम्हारे काम में बाधा डाल दी—क्षमा करना, और फिर मैं अभी जा रही हूँ। कौन जानता है हम फिर मिल भी सकेंगे ? मैं तुमसे विदा लेना चाहती थी।'

नेज्दानोव ने उसकी ठंडी लाल उँगलियों को दबाया।

'तुमने उन सज्जन को यहाँ देखा था न ?' उसने कहना आरम्भ किया, 'उनसे मेरे काम की बात पक्की हो गई है। मैं उनके साथ उनके लड़के के शिक्षक के रूप में स० प्रान्त में म० नगर के पास ही स्थित उनकी जागीर में जा रहा हूँ।

एक हर्षपूर्ण मुस्कान मर्युरिना के चेहरे पर दौड़ गई।

'स० के निकट—! तब फिर शायद हम लोग एक दूसरे से फिर मिल सकेंगे। हमें सम्भवतः वहीं भेजा जाय। मर्युरिना ने सांस छोड़ते हुए कहा। 'श्राह् श्रलेक्सी विमित्रिच !'

'क्या बात है ?' नेख्लानोव ने पूछा।

मर्युरिना एकटक उसे देखती रही।

कुछ नहीं है। श्रलविदा। कुछ नहीं।'

एक बार श्रौर उसने नेख्लानोव का हाथ दबाया श्रौर पीछे हट गई।

'सारे पीटर्सबर्ग में मेरा कोई इतना ध्यान नहीं रखता 'श्रजीब लड़की है! नेख्लानोव ने सोचा। 'लेकिन उसने बीच में श्राकर मुझे रोका क्यों ? यद्यपि यह श्रच्छा ही हुश्रा।

दूसरे दिन सवेरे नेख्लानोव सिप्यागिन के निवास स्थान पर गया। वहाँ वह उनकी शानदार श्रध्ययनशाला में गया जो एक उदार राजनीतिज्ञ श्रौर श्राधुनिक सज्जन के गौरव के श्रनुरूप तरह-तरह के शानदार फर्नीचर से सजी थी। वह एक बड़ी मेज के सामने बैठ गया जिस पर करीने से कागज रखे थे जो शायद कभी भी किसी के काम न श्राते हों श्रौर उनकी बगल में बड़े-बड़े हाथी दाँत के चाकू रखे थे जिनसे कभी कोई चीज नहीं काटी गई थी। एक घण्टे तक वह मकान के उदार विचारों वाले मालिक की बातें सुनता रहा श्रौर उसकी चतुर एवं सौजन्यतापूर्ण विनीत मधुर बातों की स्निग्ध बाढ़ में डूब [गया। श्रन्त में उसे सौ रूबल पेशगी मिल गए, श्रौर दस दिन बाद वही नेख्लानोव फर्स्टक्लास के रिजर्वडिब्बे में मखमली सोफे पर श्रधलेटा था श्रौर साथ में था वही उदार, चतुर राजनीतिज्ञ श्रौर श्राधुनिक-सज्जन। दोनों निकोलावस्की रेलवे से मास्को जा रहे थे।

पाँच

देहात में सिप्यागिन का पत्थर का बना हुआ एक बड़ा आलीशान मकान था जिसमें बड़े-बड़े खम्भे थे और उस मकान का सामने वाला हिस्सा ग्रीक शैली का बना था। यह मकान उसके पिता के द्वारा वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में बनवाया गया था। उसके पिता एक जागीरदार थे जो खेती-बाड़ी के प्रति अपने मोह और घूँसे के उन्मुक्त प्रयोग के लिए प्रसिद्ध थे। उस आलीशान मकान के ड्राइंगरूम में बैठी सिप्यागिन की पत्नी वालेन्तिना मिखाइलोवना उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। वह घन्टों से अपने पति के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे पति के आगमन का तार प्राप्त हो चुका था। ड्राइंगरूम की सजावट अत्यन्त आधुनिक ढंग से हो रही थी। उसमें की हर चीज सुहावनी और सुन्दर थी। तरह-तरह के फूलदार और हल्के गहरे रंगों के पर्दों के कपड़ों में सफेद रंगदार छींट के चीनी कपड़े, कांसे और शीशे की छोटी-बड़ी वस्तुएँ जो सामने की

मेजों और ताकों पर और इधर उधर फैली हुई थीं इन सब की सम्पूर्णता में एक हल्का सामञ्जस्य था और उन पर पड़ती खुली ऊँची खिड़की में से स्वच्छन्दरूप से मई के सूर्य की चमकदार किरणें उनसे इस रूप से घुल मिल गई थीं कि उन्हें और सुन्दर और सुभावना बना रही थीं। कमरे की हवा कुमुदिनी के पत्तों से बसी हुई थी (इन सुगन्धित श्वेत फूलों के गुच्छे यहाँ वहाँ रखे हुए थे)। खिड़की में होकर बाग से फूलों की सुगन्ध को लिए हुए हल्की हवा के झोंके जब-तब आकर कमरे की हवा को और भी थरथरा देते थे।

कैसा सुन्दर चित्र है! और गृहणी वालेन्तिना मिखालोवना ने तस्वीर को पूर्ण कर दिया था—उसे सजीवता और सार्थकता प्रदान कर दी थी। वह एक तीस वर्ष की लम्बे कद की स्त्री थी। उसके बाल गहरे भूरे रंग के थे। साँवले रंग का किन्तु स्फूर्ति पूर्ण एक से वर्णों का उसका मुख, अतीव सुन्दर पैनी मखमली रसीली आँखों वाली आकृति सिस्टिन मेडोना की याद दिलाती थी। उसके होंठ मोटे थे, कन्धे ऊँचे, और बाँहें लम्बी थीं। उसको शान और स्वच्छन्दता से ड्राइंगरूम घूमते अपने दुबले सिकुड़े हुए शरीर से फूलों पर झुककर मुसकराते हुए उन्हें सूंघते, चीनी फूलदानों को घुमाते और तब अपने चिकने चमकदार बालों को तेजी से ठीक करते और शीशे के सामने अपनी दिव्य आँखों को अर्धनिमीलित करते जो कोई भी देखता तो हम निश्चय ही कह सकते हैं कि वह निश्चय ही अपने मन में या स्पष्ट रूप से कहे बिना नहीं रह सकता कि उसने ऐसी जादुई सूरत कभी नहीं देखी!

एक नौ साल का सुन्दर घुँघराले बालों वाला बालक स्काच पोशाक पहिने नंगे पैर उद्विग्नता के साथ ड्राइंगरूम में दौड़ता हुआ आया और एकाएक वालेन्तिना मिखालोवना को देखकर ठिठक गया।

'क्या है, कोस्त्या?' उसने पूछा। उसकी आवाज उसकी आँखों जैसी ही कोमल और मधुर थी।

'मम्मी', लड़के ने पकड़ाते हुए हुए कहा, 'बुआ ने मुझे यहाँ भेजा है। उन्होंने कुछ फूल मंगाए हैं ... अपने कमरे के लिए ... उनके पास एक भी नहीं है।'

वासन्तिना मिखालोवना ने अपने बेटे की ठोडी पकड़ कर उसके सुगन्धित सिर को ऊपर उठाया।

'अपनी बुआ से जाकर कहो कि वह माली से फूलों के लिए कहला दें, ये फूल मेरे हैं ... मैं उन्हें किसी को छूने देना नहीं चाहती। उनसे कहना कि मैं अपनी सजावट को बिगाड़ना पसन्द नहीं करती। क्या मेरे शब्द दुहरा सकते हो ?'

'हाँ ... ,' लड़के ने कहा।

'अच्छा तो ... कहो।'

'मैं कह दूँगा ... मैं कह दूँगा ... तुमने नहीं लाने दिया।'

वासन्तिना मिखालोवना हँस पड़ी। उसकी हँसी भी बड़ी स्निग्ध और मधुर थी।

'तुम से कोई बात कहलाना भी बेकार है। कोई बात नहीं, तुम जो तुम्हारी समझ में आए जाकर कह देना।'

लड़के ने जल्दी से अपनी माँ का अँगूठियों से पूरी तरह भरा हुआ हाथ चूमा और बाहर भाग गया।

वासन्तिना मिखालोवना उसे देखती रही और एक गहरी सांस भरती हुई वह सोने के तारों से बने हुए एक पिंजड़े के पास चली गई जिसमें एक हरे रंग का तोता उचक रहा था और पाँव और पंखे मार रहा था। उसने उसे अपनी उँगली से छेड़ दिया, और एक नीची आराम कुर्सी पर बैठ कर उसने एक नक्काशीदार मेज पर से 'दो संसारों की आलोचना' नामक एक पत्रिका का अन्तिम अङ्क उठा लिया और उसके पन्ने पलटने लगी।

एक सम्मान पूर्ण मठार म सम्त हा उसने आँखें ऊपर उठाईं।

दरवाजे पर साधारण श्वेत वस्त्र की वरदी पहिने एक सुन्दर नौकर खड़ा था।

'क्या बात है श्रागाफोन ?' वासिलिसा मिखालोवना ने उसी कोमल मधुर स्वर में पूछा।

'सिम्योन पैत्रोविच कालामियेत्सेव पधारे हैं। क्या मैं उन्हें ऊपर भेज दूं ?'

'जरूर भेज दो ! और मरियाना विकेन्त्येवना से भी ड्राइंगरूम में आने को कहला दो।

वासिलिसा मिखालोवना ने पत्रिका मेज पर फेंक दी और आराम कुर्सी पर पीछे को पीठ लगाली। उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और विचारों में खोई सी दिखने लगी। यह मुद्रा उसे बहुत सूट करती थी।

उसी द्वार से एक बत्तीस वर्ष के नौजवान सिम्योन पैत्रोविच कालो मियेत्सेव ने मस्ती और लापरवाही के साथ कमरे में प्रवेश किया। दूर से ही वह विनम्रता प्रदर्शन में झुक गया। वह थोड़ा सा एक ओर झुका और इलास्टिक की तरह ऊपर उठ गया। उसने कुछ विनीत कुछ बनावटी ढंग से आदर पूर्वक वासिलिसा मिखालोवना का हाथ अपने हाथ में लेलिया और जोर से उसे चूमा। इस सबसे कोई भी देखने वाला यह अनुमान लगा सकता था कि आगन्तुक इस प्रदेश का रहने वाला नहीं है और कभी-कभी ही यहाँ आता है। अमीर भी है, लेकिन पीटर्स वर्ग में सुजन-समाज का सही रूप में उच्च फैशन का व्यक्ति है। उसने पोशाक भी सर्वोत्तम अंग्रेजी ढंग की पहन रखी थी। उसकी ट्वीड जाकेट की ऊपरी जेब में से उसके सफेद महीन रेशमी रूमाल का रंगीन बोर्डर तिकोनाकार बाहर को चमक रहा था, और चश्मे का एक शीशा काले फीते से बंधा एक ओर लटका हुआ था। हल्के रंग के उसके दस्ताने उसके हल्के भूरे रंग के चारखाने के पाजामे से मैच कर रहे थे। उसके बाल कटे हुए और दाढ़ी चिकनी बनी हुई थी। छोटी पास पास आँखें, भुकी पतली नाक और लाल होंठों वाला उसका नारी जैसा

मुख धनी उच्च वंश में सुख और आराम के जीवन की साक्षी दे रहा था। उसकी सारी सुशीलता बड़ी आसानी से प्रतिशोध की भावना में रूप में परिवर्तित हो जाती, कभी-कभी कठोरता में भी, बस सिम्योन पैत्रोविच को अपने अनुसार देशभक्ति के और धार्मिक सिद्धान्तों पर झगड़ने के लिए उभाड़ देने भर की देर होती—ओह! तब वह निर्मम हो जाता! उसकी सारी शिष्टता एकदम हवा हो जाती उसकी कोमल आँखें धृष्टतापूर्ण चमक से चमकने लगतीं, उसके सुन्दर मुख से गालियों की झड़ी लग जाती—और दयनीय रूप से विलाप करते हुए और कराहते हुए वह सरकार से दुहाई माँगने लगता।

सिम्योन पैत्रोविच के परिवार ने एक साधारण माली की हैसियत से उन्नति की थी। जिस प्रदेश से वह आया था, उसमें उसका परदादा कालोमेन्तसोव के नाम से प्रसिद्ध था लेकिन उसके दादा ने इस बदलकर अपना नाम कालोमेस्तोव कर लिया था और उसका पिता कालोमितसोव लिखता था और अन्त में सिम्योन पैत्रोविच ने उसे कालोमियेत्सव कर लिया था और अपने को पूरी गम्भीरता के साथ शुद्धतम रक्त का अभिजातीय समझता था और अपने को बौन गैलेन मियेर के नवाबों का वंशज बताता था जिनमें से एक तीस साला युद्ध में आस्ट्रीयन सेना का सेनापति था। सिम्योन पैत्रोविच एक दरबारी सदस्य था। सब उसे 'देश भक्त' कहते थे। उसने अपनी देश भक्ति के कारण कूटनीति-विभाग की नौकरी छोड़ दी थी। किन्तु वह जैसे उसके लिए बनी ही थी, क्योंकि वह अपनी शिक्षा, सांसारिक बहु ज्ञान, स्त्रियों के बीच अपनी लोकप्रियता और अपनी आकृति के कारण उसके लिए नितान्त उपयुक्त था सही मात्रा में सामन्ती'। कालोमियेत्साव के पास काफी सम्पत्ति थी, और बड़े ऊँचे ऊँचे सम्बन्ध थे उसके। वह विश्वास और लगन का आदमी समझा जाता था—जैसा कि पीटर्स वर्ग के अफसर वर्ग में प्रमुख समझे जाने वाले सम्मानित राजकुमार ब० ने उसके विषय में कहा था—'मेरी राय

में भाठी यौंठ कुमैश है। कालोमियेत्सेव स० प्रान्त में अपनी जागीर की देखभाल करने के लिए दो महीने की छुट्टी पर आया था। कहना चाहिए 'किसी को लूटने और किसी को चूसने के लिए।' और फिर इसके बिना काम भी तो नहीं चलता।

'मुझे आशा थी कि बोरिस आन्द्रिच से मेरी भेंट हो सकेगी' उसने शिष्टता के साथ कभी इस पैर पर तो कभी उस पैर पर झुलते हुए और एकाएक-एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के अनुकरण में कनखियों से देखते हुए उसने कहना आरम्भ किया।

वालेन्तिना मिखालोव्ना ने हलका सा मुंह बनाया।

'नहीं तो आप नहीं आते।'

कालोमियत्सेव को वालेन्तिना मिखालोव्ना का प्रश्न बड़ा अजीब सा लगा और वह एक दम सकपका सा गया।

'वालेन्तिना मिखालोव्ना' वह ज़ोर से बोला, 'क्या आप ऐसी बात सोच सकती हैं

'अरे छोड़िये भी। आप बैठिए भी तो। बोरिस आन्द्रिच आते ही होंगे। मैंने उनके लाने के लिए गाड़ी भेज दी है। थोड़ी देर बैठिए आपकी उनसे भेंट हो जायगी। इस समय क्या बजा है?

'ढाई' कालोमियेत्सेव ने अपनी वास्कट की जेब से एक सोने की बड़ी जेब घड़ी जिस पर मीने का काम हो रहा था निकाल कर देखते हुए उत्तर दिया। उसने घड़ी श्रीमती सिप्यागिन को दिखाई 'क्या आपने मेरी घड़ी देखी है? यह मिहाइल ने मुझे भेंट की थी। आप जानती हैं न उसे! वही सर्विया देश का राजकुमार—ओब्रेनोविच। देखिए, यह रही उसकी कलंगी। हम दोनों बड़े गहरे दोस्त हैं। हम दोनों साथ-साथ शिकार खेलने जाया करते थे। बड़ा ही शानदार और काम का आदमी है। फौलादी-हाथ का आदमी जैसा कि एक शासक को होना चाहिए! वह कोई बेहूदगी और बकवास बर्दाश्त नहीं कर सकता! कभी नहीं हीं-हीं।

कालोमियत्सेव एक आराम कुर्सी पर पैर पर पैर रखकर बैठ गया और बड़े इतमिनान के साथ धीरे-धीरे अपने बाँए हाथ का दस्ताना उतारने लगा।

'आह, अगर कहीं मिहाइल जैसा कोई आदमी यहाँ हमारे प्रान्त में होता।

'क्या ? क्या आप किसी बात से असन्तुष्ट हैं ?'

कालोमियेत्सव ने अपनी नाक सुकोड़ी।

हाँ हमेशा वही प्रान्तीय काउन्सिल। वही प्रांतीय काउन्सिल। क्या लाभ इस सब से। उस से तो शासन व्यवस्था और भी कमजोर होती है', और बेकार के आदर्शों की डींग मारी जाती है। (कालोमियत्सव ने दस्ताने में से निकले हुए अपने खाली बांये हाथ को हवा में झुलाया)

और असम्भव आशाएँ। (कालोमियेत्सेव ने जम्हाई ली) मैंने थोड़े दिन पहिले पीटर्सबर्ग में इस विषय में चर्चा की थी। अब हवा का रुख वह नहीं रहा। आपके पति भी जरा सोचिए तो। लेकिन वह तो जाने-माने उदार वादी हैं।'

मामती सिप्यागिन अपनी कुर्सी। पर सीधी बैठ गई।

क्या ? श्री मान कालोमियेत्सेव आप सरकार के विरोधी हैं ?

'मैं ? विरोध में ? कभी नहीं। किसी भी कीमत पर नहीं। मैं साफ बात कहता हूँ और कभी-कभी बस आलोचना कर देता हूँ, लेकिन बाद में मान भी लेता हूँ।

'और मैं ठीक इसका उलटा करती हूँ। मैं आलोचना नहीं करती, पर कभी मानती नहीं।

वाह,—क्या बात कही है, यदि आप आज्ञा दें तो मैं आपका यही वाक्य अपने एक मित्र लादिसा को बता दूँ जो एक सामाजिक उपन्यास लिख रहा है। उसने मुझे अपने कुछ अध्याय सुनाए थे। वह उपन्यास बड़ा अनूठा होगा। उसमें यह विराट रूसी संसार का चित्र मिलेगा।

'प्रकाशित कहाँ से होगा ?

'निश्चय ही 'रूसी सन्देश' में। यह अपना खास अखबार है। मैं देखता हूँ कि आप भी यही पढ़ रही थीं।

'हाँ, लेकिन इसका स्टैंडर्ड गिरता जा रहा है।

'शायद हो सकता है और रूसी-सन्देश, शायद, कुछ समय से—ठेठ भाषा में कहना चाहिए—पानी मिली शराब या पउआ, जैसा हो चला है।'

कालामियेत्सव जिस ख्याल पर हुआ पानी मिली शराब कहना उसे बड़ा व्यंग्यात्मक लगा और वह भी पउआ'।

'लेकिन है यह एक प्रतिष्ठित पत्रिका, यह कहता गया। और यही मुख्य बात है। मुझे मैं मानता हूँ रूसी साहित्य में मुझे बहुत कम दिलचस्पी है, और आजकल टटपूंजिए लेखक लिख रहे हैं। नतीजा क्या होता है कि उपन्यास की प्रधान नायिका रसोइयन होती है, खुद रसोइयन! हमने भी यात नहीं है। लेकिन सादिला का उपन्यास मैं जरूर पढ़ूँगा। यह विराट रूसी संसार का चित्र खींचेगा और लोगों की प्रवृत्ति, हाँ, प्रवृत्ति का भी खाका खींचेगा! इन शून्यवादी निहिलिस्टों की भी कलई खुल जायगी। मैं सादिला के विचारों से खूब परिचित हूँ।

बीती बात तो बहुत से कह सकते है, श्रीमती सिप्यागिन ने टिप्पणी की।

'अवामी की गलतियों पर पर्दा डाल दो' कालोमियेत्सेव और से बोला और उसने अपने दाहिने हाथ का भी दस्ताना उतार लिया।

वालेन्तिना मिखालोवना की आँखें फिर चंचल हो उठीं। वह अपनी सुन्दर आँखों का स्वच्छन्द प्रयोग करने की आदी थी।

'सिम्योन पैत्रोविच! क्या मैं यह पूछ सकती हूँ कि आप रूसी भाषा बोलने में फ्रेंच शब्दों का इतना अधिक प्रयोग क्यों करते हैं? मैं

समझती हूँ मुझे ऐसा कहने के लिए क्षमा कीजिएगा यह अब पुरानी फैशन होगई है।[1]

'क्यों ? क्या / हर एक को तो मातृभाषा का उतना अच्छा ज्ञान नहीं हो सकता, जितना आपको है। मैं रूसी भाषा को सरकारी कामों की भाषा के रूप में ही स्वीकार करता हूँ। मैं उसकी शुद्धता की भी कद्र करता हूँ। मैं करामज़िन का अभिनन्दन करता हूँ ? "लेकिन रूसी भाषा, मैं पूछता हूँ क्या सचमुच रोज़मर्रा की भाषा के रूप में रूसी भाषा का कोई अस्तित्व है भी ? क्या आप मेरे बहुत से कथनों का रूसी भाषा में अनुवाद कर सकती हैं ? इसमें मुझे शक है।

'क्यों नहीं कर सकती ?'

कालामियत्सव हँसा।

'हो सकता है वालेन्तिना मिखाइलोवना। लेकिन क्या आप ऐसा अनुभव नहीं करतीं कि इसमें कुछ पंडिताऊपन आ जाता है और भाषा की सारी प्रवाहशीलता और उसका सौन्दर्य मारा जाता है।

'आप मुझे सहमत नहीं कर पाएँगे। लेकिन यह मरियाना क्या करती रह गई ? उसने घंटी बजाई, एक छोकरा आया।

'मैंने मरियाना विकेन्त्येवना को यहाँ ड्राइंग रूम में बुलवाया था। क्या मेरा सन्देशा उस तक नहीं पहुँचाया गया ?

छोकरा उत्तर दे कि इसके पहिले ही दरवाजे पर उसके पीछे काला ब्लाउज पहिने एक युवती दिखाई पड़ी। उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे। वह सिप्यागिन की भाँजी मरियाना विकेन्त्येवना थी।

— ० —

---

[1] मूल उपन्यास में कालोमियेत्सव बात बात में फ्रेन्च बोलता है पर हिन्दी अनुवाद में उसे दिया सकना सम्भव नहीं था, अतः वालेन्तिना मिखाइलोवना के संवाद द्वारा ही उसकी यह चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करदी गई है।



'क्षमा कीजिएगा वालेन्तिना मिखाजोवना'
उसने श्रीमती सिप्यागिन की ओर बढ़ते हुए कहा, 'मैं जरा व्यस्त थी, देर होगई।'

तब उसने कालोमियेत्सेव को नमस्कार किया और थोड़ा एक तरफ हटकर, तोते के जो उसको देखते ही पंख फड़फड़ा कर उसकी ओर लपकने लगा था, निकट, एक गद्दीदार स्टूल पर बैठ गई।

इतनी दूर क्यों बैठ रही हो मरियाना? श्रीमती सिप्यागिन ने उसकी ओर देखते हुए कहा। क्या तुम उस अपने नन्हे दोस्त के पास ही रहना चाहती हो? सिम्योन पैत्रोविच देखो, कैसी अजीब बात है, इस तोते को मरियाना से प्रेम है।

'इसमें कोई, आश्चर्य की बात तो नहीं।

और मुझे वह फूटी आँख नहीं देख सकता।'

यह जरूर आश्चर्य की बात है! मेरा ख्याल है, आप उसे तंग करती होंगी!'

'कभी नहीं, बल्कि बात इसकी उलटी है। मैं उसे चीनी देती हूँ। लेकिन वह मेरे हाथ से कुछ नहीं लेगा। नहीं मात्र प्रेम और घृणा की है।

मरियाना ने अपनी नीचे झुकी आँखों से पलक उठाकर श्रीमती सिप्यागिन को देखा और श्रीमती सिप्यागिन ने उसकी ओर देखा।

यह दोना ही औरतें एक-दूसरे को पसन्द नहीं करती थीं। अपनी मामी वालेन्तिना मिखालोवना की तुलना में हम मरियाना को सरल और मासूम कह सकते हैं, पर सुन्दर नहीं। उसका चेहरा गोल नाक बड़ी बाज जैसी आँखें भूरी बड़ी और स्वच्छ पतली भौंहें पतला होठ भूरे छूटे हुए घने बाल। वह एकान्त प्रेमी थी मिलने जुलने से दूर। पर उसके समूचे व्यक्तित्व में कुछ शक्ति और निश्चिन्तता, कुछ उत्तेजकता और रागात्मक उग्रता थी। उसके हाथ-पैर ठिगने थे उसका सुगठित कोमल लचीला शरीर सोलहवीं सदी की फ्लारेन्स की बनी मूर्ति की याद दिला देता था। गति में वह गजगामिनी थी।

सिप्यागिन के परिवार में मरियाना की स्थिति जरा अजीब सी ही थी। उसका पिता अर्ध-पोलिश वंश का था। वह एक होशियार और उत्साही व्यक्ति था। उसने जनरल का पद प्राप्त कर लिया था, लेकिन सरकार के विरुद्ध एक भयंकर धारसोखीस के मामले में पकड़े जाने से बर्बाद हो गया था। उस पर केस चला सजा मिली और अपने पद से हटा कर उसे साइबेरिया भेज दिया गया। बाद में उसे माफी मिल गई थी और वापस बुला लिया गया था लेकिन फिर वह जीवन में कभी उन्नति नहीं कर सका और अत्यधिक गरीबी में ही उसकी मृत्यु होगई। उसकी पत्नी, सिप्यागिन की बहन और मरियाना की माँ (उसके और कोई बच्चा न था) इस सब भीषण आघातों को सहन न कर सकी और अपने पति की मृत्यु के थोड़े दिन बाद ही उसकी भी मृत्यु हो गई। सिप्यागिन ने अपनी भांजी को अपने घर में आश्रय दिया, लेकिन वह इस पराश्रित जीवन से परेशान थी। वह अपनी

न्य स्वभाव की सम्पूर्ण शक्ति से आजादी के लिए प्रयत्नशील थी उसकी मामी के बीच निरन्तर यद्यपि गुप्त झगड़ा चलता रहता । श्रीमती सिप्यागिन उसे शून्यवादी और नास्तिक समझती थी। मरियाना, श्रीमती सिप्यागिन से घृणा करती थी, उसे अपना शोषक समझती थी। अपने मामा से वह दूर ही दूर रहती थी, वैसे ही वैसे वह औरों से दूर रहती थी। वह सिर्फ उनसे दूर ही रहती थी, उनसे डरती नहीं थी। वह डरपोक स्वभाव की नहीं थी।

'घृणा' कालोमियेत्सव ने दुहराया, 'हाँ यह तो निश्चय ही आश्चर्य की बात है। मिसाल के लिए—हर कोई जानता है कि मैं कट्टर धार्मिक विचारों का व्यक्ति हूँ शब्द के सही अर्थों में कट्टरपन्थी लेकिन पादरी के घोड़ों के ग्रयाल जैसे लटकते बालों को मैं फूटी आँख नहीं देख सकता। उन्हें देखकर मुझे मचली सी आने लगती है।

और कालोमियेत्सेव ने अपने हाथों और मुख की चेष्टा से मचली की सिहरन को व्यक्त किया।

'लगता है, सारे बालों से ही आपको चिढ़ है, सिम्योन पैत्रोविच मरियाना ने कहा 'मुझे विश्वास है कि मेरे जैसे कटे बालों को भी आप नहीं देख सकते।

श्रीमती सिप्यागिन ने धीरे से अपनी बाहों को ऊपर उठाया और अपने सिर को भुका लिया आज-कल जिस स्वच्छन्दता से ये नौजवान लड़कियाँ बात चीत में हिस्सा लेती हैं, उस पर मानो आश्चर्य कर रही हो और कालोमियत्सेव विनीत भाव से मुस्करा रहा था।

'जी हाँ उसने उत्तर दिया मैं आपके जैसे प्यारे, घुँघराले बालों को देख कर दुखी हुए बिना नहीं रह सकता मरियाना विकेन्त्येवना जो कुसध्न निर्दय कैंची से कतरे जाते हैं, लेकिन मुझे घृणा नहीं होती और हर हालत में आपके बालों ने तो मुझे धर्मपरिवर्तन ही करा दिया होता।

कालोमियेत्सेव को अपने भावों को स्पष्ट करने के लिए रूसी शब्द ही नहीं मिल रहे थे और श्रीमती सिप्यागिन के टोक देने के बाद वह फ्रेन्च शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता था।

'ईश्वर का धन्यवाद है कि मरियाना अभी तक पाउडर नहीं लगाती' श्रीमती सिप्यागिन ने कहा, 'और इसने अभी तक कफ और कालर का भी नहीं त्यागा है हालांकि मेरे बुरा मानने पर भी वह प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन करती है, और स्त्रियों की समस्याओं में भी रुचि रखती है क्या है न यही बात मरियाना ?'

यह सब कुछ मरियाना का हृतप्रभ करने के उद्देश्य से कहा गया था लेकिन वह हृतप्रभ नहीं हुई।

हाँ मामी उसने उत्तर दिया, मैं उस विषय पर सब कुछ पढ़ती हूँ, और मैं उस समस्या को पूरी तरह समझने का प्रयास करती हूँ।'

यही तो है युवापन ! श्रीमती सिप्यागिन कालोमियत्सेव की ओर उन्मुख हुईं और बोलीं, 'हम तुम अब ऐसी बातों की परवाह नहीं करते—है न ?

कालोमियत्सेव के मुख पर सहानुभूतिपूर्ण मुस्कान आगई, वह श्रीमती सिप्यागिन के मजाक में साथ देने के लिए विवश था।

'मरियाना विकन्त्येवना' उसने कहना आरम्भ किया 'मैं मानता हूँ ... "जमानी का रूमानी जोश" ... का समय रहते

'लेकिन मैं तो अपनी ही निन्दा कर रही हूँ' श्रीमती सिप्यागिन ने बीच में ही बात काट कर कहना शुरू किया, 'मैं स्वयं इन समस्याओं में रुचि रखती हूँ मैं तो या कोई अभी ऐसी बूढ़ी नहीं हो गई।

और मैं ऐसे सभी प्रश्नों में दिलचस्पी लेता हूँ, कालोमियत्सेव ने तत्परता से कहा केवल मैं इन पर बातें करना वर्जित करूँगा।'

'आप इन पर बातें करना वर्जित करेंगे ? मरियाना ने पूछा।

हाँ ! मैं लोगों से कहूँगा मैं तुम्हारी रुचि में बाधा नहीं देता

म्र स्वभाव की सम्पूर्ण शक्ति से आज़ादी के लिए प्रयत्नशील
उसकी मामी के बीच निरन्तर यद्यपि गुप्त झगड़ा चलता रहत
। श्रीमती सिप्यागिन उसे शून्यवादी और नास्तिक समझती थी
मरिआना श्रीमती सिप्यागिन से घृणा करती थी उसे अपना शोषक
समझती थी। अपने मामा से वह दूर ही दूर रहती थी, वैसे ही जैसे
वह औरों से दूर रहती थी। वह सिर्फ उनसे दूर ही रहती थी, उनसे
डरती नहीं थी। वह डरपोक स्वभाव की नहीं थी।

'घृणा' कालोमियेत्सेव ने दुहराया, हाँ यह तो निश्चय ही आश्चर्य की बात है। मिसाल के लिए—हर कोई जानता है कि मैं कट्टर धार्मिक विचारों का व्यक्ति हूँ शब्द के सही अर्थों में कट्टरपन्थी लेकिन पादरी के घोड़ों के अयाल जैसे लटकते बालों को मैं फूटी आँख नहीं देख सकता। उन्हें देखकर मुझे मचली सी आने लगती है।

और कालोमियेत्सेव ने अपने हाथों और मुख की चेष्टा से मचली की सिहरन को व्यक्त किया।

'लगता है, सारे बालों से ही आपको चिढ़ है, सिम्योन पैत्रोविच मरिआना ने कहा 'मुझे विश्वास है कि मेरे जैसे कटे बालों को भी आप नहीं देख सकते।

श्रीमती सिप्यागिन ने धीरे से अपनी आँखों को ऊपर उठाया और अपने सिर को झुका लिया आज-कल जिस स्वच्छन्दता से ये नौजवान लड़कियाँ बात चीत में हिस्सा लेती हैं, उस पर मानो आश्चर्य कर रही हो और कालोमियेत्सेव विनीत भाव से मुस्करा रहा था।

'जी हाँ' उसने उत्तर दिया मैं आपके जैसे प्यारे घुँघराले बालों को देख कर दुखी हुए बिना नहीं रह सकता मरिआना विकेन्त्येवना जो कृतघ्न निर्दय कैंची से कतरे जाते हैं, लेकिन मुझे घृणा नहीं होती और हर हालत में -- आपके बालों ने तो मुझे धर्मपरिवर्तन ही करा दिया होता।

कालोमियेत्सेव को अपने भावों को स्पष्ट करने के लिए रूसी शब्द ही नहीं मिल रहे थे और श्रीमती सिप्यागिन के टोक देने से यद्यपि वह फ्रेन्च शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता था।

'ईश्वर का धन्यवाद है कि मरियाना अभी तक बस्ता नहीं लगाती' श्रीमती सिप्यागिन ने कहा 'और इसने अभी तक कफ और कालर को भी नहीं त्यागा है हालाँकि मेरे बुरा मानने पर भी वह प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन करती है, और स्त्रियों की समस्याओं में भी रुचि रखती है' 'क्यों है न यही बात मरियाना ?'

यह सब कुछ मरियाना को हतप्रभ करने के उद्देश्य से कहा गया था लेकिन वह हतप्रभ नहीं हुई।

'हाँ मामी उसने उत्तर दिया, मैं उस विषय पर सब कुछ पढ़ती हूँ और मैं उस समस्या को पूरी तरह समझने का प्रयास करती हूँ।'

यही तो है युवापन !' श्रीमती सिप्यागिन कालोमियेत्सेव की ओर उन्मुख हुई और बोली हम तुम अब ऐसी बातों की परवाह नहीं करते—है न ?

कालोमियेत्सेव के मुख पर सहानुभूतिपूर्ण मुस्कान आ गई, वह श्रीमती सिप्यागिन के मजाक में साथ देने के लिए विवश था।

'मरियाना विकन्त्येवना' उसने कहना आरम्भ किया, 'मैं आदर्शवादिता है 'जवानी का रूमानी जोश' जो समय रहते

'लेकिन मैं तो अपनी ही निन्दा कर रही हूँ', श्रीमती सिप्यागिन ने बीच में ही बात काट कर कहना शुरू किया, मैं स्वयं इन समस्याओं में रुचि लेती हूँ, मैं भी तो कोई अभी ऐसी बूढ़ी नहीं हो गई।'

और मैं इन सभी प्रश्नों में दिलचस्पी लेता हूँ', कालोमियात्सेव ने तत्परता से कहा 'बजाय मैं इन पर बातें करना वर्जित करूँगा।

आप इन पर बातें करना वर्जित करेंगे ? मरियाना ने पूछा।

'हाँ ! मैं लोगों से कहूँगा मैं तुम्हारी रुचि में बाधा नहीं देता'

लेकिन जहाँ तक चरखा चलाने का प्रश्न है बिल्कुल नहीं !'—उसने अपने होठों पर उँगली रखी—'और वह भी निश्चित रूप में—मैं उस पर रोक लगा दूँगा—बिना किसी शर्त के ?'

श्रीमती सिप्यागिन हँस दीं।

'क्या आप इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कोई कमीशन नियुक्त कराएँगे ?'

'क्यों नहीं ? क्या आप समझती हैं कि हम उन मित्रमंत्रियों की तरह से इस प्रश्न पर विचार करेंगे, जो अपनी नाक से आगे की बात तो सोच नहीं सकते और महान जीनियस बने फिरते हैं। हम बोरिस आन्द्रेविच को अध्यक्ष बनाएँगे।'

श्रीमती सिप्यागिन और भी जोर से हँसी।

'ज़रा होशियार रहना बोरिस आन्द्रेविच कभी-कभी ऐसे अजीब प्रजातात्मक मुर्गा कबूतर से हो जाते हैं कि—

'मुर्गा, मुर्गा मुर्गा' तोते ने रट लगाई।

वालेन्तिना मिखाइलोवना ने उसकी ओर अपना रूमाल हिलाया।

बुद्धिमान व्यक्तियों की बातचीत में बाधा मत डालो ! मरियाना उसे चुप करो।

मरियाना ने पिंजड़े की ओर घूम कर तोते की चोंच सहलानी शुरू कर दी, जो तोते ने तुरन्त बाहर निकाल दी थी।

'हाँ', श्रीमती सिप्यागिन ने कहना जारी रखा, 'बोरिस आन्द्रेविच तो कभी-कभी मुझे भी चकित कर देते हैं। उनमें कुछ कुछ प्रजातात्मक के से गुण हैं।

'भीषण भाषणकर्ता हैं ! कालामियेत्सेव ने तीखेपन से बीच में बात काटी। 'आपके पति के पास भाषण का गुण है, जैसा और किसी के पास नहीं है, वह सफलता प्राप्ति के आदी हो गए हैं क्योंकि वे एक अच्छे वक्ता हैं' 'और साथ ही उनमें प्रसिद्धि प्राप्त करने के प्रति रुचि भी है। क्यों है न ठीक बात ?

श्रीमती सिप्यागिन ने मरियाना की ओर देखा।

'मैंने तो इस बात पर ध्यान नहीं दिया', उसने क्षणिक मौन के बाद उत्तर दिया।

'हाँ!' कालोमियेत्सेव ने खोये-खोये से स्वर में कहा, 'उनकी जरा उपेक्षा की गई है।'

श्रीमती सिप्यागिन ने फिर मरियाना को एक मर्मपूर्ण दृष्टि से देखा।

कालोमियेत्सेव खीस निपोरता हुआ हँसा मानों कह रहा हो, 'मैं सब समझता हूँ।

'मरियाना विकेन्त्येवना' उसने एकाएक अनावश्यक रूप से तेज आवाज में कहा, तुम्हारा 'क्या विचार है?

मरियाना पिंजड़े की ओर से घूमी।

'क्या इसमें भी आपको दिलचस्पी है?

क्या नहीं बल्कि इसमें तो मुझे बहुत दिलचस्पी है।'

'क्या उन्हें आप गैर कानूनी नहीं करेंगे?'

'मैं घूमक्कड़िया का स्कूल के बारे में सोचना भी गैर कानूनी कर दूँगा। लेकिन पादरियों के निर्देशन और देख रेख में, मैं स्वयं स्कूलों की स्थापना करूँगा।

'सच अभी? खैर, मैंने तो अभी कुछ नहीं सोचा कि मैं इस वर्ष क्या करूँगी। पिछले वर्ष सब कुछ ऐसा गड़बड़ा गया कि और फिर गर्मियों में स्कूल भी तो नहीं होते।'

मरियाना जैसे जैसे बात करती जा रही थी, उसका रंग गहरा होता जा रहा था, मानो बात करने में उस पर जोर पड़ रहा हो, जैसे वह जबर्दस्ती काम कर रही हो। उसमें आत्मसजगता का भाव उत्पन्न हो रहा था।

'पूरी तैयारी नहीं है शायद तुम्हारी?' श्रीमती सिप्यागिन ने व्यंग से पूछा।

लेकिन जहाँ तक चरखा चलाने का प्रश्न है बिल्कुल नहीं !'—उसने अपने होंठों पर उँगली रखी—'और वह भी लिखित रूप में—मैं उस पर रोक लगा दूँगा—बिना किसी शर्त के ?'

श्रीमती सिप्यागिन हँस दीं।

'क्या आप इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कोई कमीशन नियुक्त कराएँगे ?'

'क्यों नहीं ? क्या आप समझती हैं कि हम उन मिसमगों की तरह से इस प्रश्न पर विचार करेंगे जो अपनी नाक से आगे की बात तो सोच नहीं सकते और महान जीनियस बने फिरते हैं। हम बोरिस आन्द्रेविच को अध्यक्ष बनाएँगे।'

श्रीमती सिप्यागिन और भी जोर से हँसी।

'ज़रा होशियार रहना बोरिस आन्द्रीविच कभी-कभी ऐसे अजीब प्रजानायक मुर्रा कबूतर से हो जाते हैं कि—'

'मुर्रा, मुर्रा मुर्रा' तोते ने रट लगाई।

वालेन्तिना मिखाइलोवना ने उसकी ओर अपना रूमाल हिलाया।

'बुद्धिमान व्यक्तियों की बातचीत में बाधा मत डालो ! मरिआना उसे चुप करो।'

मरिआना ने पिंजड़े की ओर घूम कर तोते की चोंच सहलानी शुरू कर दी, जो तोते ने तुरन्त बाहर निकाल दी थी।

'हाँ' श्रीमती सिप्यागिन ने कहना जारी रखा 'बोरिस आन्द्रीविच तो कभी-कभी मुझे भी चकित कर देते हैं। उनमें कुछ कुछ प्रजानायक के से गुण हैं।

'भीषण भाषणकर्ता हैं !' कालोमियेत्सेव ने तीखेपन से बीच में बात काटी। 'आपके पति के पास भाषण का गुण है, जैसा और किसी के पास नहीं है, वह सफलता प्राप्ति के आदी हो गए हैं, क्योंकि वे एक अच्छे वक्ता हैं और साथ ही उनमें प्रसिद्धि प्राप्त करने के प्रति रुचि भी है। क्यों है न ठीक बात ?'

श्रीमती मिप्याशिन ने मरियाना की ओर देखा।

'मैंने तो इस बात पर ध्यान नहीं दिया' उसने क्षणिक मौन के बाद उत्तर दिया।

'हाँ!' कासामियेम्नेव ने खोये-खोये से स्वर में कहा, 'उनकी बड़ा उपेक्षा की गई है।

श्रीमती मिप्यागिन ने फिर मरियाना की एक अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा।

कालोमियत्सेव खोल निपोरता हुआ हँसा मानों कह रहा हो, 'मैं सब समझता हूँ।

'मरियाना विकेन्त्येवना', उसने एकाएक अनावश्यक रूप से तेज आवाज में कहा, तुम्हारा क्या विचार है?

मरियाना पिछड़े की ओर से घूमी।

'क्या इसमें भी आपको दिलचस्पी है?

'क्या नहीं बल्कि इसमें तो मुझे बहुत दिलचस्पी है।'

'क्या उन आप गैर कानूनी नहीं करेंगे?

'मैं शून्यवादियों का स्कूल के बारे में सोचना भी गैर कानूनी कर दूंगा। लेकिन पादरियों के निर्देशन और देख रेख में, मैं स्वयं स्कूलों की स्थापना करूंगा।

'सच अभी? खैर, मैंने तो अभी कुछ नहीं सोचा कि मैं इस बार क्या करूँगी। पिछले वर्ष सब कुछ ऐसा गड़बड़ा गया कि और फिर गर्मियों में स्कूल भी तो नहीं होता।'

मरियाना जैसे-जैसे बात करती जा रही थी, उसका रंग गहरा होता जा रहा था, मानो बात करने में उस पर जोर पड़ रहा हो, जैसे वह जबर्दस्ती बात कर रही हो। उसमें आत्मसजगता का भाव उत्पन्न हो रहा था।

'पूरी तैयारी नहीं है शायद तुम्हारी?' श्रीमती मिप्यागिन ने व्यंग से पूछा।

लेकिन जहाँ तक चरखा चलाने का प्रश्न है बिल्कुल नहीं !'—उसने अपने होंठों पर उँगली रखी—'और वह भी निश्चित रूप में—मैं उस पर रोक लगा दूँगा—बिना किसी शर्त के ?'

श्रीमती सिप्यागिन हँस दीं।

'क्या आप इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कोई कमीशन नियुक्त कराएँगे ?'

'क्यों नहीं ? क्या आप समझती हैं कि हम उन मिखमगों की तरह से इस प्रश्न पर विचार करेंगे जो अपनी नाक से आगे की बात तो सोच नहीं सकते और महान जीनियस बने फिरते हैं। हम बोरिस आन्द्रिविच को अध्यक्ष बनाएँगे।'

श्रीमती सिप्यागिन और भी ज़ोर से हँसी।

'ज़रा होशियार रहना, बोरिस आन्द्रीविच कभी-कभी ऐसे अजीब प्रजानायक मुर्रा कबूतर से हो जाते हैं कि—'

'मुर्रा मुर्रा मुर्रा' तोते ने रट लगाई।

वालेन्तिना मिखालोवना ने उसकी ओर अपना रूमाल हिलाया।

बुद्धिमान व्यक्तियों की बातचीत में बाधा मत डालो ! 'मरिआना उसे चुप करो।'

मरिआना ने पिंजड़े की ओर घूम कर तोते की चोंच सहलानी शुरू कर दी जो तोते ने तुरन्त बाहर निकाल दी थी।

'हाँ' श्रीमती सिप्यागिन ने कहना जारी रखा, 'बोरिस आन्द्रीविच तो कभी-कभी मुझे भी चकित कर देते हैं। उनमें कुछ कुछ प्रजानायक के से गुण हैं।

'भीषण भाषणकर्ता हैं।' कालोमियेत्सेव ने तीखेपन से बीच में बात काटी। 'आपके पति के पास भाषण का गुण है, जैसा और किसी के पास नहीं है, वह सफलता प्राप्ति के आदी हो गए हैं, क्योंकि वे एक अच्छे वक्ता हैं और साथ ही उनमें प्रसिद्धि प्राप्त करने के प्रति रुचि भी है। क्यों है न ठीक बात ?'

श्रीमती सिप्यागिन ने मरियाना की ओर देखा।

'मैंने तो इस बात पर ध्यान नहीं दिया' उसने क्षणिक मौन के बाद उत्तर दिया।

'हाँ!' कालोमियेत्सेव ने खोये-खोये से स्वर में कहा, 'उनकी जरा उपेक्षा की गई है।

श्रीमती सिप्यागिन ने फिर मरियाना को एक मर्मपूर्ण दृष्टि से देखा।

कालोमियत्सेव खीस निपोरता हुआ हँसा मानों कह रहा हो, 'मैं सब समझता हूँ।

'मरियाना विकेन्त्येवना', उसने एकाएक अनावश्यक रूप से तेज आवाज में कहा तुम्हारा 'क्या विचार है?

मरियाना पिंजड़े की ओर से घूमी।

क्या इसमें भी आपको दिलचस्पी है?

'क्या नहीं बल्कि इसमें तो मुझे बहुत दिलचस्पी है।'

'क्या उसे आप गैर कानूनी नहीं करेंगे?'

'मैं शून्यवादियों का स्कूल के बारे में सोचना भी गैर कानूनी कर दूँगा। लेकिन पादरियों के निर्देशन और देख रेख में, मैं स्वयं स्कूलों की स्थापना करूँगा।

'सच, अभी? खैर, मैंने तो अभी कुछ नहीं सोचा कि मैं इस बार क्या करूँगी। पिछले बार सब कुछ ऐसा गड़बड़ा गया कि 'और फिर गर्मियों में स्कूल भी तो नहीं होता।

मरियाना जैसे-जैसे बात करती जा रहीं थी, उसका रंग गहरा होता जा रहा था मानो बात करने में उस पर जोर पड़ रहा हो, जैसे वह जबर्दस्ती बात कर रही हो। उसमें आत्मसजगता का भाव उत्पन्न हो रहा था।

'पूरी तैयारी नहीं है बाबा तुम्हारी?' श्रीमती सिप्यागिन ने व्यंग से पूछा।

'शायद नहीं।

'क्या ?' कालोमियेस्तेव ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा। 'मैं यह क्या सुन रहा हूँ ? किसानों के छोकरे-छोकरियों को भ भा इ ई पढ़ाने के लिए भी तैयारी की आवश्यकता ?'

लेकिन उसी समय कोल्या चिल्लाता हुआ ड्राइंग रूम में भागा भागा आया, 'ममी ! पापा आ रहे हैं !' और उसके पीछे-पीछे अपने भारी भरकम पैरों पर लुढ़कती सी सफेद बालों वाली, टोपी पहिने और शाल ओढ़े एक महिला भी कमरे में दाखिल हुई और उसने भी बताया कि प्यारा बोरिस सीधा यहीं आ रहा है। यह स्त्री त्रिप्यामिन की भुआ थी अन्ना जहारोवना। ड्राइंग रूम बैठे सभी लोग एक तरह से अपनी-अपनी जगहों से उछल से पड़े और पौरी की ओर लपके और वहाँ से सीढ़ियों पर होते हुए नीचे मुख्य द्वार पर पहुँच गए। सड़क से प्रवेश द्वार तक तराशे हुए देवदार के पेड़ों की कतार लगी थी। सामने से एक बग्घी दौड़ी चली आ रही थी। कोल्या अपना रूमाल हिलाते हुए एक तेज आवाज में चीखा पापा ?' कोचवान ने तेजी के साथ में भरे घोड़ों की रास जोर से खींची। साईस उछल कर नीचे कूदा और लपक कर उसने बग्घी का दरवाजा खोला। अपने होठों आँखों और सम्पूर्ण मुख पर एक सौजन्यता पूर्ण मुस्कान लिए हुए, अपने गाउन को असमस्ती से समेटते हुए बोरिस मान्त्रीविच बग्घी से नीचे उतरा। तेजी से आगे बढ़ कर और शालीनता के साथ वालेन्तिना मिखाइलोवना ने उसकी गर्दन में हाथ डाल दिए और तीन बार उसे चूमा। कोल्या अपने पिता के पीछे उससे चिपका खड़ा उसके कोट के पल्लू को खींच रहा था लेकिन उसने अपने असुविधाजनक भयंकर स्काच याया-टोप को उतारते हुए, पहिले अन्नाजहारोवना को चूमा। तब उसने मरिआमा और कालोमियेस्तेव को प्रतिनमस्कार किया। वह सबके साथ बाहिरी द्वार पर आ गया था'—(उसने कालोमियेस्तेव से अंग्रेजी ढंग से खूब जोर के साथ झटका देते हुए हाथ मिलाया जैसे घन्टे की रस्सी को खींच रहा

हो)—और तब अपने पुत्र को उसने अपनी बाहों में भर कर गोद में उठा लिया।

जिस समय यह सब हो रहा था मज्यामाव अपराधी के रूप में चोरी-चोरी बग्घी में से उतर कर उसके आगे वाले पहिए के पास खड़ा हो गया। वह अपने टोप के नीचे से आँखें भुकाए ही ऊपर को देखने का प्रयास कर रहा था। वाल्मस्सिना मिखाइलोवना जब अपने पति के गले से मिल रही थी तभी अपने पति के कन्धा पर होकर उसने इस नए आगन्तुक पर एक पैनी दृष्टि भी डाली थी। सिप्यागिन ने उसे पहिले ही बता दिया था कि उसके साथ कोल्या के लिए एक शिक्षक आएगा।

सभी लोग सिप्यागिन का स्वागत करते और उससे हाथ मिलाते हुए सीढ़ियों पर आगे बढ़े जिन पर दोनों ओर कतार बाँधे अपने स्वामी का स्वागत—सम्मान करने के लिए घर के नौकर नौकरानियाँ खड़े थे। उन्होंने उसका हाथ चूम—यह गुलामाना पद्धति काफी दिन पहिले ही समाप्त हो गई थी—बस सम्मान प्रदर्शन के लिए झुक जाते और सिप्यागिन आँख आहा और सिर के संकेत से ही प्रतिउत्तर दे देता।

नेज्धानोव भी चौड़ी सीढ़ियों पर धीरे धीरे चढ़ रहा था। पौरी में पहुँच कर सिप्यागिन ने उसका अपनी पत्नी अन्नाजहारोवना और मरियाना से परिचय कराया और कोल्या से कहा 'देखो यह तुम्हारे मास्टर साहब हैं। उनकी आज्ञा मानना। इन्हें अपना हाथ दो।' कोल्या ने भी संकोच के साथ नेज्धानोव की ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसकी ओर देखा, लेकिन उसमें प्रगट रूप से कोई विशेषता और आकर्षण भी खास न पाकर वह फिर अपने 'पापा' से चिपक गया। नेज्धानोव थियेटर को भी ही सकपकाहट भरी घबराहट अनुभव कर रहा था। वह एक पुराना और फूहड़ लम्बा कोट पहिने हुए था उसका चेहरा और हाथ रास्ते की धूल से भरे हुए थे वालेन्तिना मिखालोवना ने उसने सौजन्यता प्रगट करते हुए कुछ कहा, पर वह उसकी "जरा को

समझ नहीं पाया और मौन बना रहा। उसने बस इतना ध्यान दिया कि वह अपने पति की ओर एक अजीब चमक और प्यार के साथ देख रही है और हरदम उसके बगल से ही सटी रह रही है। उसे काल्या का पटियाँ पड़ा और सुगन्धि से भरा हुआ सिर अच्छा नहीं लगा। काला मियेस्तेव को देख कर उसने सोचा 'कैसा अजीब है यह अपने में ही विभोर और दंभी।' दूसरों की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। सिप्यागिन न दो बार चारों ओर देखा मानो अपने घर के वैभव को देख रहा हो जिससे उसके गलमुच्छों के बालों में आत्म गौरव और संतोष की अनुभूतियों से रोमांच हो आया। तब उसने तेज और कड़कती आवाज में एक नौकर को आवाज दी। उसकी आवाज में यात्रा की थकान के कोई चिन्ह नहीं थे : 'इवान! आपको अतिथिगृह में लेजाओ और आपका ट्रंक भी और नेज्दानोव से कहा कि वह वहाँ जाकर हाथ-मुँह धो-धा कर कपड़े बदल कर आराम कर सकता है और भोजन ठीक पाँच बजे तैयार हो जायगा। नेज्दानोव ने सिर झुकाकर आदेश स्वीकार किया और इवान के साथ, दूसरी मंजिल पर स्थित अतिथिगृह में चला गया।

बाकी सब लोग ड्राइंग रूम में चल गए। स्वागत-शब्द फिर एक बार दुहराए गए। एक अर्ध-अन्धी नर्स भी अभिवादन के लिए आई। उसकी बुजुर्गी का ख्याल कर सिप्यागिन ने उसे अपना हाथ चूमने दिया और तब कालोमियेत्सेव से क्षमा याचना करता हुआ वह अपनी पत्नी के साथ अपने कमरे में चला गया।



सात

उस बड़े और आरामदेह कमरे में से, जिसमें नेख्यानोव लेजाकर ठहराया गया था, बाग का दृश्य दिखाई पड़ता था। उसकी खिड़कियाँ खुली हुई थीं और धीमी धीमी हवा सफेद पर्दों को हिला रही थी वे हवा में पाल की तरह फूल रहे थे, फूलते और फिर सिकुड़ जाते। सुनहले प्रकाश की किरणें कमरे की छत पर धीरे-धीरे रेंग रही थीं सारा कमरा भीनी, नम, सुगन्धित वसन्ती हवा से भरा हुआ था। नेख्यानोव ने नौकर को छुट्टी देदी, सामान खोला हाथ-मुँह धोया और कपड़े बदले। यात्रा से वह थक कर चूर होगया था। निरन्तर दो दिन तक एक अजनबी आदमी के साथ, अनेक विषयों पर दिलचस्प बातों ने एक अजीब तनाव, कुछ अजीब मर्द न उसे पूरी तरह थकान ही कह सकते हैं और न क्षोभ ही, बल्कि कुछ अजीब से कटुता पूर्ण तनाव ने उसके मन प्राण और शरीर की शिराओं को अभिभूत कर रखा था। वह अपने हृदय की इस अवस्था से संघर्ष कर रहा था फिर भी उसका दिल उसमें डूबा सा जा रहा था।

समय का ऐलान किसी घन्टी के द्वारा नहीं, बल्कि चीनी घन्टे की देर तक होने वाली गूँज से हुआ। सभी लोग भोजन घर में जमा हो गए थे। सिप्यागिन ने पुन एक बार उसका स्वागत किया और अन्ना जहारोवना और कोल्या के बीच में उसे बैठने को स्थान दिया। अन्ना जहारोवना सिप्यागिन के स्वर्गवासी पिता की वृद्ध बहन थी। जैसे कपड़ों में रखी कपूर की गोलियों से कपड़ों में सुगन्ध आने लगती है वैसी ही सुगन्ध उसमें आ रही थी। उसके मुख पर निराशा पूर्ण औत्सुक्य का भाव था। परिवार में उसकी स्थिति कोल्या की धाय की थी, जब नेज्दानोव को उसके और कोल्या के बीच में बैठाया गया तो उसके झुर्रीदार चेहरे ने अप्रसन्नता का भाव प्रगट किया। कोल्या अपने इस नए पड़ोसी को कनखियों से देख रहा था। बुद्धिमान लड़के ने तुरन्त यह भाँप लिया था कि उसका यह मास्टर संकोच और असुविधा का अनुभव कर रहा है। वह सारे समय आँखे नीचे किए ही बैठा रहा और उसने न के बराबर ही भोजन किया। यह सब देखकर कोल्या को प्रसन्नता हुई। उस समय तक उसे भय था कि उसका यह मास्टर कहीं कठोर और तेज मिजाज का न हो। वालेन्तिना मिखालोवना ने भी उसकी ओर देखा।

'यह एक विद्यार्थी जैसा दीखता है, वह सोच रही थी 'और इसने अभी दुनियाँ का ज्यादा देखा भी नहीं है। लेकिन इसका चेहरा आकर्षक है और खास सुन्दर और मौलिक है, ठीक उस धर्मदूत की तरह जिसे पुराने इटालवी कलाकार लाल बालों वाले के रूप में अंकित करते है, और उसके हाथ साफ हैं। भोजन की मेज पर बैठे सभी लोगों ने नेज्दानोव की ओर ऐसे देखा था जैसे सभी को उस पर दया आ रही हो और इस समय कोई उसे छेड़ने के पक्ष में न था। वह उन सब के भावों को समझ रहा था और प्रसन्न था और साथ ही साथ किसी कारण से झुंझला भी रहा था। भोजन के समय बात चीत का सूत्र संचालन कालोमियेत्सेव और सिप्यागिन कर रहे थे। उनकी बात चीत के विषय थे—प्रान्तीय काउन्सिल गवर्नर, मार्ग कर और उससे मुक्ति

प्राप्त करने के तरीके बीटर्स वर्ग और मास्को के आपसी मित्र और परिचित, मिस्टर काटकोव का स्कूल जो थोड़े दिनों से ही प्रभावशाली हो चला था, मजदूर मिलने की कठिनाई, जुर्माने और पशुओं द्वारा किए गए नुकसान बिस्मार्क और १८६६ का युद्ध, नैपोलियन तृतीय जिसे कार्लोमियेस्सेव एक महान पुरुष मानता था। कार्लोमियेस्सेव ने अत्यन्त प्रतीतोत्सुकी विचार प्रगट किए और भले ही मजाक में ही सही—उसने अपने एक मित्र के जन्म दिवस ही की मिसाल देते हुए दुहराया—'मैं तो सिर्फ उन सिद्धान्तों के नाम पर ही पीता हूँ जिन्हें मैं मानता हूँ और वह हैं—हंटर और बैंग।

वालन्तिना मिखालोवना की त्योरियाँ में बल आ गया और उसने कहा कि यह निहायत बेकार और बेहूदी बात है। सिप्यागिन ने इसके विपरीत अत्यन्त उदार विचार प्रगट किए अत्यन्त शान्त और मजे मजे से उसने कार्लोमियेस्सेव का विरोध किया और थोड़ा उसकी बातों का मजाक उड़ाते हुए, ताना भी मारा।

'प्रिय सिम्यान पैत्रोविच! मुक्ति के विषय में तुम्हारे विचार' उसने कहा, 'मुझे हमारे अत्यन्त सम्मानित एवं अनुपम मित्र इवानिच स्वर्गिनोव के द्वारा १८६० में लिखे एक लेख की याद दिलाता है, जिसे पीटर्स बर्ग के प्रत्येक समाज के ड्राइंगरूम में उसने सुनाया था। उसमें एक बड़ा ही उल्लेखनीय वाक्य था कि कैसे आजाद किसान हाथ में मशाल लेकर निर्भय रूप से सारे देश में छा जायगा। तुमने तो देखा होगा उसे, मधुर-स्नेही स्वभाव, फूले गाल, गोल आँखें, आगे को निकला पिद्दी सा मुँह था उसका। 'म-म-मशाल! म-म-मशाल! वह हाथ में मशाल लेकर आयगा! अब मुक्ति एक प्राप्त सत्य है पर मशालधारी किसान कहाँ हैं?

कार्लोमियेस्सेव ने उत्तर दिया 'स्वर्गिनोव के कथन में सिर्फ इतनी ही सी भूल थी कि किसान नहीं वरन् दूसरे लोग मशाल लेकर चल रहे हैं।

नेज्दानोव ने अब तक मरिश्राना की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था पर अब उसने उसकी ओर देखा—वह उससे दूर कोने में बैठी थी—अकस्मात दोनों की आँखें चार हुई और तुरन्त ही उसके मन में यह भाव उद्बुद्ध हुआ कि वह और यह लड़की एक ही विचारों और विश्वासों के हमराही हैं। जब सिप्यागिन ने उसका उससे परिचय कराया था तो उसने नेज्दानोव को जरा भी प्रभावित नहीं किया था। इस समय क्यों उसकी आँखों ने उसके मन को पकड़ लिया? उसने अपने से ही प्रश्न किया कि क्या ऐसी बातों को चुपचाप बैठे सुनते रहना और उनका विरोध न करना और अपने मौन से एक प्रकार से उनके प्रति सहमति प्रगट करना शर्म और लज्जा की बात नहीं है? नेज्दानोव ने दूसरी बार मरिश्राना की ओर देखा और उसने अपने प्रश्न का उत्तर उसकी आँखों में पढ़ लिया थोड़ा इन्तजार करो उतावल ने हो, वे कहती सी लग रही थीं 'अभी समय नहीं है अभी कोई फायदा न होगा बाद में समय ही समय है। '

वह उसे समझती है यह अनुभूति उसके लिए बड़ी आनन्ददायक थी। वह फिर बात चीत सुनने लगा। वालेन्तिना मिखालोवना ने अपने पति का स्थान ले लिया था तथा और भी अधिक आजादी के साथ बोल रही थी उससे भी अधिक उग्रता के साथ। उसे विश्वास ही नहीं हो पाता था 'सचमुच विश्वास ही नहीं हो पाता था' कि कैसे एक शिक्षित व्यक्ति जो अभी जवान है, पुराने विचारों की परम्परा का विश्वासी हो सकता है।

'मेरा विश्वास है, उसने कहा, 'कि आप सिर्फ विरोध के लिए ही विरोध कर रहे हैं। और रही आपकी बात, असेक्सी दिमित्रिच,' वह मुस्कुराती हुई नेज्दानोव की ओर घूमी (उसे यह जानकर मन ही मन बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह उसका और उसके पिता का भी नाम जानती है), 'मैं जानती हूँ कि आप सिम्यान पैत्रोविच के विचारों के

भागीदार नहीं हैं, बोरिस ने, यात्रा में जो आपकी उनसे बातें हुई थीं, वह मुझे बताई थीं।'

नेज्दानोव लजा गया और अपनी तश्तरी पर और भी झुक गया और कुछ अस्पष्ट फुसफुसाते हुए उसने कहा वह इतना शर्मीला नहीं था, जितना ऐसे बड़े लोगों के बीच में बैठकर बात करने का अनभ्यस्त था। श्रीमती सिप्यागिन अब भी उस पर हँस रही थी, उसका पति भी उसका साथ दे रहा था। लेकिन कालोमियत्सेव ने जानबूझ कर अपना चश्मा लगा रखा था और उस विद्यार्थी की ओर घूर रहा था, जो उसके विचारों से सहमत न होने का साहस कर रहा था। लेकिन इस तरह से नेज्दानोव को उलझन में डालना आसान न था, बल्कि इसके विपरीत उसने तुरन्त अपने को सम्हाल लिया और उलटकर फैशनेबिल अफसर की ओर घूरा, और उसी आकस्मिकता के साथ, जैसे उसने मरिआना में एक साथी का अनुभव किया था, उसी तरह कालोमियेत्सेव में एक शत्रु का अनुभव किया! और कालोमियेत्सेव भी इसके प्रति जागरूक था, उसने चश्मा उतार लिया और दूसरी ओर देखकर हँसने का प्रयास करने लगा लेकिन व्यर्थ सिर्फ अन्ना जहारोवना ने, जो मन ही मन उसकी भक्त थी, उसका पक्ष लिया और अपने अवांछित पड़ोसी, जो कोल्या को उससे अलग कर रहा था, के प्रति और भी कुपित हो उठी।

थोड़ी देर में ही भोजन समाप्त हो गया, सब लोग काफी पीने के लिए बरामदे में उठ गए। सिप्यागिन और कालोमियत्सेव ने सिगार जलाए। सिप्यागिन ने नेज्दानोव को भी एक पुष्ट पेश किया, पर उसने लिया नहीं।

'ओह! मैं तो भूल ही गया था कि तुम सिर्फ अपनी ही सिगरेट पीते हो!' सिप्यागिन ने कहा।

'अजीब बात है,' कालोमियत्सेव ने अपने मुँह ही मुँह में बुद-बुदाया।

नेज्धानोव ने कहा 'मैं सिगरेट और चुरट के अन्तर को खूब जानता हूँ, लेकिन मैं किसी का आभार नहीं लेना चाहता', इतना कह उसने अपने को रोक लिया, लेकिन अन्तिम उद्दंड बात तो उसने अपने प्रभु की बात के जवाब में कही थी।

'मरिआना। श्रीमती सिप्यागिन ने एकाएक जोर से कहा तुम्हें एक अजनबी के सामने लिहाज में पड़ने की कोई जरूरत नहीं है' तुम अपनी सिगरेट पी सकती हो और नज्दानोव की ओर घूम कर उसने कहा 'मैंने सुना है, तुम लोगों में सभी जवान औरतें सिगरेट पीती हैं ?'

'जी हाँ', नेज्धानोव ने रूखेपन से उत्तर दिया। यह पहला शब्द था, जो उसने श्रीमती सिप्यागिन से बोला था।

'मैं तो नहीं पीती' कहते समय उसकी मखमली आँखों में मुस्कान थी। 'मैं पिछड़ी हुई हूँ।'

मरिआना ने बड़े आराम आराम से जैसे मानों अपनी मामी को चिढ़ा रही हो, सिगरेट और माचिस निकाली और जलाकर पीने लगी। नेज्धानोव भी मरिआना से सिगरेट लेकर पीने लगा।

शाम बड़ी सुन्दर थी। कोल्या और अन्ना जहारोवना बाग में चले गए थे। बाकी सब लोग एक घण्टे तक बरामदे में बैठे हवा का आनन्द लेते रहे। बातचीत का दौर दिलचस्प हो गया था। कालोमियेत्सेव ने साहित्य की यह आलोचना की। सिप्यागिन ने इस विषय पर भी उदारता प्रगट की और साहित्य की स्वतन्त्रता का पक्ष लिया उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला और शातोब्रियाँ का भी उल्लेख किया और बताया कि उन्हें सम्राट अलक्जेण्डर पाव्लोविच ने सन्त एन्द्री का तमगा दिया था। नज्दानोव ने बहस में भाग नहीं लिया। श्रीमती सिप्यागिन ने उसकी ओर इस तरह देखा, जिससे मालूम होता था कि वह उसकी चुप्पी को पसन्द करती है और साथ ही मानो उसकी चुप्पी पर आश्चर्य भी कर रही हो।

सभी लोग उठकर चाय पीने के लिए ड्राइंग रूम में गए।

'हमारी बड़ी बुरी आदत है' अलेक्सी दिमित्रिच, सिप्यागिन ने नज्दानोव से कहा हम हर रोज शाम को ताश खेलते हैं और यह भी वह खेल जो वर्जित है। इसलिए मैं तुम्हें अपने साथ खेलने का न्योता नहीं दूँगा लेकिन मरियाना जरा हमें पियानो सुनाने की कृपा करोगी। मैं समझता हूँ तुम्हें संगीत बहुत प्रिय भी है।' और उत्तर की प्रतीक्षा न करके उन्होंने ताश उठा लिए। मरियाना पियानो पर बैठ गई। वह कुछ साधारण रूप में मेन्डलेसन के कुछ 'शब्दहीन गीत' की धुन निकालती रही। दूर बैठा कालोमियत्सेव ऐसा हँसा मानों गरम दूध से जल गया हो, लेकिन वह हँसी विनम्रता से युक्त थी। नज्दानोव को भी संगीत से कोई प्रेम नहीं था, यद्यपि सिप्यागिन ने ऐसी ही आशा प्रगट की थी।

उधर सिप्यागिन उसकी पत्नी कालोमियत्सेव और अन्नजहारोवना ताश खेलने बैठ गए माल्या रात्री की विदाई के लिए नमस्कार करने आया था और अपने माता-पिता से आशीर्वाद और एक ग्लास दूध, चाय नहीं प्राप्त कर वह सोने चला गया उसके जाते जाते पीछे से उसके पिता ने चिल्लाकर कहा कि कल से उसकी पढ़ाई शुरू हो जायगी। इनी उसकी नजर नज्दानोव पर गई, जो कमरे के बीच में निरुद्देश्य एवं एलबम के पन्ने पलटता हुआ झूम रहा था। सिप्यागिन ने उससे कहा 'यहाँ व्यय में रत हो जाकर आराम करो यात्रा से निश्चय ही थक गए होगे। स्वतन्त्रता इस घर का प्रधान सिद्धान्त है।'

नेज्दानोव सबसे नमस्कार कर चला गया, दरवाजे में वह मरियाना से टकरा गया और फिर उसकी आँखों में झाँकता हुआ उसने फिर अनुभव किया कि वह उसमें एक साथी पा सकता है, टकराने से वह मुस्कराई नहीं, वरन् उसकी भौंहों में थोड़े से बल जरूर पड़ गए थे।

उसने अपना कमरा ताजी हवा से भरा हुआ पाया, सारे दिन खिड़कियाँ खुली रही थीं। उसकी खिड़की के ठीक सामने बाग में बुन

बुल महक रही थी वृक्षों के गोलाकार शिखरों पर नैशगगन में ऊष्म और धुँधली-सी चमक थी, चाँद आगे तैरने को उद्यत लग रहा था नेत्रपानोध मे बत्ती जलाई, बाग से भूरे पतिंगा का झुंड उड़कर प्रकाश के चारों ओर मंडराने लगा, हवा का झोंका उन्हें पीछे को ठेलता और मोमबत्ती की नीली-पीली लौ में कम्पन उत्पन्न कर देता।

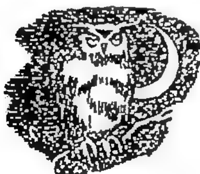
'अजीब है !' अपने बिस्तर पर लेटते-लेटते उसने सोचा 'यह लोग भले आदमी लगते हैं, उदार, मानवीय लेकिन मन में मैं रुग्णता का अनुभव करता हूँ घुटा-घुटा-सा। खैर, सबेरे तक सब ठीक हो जायगा भावुक होना व्यर्थ है।

लेकिन उसी समय बाग में एक चौकीदार ने जोर-जोर से खटखट की और उसकी बुलन्द लम्बी सतत् पुकार सुनाई पड़ी ?

'जा आ गये ए रहना आ आ' !'

'स' म 'ब' म्र''' ठीक' ई क है।' एक दूसरी बुलन्द आवाज ने प्रति ध्व की।

'ओह खुदा रहम कर !—यह तो लगता है, जैसे हम जेल में हो !'



आठ

नेख्ल्यूदोव तड़के ही उठ बैठा और बिना नौकर की प्रतीक्षा किए ही कपड़े बदल कर बाग में निकल गया। वह बाग काफ़ी बड़ा और सुन्दर था और बड़े करीने से बना चुना कर उसे रखा गया था। मजदूर बाग की रौशों को ठीक कर रहे थे हरी झाड़ियों के झुरमुटों में से किसान औरतों के रूमाल झाँक रहे थे उनके हाथों में क्यारियों को चौरस करने की पटेली थी। नेख्ल्यूदोव झील की ओर चला गया। यद्यपि प्रातःकाल का कुहासा छँट चुका था मगर कुहासे का थोड़ा सा धुंधलका किनारे की निर्जन झाड़ियों से अटका हुआ था। सूरज अभी आसमान में ऊँचा नहीं उठा था उसकी अग्निगर्भ आभा से झील की रेशमी चिक्कण सतह रंगी हुई थी। घाट के पास कुछ बढ़ई अपने काम में व्यस्त थे, वहीं एक नई ताजी रोगन की हुई नाव पानी में पड़ी, पानी के थपेड़ा से इधर उधर झूम रही थी और पानी में भँवर पैदा कर रही थी। जब तब आदमियों की आवाज सुनाई पड़ जाती थी।

कुछ म्राठ मील पर थी, भ्राया। एक चिमगुम्रा भी म्राया उनमें से एक जागीरदार का वर्णन दो प्रसिद्ध पंक्तियों में लर्मान्तोव ने बड़ा उपयुक्त किया है

कानों तक का जैकेट[1], भ्रौर एड़ी तक का कोट,
मूँछें भ्रौर खिखियाहट भ्रौर भ्राँखें गंदली, मोटी।

निराश-उदास पोपल मुख वाला, पर बड़े ठाट-बाट के कपड़े पहिने एक भ्रौर पड़ोसी भी भ्राया भ्रौर एक नीम-हकीम डाक्टर भी भ्राया जो बड़े-बड़े विद्वत्तापूर्ण शब्दों के प्रयोग से भ्रपना ज्ञान बघारा करता था, मिसाल के लिए वह कहता कि वह पुश्किन की भ्रपेक्षा कुकोल्निक को पसन्द करता है क्योंकि उसमें 'जीवन दायी तत्व' भ्रधिक हैं। वे सब ताश खेलने बैठ गए। नेज्दानोव भ्रपने कमरे में चला गया भ्रौर भ्राधी रात तक लिखता पढ़ता रहा।

भ्रगला दिन नौ मई, कोल्या का नामकरण-संस्कार दिवस था। तीन खुली बग्घियों में जिनके फुट बोर्ड पर साईस खड़े थे बैठकर सारा परिवार चर्च को गया हालाँकि वह से घर से दो फर्लांग से भ्रधिक दूर नहीं था। हर काम बड़े शान भ्रौर रौब-दाब के साथ किया गया। सिप्यागिन ने भ्रपने तमगे पहन रखे थे वालेन्तिना मिखालोवना ने पीले बकाइन के रंग का भ्राकर्षक पेरिसियन गाउन पहन रखा था, भ्रौर चर्च में उसने प्रार्थना के समय रेशमी लाल जिल्द की छोटी प्रार्थना पुस्तक से प्रार्थना की। इस छोटी सी पुस्तक ने भ्रनेक बूढ़ों को सकते में डाल दिया था जिनमें से एक तो भ्रपने पड़ोसी से पूछे बिना नहीं रह सका क्या जादूगरनी का जादू है, ईश्वर उस पर रहम करे वह उसका उपयोग कर रही है, पर क्या भ्रोह! चर्च में बसी हुई फूलों के सुगन्ध के साथ नवागन्तुक किसानों के गन्ध की तीखी गंध धूप की गन्ध से मिलकर एक विचित्र प्रकार की गन्ध पैदा कर रही

[1] बो की तरह की एक चीज़ जो गले में बाँधी जाती है।

रही थी। और इन सबके ऊपर धूप की मीठी गंध दूसरी गंधों को दबा रही थी। पादरी और गाने वाले पवित्र करने वाले वृद्ध मन्त्र करुण के साथ गा रहे थे और कुछ फैक्टरी के मजदूर भी अपनी बेसुरी लय में उनका साथ दे रहे थे। एक क्षण ऐसा भी आया जब सभी उपस्थित लोगों ने कुछ त्रास का सा अनुभव किया। सबसे ऊँची आवाज कारखाने के एक मजदूर कसीमा की थी, जो क्षय रोग के रास्ते पर तेजी से बढ़ता जा रहा था। वह अकेला गाता रहा। यह सब बड़ा अजीब सा लग रहा था, लेकिन उनके बिना तो सारा कोरस शीघ्र ही टुकड़े-टुकड़े हो जाता। बहरहाल जैसे-तैसे समारोह समाप्त हुआ। अत्यन्त आदरणीय रौय दाब के व्यक्ति फादर सिप्रियान ने, पुस्तक से अत्यन्त ही प्रभावशाली लेख पढ़ा। दुर्भाग्य से पवित्रात्मा पादरी ने किसी विद्वान असीरियन राजा का नाम लेना आवश्यक समझा, जिसके नाम के उच्चारण में उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। हालांकि वह कुछ हद तक अपनी विद्वत्ता प्रगट करने में सफल तो होगया था। नेज्दानोव ने जो बहुत दिना से चर्च नहीं गया था, अपने को एक कोने में किसान औरतों के बीच छिपा रखा था, वे आपस में लगातार इधर से उधर होने परस्पर अभिवादन के लिए झुकने और अपने बच्चों की नाक पोंछते समय कभी-कभी उसकी ओर देख लेतीं, लेकिन नया कोट पहिने अपने माथे पर कांच के मनकों की लड़ी पहिने और कन्धे में लटका बाने कढ़े हुए पीलेदार फलरुमों में बच्चों को लिए किसान नारियाँ जरूर इस नए प्रार्थना करने वाले को उसकी ओर घूम घूम कर देख रही थीं और नेज्दानोव भी उनकी ओर देख रहा था और नाना प्रकार के विचार उसके मन में उठ रहे थे।

प्रार्थना के बाद—जो काफी देर तक चलती रही—क्योंकि चमत्कारकर्त्ता संत निकोलाई की पूजा की रस्म, जैसा सब जानते हैं, ऑर्थोडॉक्स पर्वों में सबसे लम्बी रस्म है,—सिप्यागिन के निमन्त्रण पर सभी पादरी उसके घर आए। अवसर के अनुकूल कुछ और रस्में पूरी करने के बाद—कमरों में पवित्र जल छिड़कने की भी बात, सब को

कुल आठ मील पर थी, आया। एक घिसघुआ भी आया, उनमें से एक जगीरदार का वर्णन दो प्रसिद्ध पंक्तियों में सर्मान्तोव ने बड़ा उपयुक्त किया है

कानों तक का नैसेट[1], और एड़ी तक का कोट,
मूँछें और फिकियाहट और आँखें गंदली, मोटी।

निराश-उदास पोपले मुख वाला पर बड़े ठाट-बाट के कपड़े पहिने एक और पड़ोसी भी आया, और एक नीम-हकीम डाक्टर भी आया जो बड़े-बड़े विद्वत्तापूर्ण शब्दों के प्रयोग से अपना ज्ञान बघारा करता था, मिसाल के लिए वह कहता कि वह पुश्किन की अपेक्षा कुकोल्निक को पसन्द करता है, क्योंकि उसमें जीवन दायी तत्त्व' अधिक हैं। वे सब ताश खेलने बैठ गए। नेज्दानोव अपने कमरे में चला गया और आधी रात तक लिखता पढ़ता रहा।

अगला दिन नौ मई, कोल्या का नामकरण-संस्कार दिवस था। तीन खुली बग्घियों में, जिनके फुट बोर्ड पर साईस खड़े थे बैठ कर सारा परिवार चर्च को गया हालाँकि वह से घर से दो फर्लांग से अधिक दूर नहीं था। हर काम बड़े शान और रौब-दाब के साथ किया गया। सिप्यागिन ने अपने तमगे पहन रखे थे, वालेन्तिना मिखाइलोवना ने पीले धकाइन के रंग का आकर्षक पेरिसियन गाउन पहन रखा था और चर्च में उसने प्रार्थना के समय रेशमी लाल जिल्द की छोटी प्रार्थना पुस्तक से प्रार्थना की। इस छोटी सी पुस्तक ने अनेक बूढ़ों को सकते में डाल दिया था जिनमें से एक तो अपने पड़ोसी से पूछे बिना नहीं रह सका क्या जादूगरनी का जादू है, ईश्वर उस पर रहम करे वह उसका उपयोग कर रही है, पर क्या ओह? चर्च में बसी हुई फूलों के सुगन्ध के साथ नवागन्तुक किसानों के गन्ध की तीव्र गंध जूतों की गन्ध से मिलकर एक विचित्र प्रकार की गन्ध पैदा कर रही

[1] बो की तरह की एक चीज जो गले में बाँधी जाती है।

रही थी। और इन सबके ऊपर धूप की मीठी गंध दूसरी गंधों को दबा रही थी। पादरी और गाने वाले चकित करने वाले शुद्ध प्रस्तुत करण के साथ गा रहे थे और कुछ फैक्टरी के मजदूर भी अपनी बेसुरी लय में उनका साथ दे रहे थे। एक क्षण ऐसा भी आया जब सभी उपस्थित लोगों ने कुछ त्रास का सा अनुभव किया। सबसे ऊँची आवाज कारखाने के एक मजदूर कसीमा की थी जो क्षय रोग के रास्ते पर तेजी से बढ़ता जा रहा था। वह अकेला गाता रहा। यह सब बड़ा अजीब सा लग रहा था, लेकिन उसके बिना तो सारा कोरस शीघ्र ही टुकड़े-टुकड़े हो जाता। " बहरहाल जैसे-तैसे समारोह समाप्त हुआ। अत्यन्त आदरणीय रीव दाव के व्यक्ति फादर सिप्रियान न पुस्तक से अत्यन्त ही प्रभावशाली लेख पढ़ा। दुर्भाग्य से पवित्रात्मा पादरी ने किसी विद्वान असीरियन राजा का नाम लेना आवश्यक समझा जिसके नाम के उच्चारण में उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। हालांकि यह कुछ हद तक अपनी विद्वत्ता प्रगट करने में सफल तो होगया था। नेज्दानोव ने, जो बहुत दिनों से चर्च नहीं गया था, अपने को एक कोने में किसान औरतों के बीच छिपा रखा था वे आपस में लगातार इधर से उधर होने, परस्पर अभिवादन के लिए झुकने और अपने बच्चों की नाक पोंछते समय कभी-कभी उसकी ओर देख लेतीं लेकिन नया कोट पहिने, अपने माथे पर कांच के मनकों की लड़ी पहिने और कन्धे में लटकने वाला बड़े हुए पीलेदार पतलूनों में बच्चे का लिए किसान बालाएँ जरूर घूम तए प्रार्थना करने वाले को उसकी ओर घूम घूम कर देख रही थीं और नेज्दानोव भी उनकी आ... देख रहा था और नाना प्रकार के विचार उसके मन में उठ रहे थे।

प्रार्थना के बा...,—जो काफी देर तक चलती रही—क्योंकि चमत्कारकर्ता संत निकोलाई की पूजा की रस्म, जैसा सब जानते हैं आर्थोडौक्स चर्चों में सबसे लम्बी रस्म है,—सिप्यागिन के निमन्त्रण प... सभी पादरी उसके घर आए। अवसर के अनुरूप कुछ और रस्में पू... करने के बाद—कमरों में पवित्र जल छिड़कने के भी बाद, सब ...

शानदार भोज दिया गया। भोजन के बीच में आध्यात्मिक पर प्रभाव देने वाला उपदेश और बात चीत, जैसी आमतौर पर ऐसे अवसरों पर होती है चलती रही। पर न स्वामी और स्वर्गमित्र दोनों ने ही हालांकि वे उस समय कुछ नहीं खाते थे, थोड़ा सा खाया और पिया भी। सिप्रागिन ने समयोचित हँसी और आमोद दायक कथा सुनाई उसकी रंगीली पोशाक और चेहरे न और कथा ने, ऐसा प्रभाव डाला कि पादरी सिप्रियान ने आभार और आश्चर्य का भाव प्रगट किया और यह प्रगट करने के लिए कि ऐसे समय के उपयुक्त वह भी कुछ कह सकता है, पादरी सिप्रियान ने विशप के जिले भर के दौरे के समय जब उसने नगर के मठ में जिले भर के पादरियों को जमा किया था विशप के साथ हुई अपनी बात सुनाई। 'वह बहुत मस्त थे हम सब के साथ भी बहुत प्रसन्न थे' फादर सिप्रियान ने बताया पहले तो उन्होंने हमसे हमारे धर्म क्षेत्रों के विषय में हमारी व्यवस्था आदि के विषय में पूछा और तब उन्होंने हमारी परीक्षा लेनी शुरू की मेरी ओर घूम कर उन्होंने पूछा "तुम्हारे गिर्जाघर का समर्पण दिवस कौन-सा है?' 'हमारे रक्षक का रूपान्तर दिवस मैंने उत्तर दिया। क्या तुम उस दिन का गीत जानते हो?' आशा तो जरूर करता हूँ। 'सुनाओ। मैंने तुरन्त गाना शुरू किया

'हे हमारे ईसूमसीह
जब हुआ तुम्हारा
रूपान्तर पर्वत पर '

'बन्द करो! यह रूपान्तर है क्या? और हमें उसे कैसे समझना चाहिए?' 'एक शब्द में मैंने कहा ईसा अपने शिष्यों को अपना यश दिखाना चाहते थे।' 'बहुत सुन्दर उन्होंने कहा, "लो, मेरी याद में यह मूर्ति अपने गले में धारण करना। मैं उनके चरणों पर गिर पड़ा। "मेरे पूज्य मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। तो उन्होंने मुझे खाली वापस नहीं भेजा।

"मुझे भी उनका परिचय प्राप्त होने का सौभाग्य हुआ है," सिप्यागिन ने गर्व से कहा। "परम योग्य पादरी हैं।"

"निःसन्देह परम योग्य हैं।" पादरी सिप्रियान ने दुहराया। "यद्यपि वह अपने धर्म क्षेत्र के अधिकारियों पर जरूरत से ज्यादा विश्वास करने की गलती करते हैं।"

वालेन्तिना मिखाइलोव्ना ने साथी स्कूल अध्यापिका के रूप में मरियाना का उल्लेख करते हुए किसान स्कूल की चर्चा की। (स्कूल की देखभाल उसी के जिम्मे थी) किरायादारी ने भी, जिसका आकार दैत्य जैसा था और उसके लम्बे-लम्बे बाल घोड़े की घनी गर्दन की याद दिलाते थे, अपनी सहमति प्रकट की लेकिन अपने फेफड़ों की शक्ति पर विश्वास न करते हुए उसने ऐसी गहरी सांस भरी कि उसकी आवाज लड़खड़ा गई और दूसरे भी चौंक गए। इसके तुरन्त बाद ही सब पादरी विदा हो गए।

कोल्या अपनी सालगिरह पर घटा वाली नई जाकेट पहिने उस दिन का हीरो था। मजदूरों, नौकरों, बूढ़े लोग, जवान औरतों और किसानों द्वारा उसे भेंटें और बधाइयाँ मिलीं तथा सबने उसके हाथ चूमे। जैसा कि प्राचीन दास प्रथा के दिनों में होता था, किसान लोग घर के सामने पड़ी मेज पर बियर और वोदका पीते हुए नाच-गा रहे थे। कोल्या शर्मा भी रहा था और उसे प्रसन्नता और गौरव का भी अनुभव हो रहा था। उसने अपने माता-पिता का आलिंगन किया और कमरे से बाहर भाग गया। भोजन के समय सिप्यागिन ने शैम्पेन की बोतलें खोलने का आदेश दिया और अपने बेटे के स्वास्थ्य के नाम पर पीने से पहिले उसने एक छोटा सा भाषण दिया, अपने देश की सेवा करने के महत्व पर और अपनी इच्छा प्रगट की कि इसी देश सेवा के मार्ग पर उसका निकोलाई भी चले और परिवार के प्रति, अपने बाप के प्रति, समाज और जनता, हाँ महाराजा, जनता, और अन्त में सरकार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करे। धीरे-धीरे जोश में आते हुए

सिप्यागिन वक्तृता के चरम बिन्दु पर पहुँच गया, उसने राबर्टपीस की तरह अपना हाथ अपने कोट के कालर में डाल रखा था, 'विज्ञान' शब्द पर वह बहुत प्रभावशाली हो गया और एक लैटिन शब्द से—जिसका उसने तुरन्त रूसी में अनुवाद किया, अपना भाषण समाप्त किया। कोल्या को अपने हाथ में एक ग्लास लिए हुए मेज के दूसरे कोने पर अपने पिता के पास धन्यवाद देने और अपने को सबके द्वारा चूमे जाने देने के लिए जाना पड़ा। इस समय फिर मरियाना और नेज्दानोव की आँखें मिल गई। दोनों सम्भवतः एक ही बात अनुभव कर रहे थे लेकिन उन्होंने आपस में बातें नहीं कीं।

नेज्दानोव ने जो कुछ भी देखा वह सब उसे अरुचिकर और उकताहट पैदा करने वाले की अपेक्षा आनन्ददायक और रुचिकर ही लगा और गृहस्वामिनी वालेन्तिना मिखाइलोवना ने एक चतुर स्त्री के रूप में उसे प्रभावित किया। वह जानता था कि वह अभिनय कर रही है और मन ही मन प्रसन्न भी थी कि उसको समझने की क्षमता रखने वाला एक और भी है, जो चतुर और चालाक आदमी है। नेज्दानोव सम्भवतः स्वयं नहीं समझ पा रहा था कि उसके प्रति वालेन्तिना मिखाइलोवना का व्यवहार उसके आत्मगौरव को कितना सन्तुष्ट कर रहा है।

अगले दिन से पढ़ाई फिर शुरू हो गई और नियमित रूप से दैनिक जीवन चलने लगा।

यही एक सप्ताह बीत गया और मालूम ही न पड़ा। इन दिनों में नेज्दानोव के अनुभव और विचारों को उसके एक पत्र के ढंग से जाना जा सकता है, जो उसने अपने सबसे अच्छे मित्र सिलीन को लिखा था। वह उसका सहपाठी था। सिलीन पीटर्सबर्ग में नहीं बल्कि एक सुन्दर नगर में अपने एक धनी सम्बन्धी के साथ रहता था, और उसी पर पूरी तरह से आश्रित था। उसकी स्थिति ऐसी थी कि स्वप्न में भी वहाँ से जाने की बात सोचना उसके लिए व्यर्थ था, वह एक कमजोर, दब्बू और सकुचाया सा, पर अत्यन्त निर्मल स्वभाव का व्यक्ति

था। राजनीति से उस कोई दिलचस्पी नहीं थी और उसने बहुत थोड़ी सी साधारण किताबें ही पढ़ी थी वक्त काटने के लिए वंशी बजाता रहता और जवान औरतों से बहुत डरता था। सिलिन नेज्धानोव से घनिष्ठ स्नेह करता था और वह बड़ा ही स्नेही व्यक्ति था। नेज्धानोव और किसी से अपना हृदय उतना नहीं खोलता था जितना व्लादिमीर सिलिन से। जब कभी वह उसे पत्र लिखता तो उसे ऐसा अनुभव होता जैसे वह उसका कोई अपना निकटतम आत्मीय हो सगा हो और जो दूर रहते हुए भी उसके बिल्कुल निकट है, सामने है। नेज्धानोव एक ही नगर में सिलिन के साथ एक साथी के रूप में रहने की भी कल्पना नहीं कर सकता था। अगर ऐसा अवसर आया होता तो वह तुरन्त उससे ऊब जाता। उन दोनों में इतनी कम समानता थी फिर भी उसे सबसे अधिक पत्र लिखता और खुले दिल से लिखता। दूसरों के साथ कम से कम पत्र में बनावटीपन आ जाता सिलिन के साथ—कभी नहीं। सिलिन लिखने में बड़ा आलसी था बहुत कम पत्रों का उत्तर देता—और वह भी छोटे और बेढंगे वाक्यों में। नेज्धानोव को भी लम्बे चौड़े उत्तर की आवश्यकता नहीं थी। वह यह जानता था कि उसका मित्र उसके प्रत्येक शब्द को पी जाता है वैसे ही जैसे रास्ते की धूल वर्षा की बूँद को पी जाती है। उसकी बातों को पवित्र वस्तु की तरह गुप्त रखता और हृदय के ऐसे कोने में उन्हें छिपा देता जहाँ से वह कभी बाहर न आतीं। वह अपने मित्र के जीवन में एकाकार होकर रहता। नेज्धानोव ने उसके साथ अपने सम्बन्ध दुनियाँ में किसी से भी नहीं बताए थे वे उसके लिए बहुत ही मूल्यवान थे।

'प्रिय मित्र—मेरे पवित्र शब्द व्लादिमीर, वो उसने उसे लिखा—वह उसे हमेशा पवित्र कहता था, और उसके पर्याप्त उपयुक्त कारण भी थे—'मुझे बधाई दो मैं अत्यन्त ही हितकर और सुरक्षित स्थान पर आगया हूँ और अब यहाँ आराम कर सकता हूँ और शक्ति पुनः सञ्चा

हूँ। मैं एक धनी व्यक्ति सिप्यागिन के मकान में शिक्षक की हैसियत से काम कर रहा हूँ। मैं उसके छोटे बच्चे को पढ़ाता हूँ। खूब बढ़िया भोजन करता हूँ, (इतना अच्छा, बढ़िया भोजन अपने जीवन में मैंने पहिले कभी नहीं किया) डट के सोता हूँ और जी भर कर सुहावने प्यारे मैदानों में घूमता हूँ, और सबसे खास बात तो यह है कि मैं थोड़े दिनों के लिए अपने पीटसबर्ग के मित्रों की देख भाल से मुक्त हो गया हूँ और यद्यपि पहिले तो मेरा मन कुछ अजीब सी घुटन और उदासी से ग्रस्त था पर अब मैं उससे मुक्त हो गया हूँ। जल्दी ही मुझे अपने काम में जुट जाना है, (जैसी कि कहावत है कि अगर तुम अपने को कुकुरमुत्ता कहते हो तो तुम्हें डालची में जाना चाहिए) और ठीक इसीलिए उन्होंने मुझे यहां आने दिया है, लेकिन इस बीच में मैं आनन्द पूर्ण आराम का जीवन व्यतीत कर सकता हूँ, मोटा हो सकता हूँ और अगर खूब बन गया तो सम्भवतः कुछ गीत भी लिख सकूँ। इस प्रदेश ने मुझ पर कैसा प्रभाव डाला है यह फिर लिखूंगा। जागीर की व्यवस्था अच्छी मालूम होती है, हालांकि कारखाने में शायद कुछ गड़बड़ है। रहे किसान तो कुछ तो पहुँच से बाहर लगते हैं, और भृत्य बड़े विनीत हैं। लेकिन उन सब पर फिर कभी बात होगी। परिवार के आदमी सभ्य और उदार हैं सिप्यागिन सदैव बड़ा कृपालु और विनम्र रहता है—ओह! बड़ा ही कृपालु, और फिर एकाएक भावुकता में बह जाता है—*बड़ा ही सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति है!* गृहस्वामिनी सौन्दर्य की मूर्ति है—पर मैं कहूँ कि एक मक्कार चिड़िया! वह हर एक पर नजर रखती है और ओह! गजब की कोमल है! जैसे शरीर में एक भी हड्डी न हो! मैं उससे डरता हूँ। औरतों के बीच मैं कैसा सिटपिटा जाता हूँ और अजीब व्यवहार करने लग जाता हूँ, तुम तो जानती ही हो! यहां पर पड़ोसी भी हैं—पर सब निकम्मे! एक बुढ़िया है, जिससे मुझे सख्त चिढ़ है लेकिन एक लड़की में मेरी सबसे अधिक दिलचस्पी है—वह इन लोगों की रिश्तेदार है, या योंही साथ रह रही है, खुदा जाने, मैंने शायद ही उससे दो बातें की होंगी, लेकिन मैं

ऐसा अनुभव करता हूँ कि वह उसी मिट्टी की बनी जिस मिट्टी का मैं बना हूँ।'

इसके आगे नख्मानाव ने अग्निमाना की शक्ल-सूरत और उसके तौर-तरीक़ों का विवरण दिया और तब उसने लिखा —

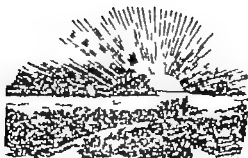
'कि वह दुखी है, गर्वीली, स्वाभिमानी और संयमी है, और सबसे ज़्यादा तो वह अत्यधिक दुखी है मुझे इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। वह दुखी क्या है अभी तो मैं नहीं जानता। वह ईमानदार है, वह मन-दिल साफ़ है पर क्या अच्छे स्वभाव की भी है—यह अभी प्रश्न ही है। क्या कोई स्त्री ऐसी भी है जो पूरी तौर से अच्छे स्वभाव की हो और जो सुन्दर न हो? और क्या ज़रूरी है कि हो ही? वैसे तो मैं औरतों के बारे में बहुत कम जानता हूँ। पर की मासावेन उसे नहीं चाहती और वह भी उसे नहीं चाहती। लेकिन दोनों में से कौन सही है, मैं नहीं जानता। मैं ऐसा समझता हूँ कि घर की मात [illegible] ही ग़लती पर है, यद्यपि मैं देखता हूँ कि वह उसके प्रति विनम्र है जब कि लड़की की भौंहें अपनी अभिमाता से बात करते समय अकड़ाहट से तन जाती हैं। हाँ वह बड़ी ही अकड़ालू स्वभाव की लगती है। इसमें भी वह मुझ जैसी ही है। और वह मेरी ही तरह उसकी [illegible] भी है, हालाँकि सम्भवतः पूर्णतः मेरी तरह नहीं।

अब यह तन ज़रा और साफ़ होगा, तब मैं तुम्हें लिखूँगा।' —

'यह बात हो अभी कुछ ए बोलती है, जैसा कि मैंने अभी कहा, अभिमान जो थोड़ा सा उसने मुझसे पाया है, (हलेगा एकाएक और अप्रत्याशित रूप से) उसमें कुछ रम्य स्पष्टवादिता है और निश्छलता है — मैं उसे पसन्द करता हूँ।

'अब हाँ — ज़रा यह तो बताओ कि क्या तुम्हारे रिश्तेदार तुम्हें अब भी उसी तरह रखते हैं? क्या उसने अपने क्रोध में यार में अभी सामना नहीं किया?

'क्या तुमने ओरेन्बर्ग प्रान्त में अन्तिम सिंहासनाभिलाषियों पर 'योरप-संदेश' में प्रकाशित लेख पढ़ा है ? यह १८३४ में हुआ था, मेरे प्यारे मित्र ! मैं उस पत्रिका की परवाह नहीं करता, और उसका लेखक अनुदार विचारों का है, कंजरवेटिव है, लेकिन यह बड़ी दिलचस्प बात है और सोचने पर विवश करती है ।



माँ

मई का आधा महीना बीत चुका था और भयंकर गरमी के दिन शुरू हो गए थे। एक दिन कौल्या को इतिहास का पाठ पढ़ा चुकने के बाद नेज्यानाव बाग में चला गया और बाग से भोजपत्र के जंगल में चला गया जो बाग से निकलते ही एक ओर दूर तक फैला हुआ था। १५ वर्ष पहिले इस जंगल का एक भाग लकड़ी के व्यापारियों द्वारा कटवा डाला गया था, लेकिन कटे पेड़ों की जड़ों में फिर से कल्ले फूट आए थे और वे सब सुन्दर भोजपत्र के छोटे-छोटे पेड़ बन गए थे। पेड़ों के तने पास पास मटियाली चाँदी के स्तम्भ से लग रहे थे जिन पर भूरे धब्बे पड़े हों। छोटी-छोटी हरी चमकदार पत्तियाँ एक जैसी लग रही थीं, मानो मिस्त्री ने उन्हें काटकर उन पर वार्निश कर दी हो। पिछले वर्ष की गिरी हुई पत्तियों के काले और चौरस ढेरों के बीच से बसन्ती घास ऊपर को अपनी नोंक निकाल रही थी। सारे जंगल में पतली-पतली पगडंडियाँ इधर-उधर फैली हुई थीं। पीली चोंच वाली काली चिड़ियाँ एकाएक

चीख कर, जैसे चौंक पड़ी हो, पगडंडियों पर फड़फड़ाती उड़ने लगीं और ज़मीन के नज़दीक नीचे-नीचे उड़कर पागलों की तरह झाड़ियों में घुस गईं।

आधा घन्टा घूमने के बाद नेग्यानोव, ज़मीन पर कुल्हाड़ी से पेड़ काटने पर छितरे छीलन के बीच कटी पड़ी एक घास पर बैठ गया। अनेक बार उन पर जाड़े में बर्फ जमी और बसन्त में पिघल गई और किसी ने उन्हें स्पर्श भी नहीं किया था। नेग्यानोव एक छोटे भोजपत्र के तने के सहारे पीठ लगाए आँह लगे बैठा था। वह कुछ सोच नहीं रहा था और उसने बसन्ती स्पन्दन पर अपने को कतई छोड़ दिया था जिसमें जवान और वृद्ध दोनों के लिए समान रूप से दुख का अंश रहता है' जवानी में आशा और उम्मीदों की बेचैन व्यथा और बुढ़ापे में पश्चातापों की स्थिर व्यथा।

एकाएक नेग्यानोव ने नज़दीक आती पदचाप सुनी।

यह एक आदमी के आने की आवाज़ नहीं थी, और न तो भारी जूते पहिने किसी किसान या नंगे पैर किसी किसान स्त्री क आने की ही आवाज़ थी। ऐसा लगता था जैसे दो व्यक्ति धीरे-धीरे कदम रखते हुए उधर टहलते चले आ रहे हैं। किसी स्त्री के वस्त्रों की हलकी सी सरसराहट भी सुनाई पड़ी

एकाएक एक खोखला सा पुरुष स्वर सुनाई पड़ा 'तो यह तुम्हारा अन्तिम फैसला है?—कभी नहीं?'

'कभी नहीं?' स्त्री कण्ठ ने उत्तर दिया। यह स्वर नेग्यानोव को परिचित लगा, और थोड़ी देर बाद रास्ते की मोड़ पर जहाँ झाड़ी का घेरा बनाती हुई पगडंडी मुड़ती थी, मरियाना दिखाई पड़ी। पीछे-पीछे मटमैली काली आँख वाला एक आदमी था, जिसको नेग्यानोव ने इसस पहिले कभी नहीं देखा था।

नेग्यानोव दोनों को देखकर ऐसे ठिठक गया, जैसे उन्हें गोली मार दी गई हो, जब कि वह स्वय उन्हें देखकर इतना हक्का-बक्का हो गया

था कि वह जिस शाख पर बैठा था उस पर से उसस उठा तक नहीं गया। मरियाना अपने बालों की जड़ तक शर्म से लाल हो गई। लेकिन तुरन्त ही तिरस्कारपूर्ण मुस्कान उसके होठों पर आ गई। यह मुस्कान किसके लिए थी—अपने लिए, शर्माने के कारण या नेज्दानोव के लिए? उसके साथी की भौंहों में बल पड़ गए, और उसकी व्यग्र धारणा की पीली सफेदी में मन्द प्रकाश छा गया। उसने मरियाना की ओर देखा और फिर दोनों ही नेज्दानोव की ओर पीठ करके धीरे-धीरे चुपचाप आगे बढ़ गए और वह उन्हें स्तम्भित दृष्टि से एकटक देखता रहा।

आध घण्टे बाद वह घर लौटा और सीधा अपने कमरे में चला गया और घण्टे की गूंज के द्वारा पुकारे जाने पर ही ड्राइंगरूम में गया। वहाँ भी उसने उस साँवले रंग के अजनबी आदमी को देखा जिसे उसने थोड़ी देर पहिले जंगल के झुरमुट में देखा था। सिप्यागिन नेज्दानोव को उसके पास तक ले गया और उससे उसका परिचय कराया—'आप मेरे सालारेर्जग हैं—वालेन्तिना मिखालोवना के भाई साहब—सर्गेी मिखालोविना मार्केलोव।'

'मुझे आशा है तुम दोनों में अच्छी पटेगी' सिप्यागिन ने अपनी विशिष्ट गर्वपूर्ण किन्तु थोड़ी-थोड़ी सी मुस्कान के साथ कहा।

मार्केलोव ने निम्र क अभिवादन किया, नेज्दानोव ने भी उसी तरह प्रति उत्तर दिया सिप्यागिन अपने छोटे सिर को थोड़ा हिलाता हुआ और अपने कन्धे सिकोड़ता हुआ, एक ओर हट गया, मानों वह कह रहा हो 'मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया 'अब आप दोनों में दोस्ती होती है या नहीं, मुझे इससे कोई मतलब नहीं?'

तब वालेन्तिना मिखालोवना उन दोनों के पास आई। दोनों अभी तक चुपचाप स्थिर खड़े थे। उसने फिर दुबारा अपनी सुन्दर आँखों में एक अजीब चमक भर कर दोनों का आपस में परिचय कराया। उसने अपने भाई से कहा

'तो किसानों को ही जानने की क्या जरूरत थी ?'

'क्यों नहीं ! क्योंकि उनके लिए प्रूधो या आदम स्मिथ की अपेक्षा वन बिलाव या कैंगारू के बारे में जानना कहीं अच्छा है।'

इसी बात पर सिप्यागिन ने फिर उसे खींचा और बताया कि आदम स्मिथ मानव विचारों का एक प्रमुख प्रकाश स्तम्भ है और यह अच्छा हो कि सब उसके विचारों को (उसने अपने लिए शराब का एक ग्लास बनाया) अपनी मांसपेशियों के (उसने शराब को नाक से सूँघा) दूध के साथ आत्मसात करलें। उसने गिलास खाली कर दिया, कालोमियेत्सेव ने भी शराब पी और उसकी तारीफ भी की।

मार्केलोव ने पीटर्सबर्ग के इस पदाधिकारी की जमीन-आसमान की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन दो बार उसने नेज्दानोव की ओर पूँछती सी दृष्टि से देखा और रोटी की एक गोली को उछालते हुए बकवादी आगन्तुक की नाक की ओर फेंकते-फेंकते रह गया।

सिप्यागिन ने भी अपने साले की चुप्पी को तोड़ने का कोई प्रयास नहीं किया और न वालेन्तिना मिखाइलोवना ने ही उससे कोई बात की। ऐसा लगता था कि दोनों मियां बीबी मार्केलोव को नगण्य और सनकी व्यक्ति समझते थे, जिसको न छेड़ना ही अच्छा है।

भोजन के बाद मार्केलोव पाइप पीने के लिए बिलियर्ड के कमरे में चला गया और नेज्दानोव अपने कमरे में। बरामदे में उसकी मरिआना से मुठभेड़ होगई। वह उसके बगल से गुजरने ही वाला था कि उसने उसे आकस्मिक संकेत से रोक लिया।

'श्री नेज्दानोव उसने भर्राई आवाज से कहना शुरू किया, आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं' लेकिन फिर भी मैं सोचती हूँ कि सोचती हूँ (उसे शब्द नहीं मिल रहे थे) मैं आपको यह बताना ठीक समझती हूँ कि जब आज आप जंगल में मुझे और मार्केलोव कोमिले थे "बताइए इसमें सन्देह नहीं कि आपको आश्चर्य

हुआ था कि क्यों हम लोग घबड़ा गए थे, और क्यों हम लोग यहाँ गए थे मानो पहिले से तै करके गए हों

'थोड़ा अजीब तो मुझे लगा था', नेज्दानोव ने कहा।

'श्री मार्केलोव' मरियाना ने बीच में कहा 'ने मेरे सामने एक प्रस्ताव रखा और मैंने इन्कार कर दिया। यही बात मुझे आप से कहनी थी अच्छा—नमस्कार। आप जो चाहें सो मेरे बारे में सोच सकते हैं।

वह जल्दी से घूमी और तेजी से एक ओर बरामदे में चली गई।

नेज्दानोव अपने कमरे में आकर अपनी खिड़की पर बैठ गया और सोचता रहा 'कैसी अजीब लड़की है। ऐसी सफाई किस लिए? और फिर मैंने तो सफाई चाही भी नहीं थी।

यह क्या है—अपने को अनूठी प्रगट करने की इच्छा या सिर्फ स्नेह, या दर्प? सम्भवतः दर्प ही। वह अपने बारे में थोड़ा सा भी सन्देह नहीं सहन कर सकती वह यह नहीं चाहती कि कोई उसके बारे में गलत धारणाएँ बनाए। अजीब लड़की है।

जब उधर नेज्दानोव बैठा सोच रहा था और उसकी खिड़की के नीचे खुली छत पर उसके बारे में बातें हो रही थीं, जो उसे साफ-साफ सुनाई पड़ रही थीं।

'मैं जानता हूँ', कालोमियेत्सेव जोर देकर कह रहा था 'यह एक खतरा और उग्र प्रजातन्त्रवादी (रिपब्लिकन) है। जब मैं मास्को के गवर्नर जनरल के नीचे स्पेशल कमीशन में काम करता था तो मुझे इन क्रान्तिकारियों और राजद्रोहियों की खूब पहचान हो गई थी। मेरी नाक कभी-कभी इन्हें खुशबू से ही पहचान लेने में बड़ी तेज हो जाती है। कालोमियेत्सेव ने बताया कि कैसे वह एक बार अचानक मास्को के बाहरी भाग में एक छुटे हुए राजद्रोही का पीछा करता हुआ गया था जो अपनी झोंपड़ी की खिड़की से कूद कर भागा था और पुलिस उसका

पीछा कर रही थी। ''और यहाँ वह बिल्कुल शान्त बैठा था, वह बदमाश कहीं का।'

कालोमियेत्सेव यह बताना भूल गया कि वही क्रान्तिकारी, जब जेल में बन्द किया गया, तो उसने खाना खाने से मना कर दिया और उपवास करके मर गया।

'और तुम्हारा यह नया मास्टर ईर्षालु है'—अफसर कहता रहा, 'एक क्रान्तिकारी है, निःसन्देह? क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि वह कभी पहिले नमस्कार नहीं करता?'

'वह पहिले नमस्कार करे भी तो क्यों? श्री मती सिप्यागिन ने कहा, 'बिल्कुल विपरीत—उसकी यही बात तो मुझे पसन्द है'

'मैं उस घर में अतिथि हूँ जिस घर में वह नौकर है', कालोमियेत्सेव ने चिल्लाते हुए कहा—'हाँ, हाँ, पैसे के लिए नौकर है, वेतन भोगी' ''निश्चय ही मैं उससे बड़ा हूँ और उसे पहिले नमस्कार करना ही चाहिए।

'तुम बड़ी जरा-जरा सी बातों पर नाराज हो जाते हो, कालोमियेत्सेव, 'सिप्यागिन ने नाम के 'से' शब्द पर जोर देते हुए कहा, 'यह एक'' अगर तुम उसके कहने के लिए माफ करो, तो यह सब दकियानूसी है। मैंने उसे नौकर रखा है, लेकिन फिर भी वह स्वतन्त्र है।

'वह बड़ा अकड़ू है अकड़,' कालोमियेत्सेव ने कहना शुरू किया। यह सब क्रान्तिकारी ऐसे ही होते हैं। मैं तुम से कहता हूँ कि मैं उनकी नस-नस पहचानता हूँ। सादिमा से सम्भवतः इस सम्बन्ध में मेरी तुलना की जा सकती है। अगर वह मेरे हाथ पड़ जाय' , वह अध्यापक' 'तो मैं उसे जरा ठीक कर दूँ' क्या मैं उसे ठीक नहीं कर सकता! फिर वह कुछ दूसरे ही सुर अलापने लगे, तब क्या वह पहिले से मुझे नमस्कार नहीं करे। 'उसे जरा हाथ लग जाये'' !

"निकम्मा मूर्ख, ढोंगी और मूर्ख !" नेज्दानोव ऊपर से करीब करीब चीखने जा रहा था पर उसी समय उसके कमरे का दरवाजा खुला और नेज्दानोव के लिए पर्याप्त आश्चर्य का विषय बनता हुआ मार्केलोव कमरे के भीतर आया।



छह

नेख्लानोव उससे मिलने के लिए अपनी जगह से उठा, और मार्केलोव भी सीधा उसकी ही ओर आगे बढ़ा और बिना नमस्कार के लिए झुके और मुस्कुराए उसने नेख्लानोव से पूछा कि क्या वह पीटसवर्ग विश्वविद्यालय का विद्यार्थी अलेक्सी दिमित्रिच नेख्लानोव ही है।

'हाँ' नेख्लानोव ने उत्तर दिया।

मार्केलोव ने अपनी बगली जेब से एक खुला हुआ पत्र बाहर निकाला। 'तो फिर इसे पढ़ लो। यह वेसिली निकालोइविच का लिखा हुआ है', उसने अपने स्वर को धीमा करते हुए कहा।

नेख्लानोव ने पत्र खोल कर पढ़ा। वह कुछ अध अधिकृत सरक्यूलर जैसा था, जिसमें मार्केलोव को 'अपना' साथी समझने की सिफारिश की गई थी, पूरी तरह विश्वास के योग्य। उसके बाद मिल-जुल के काम करने की तात्कालिक आवश्यकता पर जोर दिया गया था और कुछ सिद्धान्तों के प्रचार की बात कही

गई थी। सरक्यूलर ग्रोरा के साथ-साथ नेज्यानोव को भी एक विश्वासी साथी समझते हुए उसके नाम भी था।

नेज्यानोव ने मार्केलोव से मिलने के लिए अपना हाथ बढ़ाया उससे बैठने को कहा और स्वयं भी एक कुर्सी पर बैठ गया। मार्केलोव ने एक सिगरेट सुलगाई और उसके साथ-साथ नेज्यानोव ने भी।

'क्या तुम्हें यहाँ किसानों से दोस्ती करने का समय मिला?' मार्केलोव ने पूछा।

'नहीं, मुझे अभी समय नहीं मिला।'

'तो तुम्हें अभी यहाँ ज्यादा दिन नहीं हुए।'

'मुझे यहाँ रहते पन्द्रह दिन पूरे हो जायेंगे।

'काफी व्यस्त रहे?'

'कोई ज्यादा तो नहीं।'

'मार्केलोव ने क्रूरता से खखारा।

'हूँ! यहाँ के किसान बड़े निकम्मे हैं' उसने कहा, 'बिल्कुल अनभिज्ञ। उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है। यहाँ बड़ी गरीबी है लेकिन कोई उन्हें यह बताने वाला नहीं है कि उनकी इस गरीबी का कारण क्या है।'

'जो तुम्हारे बहनोई के दास हैं, जहाँ तक मैं समझ सका हूँ गरीब नहीं हैं, नेज्यानोव ने कहा।

'मेरे बहनोई बड़े बने हुए हैं पक्के ढोंगी, वह लोगों को मूर्ख बनाना खूब जानते हैं। यहाँ के किसानों की भी निश्चय ही कोई अच्छी दशा नहीं है लेकिन उनका एक कारखाना है। वहाँ कोशिश करनी चाहिए। वहाँ जरा सी कोशिश की बात है, फिर तो सारा काम अपने आप बन जायगा। क्या तुम्हारे पास कुछ किताबें हैं?

'हाँ' 'लेकिन अधिक नहीं।'

'मैं कुछ दे दूँगा। लेकिन ऐसा कैसे कि तुम्हारे पास किताबें नहीं हैं?

नेज्दानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। मार्केलोव भी चुप होगया और बस अपनी नाक से धुम्रां निकालता रहा।

'यह कालोमियेत्सेव कैसा जंगली है!' उसने एकाएक कहा। 'भोजन के समय में सोच रहा था कि उस मूसल जैसे धृष्ट चेहरे वाले व्यक्ति के पास जाऊं और ज़रा उसे मज़ा चखा दूं, जिससे दूसरों के लिए मिसाल बन जाय। लेकिन नहीं! उसे हाथ लगाने से ज़्यादा महत्वपूर्ण काम है अभी तो। अभी मूर्खों की मूर्खता और धूर्तता पूर्ण बातों पर गुस्सा करने का समय नहीं है यह समय तो उन्हें धूर्तता करने से रोकने का है।

नेज्दानोव ने सिर हिलाकर अपनी सहमति प्रगट की, और मार्केलोव ने फिर अपनी सिगरेट का कश खींचा।

'यहाँ और नौकरों के बीच एक थोड़ा अक्लमन्द आदमी भी है' उसने फिर कहना आरम्भ किया तुम्हारा नौकर इवान नहीं 'वह तो बुद्धमन्ध है, बल्कि दूसरा 'उसका नाम किरिल है, वह यहाँ भोजन परोसने और ऊपर का काम देखने का काम करता है'—(यह किरिल बड़ा पियक्कड़ है)—'तुमने उस पर ध्यान दिया है। एक पियक्कड़ जंगली' 'लेकिन हम नकचढ़ू तो नहीं हो सकते, तुम जानते ही हो। और मेरी बहन के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?' उसने एकाएक अपना सिर उठाते हुए और नेज्दानोव पर अपनी पीली आँखों को जमाते हुए पूछा। 'वह मेरे बहनोई से भी अधिक ढोंगी है। उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?'

'मैं समझता हूँ कि वह बड़ी सरल और सहज स्वभाव की स्त्री है और फिर, वह सुन्दर है।'

'हूँ। कितनी कोमलता से तुम उसके बारे में कह रहे हो। 'बस इसकी तारीफ ही करते बनती है! अच्छा जहाँ तक ' उसने बात आगे बढ़ाई, लेकिन एकाएक भौंहें सिकोड़ी, उसका चेहरा और काला पड़ गया, और उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। 'मैं सोचता

है, हमें जरा खुलासा बातें कर लेनी चाहिए उसने फिर कहना शुरू किया। 'यह हम यहाँ नहीं कर सकते। कौन जाने बाहर दरवाजे पर सुन रहे हों? क्या तुम जानते हो, मैं क्या सलाह दूंगा? आज शनिवार है, मेरा ख्याल है, कल तुम कोल्या को नहीं पढ़ाओगे? या पढ़ाओगे?'

'कल तीन बजे मुझे उसके तीन हफ्ते की पढ़ाई की रिहर्सल करनी है।'

'रिहर्सल! मानो तुम स्टेज पर हो? जरूर यह सूझ नीदी की ही होगी। अच्छा, एक ही बात है। क्या तुम तुरन्त मेरे साथ आने की कोशिश करोगे? मेरी जगह यहाँ से कुल आठ मील है। मेरे पास तेज घोड़े हैं हवा से बात करने वाले—तुम रात को वहीं ठहरोगे और सवेरा भी वहीं गुजारोगे—और कल तीन बजे तक मैं तुम्हें यहाँ वापस ले आऊँगा। सहमत हो?'

'बिल्कुल' नेज्दानोव ने कहा। मार्केलोव के कमरे में आने के समय से ही वह एक अजीब तनाव और संकोच का अनुभव कर रहा था। उसके साथ उसको इस आकस्मिक प्रगाढ़ता ने उस उलझन में डाल दिया था लेकिन साथ ही वह उसकी ओर खिंचाव का भी अनुभव करता था। वह अनुभव कर रहा था कि उसके सामने एक सुस्त, मन्द लेकिन निःसन्देह ईमानदार और दृढ़ व्यक्ति बैठा है। और फिर मरि याना के साथ जंगल में उसकी भेंट और मरियाना का अप्रत्याशित स्पष्टीकरण'

'तो यह पक्का रहा! मार्केलोव ने कहा। 'तुम तब तक तैयार हो लो और मैं तब तक जाकर बग्घी तैयार करने का आदेश देता हूँ। मैं समझता हूँ, तुम्हें घर के मालिक से पूछने की जरूरत नहीं होगी?'

मैं उनसे कह दूँगा। मैं समझता हूँ, बिना बतलाए जाना ठीक न होगा।

'मैं ही उनसे कह दूँगा, मार्केलोव ने कहा। 'तुम चिन्ता मत करो। वे लोग इस समय ताश से जूझ रहे होंगे, वे तुम्हारी अनुप

स्थिति पर ध्यान भी नहीं देंगे। मेरे जीजा एक महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ बनने का स्वप्न देखते हैं, पर सिवाय ताश खेलने के उन्हें कुछ नहीं आता; ताश वे बड़ा अच्छा खेलते हैं। जो भी हो इस तरह उन्होंने धन खूब कमाया है। तो तुम अब तैयार हो जाओ। मैं तुरन्त सारा प्रबन्ध करता हूं।

मार्फेलोव चला गया और एक घन्टे बाद नेख्लानाव एक पुराने ढंग की बड़ी बग्घी में, एक चौड़ी चमड़े की सीट पर उसकी बगल में बैठा, उसके साथ चला जा रहा था। फूहड़ नाटा कोचवान ऊपर हांकने वाले की सीट पर बैठा मुंह से एक चिड़िया की मधुर संगीत की लय में सीटी बजा रहा था, काले अयाल और पूंछ वाले तीन चितकबरे घोड़े चौरस सड़क पर चौकड़ी भरते दौड़े जा रहे थे। रात के पहिले पहर की छाया में पेड़, झाड़ियाँ खेत, मैदान और नाले साथ-साथ दौड़ते से लग रहे थे, पर पीछे छूटते जा रहे थे।

मार्फेलोव की छोटी सी जागीर (यह छः सौ एकड़ से अधिक नहीं थी और उसकी साल गुजारी सात सौ रुबल थी—उसे बोज्यॉन्कोवो कहा जाता था) प्रान्तीय राजधानी से कुल दो मील पर थी, जब कि सिप्यागिन की जागीर छः मील दूर थी। बोज्यॉन्कोवो पहुंचने के लिए उन्हें नगर को पार करना पड़ा। उन नए मित्रों को आपस में पचास शब्द कहने का भी अवसर नहीं मिला कि उससे पहिले ही उन लोगों को नगर के बाहरी भाग में स्थित मजदूरों की झोपड़ियाँ दिखाई पड़ीं जिनकी छतें लकड़ी की बनी थीं और उखड़ी पुखड़ी सी थीं। उनकी खिड़कियों से मद्धिम रोशनी आ रही थी और तब उन्होंने अपनी बग्घी के पहियों के नीचे नगर की पत्थर की सड़कों की खड़खड़ाहट सुनी। बग्घी सड़क पर दौड़ती हुई इधर-उधर हिचकोले खा रही थी और हर धक्के से उछल उछल पड़ती थी। वे लोग नगर के व्यापारियों के पत्थर के बने सड़ियल से दुमंजिले मकानों और गुम्बजदार मठों और सरायों के पास से होकर गुजरे। शनिवार

की रात थी, सड़कों पर कोई भी आदमी नहीं था, लेकिन सराया में अभी भी भीड़ थी। सराया में से भर्राई भारी आवाज़ से नशे में गाने का स्वर और बाजों की मुरीली धुन आ रही थी। एकाएक एक दरवाजा खुला। उसमें से शराब की तीखी बू आई और लाल रोशनी की लौ। लगभग सभी सराया के दरवाजों पर किसानों की गाड़ियाँ खड़ी थीं जिनमें मोटे रोए के गुदगुदे बड़े पेट के टट्टू जुते हुए थे। वे सिर नीचे को झुकाए बेचारगी की मुद्रा में खड़े थे, ऐसा लग रहा था, जैसे सो रहे हों। शीत कालीन टोपी लगाए एक किसान अपने पथ पर थैला लटकाए, सराय से बाहर आया। गाड़ी के जुए से टकरा कर वह मूर्तिवत् खड़ा रह गया। दुर्बलता से संघर्ष अपने हाथों को इधर उधर फेंकने लगा जैसे मानो कुछ टटोल रहा हो, उसकी टोपी फटी हुई थी और उसकी सूती कमीज भी फटी थी। वह डगमगाते कदम रखता हुआ नंगे पैर—उसके जूते सराय में ही रह गए थे—थोड़ी देर रुका अंगड़ाई ली और फिर जोड़े को झटका देकर चटकाता हुआ और आकस्मिक व राह के साथ वापस चला गया।

'रूसी जनता शराब की गुलाम है।' उदास दुखी स्वर में मार्कसोव ने कहा।

'तुम ही उसे ऐसा बना देते हो, सर्जी मिखाइलोविच!' कोचवान ने बिना पीछे घूमे हुए ही कहा। हर सराय के सामने वह सीटी बजाना बन्द कर देता लगता जैसे गहरे विचारों में डूब गया हो।

'चले चलो चले चलो!' अपने कोट के कालर को दोनों हाथों से खींचते हुए मार्कसोव ने कहा। बग्घी पीछे बाजार को पार कर गई, और दुर्गन्धपूर्ण गन्दे सब्जी के बाजार को पार करती हुई गवर्नर के बर्मेने को भी पार कर गई, जहाँ संतरी पहरा दे रहे थे और किसी की व्यक्तिगत कोठी जिसमें सुन्दर बाग और पेड़ों की कतार लगी थी को भी पार कर गई। उसके बाद फिर एक बाजार पड़ा जिसमें कुत्ते भूँक रहे थे और अजीब गड़क रही थी। इस तरह वे लोग धीरे-धीरे मगर

दरवाजे चौपट खुले पड़े थे, लगता था, ये कभी बन्द ही नहीं किए जाते थे। मकान के घेर के भीतर झुटपुटे में साफ देखा जा सकता था कि दो सफेद घोड़े बंधे हुए थे। दो पिल्ले, वह भी सफेद, कहीं से दौड़ कर आ गए और ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे। लोग-बाग मकान में घूम रहे थे। कुछ झटके और हिचकोले देती हुई, लोहे के पहियों की चर र चूँ करते हुए बग्घी सीढ़ियों के पास आकर रुक गई। मार्केलोव ने नेज्दानोव से कहा 'लो, हम लोग घर आ गए, यहाँ तुम्हें वे लोग मिलेंगे, जिनसे तुम अच्छी तरह परिचित हो और जिनसे मिलने की तुम्हें तनिक भी आशा न होगी। कृपया अब अन्दर आओ।'



ग्यारह

मार्केलोव के यहाँ ठहरे अतिथि हमारे पूर्व परिचित ओस्त्रोदुमोव और मशुरिना निकले। वे दोनों मार्केलोव के साधारण ढंग से सजे ड्राइंग रूम में बैठे थे। उन्हें नेज्दानोव के आगमन से कोई आश्चर्य नहीं हुआ, वे जानते थे कि मार्केलोव उसे अपने साथ लाएगा, लेकिन नेज्दानोव को उन्हें देखकर जरूर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके भीतर घुसते ही ओस्त्रोदुमोव ने कहा "मित्र कैसे हाल-चाल हैं?" और चुप हो रहा। मशुरिना पहिले तो ऊपर से नीचे तक लजा गई, फिर उसने उससे मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। मार्केलोव ने बताया कि यहाँ ओस्त्रोदुमोव और मशुरिना को 'पार्टी का काम' करने के लिए भेजा गया है, जो अब जल्दी ही असली रूप लेने वाला है। यह लोग एक हफ्ता हुआ तभी पीटर्सबर्ग से आए हैं, ओस्त्रोदुमोव तो स० प्रान्त में प्रचार के लिए रहेगा और मशुरिना कुछ लोगों से मिलने के लिए क० प्रान्त जायगी।

मार्केलोव एकाएक गरम हो गया, हालांकि किसी ने भी उसका विरोध नहीं किया था।

वह अपनी मूँछें कुतरता हुआ और जलती आँखों से घूरते हुए भारी उत्तेजित गले से बोला लेकिन एक-एक शब्द अलग-अलग, ऐसे मानो वह अभी ही कुछ कर गुजरेगा। उसने जनता पर हो रहे अन्यायों की बात कही और उनके रोकने के लिए कोई सख्त कदम जल्दी ही उठाने पर जोर दिया। किसान बिल्कुल तैयार है और कायरों के अलावा कोई भी अवसर टालने की बात नहीं कहेगा। फोड़े को चीरने के लिए कुछ हिंसा तो आवश्यक होती ही है, चाहे वह कितना ही पका हुआ क्या न हो। उसकी आवाज में नश्तर जैसा पैनापन था और कई बार नश्तर जैसी तीखी मुस्कान उसके होठों पर आ गई। उससे उसे निश्चय ही आनन्द आया यह उसकी अपनी खोज नहीं थी। उसने किसी किताब में पढ़ा था। ऐसा लगता था कि मानो मरियाना की ओर से निराश होने पर अब उसे कुछ खोने को नहीं रहा था और अब सिर्फ साध रहा था कि कैसे जल्दी से जल्दी 'उद्देश्य' की पूर्ति के लिए काम पर जुट जाया जाय। उसके शब्द कुल्हाड़ी की मार जैसे निकल रहे थे बिल्कुल तीखे, घुस जाने वाले। तेज सरल, काटों वाले किन्तु प्रभावशाली शब्द एक के बाद एक उसके सधे हुए होठों से निकल रहे थे जैसे रह रहकर तेज बूढ़े कुत्ते का भौंकना। उसने कहा कि वह पड़ोसी किसानों और कारखाने के मजदूरों को खूब अच्छी तरह जानता है और उनमें से गोलोप्ल्योक का एरेमी काम का आदमी है जो हर दम हर काम के लिए तैयार रहेगा। गोलोप्ल्योक गाँव का एरेमी नाम निरन्तर उसकी जुबान पर था। हर दस शब्द कहने के बाद वह मेज पर जोर से दाहिना हाथ मारता, हथेली नहीं वरन् हाथ के किनारे से, और बाँया हाथ हवा में घुमाता, एक उंगली अलग निकाले हुए। उसके बालदार, पुष्ट हाथ, यह उंगली जोरदार आवाज और जलती हुई आँखें सब वहाँ प्रभावशाली प्रभाव डाल रहे थे। रास्ते में मार्केलोव ने नेज्दानोव से बहुत कम बात की थी, उसका गुस्सा अन्दर ही अन्दर सुलगता रहा था लेकिन अब वह फूट निकला था। मरियाना और ओस्त्रोदुमोव अपनी मुस्कान से कभी-कभी उसकी ओर देखकर या कभी

एक-मात्र नज़र थालपर उसकी रा ि रहे थे। लेकिन नेज्मानोव में कुछ मनाव उथल-पुथल हो रही थी। पहिन उसने जवाब देने की कोशिश की—जल्दबाजी में बमफरूचरे, बिना सोचे समझे किए गए काम से नुकसान हो जाने की सम्भावना पर ध्यान दिलाया और सबसे अधिक भारचय तो उसे इस बात का था कि यह सब पूर्वनिश्चित-सा था जिसमें न सन्देह को स्थान था और न स्थानीय परिस्थितियों की परीक्षा की सम्भावना ही छोड़ी गई थी और न यह जानने की जरूरत ही समझी गइ थी कि यहाँ के लोग-बाग आखिर चाहते क्या हैं।
लेकिन बाद में उसकी नस में भी तनाव आ गया। उसकी नस-नस सितार के तारों की तरह काँपने लगी और एकदम हताश-सा होकर लगभग आँखों में आँसू भरे हुए, थोड़ी तीखी आवाज से वह भी उसी जोश से बात सोचने लगा जिस जोश से मार्केलोव बोल रहा था बल्कि और भी जोश के साथ। उसमें कौन-सा शक्ति काम कर रही थी यह कहा नहीं जा सकता। क्या अब तक की अपनी उत्साहहीनता का पश्चात्ताप उससे ऐसा काम कर रहा था? या अपने या दूसरों के प्रति पीड़ा और खीझ का भाव था या फिर कोई अन्दर की घुटन थी जो बाहर निकलना चाह रही थी? अथवा अपने साथियों पर जिनमें वह दुबारा मिल रहा था अपनी शक्ति प्रगट करने की इच्छा थी? या मार्केलोव के शब्दों ने उसे प्रभावित किया था—उनके खून को खौला दिया था? सवेरे तक बात-चीत चलती रही ओस्त्रोदुमोव और मशूरिना अपनी जगह से नहीं हिले और मार्केलोव और नेज्दानोव बैठे नहीं। मार्केलोव चार घिन में एक ही जगह खड़ा रहा और नेज्दानोव कमरे में इधर से उधर घूमता रहा धीरे धीरे टहलता रहा। उन्होंने कार्यक्रम के बारे में कार्यान्वित करने के तरीकों के बारे में और किसको क्या-क्या काम होगा बातें की। अपना निश्चय और पर्चों के बण्डल बाँधे। उन्होंने एक उद्योगपति के व्यापारी गोलुश्किन के बारे में जो बातें कीं जो बड़ा ईमानदार पर अपढ़ था। नौजवान प्रचारक किस्ल्याकोव के बारे में बातें

भी पूछा। इस पर मार्केलोव सकुचाया उसने अपनी लम्बी मूछों को सिकोड़ा और अन्त में समझाया कि अभी तक उसके बारे में कुछ निश्चय से नहीं कहा जा सकता शायद किस्त्याकोव कुछ बता सके।

'और यह किस्त्याकोव कौन है?' नेज्दानोव ने व्यग्रता से पूछा। मार्केलोव अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराया कि वह एक आदमी है 'एक ऐसा आदमी'

'हालांकि जिसके बारे में मैं बहुत कम जानता हूं,' उसने कहा, 'अब तक मैंने उसे केवल दो बार देखा है। लेकिन वह जो खत लिखता है। ऐसे होते हैं! मैं तुम्हें दिखाऊंगा तुम आश्चर्य करोगे। ऐसी आग है उसमें। और उसकी क्रियाशीलता! पाँच छः बार उसने रूस का एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर काट डाला है और हर स्थान से उसने दस-बारह पन्नों के पत्र लिखे हैं!

नेज्दानोव ने प्रश्न सूचक दृष्टि से सोलोमिन की ओर देखा, लेकिन वह तो मूर्ती की तरह बैठा हुआ था, उसके पलक तक स्थिर थे और मरियाना के होठ मन्द मुस्कान से भिंचे हुए थे, और वह गूंगी सी स्तब्ध बैठी थी। नेज्दानोव ने मार्केलोव से उसके फार्म पर उसके द्वारा किए गए समाजवादी सुधारों के बारे में पूछने की कोशिश की लेकिन यहाँ सोलोमिन ने टांग अड़ा दी।

'उस पर इस समय बहस करने से क्या फायदा?' उसने कहा 'इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता बाद में तो हर चीज बदलनी ही होगी।

बातचीत फिर राजनीति पर चली गई। नेज्दानोव अब भी एक बेचैनी का अनुभव कर रहा था, जैसे उसके भीतर कोई कीड़ा रेंग रहा हो और उसे काट रहा हो, लेकिन जितना ही वह उत्सुक और उत्साहित होता, उतना ही उसे आन्तरिक पीड़ा होती और उतनी ही तेजी से और जोर से वह बोलता। उसने बीयर का सिर्फ एक ग्लास ही पिया

था, लेकिन बीच-बीच में उसे लगता जैसे वह मदों में बुरी तरह चूर है। उसके सिर में चक्कर मारहे थे और उसका दिल पीड़ा जनक रूप से धड़क रहा था। जब अन्त में सवेरे के चार बज गए, तब कहीं जाकर बहस खतम हुई और पौरी को पार करते हुए सब लोग अलग अलग कमरों में चले गए। लेटने से पहिले नेज्वानोव काफी देर तक स्तब्ध खड़ा रहा, उसकी आँखें अपने आगे फर्श पर जमी हुई थीं। वह, मार्केलोव की बातों में भरी हृदयग्राही कटुता पर सोचता रहा। इस आदमी का स्वाभिमान चोट खाया हुआ है, वह निश्चय ही दुखी है, इसकी अपनी सारी आशाओं पर पानी फिर चुका है और फिर भी वह अपने को कितना भूल गया है—जिसे वह सत्य समझता है, उसके पूरा करने के लिए उसने अपने को कितनी उत्कटता से लगा दिया है! 'एक सीमित व्यक्तित्व' नेज्वानोव का विचार था 'लेकिन क्या ऐसा सीमित व्यक्तित्व मेरे अपने स्वभाव से वास्तव में सौ गुना अच्छा नहीं है?'

लेकिन शीघ्र ही उसने अपनी आत्मग्लानि के प्रति समय प्रारम्भ कर दिया।

ऐसा क्यों? क्या मुझ में त्याग की योग्यता नहीं? जरा ठहरो मेरे मित्र और पाक्लिन तुम भी समय आते ही मान जाओगे, यद्यपि मैं कुछ कलाप्रेमी हूँ और कुछ कविता-वविता भी लिख लेता हूँ '

उसने क्रोध से अपने बाल पीछे को झटके दाँत पीसे और जल्दी से अपने कपड़े उतार कर नम-सर्द बिस्तर पर जा पड़ा।

"अच्छी तरह सोना!" दरवाजे पर से मशूरिना की आवाज आई। 'मैं तुम्हारे बगल में ही हूँ।

'अच्छा नमस्ते', नेज्वानोव ने उत्तर दिया और तब उसे ध्यान आया कि शाम से ही मशूरिना ने अपनी आँखें एक पल को भी उस पर से नहीं हटाईं।

'वह चाहती क्या है?' उसने बुदबुदाया और एकदम से अपने ऊपर

लज्जित होगया। 'ओह, अब यहाँ से जल्दी भाग जाना ही उचित है।'

लेकिन अपनी निराशा व तनाव को शान्त करना उसके लिए कठिन था और जब आखिरकार उसको नींद ने आकर घेरा तो सूरज आसमान में ऊँचा चढ़ चुका था।

जब वह सोकर उठा तो उसका सिर दुख रहा था। उसने कपड़े पहने और अपनी आँखें मलते अपने कमरे की खिड़की पर गया तो देखा कि मार्केलोव के पास खेती का बस नाम मात्र को ही है। उसका यह छोटा सा घर जंगल से बिल्कुल करीब एक टीले के ऊपर स्थित था। एक ओर एक छोटी सी खत्ती, एक अस्तबल, एक तहखाना और एक छोटी सी झोपड़ी थी जिस की घास-फूस की छत आधी गिरी पड़ी थी और दूसरी ओर एक छोटी सी पोखर, एक छोटी सी साग-सब्जी की क्यारी, एक पटसन का खेत, एक दूसरी छोटी सी झोपड़ी थी। उसकी छत भी वैसी ही थी। थोड़ी दूर पर नौकरों की कोठरियाँ, एक खलिहान और खाली पड़ा अनाज ओसने का मैदान था—यही उसकी सारी जागीर दिखाई देती थी। यह सब न सिर्फ गरीबी, अवनति और उपेक्षा की परिचायक थी बल्कि ऐसा लगता था मानो कभी उन्होंने अच्छे दिन देखे ही न हों, ठीक उस पेड़ की तरह जिसकी जड़ें अच्छी तरह न जमी हों। नेज्दानोव उतर कर नीचे गया। मरियाना चायदानी के सामने भोजन घर में बैठी थी। वह निश्चय ही उसका इन्तजार कर रही थी। उसे ज्ञात हुआ, कि ओस्त्रोदुमोव काम पर जा चुका था, और पन्द्रह दिन तक वापस नहीं आयेगा, और मार्केलोव अपने मजदूरों की देख भाल करने चला गया था। क्योंकि मई का महीना बीत रहा था और अब कोई जरूरी काम करने को था नहीं, इसलिए मार्केलोव ने बिना किसी बाहरी सहायता के भोजपत्रों का एक जंगल काटकर साफ करने की योजना बनाई थी, और तड़के सवेरे ही वहाँ चला गया था।

नेज्दानोव अपने दिल में एक अजीब थकान सी अनुभव कर रहा था। उद्देश्य की पूर्ति के लिए अमल करने में अधिक देर करने की

असम्भवता पर पहली रात बहुत कुछ कहा जा चुका था, कई बार यह कहा गया था कि अब सिर्फ 'अमल करना' ही बाकी रहा है। पर कैसे अमल किया जाय ? किस दिशा में, और बिना देर किए किस प्रकार? यह सब अस्पष्ट था। मशुरिना से इस विषय पर प्रश्न करना व्यर्थ था। उसे क्या करना है, कैसे करना है की कोई शंका ही नहीं थी, उसे क— प्रान्त जाना है बस इतना उसके लिए काफी था। इसके आगे न वह सोच सकती थी और न देख सकती थी। नेज्दानोव नहीं सोच पा रहा था कि उससे क्या कहे! चाय पीने के बाद अपनी टोपी लगाकर वह मोजपथ के जंगल की ओर चला गया। रास्ते में उसे खेतों में खाद डालते हुए कुछ किसान मिले जो पहिले मार्केलोव के फार्म पर मजदूर थे। उसने उनसे बातें करनी शुरू कीं लेकिन उसे उनसे कुछ विशेष पता न लग सका। वे भी थके हुए लग रहे थे, पर सिर्फ साधारण शारीरिक श्रम से जैसी थकान वह अनुभव कर रहा था, वैसी बिल्कुल नहीं। उनके कथनानुसार उनका पहिला मालिक अच्छे स्वभाव का सीधा-साधा सा लेकिन अजीब निराला व्यक्ति है उन्होंने पहिले ही से कह दिया था कि उसका विनाश हो जायगा क्योंकि उसे काम करने का सलीका नहीं आता और हर काम को अपने ढंग से करना चाहता है, जैसे उसके पिता-बाबा आदि ने पहिले किया था, वैसे नहीं। लेकिन वह बड़ा चतुर है, और किसी भी प्रकार कोई उसे मूर्ख भी नहीं बना सकता, लेकिन स्वभाव का अच्छा है। नेज्दानोव आगे बढ़ा और मार्केलोव के पास पहुँच गया।

वह मजदूरों के बीच घिरा हुआ चला आ रहा था। दूर से ही यह अनुमान किया जा सकता था कि वह उनसे बातें कर रहा था और उन्हें कुछ समझा रहा था। उसने निराशा से हवा में अपना हाथ झुलाया जैसे मानों वह निराश हो गया हो! उसके पीछे उसका सहकारी कारिन्दा था—एक उदास आँखोंवाला नौजवान। उसमें अफ़सरियत जरा भी नहीं लग रही थी। वह कारिन्दा बार-बार कह रहा था,

'हुजूर जैसा चाहेंगे वैसा ही होगा।' इससे उसका मालिक और भी खीझ रहा था। वह उससे अधिक समानता और स्वतन्त्रता का व्यवहार चाहता था। नेज्यानोव मार्केलोव के पास गया तो उसने उसके चेहरे पर भी उसी तरह की आध्यात्मिक क्लान्ति का भाव देखा, जिससे वह स्वयं पीड़ित हो रहा था। दोनों ने परस्पर अभिवादन किया। मार्केलोव एकदम से रात की बहस पर और निकटस्थ क्रान्ति की सम्भावनाओं पर बातें करने लगा, यद्यपि संक्षेप में ही... लेकिन क्लान्ति का भाव उसके चेहरे पर से नहीं हटा। वह ऊपर से नीचे तक धूल और पसीने से अटा हुआ था... लकड़ी की छीलन, और दलदल की हरी सेवार के टुकड़े उसके कपड़ों से अटके हुए थे... उसकी आवाज भारी और भर्राई हुई थी।

उसके आस-पास खड़े लोग चुप थे... वे कुछ तो आश्चर्य में थे और कुछ उसकी बातों में मजा ले रहे थे। ... नेज्यानोव ने मार्केलोव की ओर देखा और ओस्त्रादुमोव के शब्द पुनः उसके मस्तिष्क में प्रतिध्वनित हो उठे 'क्या फायदा? इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता... यह सब कुछ तो बाद में बदलना होगा।' एक मजदूर जिससे किसी तरह की कोई गल्ती होगई थी... मार्केलोव से अपना जुर्माना कम करने की विनय कर रहा था। पहिले तो मार्केलोव गुस्से में उबल पड़ा और बड़ी जोर से उस पर चीखा लेकिन बाद में उसने उसे माफ कर दिया... 'इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता... यह सब बाद में बदलना होगा।' ... नेज्यानोव ने उससे घोड़े और सवारी के प्रबन्ध की बात कही ताकि वह घर वापस जा सके। मार्केलोव को उसकी इच्छा सुनकर आश्चर्य हुआ, लेकिन उत्तर दिया कि शीघ्र ही सब प्रबन्ध हो जायगा।

वह नेज्यानोव के साथ ही घर वापस गया। ... थकान के मारे वह चलने में लड़खड़ा रहा था।

'तुम्हें हुआ क्या है?' नेज्यानोव ने पूछा।

'मैं थक गया हूँ!' मार्केलोव ने कहा। उसके स्वर में उपेक्षापूर्ण

सिगरेट पी। नगर की सीमा पर पहुँच कर उसने एक दीर्घ सांस छोड़ी।

'मुझे सर्जीमिखालोविच के लिए दुःख है' उसने कहा और उसका चेहरा मलिन पड़ गया।

'वह चिन्ताओं से पस्त हो गया है,' नेज्दानोव ने कहा, मेरा ख्याल है कि उसकी जागीर की हालत बड़ी गड़बड़ चल रही है।

'इस कारण से मैं उसके लिए दुखी नहीं हूँ।'

तब फिर ?'

'वह बड़ा दुखी आदमी है, अभागा। उससे भला आदमी कहाँ मिल सकेगा ? लेकिन कोई—कोई उसे नहीं चाहता।'

नेज्दानोव ने मशुरिना की ओर देखा। 'तो, क्या तुम उसके बारे में कुछ जानती हो ?'

'मैं कुछ नहीं जानती पर अनुमान तो हर कोई देखकर लगा ही सकता है। अच्छा, नमस्ते अलेक्सी दिमित्रिच !'

मशुरिना बग्घी से उतर गई और एक घन्टे बाद नेज्दानोव सिप्यागिन के मकान के हाते में प्रवेश कर रहा था। उसकी तबियत ठीक न थी। बिना सोए ही उसने पूरी एक रात बिताई थी और फिर वह सारी बहस और बात चीत

खिड़की में से एक खूबसूरत मुखड़ा झांका और उसे देखकर प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान से खिल उठा' श्रीमती सिप्यागिन वापसी पर उसका स्वागत कर रही थीं।

'कैसी गजब की आँखें हैं इसकी !' उसने सोचा।



बारह

खाने पर बहुत से लोग आये थे। खाने के बाद नेज्दानोव उस भीड़-भाड़ में अपने कमरे में खिसक गया। वह अकेला रहना चाहता था ताकि अपनी यात्रा के प्रभावों पर मनन कर सके। भोजन की मेज पर वालेन्तिना मिखालोवना ने अनेक बार ध्यान से उसकी ओर देखा पर बात करने का अवसर न पा सकी। मरियाना जो उस अप्रत्याशित घटना के बाद जिसने उसे इतना शर्मा दिया था, अपने से ही लजाई हुई लग रही थी और उससे आँख नहीं मिला रही थी। नेज्दानोव ने कलम उठा लिया, उसे इच्छा हुई कि वह अपने मित्र सिलिन से कागज पर बात-चीत करे लेकिन वह नहीं सोच पा रहा था कि अपने मित्र से भी वह कहे भी तो क्या कहे या शायद अनेक परस्पर विरोधी विचार और अनुभूतियाँ उसके मस्तिष्क में परस्पर टकरा रहीं थीं। उन्हें सुलझाने का उसने प्रयास नहीं किया और मित्र को पत्र लिखने का विचार दूसरे दिन के लिए टाल दिया। खाने की पार्टी

सिगरेट पी। नगर की सीमा पर पहुँच कर उसने एक दीर्घ साँस छोड़ी।

'मुझे सर्जेमिखासोविच के लिए दुख है', उसने कहा और उसका चेहरा मलिन पड़ गया।

'वह चिन्ताओं से पस्त हो गया है,' नेख्लानोव ने कहा मेरा ख्याल है कि उसकी जागीर की हालत बड़ी गड़बड़ चल रही है।

इस कारण से मैं उसके लिए दुखी नहीं हूँ।

'तब फिर?

'वह बड़ा दुखी आदमी है, अभागा! उससे भला आदमी कहाँ मिल सकेगा? लेकिन कोई—कोई उसे नहीं चाहता।'

नेख्लानोव ने मथुरिना की ओर देखा। 'तो क्या तुम उसके बारे में कुछ जानती हो?'

'मैं कुछ नहीं जानती पर अनुमान तो हर कोई देखकर लगा ही सकता है। अच्छा, नमस्ते अलेक्सी दिमित्रिच!'

मथुरिना बग्घी से उतर गई और एक घण्टे बाद नेख्लानोव सिप्यागिन के मकान के हाते में प्रवेश कर रहा था। उसकी तबियत ठीक न थी। बिना सोए ही उसने पूरी एक रात बिताई थी और फिर वह सारी बहस और बात-चीत

खिड़की में से एक खूबसूरत मुखड़ा झाँका और उसे देखकर प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान से खिल उठा श्रीमती सिप्यागिन वापसी पर उसका स्वागत कर रही थीं।

'कैसी गजब की आँखें हैं इसकी! उसने सोचा।



बारह

खाने पर बहुत से लोग आये थे। खाने के बाद नेज्दानोव उस भीड़-भाड़ में अपने कमरे में खिसक गया। वह अकेला रहना चाहता था, ताकि अपनी यात्रा के प्रभावों पर मनन कर सके। भोजन की मेज पर वालेन्तिना मिखाइलोव्ना ने अनेक बार ध्यान से उसकी ओर देखा पर बात करने का अवसर न पा सकी। मरियाना, जो उस अप्रत्याशित घटना के बाद जिसने उसे इतना शर्मा दिया था, अपने से ही लजाई हुई लग रही थी और उससे आँख नहीं मिला रही थी। नेज्दानोव ने कलम उठा लिया। उसे इच्छा हुई कि वह अपने मित्र सिलिन से कागज पर बात चीत करे, लेकिन वह नहीं सोच पा रहा था कि अपने मित्र से भी वह कह भी तो क्या कहे, या शायद अनेक परस्पर विरोधी विचार और अनुभूतियाँ उसके मस्तिष्क में परस्पर टकरा रही थीं। उन्हें सुलझाने का उसने प्रयास नहीं किया और मित्र को पत्र लिखने का विचार दूसरे दिन के लिए टाल दिया। मार्के की पार्टी

में मिस्टर शालोमियेसेय भी थे। उसने इतनी अधिक उदंडता और और शरीफाना औद्धत्य पहले कभी नहीं दिखाया था, जितना उस दिन, लेकिन उसकी मन मानी चुटकियां और रिमार्कों का नेख्यानाव पर कोई असर नहीं हुआ। उसने उन पर ध्यान ही नहीं दिया। वह एक प्रकार के बादल में बंद सा लगता था, जो उसके और बाकी संसार के बीच एक धुंधले परदे जैसा खड़ा था— और आश्चर्य है कि इस पर्दे के पीछे वह तीन चहरे का देख सकता था, और तीनों ही स्त्रीयों के चहरे। उन तीनों की आँखें निरन्तर उस पर गड़ी हुई थी श्रीमती सिप्यागिन, मशुरिना और मारियाना। इसका क्या मतलब था? और केवल यही तीन क्या? उन सबमें क्या समानता थी? और वे उससे क्या चाहती थीं?

वह जल्दी ही सोने चला गया पर सो न सका। विचार, उद्विग्न मलिन विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे यद्यपि ठीक पीड़ा जनक नहीं अवश्यम्भावी अन्त, मृत्यु के विचार। वह जाने-पहचाने विचार थे। वह अरसे से उन पर सोच रहा था, कभी विनाश की सम्भावना से काँपते हुए, और कभी इसका स्वागत करते हुए, लगभग उनसे आनन्दित होते हुए। आखिरकार उसने अजीब उत्तेजना का अनुभव किया जिसे वह खूब जानता था। वह उठ बैठा लिखने की मेज पर बैठ गया और, थोड़ा सोचने के बाद, लगभग बिना कुछ काटा-छाँटी किए उसने अपनी पवित्र गुप्त डायरी में निम्नलिखित कविता लिख डाली—

'प्रियवर मेरे मरते समय—

यह मेरी वसीयत है
मेरी सब कृतियों को जमा कर जला देना,
ताकि मेरे साथ ही वे भी नष्ट हो जाँय!
फिर मुझे पुष्पों से खूब सजाना,
और मेरे कमरे में धूप को आने देना,

संगीतज्ञ का मेरे द्वार पर नियुक्त कर देना,
पर उनको शोक संगीत मत प्रवाहित करने देना!
लेकिन आमोद-प्रमोद में क्षणों की तरह,
हर्षोन्मत्त युरोपी शहनाइयाँ बजवाना
जिनके ऊपर झूमती हुई और उनमद
वाल्ज की रागिनी मुखर हो।
तब जैसे जैसे मेरे निर्जीव होते कानों में,
यह मस्ती भरा संगीत मन्द होता जायगा
मैं भी तन्द्रालस होकर
मृत्यु को प्राप्त होता जाऊँगा।
तुम व्यर्थ-विलाप से उस शान्ति का
भंग मत करना
जो मृत्यु के साथ ही आती है।
मैं अपनी धरती की आनन्दकारी क्यारियों से,
निद्रामग्न होकर
चुपचाप कहीं दूर, दूसरे लोक में
प्रस्थान कर जाऊँगा।

जब उसने 'मेरे प्यारे' शब्द लिखे तब वह सिलिन के बारे में सोच रहा था। उसने अपनी कविता गुनगुनाई और यह देख कर चकित रह गया कि उसकी कसम व क्या बिन गया। जीवन के प्रति ऐसा अविश्वास, ऐसी उपेक्षा ऐसी दिलचस्पी अनास्था यह सब उसके सिद्धान्तों में कैसे मन आता है? उसने मार्कलोव के यहाँ क्या कहा था? उसने डायरी मेज की दराज में फेंक दी और फिर अपने बिस्तर पर आ पड़ा। लेकिन सबेरे के वक्त जब नया पक्षियों का पहला टोल पीताभ आसमान में चहचहाता हुआ उड़ता आ रहा था तब कहीं जाकर उसे नींद आ सकी।

८

दूसरे दिन उसने अभी-अभी पढ़ाना समाप्त किया था और बिलियर्ड के कमरे में बैठा था कि श्रीमती सिप्यागिन भीतर आयीं। उन्होंने चारों ओर देखा और मुस्कराते हुए उसके पास जाकर उससे अपने कमरे में आने को कहा। वह एक हल्की नाज़ुक ड्रेस पहने हुए थी, बहुत सादी और बहुत आकर्षक और सुन्दर, उसकी आस्तीनें कोहनी पर झालर के रूप में समाप्त हो गयी थीं, एक चौड़ा रिबन उसकी कमर को घेरे हुए था, उसके घने घुंघराले बाल उसकी गर्दन पर बिखरे हुए थे। उसकी हर चीज़ से उसके अर्धनिमीलित नेत्रों के संयमित विवेक से, स्वर की कोमल मदता से, भावभंगिमाओं और उसके चलने के आकर्षक ढंग से करुणा और सहानुभूतिपूर्ण कोमलता, एक बढ़ पर झलक पड़ने को उठावली स्निग्धता झलकी पड़ती थी। श्रीमती सिप्यागिन उसे अपने कमरे में ले गई, जो सुन्दर, आकर्षक प्रकाशयुक्त था और जो इत्र तथा फूलों की सुगन्धि तथा एक सुन्दरी के वस्त्रों की पवित्र ताज़गी एवं एक सुन्दरी की उपस्थिति से भरा हुआ था। उसने उसे एक आराम कुर्सी पर बैठाया स्वयं उसके पास बैठ गई और उसकी यात्रा के विषय में और मार्केलोव के बारे में, अत्यन्त सावधानी के साथ शराफ़त से और मधुरता से प्रश्न करने लगी। उसने अपने भाई के प्रति हार्दिक लगाव प्रगट किया जिसका उसने अब तक नेज्दानोव से एक बार भी उल्लेख नहीं किया था। उसके कुछ शब्दों से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि मरियाना के प्रति मार्केलोव के भाव उससे छिपे नहीं थे। स्वर कुछ दुखी था—चाहे इसलिए कि मरियाना ने उसकी भावनाओं का प्रति उत्तर नहीं दिया, या इसलिए कि उसके भाई ने एक ऐसी लड़की को पसन्द किया, जिसके विषय में वह कुछ नहीं जानता और उसे निराश हुई, यह स्पष्ट नहीं हुआ। लेकिन यह तो स्पष्ट था, कि वह निश्चित रूप से नेज्दानोव को जीतने का अपने प्रति उसमें विश्वास पैदा करने का और अपने साथ उसके संकोचों को मिटाने का प्रयास कर रही थी। वालेन्तिना मिखाइलोवना यहाँ तक बढ़ गई कि उसके बारे में गलत धारणाएँ रखने के लिए नेज्दानोव को उसने झिड़का भी।

नेख्लानोव उसे सुनता रहा, उसकी बाहों को देखता रहा और उसके कंधों को भी, और कभी-कभी उसके गुलाबी होंठों को भी और उसने उसके धीरे-धीरे झूमते हुए घुँघराले बालों को भी देखा। शुरू में तो वह बड़ा संक्षिप्त सा उत्तर देता रहा वह अपने गले और सीने में थोड़ा खिंचापन और घुटन का अनुभव कर रहा था लेकिन धीरे धीरे उस अनुभूति का स्थान एक दूसरी अनुभूति ने ले लिया जो बेचैनी पैदा करने वाली तो थी ही, पर मधुर थी। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसी अद्वितीय सुन्दरी ऐसी कुलीन सुन्दरी उसमें दिलचस्पी लेने लगेगी, उसमें, जो महज एक विद्यार्थी है। और वह सिर्फ उसमें दिलचस्पी ही नहीं ले रही थी बल्कि लगता था कि जैसे वह उससे थोड़ा-थोड़ा प्रेम प्रदर्शन भी करने लगी थी। नेख्लानोव ने अपने से प्रश्न किया कि वह ऐसा क्यों कर रही है, पर उसे कोई उत्तर न सूझा, और न वह उत्तर पाने का ऐसा इच्छुक ही था। श्रीमती त्रिप्यागिन ने कोल्या के बारे में बातें कीं। उसने नेख्लानोव को यह आश्वासन भी दिया कि वह तो अपने पुत्र की शिक्षा पर गम्भीरता से बात करना चाहती है इसीलिए वह रूसी बच्चों की शिक्षा के विषय में उसके विचार जानना चाहती है। वह उसके विषय में अच्छी तरह सारी बातें जानना चाहती है। जितना अचानक उसकी यह चाहना प्रगट हुई वह किसी को अजीब सी लग सकती है लेकिन इसका मूल इसमें नहीं था, जो मदाम वालन्तिना मिखाइलोवना ने कहा था, बल्कि इस बात में था कि इन्द्रीय सुख की तरंग जैसी किसी भावना ने उसे अभिभूत कर दिया था जीतने की अदम्य इच्छा, इस हठी व्यक्ति को अपने कदमों पर गिराने की इच्छा उसमें जाग उठी थी

लेकिन यहाँ हमें थोड़ा पीछे जाकर बात को स्पष्ट करना चाहिए। वालन्तिना मिखाइलोवना एक मूर्ख और चालाक निरुत्साही जनरल की बेटी थी, जिसे अपनी पचास वर्ष की नौकरी में केवल एक तमगा और एक बैज मिल सका था। वह बड़ा ही धूर्त और दुष्ट किस्म का भी था। उसमें

वाला मोटा रूसी था। वालेन्तिना मिखाइलोवना अनेक रूसी औरतों की ही तरह ऊपर से बड़ी सीधी, और मूर्ख सी भी, भोली भाली थी, और वह यह खूब जानती थी कि किसी से अधिक से अधिक काम कैसे बनाया जा सकता है। वालेन्तिना मिखाइलोवना के माता-पिता खाते-पीते लोग न थे। वह किसी तरह स्मोल्नी कान्वेंट में भर्ती हो गई। वहाँ वह यद्यपि रिपब्लिकन मानी जाती थी, फिर भी उसकी प्रतिष्ठा थी, क्योंकि वह पढ़ने में मेहनती थी और उसका व्यवहार बड़ा शिष्ट था। स्मोल्नी कॉन्वेन्ट छोड़ने के बाद, वह अपनी माँ के साथ (उसका भाई देहात चला गया था और पिता की मृत्यु हो गई थी) एक साफ सुथरे सीले फ्लैट में रहने लगी थी। कमरे में जब लोग बात करते होते तो उनके मुँह से साँस सील के मारे भाप सी निकलती दिखाई पड़ती। वालेन्तिना मिखाइलोवना हँस कर कहा करती कि यह 'चर्च में रहने जैसा' था। वह गरीबी की सारी मुश्किलों को सहन करने में बड़ी पक्की थी। उसका स्वभाव बड़ा ही अच्छा था। अपनी माँ की सहायता से वह अपने रहन-सहन के स्तर को कायम रखने और लोगों से जान-पहचान बढ़ाने में सफल रही। कुलीन और बड़े लोगों में भी उसके सौन्दर्य, उसके सुभावने शिष्ट व्यवहार और कुलीन वंश की चर्चा होती। वालेन्तिना मिखाइलोवना के कई चाहने वाले थे। उसने सबमें से सिप्यागिन को पसन्द कर लिया था और बड़ी सरलता से, शीघ्रता से और बड़ी चतुराई से उसे अपने प्रेम में फाँस लिया। यद्यपि, निश्चय ही सिप्यागिन ने भी शीघ्र ही यह समझ लिया था कि उसे इससे अच्छी पत्नी नहीं मिल सकती थी। ऊपर से यह चतुर हँसमुख और अच्छे मधुर स्वभाव की थी। किन्तु मूलतः वह सहानुभूतिहीन और दूसरों के प्रति उदासीन रहने वाली थी। लेकिन अपने प्रति दूसरों की उपेक्षा और बेरुखी के विचार तक को भी वह सहन नहीं कर सकती थी। वालेन्तिना मिखाइलोवना के सौन्दर्य में एक आकर्षण था, वह एक आकर्षक अहम्मन्यता की अपनी विशेषता है जिस आकर्षण में न कविता होती है और न सच्ची सद्भावना ही। पर स्निग्धता और

सहानुभूति होती है, और सामूहिकता भी। इन आकर्षक महिलाओं का कभी विरोध नहीं करना चाहिए, यह शक्ति के प्रेमी होते हैं और दूसरों की स्वतन्त्रता का सहन नहीं कर सकते। सिप्यासिना जैसी स्त्रियाँ अनुभवहीन और भावुक स्वभाव के लोगों को उत्तेजित कर देती हैं और फिर उनसे अपना उल्लू सीधा करती हैं। लेकिन अपने लिए ये नियमित और शान्तिपूर्ण सच्चरित्र जीवन पसन्द करती हैं। ऐश्वर्य ऐसी स्त्रियों के कदम अपने आप चूमता है और वे स्वयं अन्दर से अविचलित रहती हैं लेकिन दूसरों को अपने आकर्षण से विचलित करने और उनसे खेलने की इच्छा शक्ति हरदम उनमें बलवती रहती है, जो उन्हें स्वयं को भी सक्रिय और बुद्धिमान व्यवहार कुशल बना देती है। उनकी इच्छा शक्ति बड़ी-ही बलवान होती है और उनका जादू इसी इच्छा शक्ति के बल पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अनजाने अचेतनरूप में ऐसी स्निग्ध किरणें जब किसी पवित्र और सात्विक व्यक्ति में प्रवेश करती हैं, तो उसके लिए संयत रहना कठिन हो जाता है। वह इस आशा में इन्तजार करता है कि अब समय आया, अब बर्फ पिघली लेकिन वह स्वच्छ धवल प्रपात की नोक का ही प्रतिबिम्बित करती रहती है, कभी पिघलती नहीं और न कभी वह उसकी झिलमिलाहट को ही अस्थिर होते देख पाएगा।

इस प्रकार का प्रेमाचार सिप्यासिना के लिए कोई महत्व नहीं रखता था। वह खूब जानती थी कि उसके लिए कोई खतरा नहीं था और न कभी हो सकता है। दूसरों की आँखें निराशा से धुँधली कर देना और फिर उनमें चमक पैदा करना, दूसरे के गालों को लालसा की ललक और आशा की मिली जुली अनुभूति से गुलाबी करना और सुरभित देना, दूसरे की आवाज में कम्प और लड़खड़ाहट पैदा करना, दूसरे की आत्मा को पीड़ित करना—आह, यह सब उसकी आत्मा को कितना मधुर लगता था, कितना प्रिय! काफी रात गये, जब वह अपने, पवित्र नीड़ में भरपूर गर्मी होती है, तब उन बेचैन आहों, हृदय के

उद्‌गारों, निराश आँखों और निश्वासों को याद करना उसको कितना सुखद लगता था। कैसी सुखी मुस्कान से वह अपने में ही अपनी अप्राप्यता, अपनी दुर्भेद्यता और अपने अखंड अभेद्य सतीत्व की आत्मानुभूति के आनन्द में विभोर हो जाती और मोहक उदारता से वह अपने कुलीन पति के वैध आलिंगन में अपने को सौंप देती थी। इस प्रकार की अनुभूतियाँ उसके लिए इतनी सन्तोषप्रद और सुखद होतीं कि कभी कभी वह निश्चित रूप से प्रभावित हो उठती और कोई दयापूर्ण कार्य करने के लिए और किसी प्राणी की सहायता करने के लिए उद्यत हो जाती। एक बार उसने एक दूतावास के एक सचिव के नाम पर, जिसने उसके प्रेम में पागल होकर अपना गला काट डालने का प्रयास किया था, एक दानगृह खुलवा दिया था। उसने हृदय से उसकी जीवन रक्षा के लिए प्रार्थना भी की थी यद्यपि धर्मभाव शुरू से ही उसमें कम था।

तो उसने नेख्ल्यानोव से बात की और उसे अपने कदमों पर झुकाने की हर मुमकिन कोशिश की। उसने उसे अपना विश्वास पात्र बना लिया, उसने मानो कि अपने आप को उस पर प्रकट कर दिया और वह एक अर्ध-मातृत्व-पूर्ण कोमलता से इस बहुत सुन्दर लगने वाले, दिलचस्प कठोर उग्र नवयुवक क्रान्तिकारी को धीरे-धीरे और सकुचाते हुए अपने प्रभाव से अभिभूत होते देखती रही। एक दिन में, एक घंटे में, एक मिनट में—यह सब ओझल हो जायगा, कोई चिन्ह भी न बचेगा लेकिन वह फिर भी इसमें आनन्द लेती। यह सब उसे बड़ा मनोरंजक बल्कि करुण बल्कि मार्मिक भी लगता। उसके जन्म की बाता का भूल कर और यह सोचते हुए कि जो व्यक्ति जीवन में एकाकी है, वह अजनबियों द्वारा अपने प्रति उनकी रुचि से कैसा आनन्द का और सुख का अनुभव करता है वासेन्तमा मिखालोवना नेख्ल्यानोव से उसको बचपन और परिवार के बारे में पूछने लगी। लेकिन उसके उलझे हुए और संक्षिप्त उत्तरों से तुरन्त यह अनुमान करते हुए कि उसने

बड़ी भूल की। वालेन्तिना मिखाइलोवना ने अपनी गलती को सुधारने की कोशिश की और अपना दिल और भी चतुराई के साथ उसके सामने खोल कर रख दिया जैसे दुपहरी की उनींदी गर्मी में एक पूर्ण विकसित गुलाब अपनी सुगन्धित पंखुड़ियां को खोलता है, जो शीघ्र ही रात्रि की स्फूर्ति दायक शीतलता से पुन बन्द हो जाती हैं।

जो भी हो अपनी भूल का पूरी तरह से निराकरण करने में वह सफल नहीं हुई। नेज्दानोव का भ्रम छू गया था। वह पहले जैसा आश्वस्त अनुभव न कर सका। जैसी कटुतापूर्ण अनुभूती हमेशा उसे होती थी, जो हमेशा उसके अन्तस्तल को पीड़ित करती रहती थी फिर से जाग उठी। उसकी जनवादी शंका और आत्मग्लानि जाग उठी थी। 'इस सब के लिए तो मैं यहां नहीं आया था' उसने सोचा, पाकिलन की व्यंगपूर्ण सलाह उसे याद आ गयी और चुप्पी के पहिले अवसर का ही लाभ उठा कर वह उठ खड़ा हुआ और थोड़ा झुक कर अभिवादन करता हुआ बाहर निकल आया। कैसा तो मूर्ख हूं मैं। अपने मन ही मन अपने बारे में कहे बिना वह न रह सका।

उसका संकोच वालेन्तिना मिखाइलोवना से छिपा न रह सका लेकिन जिस हंसिल सी मन्द मुस्कान से वह उसे बाहर जाते देखती रही, उससे यह अनुमान होता है कि उसके संकोच ने उसके अहं को चोट दिया और उसका झिझककर भाग जाने को उसने अपनी विजय समझा।

बिलियर्ड के कमरे में नेज्दानोव की मरियाना से भेंट हो गयी। वह अपने हाथों को परस्पर कसकर बांधे हुए, वालेन्तिना मिखाइलोवना के कमरे के दरवाजे के पास वाली खिड़की से पीठ टिकाए गमगीन खड़ी था। उसके चेहरे पर कालिमा छाई हुई थी, लेकिन उसकी आंखें इतना प्रश्नवाचक दृष्टि से देख रही थीं, नेज्दानोव पर इतनी निर्निमेष टकटकी बांध देख रही थीं उसके जोर से भिंचे हुए होठों पर इतनी तिरस्कार इतनी अपमानजनक दया दृष्टिगोचर हो रही थी कि उसे देख कर वह स्तब्ध, स्थिर, सकते की सी हालत में खड़ा रह गया।

आपको मुझसे कुछ कहना है ?' अनचाहे वह पूछ बैठा।

मरियाना ने तुरन्त कोई जवाब नहीं दिया। 'नहीं' या' शायद हाँ, कहना है। लेकिन अभी नहीं।'

'तब, कब ?'

'थोड़ा इन्तजार कीजिए। शायद—कल, शायद—कभी नहीं। आप तो जानते ही हैं कि मैं आपके बारे में बहुत कम जानती हूँ।'

'फिर भी', नेज्दानोव ने कहा, मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है " कि हम लोग—'

'और आप भी तो मुझे बिल्कुल नहीं जानते।' मरियाना ने बीच में बात काट दी। लेकिन, इन्तजार करिए। कल, शायद। अभी मुझे जाना है, अपनी मालकिन के पास। कल तक के लिए नमस्कार।

नेज्दानोव दो कदम आगे बढ़ा था कि यकायक लौट पड़ा और बोला—'ओ जरा, मरियाना विकेन्त्येवना ! मैं लगातार आप से पूछना चाहता रहा हूँ "क्या आप मुझे स्कूल बन्द होने से पहिले अपने साथ स्कूल नहीं ले चलेंगी सिर्फ यह देखने के लिए कि आप वहाँ क्या करती हैं ?'

जरूर लेकिन स्कूल के बारे में तो मैं आपसे बात नहीं करना चाहती थी।

'तब फिर ?'

'कल ही' मरियाना ने दोहराया।

लेकिन यह उसने दूसरे दिन पर नहीं टाला। उसी दिन शाम को बागीचे की एक रौस पर जो चबूतरे से बहुत दूर नहीं थी और जिस पर नींबू के पेड़ लगे थे उसकी और नेज्दानोव की आपस में बात चीत हुई।



तेरह

वही पहिले उसके पास गई।

'मिस्टर नेग्यानोव,' उसने जल्दी के स्वर में कहा 'आप पर, मुझे लगता है, वालेन्तिना मिखालोवना ने जादू कर दिया है।'

और उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर ही घूम कर आगे चल दी और वह उसके पीछे-पीछे।

'यह आपने कैसे सोचा?'—उसने थोड़ा रुककर पूछा। 'तो क्या ऐसी बात नहीं है? अगर नहीं है तो फिर आज उसका दाँव ठीक नहीं पड़ा। मैं सोच सकती हूँ कि कितनी चतुराई से उसने सब काम किया होगा, कितनी सावधानी से अपने छोटे-छोटे जाल फैलाए होंगे।'

नेग्यानोव कुछ नहीं बोला, बस अपने मद्रुवा साथी की ओर टकटकी बाँधे देखता रहा।

'सुनिये' उसने कहना शुरू किया 'इसमें कोई छिपाने की बात नहीं, मुझे वालेन्तिना मिखालोवना अच्छी नहीं लगती—और यह आप भी खूब अच्छी तरह जानते हैं। कभी

बात आपको आश्चर्यपूर्ण लग सकती है लेकिन आप जरा पहले यह तो सोचिए — '

मरिआना का स्वर टूट गया। उसका चेहरा तमतमा उठा और वह भावुकता से अभिभूत हो उठी भावुकता में वह हमेशा ऐसी लगती, मानो गुस्से में हो। 'आप शायद अपने से पूछ रहे हों, उसने फिर कहना शुरू किया, 'यह लड़की यह सब मुझे क्यों बता रही है? आपने जरूर यह सोचा होगा, मैं यह समझती हूँ, जब मैंने आपसे कुछ कहा था मार्केलोव के बारे में?'

वह एकाएक नीचे झुकी, एक छोटा-सा कुकुरमुत्ता उसने उखाड़ लिया उसके दो टुकड़े किये और फेंक दिया।

'आप भूल करती हैं, मरिआना विकेन्त्येवना' नेज्दानोव ने कहा 'बल्कि बात इसकी ठीक उल्टी है, मैंने सोचा था आप मुझे विश्वासी आदमी समझती हैं और यह विचार मेरे लिए बड़ा आनन्ददायक था।

नेज्दानोव ठीक-ठीक सही बात नहीं बता रहा था, यह विचार सिर्फ अभी अभी उसके दिमाग में आया था।

मरिआना ने एकाएक उसकी ओर देखा। तब तक वह निरंतर दूसरी ओर देखती रही थी।

बात इतनी ही नहीं है कि आप पर मैं विश्वास करती हूँ, उसने सोचते हुए कहा 'आप यहाँ बिल्कुल अजनबी हैं, समझे। लेकिन आपकी और मेरी स्थिति बहुत कुछ एक जैसी है। हम दोनों एक से ही दुखी हैं यही हम दोनों को एक दूसरे के नजदीक लाने वाला है।'

'आप दुखी हैं? नेज्दानोव ने पूछा।

'और आप—क्या आप नहीं हैं? मरिआना ने उत्तर दिया।

उसने कुछ नहीं कहा।

'क्या आप मेरी कहानी जानते हैं?' उसने जल्दी से कहना शुरू किया, 'मेरे पिता की कहानी? उनके देश से निकाल जाने की?—

नहीं ? तो लीजिए मैं बताती हूँ—कि उन पर अपराध लगाया गया मुकद्दमा चला वे अपराधी ठहरे और उन्हें उनके पद से हटा दिया गया, उनका सब कुछ जब्त कर लिया गया—सब कुछ, और उन्हें साइबेरिया भेज दिया गया। उसके बाद उनकी मृत्यु हुई। मेरी माँ भी मर गई। मेरे मामा श्रीमान सिप्यागिन ने मेरी देखभाल की और अब मैं उन्हीं की आश्रित हूँ वे ही मेरे संरक्षक हैं। और वालेन्तिना मिखाइलोवना मेरी संरक्षिका—और मैं इस सबके बदले में उन्हें देती हूँ, अपनी कृतघ्नता क्योंकि मैं सोचती हूँ मेरा दिल बड़ा कठोर है—और दया की रोटी बड़ी कड़ु—और मैं अपमानजनक दया नहीं सहन कर सकती मैं किसी का संरक्षण नहीं सह सकती और मैं अपने भावों को छिपा भी नहीं पाती, और जब तानों की सुइयाँ मुझे चुभोई जाती हैं, तो मैं चीखने से अपने को बस किसी तरह रोक रखती हूँ क्योंकि मैं गर्वीली हूँ।

मरियाना इन बे-मेल असम्बद्ध वाक्यों को बोलते समय और भी तेजी से चलने लगी। एकाएक वह एकदम खड़ी हो गई, स्थिर।

'क्या आप जानते हैं कि मेरी मामी सिर्फ मुझसे पिंड छुड़ाने के लिये—मेरी शादी कर देना चाहती हैं उस फूहड़ शैतान कालोमियत्सव से ? निसंदेह वह मेरे विचारों को जानती है, उसकी नजरों में मैं एक निहिलिस्ट हूँ, शून्यवादी। जबकि वह, मैं उसके लिये आकर्षक नहीं हूँ, जाहिर है—मैं खूबसूरत नहीं हूँ, समझे लेकिन हो सकता है मुझे बेच दिया जाय। यह एक और कृपा मेरे ऊपर की जान मानो है, समझे आप।'

तब फिर क्यों नहीं आप नेज्दानोव कहने लगा, लेकिन झिझक गया।

मरियाना ने एक क्षण को उसकी ओर देखा। 'मैं मार्केलोव का प्रस्ताव क्यों नहीं स्वीकार कर लेती, यही न ? ठीक है, लेकिन मैं क्या

बात आपको आश्चर्यपूर्ण लग सकती है लेकिन आप जरा पहले यह तो सोचिए

मरिआना का स्वर टूट गया। उसका चेहरा तमतमा उठा और वह भावुकता से अभिभूत हो उठी भावुकता में वह हमेशा ऐसी लगती मानो गुस्से में हो। 'आप शायद अपने से पूछ रहे हों,' उसने फिर कहना शुरू किया, 'यह लड़की यह सब मुझे क्यों बता रही है ? आपने जरूर यह सोचा होगा मैं यह समझती हूँ, जब मैंने आपसे कुछ कहा था मार्केलोव के बारे में ?

वह एकाएक नीचे झुकी, एक छोटा-सा कुकुरमुत्ता उसने उखाड़ लिया उसके दो टुकड़े किये और फेंक दिया।

आप भूल करती हैं, मरिआना विकेन्त्येवना ' नेज्दानोव ने कहा, 'बल्कि बात इसकी ठीक उल्टी है, मैंने सोचा था आप मुझे विश्वासी आदमी समझती हैं और यह विचार मेरे लिए बड़ा आनन्ददायक था।

नेज्दानोव ठीक-ठीक सही बात नहीं बता रहा था यह विचार सिर्फ अभी अभी उसके दिमाग में आया था।

मरिआना ने एकाएक उसकी ओर देखा। तब तक वह निरंतर दूसरी ओर देखती रही थी।

बात इतनी ही नहीं है कि आप पर मैं विश्वास करती हूँ उसने सोचते हुए कहा 'आप यहाँ बिल्कुल अजनबी हैं, समझे। लेकिन आपकी और मेरी स्थिति बहुत कुछ एक जैसी है। हम दोनों एक से ही दुखी हैं यही हम दोनों को एक दूसरे के नजदीक लाने वाला है।

आप दुखी हैं ? नेज्दानोव ने पूछा।

'और आप—क्या आप नहीं हैं ?' मरिआना ने उत्तर दिया।

उसने कुछ नहीं कहा।

क्या आप मेरी कहानी जानते हैं ?' उसने जल्दी से कहना शुरू किया, 'मेरे पिता की कहानी ? उनके देश से निकाले जाने की ?—

नहीं ? तो लीजिए मैं बताती हूँ—कि उन पर अपराध लगाया गया मुकद्दमा चला वे अपराधी ठहरे और उन्हें उनके पद से हटा दिया गया उनका सब कुछ जब्त कर लिया गया—सब कुछ, और उन्हें साइबेरिया भेज दिया गया। उसके बाद उनकी मृत्यु हो गई मेरी माँ भी मर गई। मेरे मामा श्रीमान सिप्यागिन ने मेरी देखभाल की और अब मैं उन्हीं की आश्रित हूँ वे ही मेरे संरक्षक हैं। और वालेन्तिना मिखाइलोवना मेरी संरक्षिका—और मैं इस सबके बदले में उन्हें देती हूँ, अपनी कृतघ्नता, क्योंकि मैं सोचती हूँ, मेरा दिल बड़ा कठोर है—और दया की रोटी बड़ी कड़ु—और मैं अपमानजनक दया नहीं सहन कर सकती मैं किसी का संरक्षण नहीं सह सकती और मैं अपने भावों को छिपा भी नहीं पाती, और जब तानों की सुइयाँ मुझे चुभोई जाती हैं, तो मैं चीखने से अपने को बस किसी तरह रोके रहती हूँ क्योंकि मैं गर्वीली हूँ।'

मरियाना इन बे-मेल असम्बद्ध वाक्यों को बोलते समय और भी तेजी से चलने लगी। एकाएक वह एकदम खड़ी हो गई स्थिर।

'क्या आप जानते हैं कि मेरी मामी सिर्फ मुझसे पिंड छुड़ाने के लिये—मेरी शादी कर देना चाहती हैं उस फूहड़ शैतान कालोमियेत्सेव से ? निसंदेह वह मेरे विचारों को जानती है, उसकी नजरों में मैं एक निहिलिस्ट हूँ, दुम्पगामी। यद्यपि वह, मैं उसके लिये आकर्षक नहीं हूँ जाहिर है—मैं खूबसूरत नहीं हूँ, समझे, लेकिन हो सकता है मुझे भेज दिया जाय। यह एक और कृपा मेरे ऊपर की जाने वाली है, समझे आप।

तब फिर क्यों नहीं आप नेज्दानोव कहने लगा, लेकिन झिझक गया।

मरियाना ने एक क्षण को उसकी ओर देखा। 'मैं मार्केलोव का प्रस्ताव क्या नहीं स्वीकार कर लेती, यही न ? ठीक है, लेकिन मैं क्या

कर सकती हूँ ? वह भला आदमी है। लेकिन यह मेरी गल्ती तो नहीं है, कि मैं उसे प्यार नहीं करती।

मरियाना फिर आगे आगे चलने लगी, शायद वह अपनी इस अप्रत्याशित भावाभिव्यक्ति का उत्तर देने के संकोच से अपने साथी को बचाना चाहती थी।

दोनों सड़क के छोर पर पहुँच गये। मरियाना तेजी से एक सकरी डगर पर मुड़ गई, जो देवदार के घने पेड़ों के बीच से होकर जाती थी, और उस पर चलने लगी। नेज्धानोव ने मरियाना का अनुगमन किया। वह इस दुहरी भावुकता के प्रति सचेत था, वह बड़ा आश्चर्य कर रहा था कि यह शर्मीली लड़की एकाएक उससे इतनी मुक्त कैसे गई और उस उस बात पर तो और भी आश्चर्य हो रहा था कि उसे उसका यह खुलापन अजीब नहीं लग रहा था, बल्कि स्वाभाविक लग रहा था।

मरियाना एकाएक घूमी और बीच रास्ते पर अचल खड़ी हो गई ऐसे कि नेज्धानोव का मुँह उससे सिर्फ एक गज के फासले पर रह गया और वह उसके चेहरे पर आँखें गड़ाये एकटक उसे देखती रही।

अलेक्सी दिमित्रिच' उसने कहा 'यह मत समझियेगा कि मेरी मामी बुरे स्वभाव की है। ~ नहीं! यह सब धोखा है, वह एक एक्ट्रेस बनती है, चाहती है कि सब कोई उसके सौन्दर्य के प्रशंसक हों और उसके संतपन के पुजारी बन जायें। वह कुछ सहानुभूतिपूर्ण वाक्य गढ़ लेती है, उन्हें एक व्यक्ति से कहती है, और तब उन्हीं को दूसरे से दुहरा देती है और फिर तीसरे से और हमेशा एक सी ही भावुकता से, जैसे उसे यह अभी-अभी सोचा हो और ठीक तभी वह अपनी आश्चर्यजनक जादूगर आँखों का प्रयोग करती है। वह अपने को खूब समझती है, वह जानती है कि वह एक देवीमूर्ति जैसी है, और वह किसी की परवाह नहीं करती। वह बनती है कि वह हमेशा कोल्या के बारे में चिंता करती रहती है, लेकिन वह

सिर्फ विद्वानों से उसके बारे में बात करती है और कुछ नहीं। वह किसी का बुरा नहीं चाहती। वह बड़ी उदार और परोपकारी है! लेकिन उसके सामने ही तुम्हारी कमाई लूटी लूटी ताड़ दे उसके लिये कुछ नहीं! वह तुम्हें बचाने के लिये अपनी एक उंगली भी न उठायेगी। लेकिन यदि उससे उसका कुछ छिन गया है तब ओह तब क्या कहने!'

मरिमाना बोलते-बोलते रुक गई उसका गुस्सा उसे बेचैन कर रहा था। और उसको गला भर्रा गया था उसने क्रोध को उगल डालने की सोची, वह अपने को रोक न सकी लेकिन उसके चाहते हुए भी उसकी वाणी उसका साथ न दे सकी टूट गई। मरिमाना दुखी लोगों में एक विशेष वर्ग की थी (रूस में ऐसे लोगों से राह चलते भेंट हो सकती है) न्याय उन्हें सन्तुष्ट तो करता है, पर उनके हृदय को फिर से पूरी तरह शान्त नहीं कर सकता जबकि अन्याय जिसको समझने में ये बड़े उत्सुक और तेज होते हैं उनकी नस-नस में विद्रोह उत्पन्न करता है। जब वह बात कर रही थी ला नेज्दानाव गौर से उसके तमतमाए हुए मुखड़े को देख रहा था, उसके मुख पर उसके छोटे-छोटे बाल कुछ इधर-उधर बिखरे हुए थे उसके पतले होंठ उत्तेजना से फड़क रहे थे, उसे लगा जैसे यह सब उसे चमत्कृत कर रहे हों और उसकी इस मुख मुद्रा का उस पर अर्थपूर्ण और सुन्दर प्रभाव पड़ा। पेड़ की टहनियों के घन जाल से छन कर सूर्य का प्रकाश तिरछी सुनहली रेखा के रूप में उसकी भौंह पर पड़ रहा था और आग की लपलपाती जीभ उसके समूचे चेहरे की उत्तेजनापूर्ण भंगिमा की उसकी विस्फारित टकटकी बाँध चमकती आँखों की, उसकी वाणी के कम्पित स्वर की प्रतीक सी लग रही थी।

नेज्दानोव ने मारियन्ना से पूछा, बोलो, आप मुझे दुखी क्या कहती हैं? क्या यह सम्भव है कि आप मेरे गत जीवन के बारे में कुछ जानती हैं?

मरिग्राना ने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया और कहा—

'हाँ।'

'तो आपको कैसे मालूम हुआ? किसी से मेरे बारे में आपकी बातें हुई थीं?'

'मैं जानती हूँ आपके नाम के बारे में।'

'आप जानती हैं किसने बताया आपको?

'क्यों! आपकी उसी वालेन्तिना मिखालोवना ने जिसने आप पर इतना जादू कर दिया है। वह मेरी उपस्थिति में कहने में चूकी नहीं, उसने बड़ी लापरवाही से, जैसा उसका अपना तरीका है, लेकिन साफ-साफ—सहानुभूतिपूर्वक नहीं, बस एक उदार व्यक्ति के रूप में जो अपने को इन तमाम आग्रहों से ऊपर समझता है—कि निश्चय ही, अपने नये शिक्षक के जीवन में एक दिलचस्प घटना है। आश्चर्य मत कीजिए कृपया। वालेन्तिना मिखालोवना बिल्कुल ठीक ऐसे ही अपनी माँजी के जीवन के दिलचस्प सत्य को भी हर आगन्तुक से बतलाती है उसका पिता रिश्वत लेने के अपराध में साइबेरिया भेजा गया था! वह भले ही अपने को एक अभिजातीय समझे—पर वह सिर्फ एक पीठ पीछे बुराई करने वाली चुगलखोर है, और बनती है, बड़ी देवी!'

माफ कीजिएगा, नेज्दानोव ने कहा, वह "मेरी" क्यों है—'

मरिग्राना एक ओर घूमी, और फिर रास्ते पर चलने लगी।

आपकी उससे इतनी देर तक घुस घुस कर बातें जो हुई', उसने भारी गले से कहा।

'मैंने तो शायद ही एक शब्द कहा होगा', नेज्दानोव ने उत्तर दिया, 'वही अकेली सारे समय बात करती रही।'

मरिग्राना बिना कुछ बोले चलती गई, लेकिन यहीं पर रास्ता एक ओर को मुड़ा, देवदार दूर तक फैले हुए थे उनके आगे एक मैदान था, जिसके बीच में एक पोला भोजपत्र का पेड़ था और उस पुराने पेड़ को

घेरे हुए बैठने की एक सीट बनी हुई थी मरियाना उस सीट पर बैठ गई, नेज्वानोव भी उसकी बगल में बैठ गया। उसकी छोटी-छोटी हरी पत्तियों से लदी लम्बी लटकती टहनियाँ दोनों के सिरों पर झूम रही थीं, उनके चारों तरफ हरी घास के बीच सफेद जंगली फूल शोभित हो रहे थे और ताजी हरी घास की सुगन्ध चारों ओर फैल रही थी, जो देवदार की तीखी गंध के साथ बड़ी मधुर और सुखद लग रही थी।

'आप मेरे साथ यहाँ का स्कूल देखने चलना चाहते थे' मरियाना ने कहना शुरू किया। 'तो चलिए, हम लोग चलें सिर्फ मैं नहीं जानती। आपको कोई विशेष खुशी न होगी। आपने तो सुना ही है कि हमारे प्रधान अध्यापक छोट पादरी हैं। वह आदमी तो अच्छे स्वभाव के हैं, लेकिन आप अनुमान नहीं लगा सकते कि अपने शिष्यों से वह क्या-क्या बातें करते हैं। उनमें एक लड़का है। उसका नाम है गार्शी। वह अनाथ है। दस साल की उमर है अभी उसकी पर आपको ताज्जुब होगा यह हर बात बहुत जल्दी सीखता है।'

बात चीत के विषय का एकाएक बदलने में, ऐसा लगता था कि मरियाना ने अपने को बिल्कुल बदल लिया हो। वह प्राय: पीली और शान्त होगई थी और उसके चेहरे से उलझन का भाव प्रगट हो रहा था जैसे वह उस सब के लिए, जो कुछ उसने अभी पहिले कहा, शर्मा रही हो। वह चाहती थी कि नेज्वानोव किसी विषय पर, स्कूल या फिर सिप्यागिन के विषय पर ही उससे कुछ भी बात करे, ताकि वे साथ स्वस्थ स्वर में बातें कर सकें। लेकिन उस समय वह किसी 'गम्भीर बात' करने के मूड में नहीं था।

'मरियाना विकन्तयेवना उसने कहना आरम्भ किया 'मैं आपसे गुस्तर कहूँगा। जैसा जो कुछ अभी अभी हमारे बीच हुआ है उसकी मुझे स्वप्न में भी आशा न थी। ('हुआ है' शब्द पर मरियाना ने उसकी ओर गौर से देखा।) 'मैं समझता हूँ, हमलोग परस्पर, एकाएक बड़े ही बड़े घनिष्ट हो गए हैं। और ऐसा तो होना ही

था। हम लोग बरसों से एक दूसरे के निकट आते जा रहे थे। बस उसे हम लोगों ने वाणी नहीं दी थी। और इसीलिए मैं भी, बिना किसी सकोच के आपसे बात करूँगा। इस घर में आपका जीवन दुखी और दूभर हो रहा है, लेकिन आपके मामा, यद्यपि उनकी भी सीमाएँ हैं, फिर भी, जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, उनमें इन्सानियत है। क्या मेरा कहना गलत है? क्या वह आपकी स्थिति को समझकर आपका साथ न देंगे?'

'मेरे मामा? पहिले तो वह मनुष्य ही नहीं हैं, नाम को भी नहीं वह एक पदाधिकारी है—सिनेट के सदस्य या मिनिस्टर मैं नहीं जानती। और दूसरे मैं स्वयं में ही किसी की शिकायत और बुराई नहीं करना चाहती। मैं यहाँ बिल्कुल भी, दुखी नहीं हूँ, कहना चाहिए कि मैं यहाँ किसी भी तरह नहीं सताई जाती, मेरी मामी की वह छोटे-मोटे तानें वस्तुतः मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ते मैं बिल्कुल आजाद हूँ।

नेख्लानोव ने भौंचक्का सा हो मरियाना की ओर देखा।

'तब तो फिर जो कुछ आपने अभी मुझे बताया '

'आप मुझ पर हँसना चाहें तो हँस सकते हैं, पूरी आजादी है, उसने जल्दी से कहा, 'लेकिन अगर मैं दुखी हूँ—तो अपने दुख के लिए नहीं। मुझे कभी कभी ऐसा लगता है कि मैं दुखी हूँ तमाम सताए हुए लोगों के लिए रूस के उन दीन हीन गरीबों के लिए नहीं मुझे कोई दुख नहीं, बल्कि मुझे गुस्सा है—मेरे अन्दर उनके लिए विद्रोह की भावना भरी हुई है मैं उनके लिए, अपनी जान तक देने को तैयार हूँ। मैं दुखी हूँ क्योंकि मैं एक जवान स्त्री हूँ—पराए आधीन हूँ, और मैं कुछ कर नहीं सकती—मैं कुछ कर सकने के योग्य नहीं! जब मेरे पिता साइबेरिया में थे, और मैं माँ के साथ मास्को में छोड़ दी गई थी—आह मैं उनके पास जाने को कितना तड़फड़ाई थी! इसलिए नहीं कि मैं कोई उनसे बहुत अधिक प्रेम और उनकी श्रद्धा

करती थी—बल्कि मुझे बड़ी उत्कट इच्छा थी यह जानने की कि अपनी आँखों से देखूँ कि कैदी कैसा जीवन व्यतीत करते हैं और मुझे अपने स और उन सब सागा स जो आराम का जीवन व्यतीत करत हैं, खाते-पीते सामा से कितनी ग्लानि होती थी। 'और बाद में, जब वह वापस आए निराश, कुचले हुए और अपने को अपमानित करने लगे अपने का पीडा दन लगे ओह' 'कितना कठोर था यह सब ? मरने की कितनी कोशिश की उन्होंने और माँ उन्होंने भी। और मैं 'मैं अकेली रह गई किस लिए? यह अनुभव करने के लिए कि मैं अभागा हूँ कि मैं कृतघ्न हूँ, कि मैं किसी योग्य नहीं कि मैं कुछ भी नहीं कर सकती—कुछ भी नहीं—किसी के लिए भी नहीं।'

मरिआना ने दूसरी ओर मुँह फर लिया। उसका हाथ बेंच पर सरक गया था। नज्दानोव उसके लिए बड़ा व्यथित अनुभव कर रहा था, उसने उसके हाथ पर अपनी उँगली स एक ठोका दिया लेकिन मरिआना ने अपना हाथ तुरन्त खींच लिया, इसलिए नहीं कि नेज्दानोव का ऐसा करना उस अनुचित लगा बल्कि इसलिए कि वह कहीं—ईश्वर न करे! वह यह न सोचने लग कि वह उसकी सहानुभूति चाह रही है।

देवदार के झुरमुट में से एक स्त्री के वस्त्रों की झलक मिली।

मरिआना तुरन्त सन्हल गई। देखा! आपकी मैडोना देवी ने हमारे पीछे अपना सी० आई० डी० भेजा है। यह नौकरानी मरे ऊपर नजर रखने के लिए और अपनी मालकिन को मेरी खबर दन के लिए नियुक्त है कि मैं कहाँ हूँ और किस के साथ हूँ। मरी मामी न सम्भवतः अनुमान कर लिया है कि मैं आपके साथ हूँ, और वह इसे अनुचित समझती है, और खास तौर स उस मार्मिक दृश्य के बाद, जिसका प्रदर्शन आपके साथ वह अभी कर रही थी। अब हम लोगों को वापस चलना चाहिए। चलिए, चलें।

मरिआना उठ कर खड़ी हो गई, नेज्दानोव भी। मरिआना न

उसकी ओर देखा, और एकाएक उसके चेहरे पर एक भाव खेलने लगा, लगभग चमकाना, भावपूर्ण, कुछ-कुछ नशीला।

'आप मुझ से नाराज तो नहीं हैं? कहीं आप यह तो नहीं सोचते कि मैं भी आप से दिखावा कर रही हूँ। नहीं आप ऐसा नहीं सोचते।' और नेज्दानोव के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही आगे बोली 'आप मेरे जैसे ही दुखी हैं, और आपका स्वभाव भी बुरा है, मेरा ही जैसा। कल हम लोग साथ-साथ स्कूल चलेंगे क्योंकि अब हम दोनों दोस्त हैं, क्यों, ठीक है न।

जब मरिआना और नेज्दानोव घर के पास पहुँचे तो वालेन्तिना ने ऊपर छज्जे पर से उन्हें गुप्त दूरबीन से देखा, और हमेशा की सी मधुर मुस्कान के साथ उसने धीरे से अपना सिर हिलाया, और तब शीशे के दरवाजे में से होकर, ड्राइंगरूम लौटते हुए—जहाँ सिप्यागिन पहिले से ही एक पोपले पड़ोसी के साथ जो चाय पीने आया था बैठा हुआ था उसने भुनभुनाते हुए, पर एक एक शब्द को अलग अलग बोलते हुए कहा 'इस रात की हवा कितनी सीली है! यह बड़ी खतरनाक है!

मरिआना ने नेज्दानोव की ओर देखा और सिप्यागिन ने जो अभी अभी अपने पड़ोसी से एक पाउन्ड जीता था, पहिले तो अपनी पत्नी पर ऊपर से नीचे तक एक लम्बी रौबीली (मन्त्री पद के गौरव के सर्वथा उपयुक्त) दृष्टि डाली और वही उपेक्षापूर्ण, उनींदी, लेकिन पैनी दृष्टि उसने उन दोनों तरुणों के जोड़े पर डाली, जो अँधेरे बाग में से सीधे चले आ रहे थे।



चौदह

एक पखवारा बीत गया। हर काम पूर्ववत् एक ही निश्चित व्यवस्था से चलता रहा। सिप्यागिन ने सब लोगों का सारे दिन का काम-काज अगर एक मिनिस्टर की तरह नहीं, तो कम-से कम एक विभाग के संचालक की तरह ही सही व्यवस्थित कर दिया था। यह सब करते समय उसका स्वभाव वैसा ही गर्वोन्नत मानवीय और कुछ-कुछ उपेक्षापूर्ण बना रहा। काल्या नित्य निश्चित समय पर पढ़ता अन्ना जखारोवना उसी तरह अपने दमित क्रोध से उत्तेजित बनी रही आगन्तुक भी आए, गप्पें उड़ाई गईं, ताश खेले गए और प्रगट रूप से कोई उकताया नहीं।

वालेन्तिना मिखाइलोवना उसी तरह नेज्दानोव से अपने मन बहलाती रही। यद्यपि उसके मधुर व्यवहार में थोड़ा तीखापन आ गया था। मरियाना और नेज्दानोव के सम्बन्ध अधिकाधिक प्रगाढ़ होते गए और नेज्दानोव ने आश्चर्य से इस बात पर ध्यान दिया कि मरियाना का स्वभाव भी बड़ा मधुर है और

वह हर किसी विषय पर बिना किसी उत्तेजनापूर्ण विरोध के खुलकर बात कर सकती है। वह उसके साथ दो बार स्कूल गया, यद्यपि पहली बार जाने पर उसने यह अनुभव कर लिया था कि वहाँ उसका कोई उपयोग नहीं हो सकता। आदरणीय पादरी मे सिप्यागिन के निर्देश से स्कूल पर पूरी तरह अधिकार जमा रक्खा था। यह योग्य पादरी बच्चों को भली प्रकार लिखना-पढ़ना सिखाता था, यद्यपि पुराने ढंग से, लेकिन परीक्षा में बड़े अजीब सवाल पूछता, मिसाल के लिये, एक दिन उसने गार्सी से पूछा, "आकाश के जल" की तुम कैसे व्याख्या करोगे, इस प्रश्न का उत्तर उन्हीं योग्य पादरी के आदेशानुसार गार्सी को देना था, 'वह अवर्णनीय है।

और फिर, वह स्कूल जैसा कुछ भी था शीघ्र ही—गर्मियों के लिये शरद ऋतु तक बंद हो जाता था। नेज्दानोव ने पाक्लिन और दूसरों के कथनानुसार किसानों से भी दोस्ती करने की कोशिश की लेकिन शीघ्र ही यह समझ लिया कि जहाँ वह अपने भरसक उनका अध्ययन कर रहा है, प्रचार का काम बिलकुल भी नहीं। उसने लगभग अपना सारा जीवन शहर में ही बिताया था, और उसके तथा ग्रामीण जनता के बीच एक ऐसी खाई थी, जिसे वह पार नहीं कर सकता था। पियक्कड़ किरिल से उसकी कुछ बातें हुई और मैन्डसे स भी, लेकिन, कहते हुए आश्चर्य होता है, कि वह उनसे डरता था और सामान्य रूप से चीजों के बारे में बुरी भली संक्षिप्त सी आलोचना के अतिरिक्त वह उनसे और कुछ नहीं पा सका। फिलेव नाम के एक दूसरे किसान ने उसे बिलकुल सकपका ही दिया! इस किसान के चहरे पर असाधारण शक्ति थी, ठीक एक डाकुओं के सरदार की सी। 'यह जरूर कोई अकेल होगा,' नेज्दानोव ने सोचा। लेकिन फिलेव एक दीन और उपेक्षित निकला। उसकी जमीन छीन ली गई थी, क्योंकि वह—एक स्वस्थ और निश्चित रूप से एक शक्तिशाली आदमी होते हुए भी—काम नहीं कर सकता था।

मैं नहीं मर सकता !' फिलैव सिसकता, कराहता और एक दीर्घ निःश्वास छोड़ता हुआ कहता, मैं काम नहीं कर सकता ! मुझे मार डालो ! वरना मैं स्वयं आत्महत्या कर लूँगा। और अंत में भीख माँगता हुआ अपनी बात समाप्त करता— एक पैसा, रोटी के टुकड़े के लिये।'— उसका चेहरा ठीक रिनाल्डो रिनाल्डिनी के किसी चित्र जैसा लगता।

कारखाने के मजदूर भी नेज्दानोव के लिए किसी उपयोग के न थे। यह सब लोग या तो भयंकर रूप से मस्त-मौला और मन-मौजी थे या मरणविष रूप से सुस्त—नेज्दानोव की उनके साथ जरा भी पटरी नहीं बैठ पाई। उसने अपने मित्र सिलिन को इस विषय पर, अपनी असमर्थता और अयोग्यता की कटु आलोचना करते हुए और अपनी शिक्षा और कलात्मक स्वभाव पर खीझते हुए एक लम्बा पत्र लिखा। एकाएक वह इस परिणाम पर पहुँचा कि प्रचार कार्य में वह बोलकर नहीं लिखकर ही भाग ले सकता है। लेकिन उसके पर्चों की योजना भी तो कार्यान्वित नहीं हो पाई थी। वह कागज पर जो कुछ भी लिखता, उसे ऐसा अनुभव होता कि यह सब गलत है, अव्यवहारिक है, बनावटी भाषा में है। और दो-दो बार उसने अपने आपको अनजाने ही पद्य में अथवा संदिग्ध व्यक्तिगत उपास में भटकते हुए पाया। और उसने यह सब निश्चितरूप से मरियाना को बता भी दिया। यह उन दोनों में परस्पर अद्भुत विश्वास और अन्तरंग प्रगाढ़ता का लक्षण था। और उस उसमें भी सद्भावना पाकर फिर आश्चर्य हुआ अपनी साहित्यिक रुचि के प्रति तो नहीं बल्कि उस नैतिक व्याधि के प्रति जिससे वह पीड़ित था और जिससे वह भी परिचित थी। जितना ही वह कला प्रेमी था उतना ही मरियाना उनसे दूर थी, फिर भी उसने मार्के लोव से इसीलिये घृणा नहीं की कि उसमें कलात्मक स्वभाव का चिन्ह भी न था। मरियाना का स्वयं इसको स्वीकार करने का साहस नहीं था, लेकिन हम जानते हैं कि यही जो हमारे मन में हमसे ही छुपा रहता है, वही हममें सबसे बलवान होता है।

सिप्यागिन ने बड़े रौब के साथ निघड़क नेज्दानोव का पक्ष लिया, वालेन्तिना मिखाइलोवना ने भी अपने पति का साथ दिया, अन्ना जहारोवना उधर से कोल्या के ध्यान को हटाने के प्रयास में लगी रही और अपनी टोपी के नीचे से सभी पर गुस्से भरी आँखों से देखती रही, मरिआना ऐसे बैठी थी, जैसे पत्थर की मूर्ति हो।

लेकिन एकाएक कादिला का नाम लगभग बीसवीं बार सुनते ही, नेज्दानोव एकदम उबल पड़ा और मेज पर जोर से घूसा मारते हुए चीखकर बोला 'क्या ही अच्छा प्रमाण है! जैसे कि मानों हम जानते ही न हों कि यह कादिला कौन प्राणी है! वह अपने जन्म से ही एक बर्बर करीब कठमुल्ला पालतू है, और कुछ नहीं!'

'हैं ऐं ऐं तो' " तो यह बात है, कालोमियेत्सेव गुस्से से काँपते हुए भनभनाया तो इस तरह आप उस व्यक्ति के बारे में ओछी बातें करते हैं जिसे नवाब (काउन्ट) ब्लेजे क्रम्फ और राजकुमार कोविग्निकिन जैसे महान व्यक्तियों का सम्मान और विश्वास प्राप्त है।

नेज्दानोव ने अपने कंधे मिचकाए। 'ओह, निःसन्देह बहुत बड़े लोगों का—राजकुमार कोविग्निकिन का—वह चापलूस वर्दीधारी चपरासी—'

'कादिला मेरा मित्र है', कालोमियेत्सेव ने जोर से चीखते हुए कहा, वह मेरा साथी है और मैं

'तब तो आपके लिए और भी बुरा है', नेज्दानोव ने व्यंग किया, 'इसके तो यह मानी है कि आपके भी वही विचार हैं, और मेरा कथन आपके लिए भी सही बैठता है।

कालोमियेत्सेव गुस्से से काँप उठा।

'क्या 'या या, आप आप हैं' रते हैं! आपको' 'आपको, इसी मालूम हो, !

'क्या मालूम हो जायगा ? आप क्या कर लेंगे मेरा ? नेग्यानोव ने व्यंगपूर्ण खिन्नता के साथ दुबारा उसकी बात बीच में काटी ।

कुछ नहीं कहा जा सकता था कि दोनों के बीच का यह झगड़ा कैसे समाप्त होता अगर सिप्यागिन ने झगड़ा ज्यादा बढ़ने से पहिले उसे रोक न दिया होता । ऊँची आवाज करके और अधिकारपूर्ण स्वर में जिसमें कहा नहीं जा सकता कि राजनीतिज्ञ की अधिकार भावना थी अथवा घर के स्वामी की सिप्यागिन ने शान्त किन्तु अधिकारपूर्ण प्रभावशाली भाषा में कहा कि वह अपनी मेज पर इस तरह का झगड़ा सहन नहीं कर सकता, उसने बहुत पहिले से ही अपना नियम बना रखा है (उसने अपनी भूल ठीक की—पवित्र नियम)—कि हर तरह के विचारों का आदर करना चाहिए, लेकिन वह कहे जाने चाहिएँ (उसने अपनी कोमती अँगूठी वाली उँगली उठाकर कहा) संयत, संयमित और सहिष्णु भाषा में । एक ओर तो वह नेग्यानोव की उदंड भाषा की भले ही वह कितनी ही क्षम्य क्यों न हो, निन्दा किए बिना न रह सका और दूसरी ओर विरोधी विचारों के लोगों पर कालोमियेत्सेव के कटु दोषारोपण से भी जो भले ही कितने भी जनता के हित से प्रेरित हों, सहमत न हो सका ।

'मेरी छत के नीचे', उसने अपनी बात का अन्त करते हुए कहा 'सिप्यागिन परिवार की छत के नीचे न विद्रोही हैं और न पालतू कठ-मुल्ले , सिर्फ सभ्य अच्छे विचारों के लोग हैं, जो अब एक दूसरे के विचारों को समझ लेते हैं, तो निश्चित रूप से हाथ मिलाए बिना नहीं रह सकते ।'

नेग्यानोव और कालोमियेत्सेव दोनों ही शान्त हो गए, लेकिन दोनों ने ही आपस में हाथ नहीं मिलाए , अभी उन दोनों के परस्पर मेल का समय नहीं आया था , बल्कि इसके विपरीत उतनी अधिक पारस्परिक घृणा उन्होंने पहिले कभी नहीं अनुभव की थी । भोजन अत्यन्त ही अवसादपूर्ण और उत्तेजनामय चुप्पी में समाप्त हुआ । सिप्यागिन ने एक कूटनीतिक घटना सुनाने का प्रयत्न किया, लेकिन

माथे पर ही निराशापूर्ण उदासी से कहना बन्द कर दिया। मरिमाना एक टक अपनी प्लेट पर ही आँख गड़ाए रही। नेज्दानोव के प्रति उसकी बातों से जो उसके हृदय में हमदर्दी का भाव उत्पन्न हुआ था, उसे उसने प्रगट करने का प्रयास नहीं किया—कायरता के कारण नहीं, ओह् नहीं! बल्कि इसलिए कि श्रीमती सिप्यागिन के सामने वह अपने भावों को प्रगट नहीं करना चाहती थी वह देख रही थी कि उसकी आर-पार हो जाने वाली पैनी आँखें निरन्तर उस पर और नेज्दानोव पर ही जमी हुई हैं। पहिले तो नेज्दानोव के एकाएक क्रोध में आ जाने से उस चालाक तीखी फब्तियाँ कसने वाली महिला को आश्चर्य हुआ था, फिर एकाएक जैसे वह चकाचौंध में पड़ गई हो, बुदबुदायी। आह! उसने एकाएक अनुभव किया कि नेज्दानोव, जो अब तक उसकी पकड़ में था अब उससे दूर हटता जा रहा है। तो जरूर कुछ होगया है क्या मरिमाना इसका कारण है? हाँ, निश्चय ही मरिमाना है नेज्दानोव ने उसे आकर्षित कर लिया है हाँ, और वह "।

'कुछ करना होगा', उसने अपने विचाराधार का निष्कर्ष निकाला। उधर कालोमिमेत्सेव क्रोध से घुटा जा रहा था। अब वह दो घण्टे बाद ताश खेल रहा था, तब उसके 'पास!' या 'मैं बोलता हूँ।' कथनों में उसके दुखी मन की गूंज थी। उसके स्वर के भारीपन और कम्पन से उसकी आहत भावनाओं को जाना जा सकता था, हालाँकि वह अपने को 'उन सब से ऊपर' प्रगट कर रहा था! इस घटना से केवल सिप्यागिन ही सचमुच निश्चित रूप में आनन्दित लगता था। उसे उठती हुई आँधी को शान्त करने में अपनी भाषण शक्ति और अपना प्रभाव प्रकट करने का अवसर मिल गया था वह लैटिन जानता था और वर्जिल के 'क्या अहं है?' से वह परिचित था। उसने तूफान को शान्त करने में जानबूझ कर वरुण से अपनी तुलना तो नहीं की लेकिन एक सहानुभूति के साथ उसका स्मरण तो किया ही।

—— ० ——

पन्द्रह

अवसर मिलते ही नेज्दानोव अपने कमरे में चला गया। वह किसी से नहीं मिलना चाहता था किसी से भी नहीं सिवाय मरिआना के। मरिआना का कमरा उसी लम्बे बरामदे के अन्त में था जो ऊपरी मंजिल को दो भागों में बाँटता था। नेज्दानोव सिर्फ एक बार ही उसके कमरे में गया था और वह भी थोड़ी देर के लिए लेकिन उसे ऐसा लगा कि अगर वह फिर उसका दरवाजा खटखटाएगा, तो वह बुरा नहीं मानेगी और शायद वह खुद भी उससे बात करना चाहती थी। देर काफी हो गई थी, लगभग दस बजे थे। भोजन पर जो दृश्य उपस्थित होगया था उसके बाद सिप्यागिन और श्रीमती सिप्यागिन ने उसे छेड़ने की आवश्यकता नहीं समझी और वे लोग अब भी कालोमियेत्सेव के साथ ताश खेल रहे थे। वालन्तिना मिखाइलोवना ने, दो बार मरिआना के बारे में जरूर पूछा, क्योंकि वह भी भोजन समाप्त होने के बाद से गायब होगई थी।

'मरिम्राना विकेन्त्येवना कहाँ है ? पहिले तो उसने रूसी भाषा में और तब फ्रेन्च भाषा में पूछा, किसी को खास तौर से सम्बोधित करके नहीं लेकिन शायद दीवालों से, जैसा कि लोग प्रायः ग्रस्त आश्चर्य की स्थिति में करते हैं, लेकिन तुरन्त ही वह भी खेल में व्यस्त हो गई।

नेज्वानोव ने एक-दो बार अपने कमरे में ही इधर-उधर चक्कर काटे और तब वह बरामदे में होकर मरिम्राना के कमरे की ओर गया और धीरे से दरवाजे पर दस्तक दी कोई उत्तर नहीं आया। उसने फिर एक बार दस्तक दी, दरवाजे को देखा ऐसा लगा कि वह बन्द है। वह अभी लौटकर अपने कमरे में मुश्किल से पहुँच कर मेज पर बैठा ही था कि उसका दरवाजा धीमे से थरथराया और मरिम्राना की आवाज सुनाई पड़ी।

'अलेक्सी दिमित्रिच, क्या आपने अभी मेरा दरवाजा खटखटाया था ?'

वह तुरन्त उठकर खड़ा होगया और लपक कर बरामदे में गया मरिम्राना दरवाजे पर हाथ में एक जलती मोमबत्ती लिए निस्तेज सि खड़ी थी।

'हाँ मैं ' वह फुसफुसाया।

आओ', उसने उत्तर दिया और बरामदे में होकर आगे बढ़ी लेकिन अन्त में पहुँचने के पहिले ही उसने रुककर एक नीचे से दरवाजे को खोला। नेज्वानोव को एक छोटा-सा खाली कमरा दिखाई दिया।

'अच्छा हो हम लोग यहाँ बैठें अलेक्सी दिमित्रिच, यहाँ हमें कोई परेशान नहीं करेगा। नेज्वानोव ने कहना माना। मरिम्राना ने मोमबत्ती खिड़की की चौखट पर जमा दी और नेज्वानोव की ओर उन्मुख हुई।

'मैं समझती हूँ, आप मुझ से क्यों मिलना चाहते थे', उसने कहना

प्रारम्भ किया, 'इस मकान में रहना आपके लिए अब बड़ा दुखदायी हो रहा है, और कोई मेरे लिए भी।'

'हाँ, मैं आपसे मिलना चाहता था, मरिआना मिकेल्येवना', नेग्दानोव ने उत्तर दिया 'लेकिन अब से मैंने आपको जाना है, यहाँ रहना मेरे लिए दुखदायी नहीं रहा।'

मरिआना बिचारी सी कोई सी मुस्कुरायी।

'धन्यवाद, अलेक्सी दिमित्रिच, लेकिन क्या आप इस घटना के बाद भी यहाँ रहना चाहते हैं?'

'मुझे आशा नहीं है कि ये लोग मुझे यहाँ रहने देंगे, ये लोग मुझे स्वयं ही काम से अलग कर देंगे!'

'क्या आप अपने आपही नहीं छोड़ोगे?'

'अपनी ओर से?   नहीं।

'क्यों?'

'क्या आप सत्य जानना चाहती हैं? क्योंकि आप यहाँ हैं।

मरिआना ने अपना सिर झुका लिया और कमरे में एक ओर नेग्दानोव से जरा हट गई।

'और फिर', नेग्दानोव ने आगे कहा। 'मुझे तो यहाँ रहना ही है। आप कुछ नहीं जानतीं—लेकिन मैं चाहता हूँ मैं अनुभव करता हूँ कि, आपको सब कुछ बता दूँ।'

उसने मरिआना के पास जाकर और उसका हाथ पकड़ लिया। उसने अपना हाथ छुड़ाया नहीं, सिर्फ उसके चेहरे की ओर से देखने लगी। 'सुनिए!' उसने एकाएक आन्तरिक भावना से प्रेरित होकर कहा, 'मेरी बात सुनिए!' और एकदम बिना बैठे, यद्यपि कमरे में दो-तीन कुर्सियाँ भी थीं मरिआना के सामने खड़े-खड़े और आन्तरिक से अभिभूत उसका हाथ पकड़े हुए ही, स्वयं के लिए भी आश्चर्यजनक आतुरता के साथ नेग्दानोव ने उसे अपनी योजनाएँ अपने इरादे सिप्यागिन का

स्ताव स्वीकार करने का कारण, अपने सारे विगत सम्बन्ध और परिचय तथा यह सब जो उसने अब तक मरिम्माना से छिपाया था, और मरिम्माना से ही नहीं बल्कि किसी से भी कभी नहीं बताया था, उसे सब कुछ बता दिया। उसने उसे वासिली निकोलाइविच के पत्र का हाल भी बताया—सब कुछ यहाँ तक कि सिलिन के बारे में भी बता दिया। वह जल्दी-जल्दी बिना झिझके बोलता गया मानो वह पछता रहा हो कि अब तक मरिम्माना से उसने यह सब क्या छिपाया, मानों वह इस अपराध के लिए उससे क्षमा माँग रहा हो। वह उसकी एक-एक बात को पीती सी ध्यान स सुनती रही, पहिले तो वह भौंचक्की सी हो गई   लेकिन तुरन्त ही उसकी यह भावना जाती रही। कृतज्ञता, गर्व, श्रद्धा, संकल्प से उसकी आत्मा आप्लावित हो रही थी। उसका चेहरा, उसकी, आँखें चमक रही थीं   उसने अपना दूसरा हाथ नेज्दानोव के हाथ पर रख दिया। हर्ष और आनन्द से उसके होंठ खुले हुए थे   एकाएक वह अनुपम सुन्दरी लग उठी थी।

बोलना बन्द कर उसने मरिम्माना के चेहरे में झाँका, जैसे पहिली बार उसने उस चेहरे को देखा हो   जो उसे पहिली नजर में ही इतना प्यारा इतना परिचित, इतना सुन्दर लगा हो!

उसने एक लम्बी निःश्वास छोड़ी—

'आह! मैंने आपसे सब बातें बता दीं, यह अच्छा ही किया?'—बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से बात निकल रही थी।

'हाँ, ओह, बहुत अच्छा बहुत अच्छा!' उसने फुसफुसाहट के स्वर से दुहराया, अचेतन रूप में उसने भी उसका अनुकरण किया और सचमुच उसका स्वर भी रुँध गया था। 'और इसका मतलब आप जानते हैं,' वह कहती गई, मैं आपके कहने में हूँ, मैं भी आपके उद्देश्य में सहायक होना चाहती हूँ, मैं हर कुछ करने को तैयार हूँ, मैं जहाँ भेजी जाऊँगी, आने को तैयार हूँ, मैं भी अपनी आत्मा से यही कामना करती रही हूँ जो आप

वह बोलते-बोलते एकाएक चुप हो गई। अगर वह एक भी शब्द और बोलती तो भावुकता में उसके आँसू की धार बह चलती। उसका सारा कठोर व्यक्तित्व मोम की तरह मुलायम हो गया। सक्रियता, त्याग तुरन्त त्याग की लालसा ने उसके मन-प्राण को अभिभूत कर दिया।

बरामदे में किसी के सावधानी से तेज-हल्के कदमों से चलने की आवाज सुनाई पड़ी।

मरियाना एक दम सचेत हो गई हाथ छुड़ा लिए और एक दम चौकन्नी और सावधान हो गई। कुछ घृणा कुछ साहसी ढीठता का भाव उसके चेहरे पर आ गया।

'मैं जानती हूँ इस समय कौन हमारी जासूसी कर रहा है,' उसने तेज कहा, कि उसका एक-एक शब्द बरामदे में प्रति-ध्वनित हो उठा।' श्रीमती सिप्यागिन हमारे ऊपर जासूसी कर रही है लेकिन मैं इसकी जरा भी परवाह नहीं करती।

चलने की आवाज बन्द हो गई।

'तब फिर? नेज्दानोव की ओर उन्मुख होकर मरियाना ने कहा मुझे क्या करना होगा? मैं कैसे आपकी सहायता कर सकती हूँ? मुझे बताइए — जल्दी बताइए! क्या करना होगा मुझे?

क्या? नेज्दानोव ने कहा मुझे भी अभी तक नहीं मालूम—मुझे मार्केलोव का एक पत्र मिला है।

'कब? कब?

आज ही शाम को। कल मुझे उसके साथ सोलोमिन से मिलने उसके कारखाने जाना है।

'हाँ हाँ 'वह वह मार्केलोव बड़ा शानदार आदमी है। वह सच्चा दोस्त है।

मेरी तरह?

मरियाना ने उसके चेहरे पर नजर डाली।

'नहीं ... आपकी तरह नहीं।'

'क्यों ?'

एकाएक वह दूसरी ओर घूम गई।

'आह ! क्या आप नहीं समझते कि अब आप मेरे लिए क्या हो गए हैं और मैं इस समय कैसा अनुभव कर रही हूँ ? ...'

नेज्दानोव का दिल तभी से धड़कने लगा। न चाहते हुए उसकी निगाहें नीचे झुक गई। यह लड़की जिसने उसे प्रेम किया—उसे जो एक गरीब बेघर-बार का प्राणी है—जिसने, उसमें विश्वास किया, जो उसके कहने पर सब कुछ करने को तैयार है, उसके साथ समान उद्देश्य के लिए साथ-साथ चलने को तैयार है—यह सुन्दर लड़की—मरियाना उस समय नेज्दानोव के लिए धरती पर की सम्पूर्ण अच्छाइयों और सच्चाई का अवतार थी,—माँ बहन, पत्नी के समस्त प्रेम का अवतार जिसका उसे पहिले कभी ज्ञान न था—देश का अवतार, सुख, संघर्ष, स्वतन्त्रता का अवतार !

उसने अपना सिर उठाया, और अपने पर झुकी हुई उसकी आँखों को फिर देखा ...

ओह, वह स्वच्छ पावन और उदास दृष्टि, उसकी आत्मा में बैठती चली गई।

'तो उसने कहना शुरू किया, 'मैं कल जा रहा हूँ ... और जब मैं वापस आऊँगा, मरियाना विकेन्तयेवना'—(उसे एकाएक अब यह पूरा नाम लेकर शिष्ट सम्बोधन बड़ा अटपटा सा लगा)—'तो आपको जो कुछ मुझे पता चलेगा, जो कुछ तै होगा, सब बताऊँगा। अब से मैं जो कुछ भी करूँगा जो कुछ भी मैं सोचूँगा, सब कुछ, सबसे पहिले तुमसे बताऊँगा ... मरियाना।

'ओह, मेरे आत्मीय ! मरियाना ने धारम विभोरता से कहा, और

फिर से उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए, 'और यही वायदा मैं भी तुम से करती हूँ मेरे प्रिय।

यह अन्तिम शब्द उसके मुँह से इतनी आसानी से और सहज ढंग से निकला जैसे उसके अतिरिक्त कुछ और कहा ही नहीं जा सकता था, जैसे वे बहुत पुराने 'प्रेमी' हों, घनिष्ठ हमराही।

'क्या मैं पत्र देख सकती हूँ ?'

'यह लो।

मरियाना ने पत्र पढ़ा और श्रद्धा-विभोर दृष्टि से उसकी ओर देखा।

'क्या वे लोग तुम्हें इतने महत्वपूर्ण कार्य सौंपते हैं, अलेक्सी ?

उत्तर में वह मुस्करा दिया और पत्र अपनी जेब में रख लिया।

'आश्चर्य है, नेज्दानोव ने कहा हमने अपना प्रेम एक दूसरे पर प्रगट कर दिया—हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं—और हमने आपस में इस सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहा।

'जरूरत क्या है ? मरियाना ने भी फुसफुसाया और एकाएक अपने को उसके सीने पर झुका दिया और अपना सिर उसके कन्धे पर टिका दिया लेकिन दोनों ने आपस में चुम्बन भी नहीं किया—उसे उन्होंने हल्कापन और किसी कदर भयानक समझा—और तुरन्त एक दूसरे का हाथ प्रेम से कसकर दबाने के बाद अलग अलग हो गए।

जब मरियाना मोमबत्ती उठाने के लिए घूमी, जिसे उसने खाली कमरे की खिड़की की चौखट पर रख दिया था, तब उसे कुछ-कुछ संकोच हो आया, उसने उसे बुझा दिया, अँधेरे बरामदे में होकर दबे कदमों से वह अपने कमरे में वापस लौट आई, अँधेरे में ही उसने कपड़े उतारे और बिस्तर पर लेट गई—तब उसे कुछ शान्ति का अनुभव हुआ।





सोलह

अगले दिन सबेरे जब नेज्दानोव सो कर उठा, तो पिछली रात की बातों की स्मृति से उसे किसी संकोच या लज्जा का अनुभव नहीं हुआ बल्कि इसके विपरीत उसे निर्मल और गम्भीर सुख का अनुभव हुआ, जैसे मानो उसने कोई ऐसा काम किया हो, जो उसे बहुत पहिले ही करना चाहिए था। सिप्यागिन से दो दिन की छुट्टी लेकर वह मार्केलोव के यहाँ गया। जाने से पहिले उसे ने मरियाना से दो बातें करने का अवसर निकाल लिया। वह भी लज्जा या संकोच का अनुभव नहीं कर रहा था, उसने उसकी ओर शान्त और दृढ़ भाव से देखा और उसको, उसके राशि नाम से सम्बोधन किया। वह सिर्फ उत्सुक थी कि मार्केलाव के यहाँ उसे क्या पता लगेगा और लौटकर सब कुछ उसे विस्तार से बता देने की उसने उससे प्रार्थना की।

'इसमें भी कोई सन्देह की बात नहीं है।' नेज्दानोव ने उत्तर दिया।

'और फिर हमें परेशान होने की क्या जरूरत है?' नेझधानोव ने सोचा, 'हम लोगों की मित्रता में व्यक्तिगत भावना का गौण स्थान है—यद्यपि हम हमेशा के लिए एक हो गए हैं। उद्देश्य के नाम पर? हाँ, उद्देश्य के नाम पर!'

ऐसी कल्पना की नेझधानोव ने, और उसे जरा भी यह सन्देह नहीं हुआ कि उसकी कल्पना में कितना सच्चाई का अंश है और कितना झूठ का अंश।

मार्केलोव को उसने उसी क्लान्त और चिड़चिड़े स्वभाव की स्थिति में पाया। उन्होंने साथ साथ बस नाम मात्र को भोजन किया और तब उसी पुरानी बग्घी में बैठ कर (उन्होंने एक दूसरा घोड़ा एक किसान से किराए पर लिया जो पहिले कभी नहीं जोता गया था—मार्केलोव का घोड़ा अब भी लंगड़ा रहा था,) व्यापारी फाल्येव के कपड़े के बड़े कारखाने को जहाँ सोलोमिन रहता था, चल पड़े। नेझधानोव की उत्सुकता बढ़ गई थी। वह उस आदमी से, जिसके बारे में उसने इतना सुन रखा था परिचय प्राप्त करने के लिए उत्सुक था। सोलोमिन उनके आगमन की प्रतीक्षा में बैठा था। जब दोनों आगन्तुक कारखाने के फाटक पर उतरे और उन्होंने अपना नाम बताया, तो उन्हें तुरन्त 'कारखाने के सुपरिंटेंडेन्ट' के एक छोटे से बंगले में ले जाया गया। वह स्वयं कारखाने के मुख्य भाग में था। जब तक एक मजदूर दौड़ कर उसे बुलाने गया, तब तक मार्केलोव और नेझधानोव खिड़की के पास जाकर कारखाने को देखने लगे। ऊपर से देखने में कारखाना फलने-फूलने की स्थिति में था। काम का भार बहुत था। चारों ओर से काम की व्यस्तता का तेज गुलगपाड़ा, मशीनों की खड़खड़ाहट, करघों के चलने की चूँ-चूँ की आवाज और पहियों की तथा पट्टे की पट-पट, फटर-फटर की आवाज आ रही थी। भरे हुए ठेले और गाड़ियाँ भीतर-बाहर आ जा रही थीं। जोर जोर से आदेश दिए जा रहे थे, घंटियां, सीटियों की आवाज आ रही थी,

धुँए से अटे, कमर में पेटी कसे मजदूर काम कर रहे थे, या इधर-उधर आ जा रहे थे। उनके बालों पर लाल रुमाल बंधे हुए थे। मजदूर लड़कियाँ छींट के कपड़े पहिने तेज चाल से इधर-उधर आ जा रही थीं। घोड़े जोतने के लिए ले जाए जा रहे थे हजारों मजदूरों की कार्यव्यस्तता के शोरगुल से चारों ओर का वातावरण भरा हुआ था। हर काम पूरी तेजी से और नीयम पूर्वक चल रहा था, लेकिन वहाँ केवल काम करने के सलीके की ही कमी नहीं थी, वरन् किसी चीज में सफ़ाई का भी कोई चिन्ह नहीं दिखाइ देता था। चारों ओर गन्दगी ही गन्दगी थी। लगता था जैसे कोई उसकी देखभाल नहीं करता। कहीं कोई खिड़की टूटी थी, तो कहीं प्लास्टर गिर रहा था, दरवाजों के तख्ते टूटे हुए थे, एक दरवाजा तो बिल्कुल ही टूटा पड़ा था, मैदान के बीचो बीच काली, गन्दी, चिकनी मिट्टी की कीचड़ से भरी हुई एक पोखर थी, उससे एक ओर हट कर थोड़ी दूर पर टूटी-फूटी रद्दी ईंटों का ढेर लगा था। बिछावन, कपड़े, डिब्बे, रस्सी के टुकड़े कीचड़ में सने पड़े थे, दुबले पतले मरियल कुत्ते इधर उधर घूम रहे थे, भूँक भी नहीं रहे थे। एक ओर कोने में लगभग चार साल की उमर का एक लड़का, जिसका पेट फूला हुआ था और सिर से पैर तक कालिख से पुता हुआ था, बैठा जोर जोर से, बुरी तरह से रो रहा था, जैसे मानों उसे सारे संसार ने छोड़ दिया हो। उसके पीछे उसी तरह कालिख से लथ-पथ एक सुअरिया चितकबरे धूमधीले बच्चों से घिरी हुई गोमी और करमकल्ले के डंठलों को बटोर रही थी। कपड़ों के चिथड़े एक ओर पड़े थे और चारों ओर एक अजीब दुर्गन्ध फैली हुई थी। सचमुच ही यह एक रूसी फैक्टरी थी, जर्मन और फ्रैंच फैक्टरी नहीं।

मेज्धानोव ने मार्केलाव की ओर देखा।

'मैंने सोलोमिन की योग्यता के बारे में बहुत कुछ सुना था,' उसने कहना शुरू किया, 'लेकिन यह सब अव्यवस्था देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। मुझे इस सबकी आशा नहीं थी।'

'यह अव्यवस्था नहीं है,' मार्केलोव ने रुखाई से उत्तर दिया, 'यह तो रूसी फूहड़पन है। यह सब होते हुए भी, इससे लाखों की पैदा हो रही और फिर उसे पुराने तरीके अपनाने पड़ते हैं और अपने को व्यवहारिक आवश्यकताओं तथा मालिक की इच्छा के अनुसार बनाना होता है। क्या तुम्हें अन्दाज है कि फाल्येव कैसा आदमी है?'

'बिल्कुल नहीं।'

'मास्को भर में सबसे बड़ा कंजूस। पूँजीपति—यही है उपयुक्त शब्द उसके लिए।

उसी समय सोलोमिन ने कमरे में प्रवेश किया। उसको देखकर फिर नेज्दानोव को निराशा हुई जैसी कि फैक्टरी को देखकर हुई थी। पहिली दृष्टि में सोलोमिन एक फिनलैंड या स्वीडन वासी जैसा लगता था वह लम्बा, दुबला-पतला, चौड़े कन्धों का, छोटी-छोटी आँखों और भोहों वाला आदमी था, उसका चेहरा लम्बा और पीला, नाक चौड़ी, बहुत छोटी हरी आँखें, सफेद दाँत, बड़े-बड़े और कुर्रीदार ठुड्डी थी, नीचे का झुकी हुई। उसने कारीगर या भट्टी में कोयला झोंकने वाले की पोशाक पहिन रखी थी, एक पुरानी हरे रंग की जाकट, जिसकी जेबें झोले जैसी थीं, तेल से चीकट टोपी, गर्दन के चारों ओर लपेटा हुआ ऊनी मफलर और फटे हुए जूते पहिन रखे थे। उसके साथ एक और आदमी था, जिसकी उमर चालीस साल के करीब थी, जो एक साधारण किसानी कोट पहिने था, उसकी आकृति जिप्सियों जैसी थी और आँखें स्याह काली और पैनी थीं, जिनसे उसने कमरे में घुसते ही नेज्दानोव को परखना शुरू किया " मार्केलोव को वह पहिल से ही जानता था। उसका नाम था पावेल, वह सालोमिन का दाँया हाथ कहा जाता था।

सोलोमिन ने आगन्तुकों का बिना किसी उतावलेपन के स्वागत किया और दोनों से बिना कुछ बोले अपना रोयेंदार चौड़ी हड्डी का हाथ मिलाया। बिना माँगे ही मेज की दराज में से एक मुहर बन्द

'नहीं, अभी ठहरो' सोलोमिन ने उत्तर दिया। 'वह रात के काम के बारे में पूछ रहा था,' उसने अपने साथियों को बताया।

वे लोग गोलिंयोल्कोवो पहुँचे। वहाँ उन्होंने नाश्ता किया सिर्फ व्यवहार की रक्षा के लिए, फिर सिगार सुलगाए और बात शुरू होगई, अर्ध रात्रि में निरन्तर चलने वाली रूसी बात चीत, जिस ढंग की बातें दूसरे लोगों में मुश्किल से ही मिलती हैं। यहाँ भी यद्यपि सोलोमिन ने नेज्दानोव की आशा पूरी नहीं की। वह बहुत थोड़ा बोला इतना कम कि कहना चाहिए वह करीब-करीब निरन्तर चुप ही रहा, लेकिन वह गौर से सुनता रहा और अगर उसने कोई बात बीच में कही या काटी, तो वह विवेकशील, गम्भीर और अत्यन्त संक्षिप्त थी। उसकी बातों से यह प्रकट हुआ कि सोलोमिन यह विश्वास नहीं करता था कि रूस में तुरन्त क्रान्ति की स्थिति उत्पन्न होगई है, लेकिन दूसरों पर अपनी राय थोपना न चाहकर, उसने दूसरों को उसके लिए कोशिश करने से रोकने का भी प्रयास नहीं किया, और उनकी ओर देखता रहा, दूर खड़े एक तमाशबीन की नजर से नहीं, वरन् उनसे कन्धे से कन्धा भिड़ाकर चलने वाले कामरेड की दृष्टि से। पीटर्सबर्ग के क्रान्तिकारियों से उसका बड़ा निकट सम्पर्क था और बहुत हद तक वह उनसे सहानुभूति भी रखता था, उनका हमदर्द था, क्योंकि वह स्वयं जनता का आदमी था। लेकिन वह आन्दोलन से जनता के अलगाव का, आन्दोलन के प्रति जनता की उदासीनता का भी अनुभव करता था, जिसके बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता था, और जिसके लिए बड़ी तैयारी की जरूरत थी जो न तो इन तरीकों से और न इन आदमियों से ही सम्भव थी। इसलिए वह अलग था, संघर्ष से दूर भागने या कायरता की प्रवृत्ति से नहीं, लेकिन एक विवेकी मनुष्य की तरह, जो अपने को और दूसरों को भी व्यर्थ के लिए बर्बाद करने की कोशिश नहीं करता। लेकिन जहाँ तक सुनने की बात है तो सुने क्यों न, और सीखे भी, अगर सम्भव है

थी। सोलोमिन एक पादरी का एकलौता लड़का था। उसकी पाँच बहिनें थीं। सभी की शादियाँ गाँव के पादरियों या पुरोहितों से हुई थीं लेकिन उसने अपने पिता, जो बड़े ही समझदार और गम्भीर स्वभाव के थे, की सम्मति से मठ का स्कूल छोड़ कर गणित पढ़ना आरम्भ कर दिया था, और मशीनों से विशेष रुचि होने के कारण मशीन के कलपुर्जों में उसने विशेष ध्यान दिया। वह एक अँग्रेज व्यापारी के व्यापार में नौकर हो गया, जो उसे पिता की तरह प्यार करने लगा और उसने उसे मैन्चेस्टर जाने की सुविधाएँ प्रदान कीं, जहाँ वह दो वर्ष तक रहा। वहाँ उसने अँग्रेजी भी सीख ली। वह हाल ही में मास्को के एक व्यापारी के इस कारखाने में आया था और यद्यपि वह अपने मातहतों से कसकर काम लेता था और उनसे काम का ही वास्ता रखता था क्योंकि यही उसने इंगलैंड में सीखा था, लेकिन फिर भी सारे मजदूर उससे स्नेह करते थे, 'वह हममें से ही एक है,' वे उसके बारे में कहा करते थे। उसका पिता उससे बहुत खुश था, वह उसस 'बड़ा ही होशियार बुद्धिमान लड़का कहा करता था, उसे सिर्फ इतनी ही शिकायत थी कि वह शादी नहीं करता था।

मार्केलोव के घर पर रातभर चलने वाली बात चीत में, जैसा कि हमने पहिले ही कहा, वह लगभग बिल्कुल ही चुप रहा, लेकिन जब मार्केलोव कारखाने के मजदूरों से क्या आशाएँ हैं, इस पर बात करने लगा, तो अपनी कम बोलने की आदत के अनुसार अत्यन्त संक्षिप्त रूप में ही उसने कहा कि रूस में कारखाने के मजदूर विदेश के कारखाने के मजदूरों जैसे नहीं है— वे बहुत ही भोले लोग हैं।

'और किसान? मार्केलोव ने पूछा।

'किसान? हाँ उनमें तो अब जरूर हेरफेर लोग हैं, खासतौर से वे, जो कर्ज देते हैं और उनकी संख्या बढ़ती जायगी, लेकिन वे सिर्फ अपना स्वार्थ जानते हैं, बाकी सब भेड़ हैं, अन्धे और जाहिल।'

'तब हमें किससे आशा करनी चाहिए?

प्रोलोमिन मुस्कराया।

'तलाश करो मिलेगा ही कोई न कोई।'

वह लगभग लगातार मुस्कराता ही रहा अपने ही व्यक्तित्व जैसी निराले ढंग की निष्कपट मुस्कान, लेकिन बिल्कुल अर्थहीन नहीं।

नेज्दानोव के साथ वह एक विशिष्ट ढंग से व्यवहार कर रहा था, इस नौजवान विद्यार्थी ने उसमें अपने प्रति रुचि, बल्कि स्नेह उत्पन्न कर लिया था।

उसी आधी रात की बहस में नेज्दानोव एकाएक जोश में आ गया और एकदम से उबल पड़ा। सोलोमिन शान्ति से उठ कर खड़ा हुआ और अपने लम्बे-लम्बे कदमों से बढ़ कर उसने नेज्दानोव के सिर के ठीक पीछे की खिड़की को बन्द कर दिया।

'कहीं तुम्हें ठंड नहीं लग जाय,' उसने वक्ता की उद्विग्न व्यग्र दृष्टि के उत्तर में सरलता से कहा।

नेज्दानोव उससे पूछने लगा कि वह अपनी फैक्टरी में कौन-कौन से समाजवादी आदर्श लागू करने की कोशिश कर रहा है और क्या वह कारखाने के लाभ में मजदूरों का हिस्सा होने के लिए भी कुछ कर रहा है या नहीं!

'प्रिय साथी!' सोलोमिन ने उत्तर दिया, 'हमने एक स्कूल और एक छोटा सा अस्पताल खोला है और इसके लिए भी हमारे मालिक ने भालू की तरह झगड़ा किया था!'

सिर्फ एक बार सोलोमिन को भी तैश आ गया था और उसने अपने मजबूत हाथों से ऐसा जोर का घूँसा मेज पर मारा कि उस पर की हर चीज हिल उठी थी। उसे किसी कानूनी अन्याय, मजदूरों के साथ किसी दमनपूर्ण व्यवहार की बात बताई गई थी।

जब मार्केलोव और नेज्दानोव बहस करने लगे कि कैसे 'कार्य' किया जाय कैसे अपनी योजनाओं को कार्यरूप में परिणित किया जाय,

वो सोलोमिन भी उत्सुकता से सुनता रहा बल्कि श्रादर के साथ सुनता रहा, लेकिन स्वयं उसने एक शब्द भी नहीं कहा। यह बहस सबेरे चार बजे तक चलती रही। क्या-क्या उन्होंने बहस नहीं की। मार्केलोव ने बातों के बीच अथक मानी किस्त्याकोव और उसके पत्रों का भी उल्लेख किया, जिनके बारे में दिलचस्पी बढ़ती जा रही थी। उसने नेज्दानोव से उनमें से कुछ पत्रों को दिखाने का बल्कि उन्हें घर लजाने देने का वायदा किया। क्योंकि वे बहुत लम्बे थे और साफ-साफ लिखावट में नहीं लिखे गए थे और उनमें बड़े महत्व की बातें भरी थीं और उनमें कविताएँ भी थीं, तुच्छ भावुकतापूर्ण नहीं, वरन् समाजवादी भावना से भरी हुई। किस्त्याकोव से मार्केलोव सैनिक सहायक मेजरों और जर्मनों पर चला गया और अन्त में तोप सेना पर अपने लिखे लेखों पर आगया, नेज्दानोव ने हेइने और बोर्न के परस्पर विरोध पर कहा, पूषा और कला में यथार्थवाद पर प्रकाश डाला, जबकि सोलोमिन बैठा सुनता रहा, सुनता रहा और सिगरेट पीता, बैठा सोचता रहा और अब भी मुस्करा रहा था, लेकिन एक शब्द भी न बोला। लगता था कि वह औरों की अपेक्षा अच्छी तरह समझता था कि मामले की जड़ में क्या है।

चार का घंटा बजा नेज्दानोव और मार्केलोव थकान से करीब-करीब चूर हो चुके थे, जबकि सोलोमिन का एक बाल भी नहीं मुड़ा था। मित्र अलग अलग हुए, लेकिन अलग अलग होने से पहिले दूसरे दिन सबेरे शहर जाकर प्रचार कार्य के सम्बन्ध में व्यापारी गोलुश्किन से मिलने का निश्चय हो गया। गोलुश्किन स्वयं बड़ा उत्साही था और उसने दूसरे साथी भर्ती करने का वायदा भी किया था। सोलोमिन ने यह शंका की, कि गोलुश्किन से मिलने जाना कुछ लाभदायक भी होगा या नहीं! जो भी हो अन्त में यह भी सहमत होगया कि गोलुश्किन से मिलना लाभदायक होगा।

— • —

सोलोमिन मुस्कराया।

'तलाश करो मिलेगा ही कोई न कोई।'

वह लगभग लगातार मुस्कराता ही रहा अपने ही आश्चर्य जैसी निराले ढंग की निष्कपट मुस्कान, लेकिन बिल्कुल अर्थहीन नहीं।

नेज्दानोव के साथ वह एक विशिष्ट ढंग से व्यवहार कर रहा था, इस नौजवान विद्यार्थी ने उसमें अपने प्रति रुचि, बल्कि स्नेह उत्पन्न कर दिया था।

उसी आधी रात की बहस में नेज्दानोव एकाएक जोश में आ गया और एकदम से उबल पड़ा। सोलोमिन शान्ति से उठ कर खड़ा हुआ और अपने लम्बे-लम्बे कदमों से बढ़ कर उसने नेज्दानोव के सिर के ठीक पीछे की खिड़की को बन्द कर दिया।

'कहीं तुम्हें ठंड नहीं लग जाय,' उसने वक्ता की उद्विग्न व्यग्र दृष्टि के उत्तर में सरलता से कहा।

नेज्दानोव उससे पूछने लगा कि वह अपनी फैक्टरी में कौन-कौन से समाजवादी आदर्श लागू करने की कोशिश कर रहा है और क्या वह कारखाने के लाभ में मजदूरों का हिस्सा होने के लिए भी कुछ कर रहा है या नहीं।

'प्रिय साथी!' सोलोमिन ने उत्तर दिया, 'हमने एक स्कूल और एक छोटा सा अस्पताल खोला है और इसके लिए भी हमारे मालिक ने भालू की तरह झगड़ा किया था!'

सिर्फ एक बार सोलोमिन को भी तैश आ गया था और उसने अपने मजबूत हाथों से ऐसा जोर का घूँसा मेज पर मारा कि उस पर की हर चीज हिल उठी थी। उसे किसी कानूनी अन्याय, मजदूरों के साथ किसी दमनपूर्ण व्यवहार की बात बताई गई थी।

जब मार्केलोव और नेज्दानोव बहस करने लगे कि कैसे 'कार्य' किया जाय, कैसे अपनी योजनाओं को कार्यरूप में परिणत किया जाय,

सो सोलोमिन भी उत्सुकता से सुनता रहा बल्कि आदर के साथ सुनता रहा, लेकिन स्वयं उसने एक शब्द भी नहीं कहा। यह बहस सवेरे चार बजे तक चलती रही। क्या-क्या उन्होंने बहस नहीं की? मार्केलोव ने बातों के बीच अथक यात्री किस्त्याकोव और उसके पत्रों का भी उल्लेख किया, जिनके बारे में दिलचस्पी बढ़ती आ रही थी। उसने नेज्दानोव से उनमें से कुछ पत्रों को दिखाने का बल्कि उन्हें घर सजाने देने का वायदा किया। क्योंकि वे बहुत लम्बे थे और साफ-साफ लिखावट में नहीं लिखे गए थे और उनमें बड़े महत्व की बातें भरी थीं और उनमें कविताएँ भी थीं कुछ भावुकतापूर्ण नहीं, वरन् समाजवादी भावना से भरी हुई। किस्त्याकोव से मार्केलोव सैनिकों, सहायक मेजरों और जर्मनों पर चला गया और अन्त में तोप सेना पर अपने लिखे लेख पर आ गया, नेज्दानोव न हेड़ने और दोनों के परस्पर विरोध पर बहा, प्रूधों और कला में यथार्थवाद पर प्रकाश डाला, जबकि सोलोमिन बैठा सुनता रहा सुनता रहा और सिगरेट पीता, बैठा सोचता रहा और अब भी मुस्करा रहा था, लेकिन एक शब्द भी न बोला। लगता था कि वह औरों की अपेक्षा अच्छी तरह समझता था कि मामले की जड़ में क्या है।

चार का घंटा बजा नेज्दानोव और मार्केलोव थकान से करीब-करीब चूर हो चुके थे, जबकि सोलोमिन का एक बाल भी नहीं झुका था। मित्र अलग-अलग हुए, लेकिन अलग अलग होने से पहिले दूसरे दिन सवेरे शहर जाकर प्रचार कार्य के सम्बन्ध में व्यापारी गोलुश्किन से मिलने का निश्चय हो गया। गोलुश्किन स्वयं बड़ा उत्साही था और उसने दूसरे साथी भर्ती करने का वायदा भी किया था। सोलोमिन ने यह शंका की, कि गोलुश्किन से मिलने जाना कुछ लाभदायक भी होगा या नहीं। जो भी हो अन्त में यह भी सहमत होगया कि गोलुश्किन से मिलना लाभदायक होगा।

— • —

सत्रह

मार्केलोव के अतिथि अभी सो ही रहे थे, कि एक सूचना वाहक उसकी बहन श्रीमती सिप्यागिन का पत्र लेकर उसके पास आया। उस पत्र में वालेन्तिना मिखाइलोवना ने अनेकों पारिवारिक बातें लिखी थीं, किताब वापस भेजने को लिखा था, जो वह उससे माँग कर लाया था,—और बाद में पुनः करके उसने एक मजेदार खबर दी थी कि उसकी प्रिय मरिआना शिक्षक नेज्दानोव से प्रेम करने लगी है—और शिक्षक उससे। यह गप्प नहीं हाँक रही है—उसने यह सब अपनी आँखों से देखा है और अपने कानों से सुना है। पढ़ते ही मार्केलोव का चेहरा रात की तरह काला पड़ गया... लेकिन उसने कहा एक शब्द भी नहीं उसने सन्देश वाहक को किताब देने का आदेश दिया और जब उसने नेज्दानोव को सीढ़ियों से नीचे आते देखा तो उसने उससे सदा की ही भाँति अभिवादन किया—और वायदे के अनुसार किस्ल्याकोव के पत्र का बंडल भी दे दिया, पर वह उसके पास रुका नहीं और काम की देख

मान करने के लिए बाहर चला गया। मेजमानोव भी अपने कमरे में वापस लौट आया और पत्र पढ़ने लगा। नौजवान प्रचारक ने लगातार अपने बारे में और अपने जोशीले कार्यों के बारे में ही लिखा था। अपने ही कथनानुसार उसने पिछले महीने ग्यारह जिलों में यात्रा की, नौ नगरों में, उन्नीस गाँव में, तिरपन झोपड़ियों में, एक फार्म पर और आठ कारखानों में गया, सोलह रातें उसने सूखी घास के ढेर पर बिताईं एक रात अस्पताल में, एक गायों की सार में (उसने प्रासंगिक रूप से लिखा कि पिस्सू उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके), वह मिट्टी की झोपड़ियों में गया, मजदूरों की बैरिकों में गया हर जगह उसने उन्हें शिक्षा दी उपदेश दिया, पर्चे बाँटे और उनके बारे में जानकारी प्राप्त की, कुछ तो उसने उसी जगह नोट कर लिए, कुछ स्मृति में रखे, उसने चौदह लम्बे पत्र लिखे, सत्ताईस छोटे और अठारह नोटस् लिए, जिनमें से चार पेन्सिल से लिखे गए, एक ब्रुश से, एक कालिख और पानी मिलाकर और इतना सब कुछ वह कर सका, क्योंकि समय का व्यवस्थित उपयोग करना उसने सीख लिया था, उसके आदर्श थे क्विन्टिन जौसन, कैरिसियस, स्वलिस्की और अन्य लेखक और अंक विशेषज्ञ। तब फिर उसने अपने बारे में बात कहनी शुरू करदी, अपने जोरदार भाग्य के बारे में कि उसने पेत्रियर का यातना का सिद्धान्त समाप्त कर दिया है, और बताया कि वह सबसे पहिले जड़ में पहुंचा है और कि वह दुनियाँ में बिना अपना कोई चिन्ह छोड़े दुनियाँ से नहीं जायगा, कि उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा है कि उस जैसे बाईस साल के लड़के ने जीवन और विज्ञान की सारी समस्याएँ हल करली थीं और कि उसे रूस में एक शान्ति मानी है, कि वह उसे हिला कर रख देगा। दिक्सी!! उसने पत्र के अन्त में लिखा। 'दिक्सी' शब्द उसके पत्र में अनेक स्थानों पर आया था और हमेशा दो विस्मयादिबोधक चिन्हों के साथ। एक पत्र में समाजवादी कविता थी जो एक लड़की को सम्बोधन करके लिखी गई थी। वह इन शब्दों से शुरू होती थी

प्रेम करो, मुझे नहीं, मेरे विचारों को!

नेज्दानोव को अन्दर ही अन्दर आश्चर्य हुआ, श्रीमान किस्त्याकोव के *आत्माभिमान* पर उतना नहीं, जितना मार्केलोव की सरलता पर' पर तभी यह विचार आया, 'भाड़ में जाय ऐसी सुरुचि! श्रीमान किस्त्याकोव भी उपयोगी हो सकता है!'

तीनों मित्र सवेरे की चाय पीने के लिए भोजन घर में फिर मिले, लेकिन पिछली रात की बहस फिर नहीं शुरू हुई। कोई भी बात करने के मूड में नहीं था, किन्तु सोलोमिन गम्भीररूप से शान्त रहा, नेज्दानोव और मार्केलोव दोनों ही आन्तरिक रूप से परेशान थे।

चाय के बाद वे लोग नगर के लिए चल पड़े, मार्केलोव का पुराना नौकर सदा की तरह अपने स्थान पर बैठा निराशा भरी दृष्टि से अपने मालिक का जाते देखता रहा।

व्यापारी गोलुश्किन, जिससे नेज्दानोव का परिचय होना था, दवाओं के एक धनी थोक व्यापारी का लड़का था—और फैदोसियन मत का पुराना मानने वाला था। उसने अपनी कोशिशों से अपने पिता के धन को बढ़ाया नहीं था, क्योंकि वह, जैसा कि रूसियों में कहा जाता है, 'उड़ाने खाने वाला ऐयाश तबियत रूसी ढंग का आनन्दवादी' था और व्यापार की लगन उसमें जरा भी नहीं थी। उसकी उमर चालीस साल की थी, भारी बदसूरत, बदन चेहरे पर चेचक के दाग, और छोटी-छोटी सूअर जैसी आँखें थीं उसकी। लड़खड़ाते हुए और अपने हाथों को चलाते हुए पैर को झुलाते हुए और मूर्खों की तरह हँसते हुए और मूर्ख दम्भी गावदू का सा प्रभाव डालते हुए वह, बड़ी जल्दी-जल्दी बातें करता। वह अपने को सुसंस्कृत आदमी समझता था, क्योंकि वह जर्मन कपड़े पहिनता था, और मिलनसार था; हालांकि वह गन्दगी और अव्यवस्था में रहता था। अमीरों से उसकी जान पहँचान थी और थियेटर देखने जाया करता था, और साधारण अभिनेत्रियों को 'रखता' था, जिनके साथ यह असाधारण फ्रेन्च सी अपने खासी बुदरावली का प्रयोग करके बात करता था। लोकप्रिय होने की

उसे सबसे बड़ी चाह थी, कि गोलुदिकन का नाम सारे संसार में बिजली की तरह गूँज जाय। जैसे कभी सोवारोव या पोतस्किन थे तो अब कार्पोतन गोलुदिकन ही क्या रह जायें। इसी इच्छा के कारण, जिससे वह अपनी आन्तरिक नीचता तक पर काबू पा चुका था वह, जैसा वह स्वयं कुछ-कुछ आत्मश्लाघा के साथ कहता था, विरोधीदल में घुस बैठा था। और इसी आकांक्षा के कारण उसका सम्बन्ध आतंकवादियों से हो गया था। वह पहिले अपाज़ीशन का उच्चारण पोज़ीसन करता था किन्तु बाद में वह इसका अर्थ जान गया था।

वह खुलकर घोर वामपन्थी विचारों को प्रकट करता अपने पुराने विचारों का मखौल उड़ाता, ईस्टर के दिनों में गोश्त खाता ताश खेलता, और पानी की तरह शैम्पेन पीता। और वह कभी मुश्किल में नहीं पड़ा, क्योंकि वह कहा करता था "मैंने हर अधिकारी को जहाँ जैसी ज़रूरत है, रिश्वत दे रखी है, हर छेद मूँद रखा है, हर मुँह बन्द है, और हर कान बहरा है। वह विधुर था और निःसन्तान भी, उसकी बहन के लड़के उसके आगे आगे चक्कर काटते रहते थे, भीरुतापूर्ण चापलूसी करते रहते लेकिन वह उन्हें जाहिल अनन्य नारर और जंगली कहा करता और उनको ओर आँख उठा कर भी न देखता था। वह एक विशाल पत्थर के मकान में रहता था जो बड़ा ही अव्यवस्थित और फूहड़ पड़ा था, किसी कमरे का तो सारा फर्नीचर विनेशी बना हुआ था, तो दूसरे में सिवाय मामूली कुर्सियों के और अमरीकन चमड़े के सोफे के अलावा कुछ भी न था। हर जगह तस्वीरें लगी हुई थीं, और सभी निकम्मी थी—लाल मैदानी दृश्य, गुलाबी समुद्री किनारा, मानर का 'धुम्यन' नामक चित्र, और लाल पिंडलियों और कुहनी वाली मोटी नंगी औरत का चित्र। यद्यपि गालुदिकन के कोई परिवार न था, फिर भी उसके अनेकों नौकर और आश्रित थे जो वहीं रहते थे। उदारता और दया से वह उन्हें नहीं रखे हुए था, बल्कि अपनी शक्ति प्रदर्शन की इच्छा से ताकि वह जनता का नेता हो सके और

हुआ है। जिसके उत्तर में मार्केलोव ने कहा कि कोई बात नहीं है, इस स्वर में, जिसमें आमतौर से लोग तब उत्तर देते हैं, जब वे यह ज़ाहिर करना चाहते हैं कि कुछ बात है तो, लेकिन तुम्हारे जानने के लिए नहीं। गोलुश्किन ने फिर कभी इसे, तो कभी उसे कोसना शुरू कर दिया और फिर नयी पीढ़ी की प्रशंसा करने लगा 'ऐसे योग्य लोग,' उसने कहा, 'हमलोगों के बीच आज कल आ रहे हैं! ऐसे योग्य! ओह!'

सोलोमिन ने बीच में ही एक प्रश्न करके उसकी बात काट दी, कि वह विश्वसनीय श्रीमान कौन हैं, जिसके बारे में उसने जिक्र किया था, और वह उसे कहाँ मिला? गोलुश्किन खिसियानी हँसी हँसा और उसने दो बार कहा 'ओह! तुम खुद उसे देख लोगे, देख लोगे,' और बात बदलकर उससे उसके कारखाने के बारे में और उसके 'धूर्त' मालिक के बारे में प्रश्न पूछने लगा, जिसका उत्तर सोलोमिन ने हाँ-ना में ही दिया। तब गोलुश्किन ने सबके लिए ग्लासों में शैम्पेन डाली और नेज्दानोव के कानों पर झुक कर उसने फुसफुसाते हुए उससे कहा 'रिपब्लिक के नाम पर।' और एक ही घूँट में अपना ग्लास खाली कर दिया। नेज्दानोव एक-एक घूँट करके पीता रहा, सोलोमिन ने कहा कि वह सवेरे के समय शराब नहीं पीता, मार्केलोव ने गुस्से और आवेश से ग्लास की आखरी बूँद तक पी डाली। वह अधीरता से बेचैन लगता था 'यहाँ हमलोग इसतरह अपना समय बर्बाद कर रहे हैं,' जैसे वह कह रहा हो, 'और असली मसले पर बात नहीं कर रहे हैं' उसने मेज पर एक घूँसा मारा और पूरी दृढ़ता से कहा, 'महाशयो! और आगे बोलने जा ही रहा था"

पर उसी समय एक चिकना चुपड़ा लोमड़ी नुमा चेहरे का क्षय रोग से पीड़ित जैसा आदमी नारकीन की व्यापारियों जैसी पोशाक पहिने, और अपने दोनों हाथों को पंखों जैसा फैलाए हुए, कमरे में आया। सभी को एक साथ नमस्ते करके उसने फुसफुसाते हुए गोलुश्किन के

मान में कुछ कहा 'बमो मैं बभी तुरन्त आया' गोलुदिन्न ने शीघ्रता से उत्तर दिया। 'महानुभाव' उसने कहा, 'मैं आप लोगों से प्रार्थना करूँगा कि आप लोग थोड़ी देर के लिए मुझे क्षमा करें मेरे कर्तव्य भावना ने मुझे अभी आपके सामने एक जरूरी काम बताया है (गोलुदिन्न ने 'जरूरी' पर जोर दिया) जिससे थोड़ी देर के लिए मेरा आपके बीच से अनुपस्थित होना आवश्यक हो गया है, लेकिन मुझे आशा है कि आप लोग आज तीन बजे मेरे साथ भोजन करना स्वीकार करेंगे और तब हम लोगों को जरा अधिक फुरसत और आजादी होगी।

न मोलोमिन ही जानता था और न नेज्वानोव ही कि क्या उत्तर दिया जाय लेकिन मार्कलोव ने तुरन्त उत्तर दिया, चेहरे और स्वर के उसी तनाव के साथ 'जरूर'! हम आएँगे, न आने से तो सारा गड़बड़ घुटाला ही हो जायगा।

'मैं अत्यन्त आभारी हूँ' गोलुदिन्न ने जल्दी से कहा और मार्कलोव की ओर झुकते हुए उसने कहा 'जो भी हो 'उद्देश्य के लिए मैं एक हजार रुपया दूँगा इसमें जरा भी सन्देह नहीं।

और इतना कहकर उसने अपना दाहिना हाथ तीन बार हिलाया, उसका अँगूठा और छोटी उँगली बाहर निकली हुई थी उसके विश्वास के प्रतीक के रूप में।

वह मेहमानों के साथ दरवाजे तक गया और दरवाजे पर खड़ा होकर उसने फिर चिल्लाते हुए कहा 'मैं तीन बजे आप लोगों के आने की आशा करूँगा'

'निश्चय ही तुम आशा कर सकते हो। सिफ मार्कलोव ने उत्तर दिया'

अच्छा भर दोस्तो सोलोमिन ने, जब वे तीनों सड़क पर आ गए तो कहा 'मैं एक किराए की गाड़ी लेकर फैक्टरी वापस जाता हूँ। हम भोजन के समय तक क्या करेंगे? बस, इधर उधर घूमकर व्यर्थ

लेकिन मरियाना, यह भली विश्वसनीय कामरेड यह पवित्र स्नेही सुन्दर लड़की, क्या वह उससे प्रेम नहीं करती ? क्या उससे भेंट होना, उसकी मित्रता को जीतना, उसका प्रेम पाना अतीव सुखदायी नहीं ? और यह जो दो व्यक्ति इस समय उसके सामने चल रहे हैं, यह मार्केलोव, यह सोलोमिन, जिन्हें वह अभी भी बहुत कम जानता है, लेकिन फिर भी अपने को उनके उतना निकट समझता है , क्या यह रूसी स्वभाव के, रूसी जीवन के अच्छे उदाहरण नहीं हैं, और क्या उन्हें जानना उनका मित्र होना भी सुखदायी नहीं है ? तो फिर क्यों यह अजीब अस्पष्ट सी असन्तोष भरी पीडादायक अनुभूति ? कैसे और क्यों है यह निराशा ? 'अगर तुम मनचुआ निराशावादी हो,' उसके होंठों ने फिर फुसफुसाया, तो क्या खाक अच्छे क्रान्तिकारी बनोगे ! तुम्हें तो चाहिए था कविताएँ करते रहते, बात-बात पर उद्विग्न होते रहते और अपने तुच्छ विचारों और अनुभूतियों को ही मन में पालते रहते और मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं में और तमाम जमीन आसमान को मिलाने में व्यस्त रहते, लेकिन अपनी रुग्ण घबराहट, मनमौजीपन और झुंझलाहट को पौरुषपूर्ण क्रोध, दृढ़ विचारों के आदमी का सच्चा क्रोध समझने की भूल मत करो ! ओ हैमलेट, हैमलेट, तुम्हारी आत्मा की छाया से कैसे बचा जाय ! हरचीज में, यहाँ तक कि आत्मनिन्दा में और घृणित मनोरंजन में किस तरह तुम्हारे अनुकरण से बचा जाय।

'मित्र अलेक्सी ! रूस के हैमलेट !' उसने एकाएक सुना, मन में उठने वाले भावों की अनुगूँज के रूप में, परिचित चिरती आवाज में। 'यह तुम हो मेरे सामने ?'

नेज्दानोव ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और आश्चर्य से सामने पाक्लिन को देखा !—पाक्लिन आदर्श ग्रामीण वेश में, भूरे रंग का सूट पहिने था, इसके गले में मफलर नहीं था। एक बड़ा सिरफिर्या का नीले फीते से बँधा हैट उसके सिरके पीछे की ओर लटक रहा था और जूता पर पालिश हो रही थी !

यह एकदम लपक कर नेज्धानोव के पास आया और उसका हाथ पकड़ लिए।

'पहिले तो,' उसने कहना शुरू किया, 'हालाँकि हम खुले पार्क में हैं फिर भी पुरानी रिवाज के अनुसार मैं तुम्हारा आलिंगन करूं और तुम्हें चूमूं एक बार, दो बार, तीन बार! दूसरी बात यह कि तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि अगर आज तुम न मिले होते, तो कल तो तुम निश्चय मुझे देखते, क्योंकि मैं तुम्हारा निवासस्थान जानता हूँ और इस नगर में तुमसे मिलने के उद्देश्य से ही हूँ मैं यहाँ कैसे आया, इस पर हम फिर, बाद में बात करेंगे और तीसरी बात यह कि तुम अपने साथियों से मेरा परिचय कराओ। संक्षेप में बताओ कि वे कौन हैं, और उन्हें बताओ कि मैं कौन हूँ और फिर चलो कहीं जरा बैठ कर मौज-बहार की जाय!

नेज्धानोव ने अपने मित्र के कथन का पालन किया। मार्केलोव और सोलोमिन का उससे परिचय कराया और संक्षेप में बताया कि वह कौन और क्या है, कहाँ रहता है, आदि आदि।

'बहुत सुन्दर!' पाकलिन ने चीखते हुए कहा, 'अब चलो मैं आप सब को इस भीड़ भाड़ से दूर ले चलूँ हालांकि कोई ज्यादा भीड़ भाड़ तो नहीं है, यहाँ पर, एक एकान्त जगह जहाँ मैं बैठता हूँ जब ध्यान मग्न अवस्था में होता हूँ जब मुझे प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द लेना होता है। वहाँ एक बहुत सुन्दर दृश्य है गवर्नर के निवास स्थान के सन्तरियों की धारी दार चौकियाँ, तीन पुलिस मैन, और एक भी कुत्ता नहीं! मेरे इन रिमार्कों पर अधिक आश्चर्य मत करना, जिनसे मैं तुम सबों को आनन्दित करने का इतना प्रयास कर रहा हूँ? मैं अपने मित्र की राय में प्रतिनिधि हूँ रूसी व्यंग का निःसन्देह उसी लिए लंगड़ा हूँ।

पाकलिन अपने मित्रों को 'एकान्त स्थान' पर ले गया, और वहाँ से दो भिखमंगी औरतों को उठा कर, उन्हें ले जाकर बैठा दिया। वे

लेकिन मरिम्राना, यह भली विश्वसनीय कामरेड यह पवित्र स्नेही सुन्दर लड़की, क्या वह उससे प्रेम नहीं करती ? क्या उससे भेंट होना, उसकी मित्रता को जीतना, उसका प्रेम पाना प्रशीष सुखदायी नहीं ? और यह जो दो व्यक्ति इस समय उसके सामने चल रहे हैं, यह मार्केलोव, यह सोलोमिन, जिन्हें वह अभी भी बहुत कम जानता है, लेकिन फिर भी अपने को उनके उतना निकट समझता है, क्या यह रूसी स्वभाव के, रूसी जीवन के अच्छे उदाहरण नहीं हैं, और क्या उन्हें जानना उनका मित्र होना भी सुखदायी नहीं है ? तो फिर क्यों यह अजीब अस्पष्ट सी असन्तोष भरी पीड़ादायक अनुभूति ? कैसे और क्यों है यह निराशा ? 'अगर तुम मनचुप्पा निराशावादी हो,' उसके होठों ने फिर फुसफुसाया, तो क्या खाक अच्छे क्रान्तिकारी बनोगे ! तुम्हें तो चाहिए था कविताएँ करते रहते, बात-बात पर उद्विग्न होते रहते और अपने तुच्छ विचारों और अनुभूतियों को ही मन में पालते रहते और मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं में और तमाम जमीन आसमान को मिलाने में व्यस्त रहते, लेकिन अपनी रुग्ण घबराहट, मनमौजीपन और झुँझलाहट को पौरुषपूर्ण क्रोध, दृढ़ विचारों के आदमी का सच्चा क्रोध समझने की भूल मत करो ! ओ हैमलेट हैमलेट, तुम्हारी आत्मा की छाया से कैसे बचा जाय ! हरचीज में, यहाँ तक कि आत्मनिन्दा में और घृणित मनोरंजन में किस तरह तुम्हारे अनुकरण से बचा जाय।

'मित्र अलेक्सी ! रूस के हैमलेट ! उसने एकाएक सुना, मन में उठने वाले भावों की अनुगूँज के रूप में, परिचित चिकनी आवाज में। 'यह तुम हो मेरे सामने ?'

नेज्दानोव ने अपनी आँखें ऊपर उठाई और आश्चर्य से सामने पाकिलन को देखा।—पाकिलन आदर्श ग्रामीण वेश में, भूरे रंग का सूट पहिने था, इसके गले में मफलर नहीं था। एक बड़ा सिरकियों का नीले फीते से बँधा हैट उसके सिर के पीछे की ओर लटक रहा था और बूटों पर पालिश हो रही थी।

वह एकदम लपक कर मेज्यानोव के पास आया और उसका हाथ पकड़ लिए।

'पहिले तो,' उसने कहना शुरू किया, 'हालांकि हम खुले पार्क में हैं फिर भी पुरानी रिवाज के अनुसार मैं तुम्हारा आलिंगन करूं और तुम्हें चूमूं एक बार, दो बार, तीन बार। दूसरी बात यह कि तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि अगर आज तुम न मिल होते, तो कल तो तुम निश्चय मुझे देखते, क्योंकि मैं तुम्हारा निवासस्थान जानता हूं और इस नगर में तुमसे मिलने के उद्देश्य से ही हूं मैं यहां कैसे आया इस पर हम फिर, बाद में बात करेंगे, और तीसरी बात यह कि तुम अपने साथियों से मेरा परिचय कराओ। संक्षेप में बताओ कि व कौन हैं, और उन्हें बताओ कि मैं कौन हूं, और फिर चला कहीं जरा बैठ कर मौज-बहार की जाय!'

मेज्यानोव ने अपने मित्र के कथन का पालन किया। मार्कोनाव और सोलोमिन का उससे परिचय कराया और संक्षेप में बताया कि वह कौन और क्या है, कहां रहता है, आदि आदि।

'बहुत सुन्दर!' पाक्लिन ने चीखते हुए कहा, 'अब चलो मैं आप सब को इस भीड़ भाड़ से दूर ले चलूं, हालांकि कोई ज्यादा [illegible] भाड़ तो नहीं है, यहां पर, एक एकान्त जगह जहां मैं बैठता हूं [illegible] ध्यान मग्न अवस्था में होता हूं, जब मुझे प्रकृति के सौन्दर्य का [illegible] लेना होता है। वहां एक बहुत सुन्दर दृश्य है [illegible] स्थान पे सन्तरियों की धारी दार चौकियां, [illegible] एक भी कुत्ता नहीं। मेरे इन विचारों पर [illegible] करना, जिनसे मैं तुम लोगों का आनन्दित [illegible] कर रहा हूं? मैं अपने मित्र का [illegible]
निःसंदेह उसी लिए समझा है।

पाक्लिन अपने मित्रों का [illegible] ले दो भिन्नरंगी औरतों का [illegible]

नौजवान आपस में 'विचार विनिमय' करने लगे जो आम तौर से जरा मुश्किल बात होती है, खास तौर से जब पहिली ही भेंट हो और वह भी ऐसे विषय पर, जिससे कभी कोई लाभ होने की आशा न हो।

'ठहरो!' पावित्सन ने मेज्थानोव की ओर आमुख होकर एका एक जोर से कहा 'मैं तुम्हें यह बता दूँ कि मैं यहाँ कैसे आया। तुम तो जानते ही हो कि मैं हर गर्मी में अपनी बहन को कहीं बाहर ले जाता हूँ। जब मुझे यह पता लगा कि तुम कहीं इसी शहर के नजदीक में हो, तो मुझे याद आया कि इसी नगर में दो अजीबो गरीब दम्पति रहते हैं, जो हमारे सम्बन्धी भी हैं 'मेरी माँ की ओर से। मेरे पिता एक व्यापारी थे'—(मेज्थानोव यह सत्य जानता था लेकिन पावित्सन ने यह बात अन्य दो की जानकारी के उद्देश्य से कही थी)—लेकिन मेरी माँ एक कुलीन घराने की थीं। और वर्षों से वह लोग हमें मिलने के लिए बुला रहे थे। मैंने भी यही सोचा। वे बड़े अच्छे लोग हैं, मेरी बहन को इससे बड़ी प्रसन्नता होगी—इससे अच्छा और क्या होगा? सो हम लोग यहाँ आ गए। और जैसा मैंने सोचा था, ठीक वैसा ही हुआ। मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि हमारा यहाँ आना कितना अच्छा हुआ। लेकिन कैसे-कैसे लोग हैं वे! तुम्हें सचमुच उनसे परिचय करना चाहिए। यहाँ तुम क्या कर रहे हो? खाना आज कहाँ खाओगे? और उस जगह तुम क्यों भटक रहे थे?'

'हम लोग गोलुश्किन नाम के एक व्यक्ति के यहाँ भोजन करने जा रहे हैं 'जो यहाँ एक व्यापारी है', मेज्थानोव ने उत्तर दिया।

'के बजे?

'तीन बजे।'

'तुम उसे किस लिए 'किस लिए' मिल रहे हो' ..... पावित्सन ने भरपूर दृष्टि से सोलोमिन को देखा, जो मुस्कुरा रहा था, और मार्केलोव को, जिसका चेहरा मलिन से मलिनतर होता जा रहा था

'मल्योशा, इन लोगों से कह दो "उन्हें मुझ से शंकित रहने की आवश्यकता नहीं है मैं तुम्हीं में से एक हूँ " तुम्हारी ही पार्टी का '

'गोमुर्षकन भी हमारा ही साथी है', मञ्चानोव ने बताया।

प्रोढ़, अब मेरे दिमाग में एक शानदार विचार आया है! अभी ट्रेन चलने में काफी देर है। तब तक चला मेरे सम्बन्धियों से मुलाकात करलो ?

'क्या ऐसी ऊल जलूल बात करते हो। हम लोग भला कैसे चल सकते हैं ?

उसकी तुम चिन्ता न करो। यह सब मैं अपने ऊपर ले लूँगा। कल्पना करो वह एक नखलिस्तान है ? वहाँ राजनीति की एक झलक भी नहीं है, न साहित्य की, और न किसी प्रकार की आधुनिकता ही वहाँ प्रवेश पा सकी है। यह एक मनोरम छोटा सा मकान है, ऐसा जैसा तुम आज कल कहीं नहीं देखोगे, उसमें से सुगन्धि ही पुराने पन की आती है "उसके लोग पुराने वातावरण पुराना 'यह तुम समझ लो, वह सब तरह से पुराना है, कैथेराइन द्वितीय पाउडर, फ्रे, अठारवीं शताब्दी! जरा कल्पना करो एक पति-पत्नी, दोनों ही अत्यन्त वृद्ध, एक ही उमर के, पर एक भी झुर्री नहीं, गाल फूले गाल, बने-चुने, नन्हें तोता का एक सुन्दर जोड़ा, सूरज जैसा और मनभावन की हद तक भोले, कि कोई सीमा नहीं इसकी। असीम मृदु स्वभाव के सागर में प्रायः नैतिक भावना का पूर्ण लोप होता है लेकिन मैं ऐसी सूक्ष्मताओं में नहीं जाना चाहता, मैं तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि हमारा प्यारा वृद्ध जोड़ा अपने स्वभाव का है। उनका कभी कोई लड़का नहीं हुआ, बेचारे भोले भाले! मगर में यही उन्हें कहा जाता है बेचारे भोले-भाले। दोनों ही एक ही जैसी पोशाक पहिनते हैं, फीतेदार गाउन, और उतना अच्छा कि आज कल तुम्हारे देखने में नहीं आ सकता। दोनों बिल्कुल एक जैसे ही हैं, सिर्फ

बूढ़ा सिर पर मखमली टोपी पहिनता है और बूढ़ा साधारण टोपी। हालांकि वह भी बहुत कुछ वैसी ही होती है, सिर्फ उसमें फीते नहीं होते। मगर यह अन्तर न हो तो आप यह फरक भी नहीं कर सकते कि कौन कौन है, खास तौर से इसलिए कि पति के दाढ़ी नहीं है। उनके नाम हैं फोमुश्का और फिमुश्का। मैं आप लोगों से कहता हूँ कि उन्हें आप लोग जरूर देखें, क्योंकि वे कौतूहल की वस्तु हैं, देखने योग्य। वे दोनों एक दूसरे को अत्यधिक प्रेम करते हैं, अगर कोई उनसे मिलने आता है तो कहते हैं, "बड़ा आनन्द हुआ, आपकी बड़ी कृपा हुई।" ऐसे हैं वह विनम्र लोग। वे आपको प्रसन्न करने के लिए अपने सारे कौशल दिखा देगें। सिर्फ एक बात की वहाँ शर्त है कोई सिगरेट नहीं पी सकता, इसलिए नहीं कि वे अनुदार हैं, सिगरेट की सुगन्ध उन्हें बर्दाश्त नहीं होती, बस इसीलिए। तुम जानते हो उन के दिनों में कोई सिगरेट नहीं पीता था और वे केनरी (एक प्रकार की गाने वाली चिड़िया) को भी सहन नहीं कर पाते, क्योंकि उनके दिनों में यह चिड़िया भी बहुत कम दिखाई देती थी और यह एक बड़ा सौभाग्य है, तुम स्वीकार करोगे। तो? तुम चलोगे न?'

'वास्तव में, कह नहीं सकता', नेज्दानोव ने कहना शुरू किया।

'ठहरो,' मैंने अभी सारी बातें नहीं बताई है। एक बड़ी मजेदार बात तो रह ही गई दोनों की आवाज भी एक सी है। अगर तुम्हारी आँख बन्द हो तो तुम यह नहीं पहचान सकते कि कौन बोल रहा है। सिर्फ इतना अन्तर है कि फोमुश्का जरा अधिक जोर देकर बोलता है। आओ मेरे मित्र! मैं जानता हूँ तुमलोग एक महान काम करने जा रहे हो और तुम लोगों के मन में द्वन्द्व का एक तूफान उठ रहा है—शायद भयंकर द्वन्द्व' लेकिन उस तूफानी समुद्र में अपने आपको फेंक देने से पहिले ही क्यों न एक गोता लगालो' बन्द पानी में?' मार्केलोव ने टोका।

'क्या हर्ज है? बन्द पानी तो जरूर है, लेकिन है ताजा और शुद्ध। स्टेपी प्रदेश में तालाब हैं, पर उनमें दुर्गन्ध कभी नहीं आती, हालांकि

उसमें कोई धारा तो नहीं चलती रहती है, पर उनका पानी कभी नहीं सड़ता, क्योंकि उनकी तली में स्रोत हैं। और मेरे इन बड़े-बूढ़ों के मन में भी ऐसा ही स्रोत है और वह भी सुखतम। उन्हें देख कर तुम्हें अन्दाज हो जायगा कि सदी डेढ़ सदी पहिले कैसे लोग हुआ करते थे। तो चलो जल्दी करो और मेरे साथ आओ। नहीं तो जल्दी ही वह दिन और घड़ी आ जायगी—निश्चय ही दोनों का एक समय होगा—कि हमारे वह तोते उड़ जायँगे और जो कुछ पुराना है वह सब उनके साथ मिट जायगा। और यह नन्हा छोटा सा खूबसूरत मकान गिर जायगा, और वहाँ कुछ उग आयगा, मेरी माँ कहा करतीं थीं कि यह वहाँ उगता है, जहाँ कभी मनुष्य रहते थे—अर्थात् विच्छू, बरइयाँ, गोनरू खिरायत का पेड़ आदि, वह सड़क भी वैसी न रहेगी लोग उधर से आयेंगे-जायेंगे पर फिर वह कभी ऐसा उन्हें युगों तक देखने को नहीं मिलेगा।

'अच्छा ऐसी बात है!' नगपानोव तपाक से बोला 'तो, चलो हमलोग अभी वहाँ चलें।

'मैं भी खुशी-खुशी वहाँ चलने को तैयार हूँ' कोलासिन ने कहा! इन सबमें मेरी रुची तो नहीं है पर बात काफी दिलचस्प है लेकिन अगर मिस्टर पाविलन यह विश्वास दिला सकें कि हमारे जाने से वहाँ कोई विघ्न नहीं होगी तब फिर क्या

'आप लोग चिन्ता न करें!'

पाविलन ने लोगों को आश्वस्त किया, 'वह तो बड़े खुश होंगे—बस इतना सा बात। कोई दिखावे या प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है। मैंने आपको बताया कि वेचारे बड़े भोले भाले हैं हम उनसे गाना! गवायेंगे। और आप भी श्रीमान मार्केलाव! क्या आप सहमत हैं?'

मार्केलोव ने गुस्से से अपने कंधे झटकार। मैं वहाँ अकेला तो रहूँगा नहीं! चलिए, चलो ही आप।

सभी अपनी जगह से उठ खड़े हुए।

वृद्धा सिर पर मकड़ीसी टोपी पहिनती है और वृद्ध साधारण टोपी। हालांकि वह भी बहुत कुछ वैसी ही होती है, सिर्फ उसमें फीते नहीं होते। अगर यह अन्तर न हो तो आप यह फरक भी नहीं कर सकते कि कौन कौन है, खास तौर से इसलिए कि पति के दाढ़ी नहीं है। उनके नाम हैं फोमुश्का और फिमुश्का। मैं आप लोगों से कहता हूँ कि उन्हें आप लोग जरूर देखें, क्योंकि वे कौतूहल की वस्तु हैं, देखने योग्य। वे दोनों एक दूसरे को अत्यधिक प्रेम करते हैं, अगर कोई उनसे मिलने आता है तो कहते हैं, 'बड़ा आनन्द हुआ, आपकी बड़ी कृपा हुई।'' ऐसे हैं यह विनम्र लोग। वे आपको प्रसन्न करने के लिए अपने सारे कौशल दिखा देंगें। सिर्फ एक बात की वहाँ रोक है कोई सिगरेट नहीं पी सकता, इसलिए नहीं कि वे अनुदार हैं, सिगरेट की सुगन्ध उन्हें बर्दाश्त नहीं होती, बस इसीलिए। तुम जानते हो उन के दिनों में कोई सिगरेट नहीं पीता था और वे कनरी (एक प्रकार की गाने वाली चिड़िया) को भी सहन नहीं कर पाते, क्योंकि उनके दिनों में यह चिड़िया भी बहुत कम दिखाई देती थी और यह एक बड़ा सौभाग्य है, तुम स्वीकार करोगे! तो? तुम चलोगे न?'

वास्तव में, कह नहीं सकता', नेज्दानोव ने कहना शुरू किया।

'ठहरो' मैंने अभी सारी बातें नहीं बताई हैं। एक बड़ी मजेदार बात तो रह ही गई दोना की आवाज भी एक सी है। अगर तुम्हारी आँख बन्द हो तो तुम यह नहीं पहचान सकते कि कौन बोल रहा है। सिर्फ इतना अन्तर है कि फोमुश्का जरा अधिक जोर देकर बोलता है। आओ मेरे मित्र! मैं जानता हूँ तुमलोग एक महान कार्य करने जा रहे हो और तुम लोगों के मन में द्वन्द्व का एक तूफान उठ रहा है—शायद भयंकर द्वन्द्व लेकिन उस तूफानी समुद्र में अपने आपको फेंक देने से पहिले ही क्यों न एक गोता लगालो बन्द पानी में?' मार्केलोव ने टोका।

'क्या हर्ज है? बन्द पानी तो जरूर है, लेकिन है ताजा और शुद्ध। टैपा प्रदेश में तालाब हैं, पर उनमें दुर्गन्ध कभी नहीं आती, हालांकि

उसमें कोई धारा तो नहीं बसती रहती है, पर उनका पानी कभी नहीं सड़ता क्योंकि उनकी तली में सोत हैं। और मेरे इन बड़े-बूढ़ों के मन में भी एसा ही स्रोत है और वह भी पुरातन। उन्हें देख कर तुम्हें अन्दाज हो जायगा कि सदी बेद सदी पहिले कैसे लोग हुआ करते थे। तो चलो जल्दी करो और मेरे साथ आओ। नहीं तो जल्दी ही वह दिन और घड़ी आ जायगी—निश्चय ही दोनों का एक समय होगा—कि हमारे वह दोनों उड़ जायेंगे और जो कुछ पुराना है वह सब उनके साथ मिट जायगा। और यह नन्हा छोटा सा खूबसूरत मकान गिर जायगा, और वहाँ कुछ उग आयगा, मेरी माँ कहा करतीं थीं कि वह वहाँ उगता है, जहाँ कभी मनुष्य रहते थे—अर्थात् बिच्छू बरदर्यां, गोगरु चिरायते का पेड़ आदि, यह सड़क भी वैसी न रहेगी, लोग उधर से आयेंगे-जायेंगे पर फिर वह कभी एसा उन्हें युगों तक देखने को नहीं मिलेगा।'

'अच्छा ऐसी बात है!' नजवामोव तपाक से बोला, 'तो, चलो हमसाम अभी वहाँ चलें।

'मैं भी खुशी-खुशी वहाँ चलने का तैयार हूँ' सोलोमिन ने कहा! इस सबमें मेरी रुची तो नहीं है पर बात काफी दिलचस्प है लेकिन अगर मिस्टर पाकिनन यह विश्वास दिला सकें कि हमारे जाने से वहाँ कोई दिक्कत नहीं होगी तब फिर कया

'आप लोग चिन्ता न करें!'

पाकिलन ने लोगों को आश्वस्त किया, 'वह तो बड़े खुश होंगे—बस इतनी सी बात। कोई दिखावे या प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है! मैंने आपको बताया कि बेचारे बड़े भोले भाले हैं, हम उनसे गाना गवायेंगे। और आप भी श्रीमान मार्केलाव! क्या आप सहमत हैं?

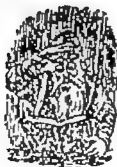
मार्केलोव ने गुस्से से अपने कंधे झकझोरे। मैं यहाँ अकेला तो रहूँगा नहीं! चलिए, चला ही जाय।'

सभी अपनी जगह से उठ खड़े हुए।

बड़े भयंकर सज्जन है,' पाक्लिन ने मार्केलोव की ओर इशारा करते हुए नेज्दानोव के कान में फुसफुसाया, 'टिड्डियां खाते हुए जानबैप्टिस्ट की साक्षात प्रतिमा की तरह — टिड्डियां, जिनमें शहद नहीं है। लेकिन वह,' उसने सोलोमिन की ओर सिर झुका कर संकेत करते हुए कहा, 'बढ़िया आदमी है। कैसी मीठी मस्त मुस्कान है उसकी! मैंने देखा है कि ऐसी मुस्कान उन्हीं लोगों की होती है जो और लोगों से महान होते हैं— और स्वयं उससे अनभिज्ञ होते हैं।'

'क्या ऐसे लोग भी होते हैं?' नेज्दानोव ने पूछा।

'बहुत तो नहीं, पर कुछ तो होते ही है,' पाक्लिन ने उत्तर दिया।



उन्नीस

फ़ोमुश्का और फिमुश्का अर्थात् फ़ोमा सावरेल्येविच और एवफ़ीमिया पाव्लोवना मुखोरोव दोनों एक ही परिवार के थे शुद्ध रूसी वंश के और स० नगर के करीब-करीब सबसे पुराने निवासी माने जाते थे। छोटी उमर में ही उनकी शादी हो गई थी और बहुत दिन हुए तभी वे लोग नगर के बाहिरी भाग में स्थित अपने पैतृक लकड़ी के बने मकान में आकर रहने लगे थे और फिर न कभी उसे छोड़ कर ही कहीं गए और न अपना रहन-सहन अपनी आदतें ही बदलीं। उनके लिए समय ठहरा हुआ लगता था। उनके 'निवासस्थान' की सीमा में किसी 'नवीनता' ने प्रवेश नहीं किया था। उनके पास सम्पत्ति अधिक नहीं थी, लेकिन उनके किसान वर्ष में अनेक बार उन्हें मुर्गे-मुर्गियाँ और अन्य सामान भेंट कर जाते थे, उसी तरह से जैसे 'मुक्ति' से पूर्व पुराने दिनों में कर जाते थे। एक निश्चित तिथि पर गाँव का मुखिया लगान वसूल करके देने आ जाता, और साथ में खास जंगली मुर्गी या

'बड़े भयंकर सज्जन हैं,' पाक्लिन ने मार्केलोव की ओर इशारा करते हुए नेज्दानोव के कान में फुसफुसाया, 'टिड्डियाँ खाते हुए ऐनाबैप्टिस्ट की साक्षात प्रतिमा की तरह' टिड्डियाँ, जिनमें शहद नहीं है। लेकिन वह,' उसने सोलोमिन की ओर सिर झुका कर संकेत करते हुए कहा, 'बढ़िया आदमी है। कैसी मीठी मस्त मुस्कान है उसकी। मैंने देखा है कि ऐसी मुस्कान उन्हीं लोगों की होती है जो और लोगों से महान होते हैं— और स्वयं उससे अनभिज्ञ होते हैं।'

'क्या ऐसे लोग भी होते हैं ?' नेज्दानोव ने पूछा।

'बहुत तो नहीं, पर कुछ तो होते ही हैं,' पाक्लिन ने उत्तर दिया।



तथा बरामदे और गोदाम थे। उसमें गोल खम्भे थे और पीछे की ओर छोटी सी घेरे की दीवार थी। सामने की ओर एक छोटा सा कटघरा था और पीछे बाग और बाग में तमाम तरह के सामान के लिए गोदाम के नाम की अनेक कोठरियाँ थीं ऐसा था उनका यह पूरा नीड़। यह बात नहीं कि उन बाहिरी कोठरियों में कोई बहुत सामान भरा हुआ था कुछ तो गिर रही थी, लेकिन पुराने दिनों में यह सब ऐसे ही व्यवस्थित किया गया था और सब से ऐसे ही बना चला आ रहा था। सुवालेव के परिवार में दो घोड़े थे काफी बूढ़े भूरे रंग के और स्थूल, एक के सुफेद दाग थे यह लोग उन्हें 'अचल' कहते थे। ये ज्यादा से ज्यादा महीने में एक बार एक विचित्र प्रकार की गाड़ी में बड़े सज-धज के साथ जाते और सारे शहर को मालूम हो जाता। यह पृथ्वी के गोले जैसी जिसका आगे से चौथाई भाग काट दिया गया हो लगती थी उसमें पास-पास बड़े-बड़े मस्से जैसे धब्बेदार विदेशी कपड़े की अस्तर लगी थी जिसका अन्तिम टुकड़ा शायद रानी एलिजाबेथ के समय में ब्रुसेल्स अथवा लियोंज में बुना गया था। सुवोलेव परिवार का कोचवान बड़ा-बूढ़ा था जिससे मशीन के तेल की सी दुर्गन्ध आती रहती उसकी दाढ़ी ठीक आँख के नीचे से शुरू होती थी और उसकी लम्बी नोंक दाढ़ी से मिलती हुई नीचे को लटकी रहती। वह अपना हर काम ऐसे सधे हुए ढंग से करता कि उसको जरासी सुंघनी सूँघने में भी पाँच-मिनट लगते। पाँच मिनट अपनी पत्नी से थोड़ा सामने में और दो घंटे से भी अधिक लगते उस 'अचल' को जोतने में लग जाते थे। उसका नाम था पेरिफिलरा। जब सुवोलेव दम्पति बग्घी में बैठकर घूमने निकलते और चढ़ाई आ जाती तो वे चौंक उठते और भयभीत हो जाते (वैसे तो उन्हें ढलाव पर भी उतना ही डर लगता था) और गाड़ी में लगे चमड़े के फीता को कसकर पकड़ लेते और जोर से चिल्लाते "हे ईश्वर घोड़ों को 'सैमुअल जैसी शक्ति प्रदान कर और हम चिड़िया के पंख की तरह हल्के हो जायें, चिड़ियों के पंख की तरह!'
सारा नगर उन्हें कुछ सनकी और मसखरा समझता, करीब-करीब

एक घोड़ा, जिसे वह बताता कि जंगल से मार कर लाया है हालाँकि वह जंगल बहुत पहिले ही नष्ट हो चुका था। वह लोग ड्राइंग-रूम के दरवाजे पर उसे बैठा कर चाय पिलाते, उसे प्रसन्न करते और एक भेड़ की खाल की टोपी और हरे रंग के चमड़े के दस्ताने भेंट कर उसे विदा कर देते। सुखोदोल का घर पुराने जमाने की तरह दासों से भरा हुआ था। पुराना नौकर कैसियोपिया, खूब मजबूत कपड़े की वास्कट पहिनता, जिसके कालर उठे रहते, उसके बटन लोहे के होते और वह आकर सुरीली लय में गाता हुआ सा घोषणा करता कि 'मेज पर भोजन परोसा जा चुका है,' और अपनी मालकिन की कुर्सी के पीछे खड़ा होकर झपकने लगता, सब कुछ पुराने ढंग से। भोजन की मेज के बगल की मेज, जिस पर भोजन रखा होता की देखभाल उसके जिम्मे थी।

साग में तरह-तरह के मिश्र मसालों और चीज़ की देख-भाल भी उसी के सुपुर्द थी। इस प्रश्न पर कि 'क्या उसने नहीं सुना है कि सभी दास अब मुक्त होगए हैं?' वह हमेशा उत्तर देता 'लोग-बाग तो हमेशा ही कोई न कोई ऐसी ही बेसिर पैर की मूर्खतापूर्ण बात उड़ाते रहते हैं। तुर्कों में ऐसी आज़ादी काफी है लेकिन धन्यवाद है ईश्वर को कि वह इस सब से बच गया है।' एक नुष्का नाम की बौनी लड़की दिल बहलाव के लिए रखी गई थी और एक बूढ़ी नर्स वैसिलियेवना भोजन के समय आया करती। वह सिर पर एक बड़ा सा काला रुमाल बाँधे रहती और मोटी आवाज में तमाम तरह की बातें करती—नैपोलियन की, १८१२ के वर्ष की, ईसा विरोधियों की, सफेद हब्शियों की, या फिर अपनी हथेली पर ठोढ़ी रखकर वह बताती कि उसने क्या सपना देखा है और उसका क्या शुभ और अशुभ परिणाम है और ताशों में वह क्या जीती। सुखोदोल का मकान नगर के अन्य मकानों से बिल्कुल भिन्न था। वह पूरा का पूरा बलूत की लकड़ी का बना हुआ था उसकी खिड़कियाँ चौकोर थीं और उसमें अनेक पीढ़ियाँ और गेलरियाँ

तथा बराम्दे और गोदाम थे। उसमें गोल खम्भे थे और पीछे की ओर छोटी सी घेरे की दीवाल थी। सामने की ओर एक छोटा सा कटघरा था और पीछे बाग और बाग में तमाम तरह के सामान के लिए गोदाम के नाम की अनेक कोठरियाँ थीं ऐसा था उनका यह पूरा नीड़। यह बात नहीं कि उन बाहिरी कोठरियों में कोई बहुत सामान भरा हुआ था, कुछ तो गिर रही थीं लेकिन पुराने दिनों में यह सब ऐसे ही व्यवस्थित किया गया था और तब से ऐसे ही बना चला आ रहा था। सुवालेव के परिवार में दो घोड़े थे काफी दुबले भूरे रंग के, और स्थूल एक के सफेद दाग थे, वह लोग उसे अपस' कहते थे। वे ज्यादा से ज्यादा महीने में एक बार एक विचित्र प्रकार की गाड़ी में बड़े सज-धज के साथ जाते और सारे शहर को मालूम हो जाता। यह पृथ्वी के गोले जैसी जिसका आगे से चौथाई भाग काट दिया गया हो लगती थी, उसमें पास-पास बड़े-बड़े मस्से जैसे धब्बेदार विदेशी कपड़े की झालर लगी थी, जिसका अन्तिम टुकड़ा शायद रानी एलिजाबेथ के समय में यूट्रेक्ट अथवा लियॉन्स में बुना गया था। सुवोरोव परिवार का कोचवान बड़ा-बूढ़ा था जिससे मशीन के तेल की सी दुर्गन्ध आती रहती, उसकी दाढ़ी ठीक आँख के नीचे से शुरू होती थी और उसकी लम्बी नोंक दाढ़ी से मिलती हुई नीचे को लटकी रहती। यह अपना हर काम ऐसे सधे हुए ढंग से करता कि उसको जरासी सुँघनी सूँघने में भी पाँच-मिनट दो मिनट अपनी पेटी में घोड़ा नाथने में और दो घंटे से भी अधिक अकेले उस 'अपस' को जोतने में लग जाते थे। उसका नाम था पैरिफिला। जब सुवोरोव दम्पति बग्घी में बैठकर घूमने निकलते और चढ़ाई आ जाती तो वे भीत उठते और भयभीत हो जाते (वैसे तो उन्हें ढलाव पर भी उतना ही डर लगता था) और गाड़ी में लगे चमड़े के फीतों को बराबर पकड़ रखते और जोर से चिल्लाते हे ईश्वर घोड़ों को 'सैमुअन जैसी शक्ति प्रदान कर और हम चिड़ियों के पंख की तरह हल्के हो जायें चिड़िया के पंख की तरह!

सारा नगर उन्हें कुछ सनकी और मसखरी समझता करीब-करीब

एक जोड़ा, जिसे वह बताता कि जंगल से मार कर लाया है हालांकि यह जंगल बहुत पहिले ही नष्ट हो चुका था। वह लोग ड्राइंग-रूम के दरवाजे पर उसे बैठा कर चाय पिलाते, उसे प्रसन्न करते और एक भेड़ की खाल की टोपी और हरे रंग के चमड़े के दस्ताने भेंट कर उसे विदा कर देते। सुवोरोव का घर पुराने जमाने की तरह दासों से भरा हुआ था। पुराना नौकर कैलिग्रोपिच, खूब मजबूत कपड़े की वास्कट पहिनता, जिसके कालर उठे रहते उसके बटन लोहे के होते और वह आकर सुरीली लय में गाता हुआ सा घोषणा करता कि मेज पर भोजन परोसा जा चुका है, और अपनी मालकिन की कुर्सी के पीछे खड़ा होकर झपकने लगता, सब कुछ पुराने ढंग से। भोजन की मेज के बगल की मेज, जिस पर भोजन रखा होता की देखभाल उसके जिम्मे थी।

साग में तरह-तरह के मिर्च मसालों और नींबू की देख-भाल भी उसी के सुपुर्द थी। इस प्रश्न पर कि 'क्या उसने नहीं सुना है कि सभी दास अब मुक्त होगए हैं?' वह हमेशा उत्तर देता, लोग-बाग तो हमेशा ही कोई न कोई ऐसी ही बेसिर पैर की मूर्खतापूर्ण बात उड़ाते रहते हैं। तुर्कों में ऐसी आजादी काफी है लेकिन धन्यवाद है ईश्वर को कि वह उस सब से बच गया है।' एक दुष्का नाम की बौनी लड़की दिल बहलाव के लिए रखी गई थी और एक बूढ़ी नर्स वैसिलिसेवना भोजन के समय आया करती। वह सिर पर एक बड़ा सा काला रुमाल बाँधे रहती और मोटी आवाज में तमाम तरह की बातें करती—नैपोलियन की, १८१२ के वर्ष की ईसा विरोधियों की, सफेद हब्शियों की, या फिर अपनी हथेली पर ठोढ़ी रखकर वह बताती कि उसने क्या सपना देखा है और उसका क्या शुभ और अशुभ परिणाम है और शास्त्रों में वह क्या जीती। सुवोरोव का मकान नगर के अन्य मकानों से बिल्कुल भिन्न था। वह पूरा का पूरा बलूत की लकड़ी का बना हुआ था, उसकी खिड़कियाँ चौकोर थीं और उसमें अनेक पौढ़ियाँ और गैलरियाँ

मरोड़ और पचिश की दवाइयाँ लिखी थीं। वे लोग ठीक ग्यारह बजे भोजन करते थे और हमेशा पुराने ढंग का खाना—रोटी, ककड़ी का खट्टा रायता, नमकीन करमकल्ला, अचार, चावल, केसर पड़ा मुर्ग का गोश्त, शहद मिलाकर बनाए गए पपीते आदि आदि। खाने के बाद सिर्फ एक घंटे के लिए वे ऊँघते थे। उसके बाद फिर आमने-सामने बैठकर और रसभरी का दावन पीते और कभी-कभी वह एक चालीस अर्शफियों नामक झाग निकलने वाला पेय पिया करते थे जो कि करीब करीब सब बोतल के बाहर उबल पड़ता जिससे दूना या बड़ा मजा आता और कैमिस्ट्री का इससे बड़ा ठहाका होता। इस सारी जगह साफ करनी होती और वह दस्तर रमाइए और बैरों पर नाराज रहता जिनको कि वह उन पेय पदार्थ के आविष्कार का जिम्मेदार ठहराता 'आखिर इसमें धरा ही क्या है? सिर्फ फर्नीचर बिगाड़ना है।' उसके बाद फिर वे लोग कुछ पढ़ते थे या यानी पुस्तकें की उठाकर दूर पर हमेशा रहने या दोनों मिलकर पुराने ढंग के युगल-गीत गाते। (दोनों की आवाजें बिल्कुल एक सी थीं ऊँची पतली, काँपती, दूर और धीमी [illegible] के बाद—लेकिन बेसुरी नहीं) या वे लोग बैठकर घूमा करते पुराने खेल फ्रिज पिकेट या उससे उम्दा का खेल तब नमीपर [illegible] के काम का भाव पाते [illegible] पतमान का उन्होंने बस इतना ही रियायत दे रखा था। यद्यपि उन के हमेशा अपना एक दमदारी समझते थे और पढ़ते कि इस वीना-झूला में लोग अत्यन्त ही समझदार होते जा रहे हैं। उनका नियम था कि वे न तो कभी आधुनिक युग की आलोचना करते थे और न ही अतीत का गुणगान और यह बात तो वह मानने को हमेशा तैयार रहते थे कि दूसरे लोग और तरीके से रहते होंगे और अधिक पसन्द तरीके से भी होते कि उन्हें अपने रहन-सहन बदलने के लिए न कहा जाय।

सात बजे बिल्कुल फिर भोजन लगा दिया जिसमें कि ठण्डे मांस का रहना ही अनिवार्य था ही। और नौ बजे गुड़गुड़ गद्दे पर

केवल नियम निषिद्ध मनोरंजनों से अपने आपको वंचित रखता था, बल्कि उन हल्के-फुल्के मनबहलावों तक से भागता था जो कि दूसरों की दृष्टि में अनिवार्य होते हैं। उसके नीचे ही अंकित था भूख और सर्दी से पीड़ित अवस्था में साइबेरिया में लिखा गया। टर्सिस नामक कविता भी एक खास नमूना, जिसमें निम्नांकित पंक्तियां थीं—

'सब ओर शान्ति का है निवास,
हँस रही धूप में है शबनम।
था शीतल चपकी नवल प्रकृति,
दे रही दिवस को नव जीवन।
एकाकी टर्सिस मन निराश,
उन्मन आकुल, विरही उदास
प्रियतमा अनीता है सुन्दर
फिर कैसे हो टर्सिस प्रफुल्ल ?'

और फौजी कप्तान की जो १७६० में आया था, दिनांक ६ मई की एक भावुकविता भी लिखी थी—

'मैं नहीं कभी भूलूंगा
ओ सुखद ग्राम!
मैं सदा करूंगा याद
कितना मधुर समय बीता था वह ?
कितना मुझको था स्नेह मिला,
तेरे स्वामी के कक्ष मध्य!
वे पांच चिर स्मरणीय दिवस
जो उस समाज में बीते हैं,
जो हर प्रकार से धन्यवाद का पात्र रहा
जिसमें थीं वृद्ध—युवा—महिलाएँ भी अनगिन—
और थे लोग सभी बहुत दिलचस्प वहाँ।'

एलबम के अन्तिम पृष्ठ पर कविताओं के स्थान पर पेट के दर्द,

मरोड़ और पेचिश की दवाइयाँ मिलती थीं। ये लोग ठीक बारह बजे भोजन करते थे और हमेशा पुराने ढंग का खाना—दही ककड़ी का गट्टा, खोग्वा नमकीन करमकल्ला अचार, दावत केसर पका मुर्गे का गोश्त, शहद मिलाकर बनाए गए शरीफे आदि आदि। खाने के बाद सिर्फ एक घंटे के लिए वे झपकी लेते थे। उठकर फिर आमने-सामने बैठते और रसभरा का शर्बत पीते और कभी-कभी वह एक चालीस कलियाँ नामक झाग निकलने वाला पेय पिया करते थे, जो कि करीब करीब सब बोतल के बाहर उबल पड़ता जिससे बूढ़ों को बड़ा मजा आता और बेलिसारिच को इससे बड़ी झल्लाहट होती। उसे सारी जगह साफ करनी होती, और वह देर तक रसोइए और वैद्य पर नाराज रहता, जिनको कि वह उस पेय पदार्थ के आविष्कार का जिम्मेदार ठहराता [illegible] 'आखिर इसमें धरा ही क्या है? सिर्फ फर्नीचर बिगड़ता है।' उसके बाद फिर ये लोग कुछ पढ़ते थे या दोनों पुष्पों की उद्यान [illegible] पर टहलते रहते या दोनों मिलकर पुराने ढंग के युगल-गीत गाते। (दोनों की आवाजें बिल्कुल एक सी थीं ऊँची, पतली काँपती, हुई और दमी गाकर [illegible] के बाद—लेकिन बेसुरी नहीं) या ये ताश खेलते हमेशा वही पुराने गेम [illegible] पिकेट या डबल डमी का वास्ता [illegible] वर्तमान का उन्होंने बस इतना सा रियायत दे रखी थी। यद्यपि उसे वे हमेशा अपनी एक कमजोरी समझते थे और कहते कि हम 'बोनी-बूटी' से लोग [illegible] कमजोर होते जा रहे हैं। उनका नियम था कि वे न तो कभी आधुनिक युग की आराधना करते थे और न ही अतीत का गुण गान, और यह बात भी वह मानने को हमेशा तैयार रहते थे कि दूसरे लोग और तरीके से रहते होंगे और अधिक अच्छे तरीके से भी बशर्ते कि उन्हें अपने रहन-सहन बदलने के लिए न कहा जाय।

रात बजे बेलिसारिच फिर भोजन लगा देता, जिसमें कि [illegible] लोग [illegible]। और नौ बजे गुदगुद गद्दों के

पहिले तो बात चीत बड़ी उखड़ी-पुखड़ी चलती रही, लेकिन जल्दी ही उसमें सजीवता आगई। पाब्लिन ने गोगोल की एक प्रसिद्ध मेयर की कहानी सुनाई कि एक मेयर एक समारोह मरे गिर्जाघर में प्रवेश करने में सफल हुआ और कैसे एक मिठाई भी मेयर के मुँह में प्रवेश करने में सफल हुई थी। वे लोग यह सुन कर तब तक हँसे जब तक आँखों से आँसू न निकलने लगे। वे हँसे भी एक ही ढंग से बीच बीच में चीखते हुए। हँसी का अन्त खाँसने में हुआ। उनका चेहरा गरम होगया और तमतमाने लगा। पाब्लिन ने यह जान लिया था कि इस तरह के बूढ़ा पर गोगोल की कहानियाँ बड़ा प्रभावशाली असर करती हैं, लेकिन क्योंकि वह उन्हें प्रसन्न करने के लिए अधिक उत्सुक नहीं था, उसने अपना तरीका बदला और कुछ ऐसा किया कि शीघ्र ही बूढ़े-बूढ़ी बातों में मजा लेने लगे। फोमुश्का ने अपना नक्काशीदार सु घनी का डिब्बा आगन्तुकों को दिखाया, जिसपर पहिले छत्तीस तस्वीरें अलग-अलग मुद्रा में पहँचानी जा सकती थीं। पर अब वे काफी दिनों पहिले मिट चुकी थीं लेकिन फोमुश्का उन्हें अब भी पहँचान सकते थे और उन्हें बता सकते थे। 'देखो उसने कहा 'एक खिड़की के बाहर देख रही है, तुम्हें दिखाई दे रहा है न, उसने अपना सिर बाहर निकाल रखा है और जिस स्थान पर वह संकेत कर रहा था वह स्थान बिल्कुल चिकना था। तब उसने आगन्तुकों का ध्यान अपने सिर के ऊपर दीवाल पर लटकती एक तस्वीर की ओर दिलाया, यह तैल-चित्र था। उसमें चर्कास मैदान में हल्के कुम्मैती रंग के घोड़े पर बैठे, उस सरपट दौड़ाते एक शिकारी का चित्र अंकित था, और जो भे॰ दा टोप पहिने था और ऊँट के बालों की सदरी पहिने था, और कमर में मुनहरे काम की पेटी कसा था, जिसमें एक रेशमी बड़ा हुआ दस्ताना और एक छुरा लटका हुआ था जिसकी मूँठ चाँदी की थी। शिकारी बगल में अयाल और स्थूल लगता था उसके एक हाथ में भापू था जिसमें लाल झब्बा लगा था, दूसरे हाथ में लगाम और चाबुक था। घोड़े के चारों पैर हवा में उठे हुए थे और हर टापों व नालों को

कलाकार ने बड़ी खूबी से बनाया था यहाँ तक उनकी कीलें तक साफ नजर आती थीं। 'गौर कीजिए,' और अपनी मोटी उँगली सफेद धरती पर घोड़ों के पैरों के पीछे चार अर्ध गोलाकार चिन्हों को दिखाते हुए फोमुश्का ने कहा 'बर्फ पर टाप के चिन्ह—यह तक कलाकार ने बनाए हैं। टाप के यह चार ही चिन्ह दिखाई देते थे और पीछे की ओर कोई चिन्ह क्यों नहीं था—इस बात पर फोमुश्का खामोश रहा।

वह थोड़ी देर चुप रहकर विनम्र मुस्कान के साथ बोला 'आपको मालूम हो यह मैं ही हूँ।'

'क्या ?' नेख्लानोव ने आश्चर्य प्रकट किया 'क्या आप शिकार भी खेलते थे ?'

'जी हाँ। लेकिन ज्यादा दिनों तक नहीं। एक बार सरपट दौड़ते हुए घोड़े ने मुझे गिरा दिया और मेरी कुरपी में चोट लग गई, इससे फिमुश्का घबड़ा गई और फिर इसने मुझे कभी शिकार पर नहीं जाने दिया। तभी से मैंने शिकार पर जाना छोड़ रखा है।'

'आपने कहाँ चोट खाई थी ?' नेख्लानोव ने पूछा।

'कुरपी में' फोमुश्का ने धीमी आवाज में कहा। उसके अतिथि एक दूसरे की ओर देखने लगे। कोई नहीं समझ पा रहा था कि यह कुरपी क्या चीज है, लेकिन मार्कोव इतना जानता था कि कज्जाक या किरगिजियन टोपी के ऊपर के बालदार मोटे रोएँ का झब्बा कुरपी कहलाता है लेकिन फोमुश्का के उसमें तो चोट लगी नहीं होगी। लेकिन उस वक्त का उससे मतलब पूछने का मन किसी का न हुआ।

'अच्छा अब तुम तो दोनों पधार चुके' फिमुश्का ने एका एक ही कहा, 'इसलिए अब मैं भी सोने चलूंगी।

एक पुराने ढंग की छोटी सी टेढ़े-मेढ़े पैरों वाली आल्मारी में से जिसका गोल सा ढक्कन घोड़ागाड़ी के पिछवाड़े की तरह मुड़ जाता था, उसने एक धारदार कांच के फ्रेम में मढ़ी एक छोटी सी वाटर

कसर की तस्वीर निकाली, उस तस्वीर में चार साल की एक निर्वस्त्र लड़की की तस्वीर बनाई गई थी। तूणीर उसके कन्धे पर था और नीला रिबन उसके सीने पर लगा था। वह तीर की नोकों को अपनी छोटी उंगलियों से जाँच रही थी। बच्ची के बाल घुंघराले थे और वह मुस्कुरा रही थी, और उसकी आँख थोड़ी सी मुँदी थी।

फिमुस्का ने यह तस्वीर आगन्तुकों को दिखायी।

'यह मैं हूँ।' उसने कहा।

'आप!'

'हाँ, मैं। अपने बचपन में। एक फ्रेन्च कलाकार मेरे पिता के पास आया करता था—बड़ा शानदार कलाकार था। मेरे पिता के जन्म दिवस पर उसने मेरी यह तस्वीर बनाई थी। और कितना भला था वह फ्रेन्च! वह बाद में भी हमसे मिलने आया करता था। अपने पैरों को घिसता हुआ वह आता, नमस्कार के लिए सिर झुकाता, फिर हवा में एक झटके से ऊपर उठा लेता और मिलने वालों का हाथ चूमता और जब जाता तो अपनी उंगलियों का चूमता और दाँए बाएँ, आगे पीछे झुकता! बड़ा मजेदार फ्रान्सीसी था।

सबने चित्र की कला की तारीफ की पावियल ने तो उसमें कुछ कुछ समानता भी ढूँढ लेने का दावा किया।

तब फोमुश्का ने आज के फ्रान्सीसियों पर बात करनी शुरू करदी और कहा कि वे अब जरूर बड़े शैतान होते हैं।

आखिर ऐसा क्यों फोमा सावरेसेविच?

अब उनके कैसे कैसे नामों का जरा मुलाहिजा तो कीजिए।

'जैसे?'

जैसे मोर्नी—मै—स्तोर्ता। नाम तो है सस्तो जैसा सेविन नाम इकैशा का।

फोमुश्का ने बीच में अवसर पाय पूछ लिया कि पेरिस में आज कल कौन सा शासक है?

उन्होंने बताया 'नैपोलियन', तो इसमें उसे आश्चर्य और पीड़ा हुई।

ऐसा क्यों ?

'यह तो बूढ़ा हो गया होगा' इसे उसने कहना प्रारम्भ किया लेकिन चारों ओर उलझन भरी दृष्टि से देखता हुआ रुक गया।

फोमुश्का फ्रेन्च बहुत कम जानता था और वाल्टेयर उसने अनुवाद में पढ़ा था (वह अपने सिरहाने रखे हुए एक बक्स में वैल्टेयर का पाण्डुलिपि अनुवाद रखता था) लेकिन वह बात चीत के बीच-बीच में फ्रेन्च मुहावरे कह जाता जैसे— यह तो महाशय जी सन्दिग्ध है या असत्य है।' इस बात पर बहुत से लोग हँसा करते थे। बाद में एक फ्रान्सीसी विद्वान ने बताया था कि यह तो विधान सभा में प्रयोग किया जाने वाला वाक्य था, जो उसके देश में १७८९ तक बोला जाता था।

यह देख कर कि बात चीत फ्रांस और फ्रेन्च पर चली गई है, फिमुश्का ने अपना साहस बटोर कर एक चीज के बारे में जो उसके दिमाग में बहुत देर से उठ रही थी, जिसे वह पहिले तो मार्कसाव से पूछना चाहती थी, लेकिन वह बड़ा उलझित लग रहा था उसने सम्भवतः मालामिन से पूछा होता लेकिन नहीं! उसने सोचा, 'यह सीधा सादा आदमी है वह फ्रेन्च नहीं जानता होगा। इसलिए उसने नेग्यानोव को सम्बोधन किया।

'एक बात है महाशय! मैं आपसे जानना चाहती हूँ उसने कहना प्रारम्भ किया, 'माफ कीजिएगा, मेरा भतीजा सिला सेम्बालिच आप समझिए कि मुझ जैसी बोग्म का और मेरे पुराने फैशन का तथा मेरी अज्ञानता का मजाक उड़ाता रहता है।

'हाँ कैसे ?

'क्या अगर कोई फ्रान्सीसी भाषा में प्रश्न करना चाहता है "यह क्या है ?" तो उसे यही कहना चाहिए न "के सा क स क स ला ?"

'हाँ।'

'और क्या वह यह भी कह सकता है "के···से के से मा ?"

'हाँ। ऐसे भी कह सकता है।'

'और सिर्फ, 'के' से मा भी कह सकता है ?'

'हाँ, यह भी कहा जा सकता है।

'और बात एक ही होगी ?'

'हाँ।'

फिमुस्का गौर से सोचती रही, और फिर उसने अपने हाथ नीचे गिरा लिए।

'अच्छा, फिमुस्का, उसने अन्त में कहा 'मैं ही गलती पर थी और तुम्हीं सही थे। लेकिन यह फ्रान्सीसी लोग ! बेचारे !

पाक्लिन ने उन बूढ़ों से कोई लघु दुखान्त गीत-कथा सुनाने का आग्रह किया इस पर दोनों हँसे और उन्होंने आश्चर्य किया आखिर उसके दिमाग में ऐसी बात आई कैसे ? लेकिन जल्दी ही गीत सुनाने को सहमत हो गए सिर्फ एक शर्त पर कि स्नान दुल्या हारपिस कौर्ड (एक विशेष प्रकार की वीणा) बजा कर उनका साथ देगी—कमरे के एक कोने में पिआनो रखा था। स्नान दुल्या हारपिस कोड पर बैठ गई। कुछ तार उसने झन झनाए ऐसे खोखले, ऐसे, बेसुरे स्वर नेज्दानोव ने अपने जीवन में पहिले कभी नहीं सुने थे लेकिन उन बूढ़ों ने तुरन्त गाना शुरू कर दिया

'क्या उस पीड़ा की अनुभूति करने के लिए',

फोमुश्काने शुरू किया

'जो प्यार में छिपी हुई है,
ईश्वर ने हमको हृदय दिया है,
प्यार से राग मिलने वाला ?'
'क्या ऐसा भी विरही हृदय

फिमुदका ने उत्तर दिया

'इस संसार में कभी था,
जो कि दुख और वेदना से मुक्त हो ?'
कभी नहीं। कभी नहीं।

फोमुदका ने कहा।

'कभी नहीं। कभी नहीं।'

फिमुदका ने दुहराया।

'वेदना प्रेम का ही एक अंग है।'
सदा ! सदा !'

दोनों ने संग-संग गाया।'

'सदा ! सदा !'

फोमुदका अकेला ही गाता रहा।

'बहुत खूब, बहुत खूब, वाह, वाह !' पाक्सिन चिल्लाया, 'यह पहला छंद हुआ अब दूसरा !'

'जरूर' फोमुदका ने उत्तर दिया, 'स्तानदुन्या सम्सोनोवना; मगर सिर्फ एक जोरदार झंकार हो जाय तो कैसा रहे ? मेरे एक छन्द के बाद तो एक झंकार होनी ही चाहिए।'

स्तानदुन्या ने उत्तर दिया, 'ले रहा झंकार जरूर होगी !'

फोमुदका ने फिर गाना शुरू किया

'क्या कभी किसी प्रेमी ने प्यार किया है,
और यह भी बिना उदासी और पीड़ा आते हुए ?
कौनसा ऐसा प्रेमी है कि जिसने आह न भरी हो,
और रोया न हो और दुबारा फिर आहें न भरी हों ?

और फिर फिमुदका ने कहा

'हृदय प्यार में न्याय लाता है,

कोई गुण नहीं है, मैं कम से कम वैसे मसखरेपन में कोई अच्छाई नहीं देखता !'

पुपका ने कनफोड़ी गर्जन की, उसने जो कुछ मार्केलोव ने कहा उसका एक शब्द भी न समझा था, लेकिन, काली भौहों वाला आदमी, बुरा भला कहता जारहा है "उसकी हिम्मत कैसे पड़ रही है। वास्लियवना ने भी कुछ बुदबुदाया मुँह-ही-मुँह में फोमुश्का ने अपने छोटे हाथ सीने पर बाँध लिए और अपनी पत्नी की ओर उन्मुख होकर, 'फिमुश्का, मेरी प्यारी' उसने रुंधे गले से कहा, 'सुन रही हो यह महाशय क्या कह रहे हैं? मैं और तुम पापी हैं, कुकर्मी, और दुरात्मा हैं हम ऐश में डूबे हुए हैं, ओह! ओह! हमें सड़क पर निकाल देना चाहिए और हमारे हाथ में एक झाड़ू दे देनी चाहिए अपनी आजीविका कमाने के लिए। ओह! ओह! ओह! 'यह दुख भरे शब्द सुनकर पुपका और भी जोर से गर्जी। फिमुश्का के नेत्र सिकुड़ गए, उसके होठों के कोने लटक गए), वह बस अपनी भावना को प्रकट करने के लिए गहरी साँस ले रही थी।

अगर बीच में पाक्लिन ने दखल न दिया होता तो, कहा नहीं जा सकता कि इस का अन्त किस तरह होता।

'क्या मतलब है इस सबका? ईमान से' उसने जोर से हँसते हुए और हाथ घुमाते हुए कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि आप लोगों को शर्म नहीं आ रही है। मि० मार्केलोव तो थोड़ा मजाक करना चाहते थे लेकिन उनका चेहरा ऐसा गम्भीर है कि लगा कि वह व्यंग कर रहे हैं और आप सब उनकी बातों में आगए। बस इतनी सी बात है! एफ्फीमियाँ पावलोवना तुम तो बड़ी प्रिय हो, हम बस एक दो मिनट में ही अब जाने वाले हैं, तो तुम जानती हो तुम जाने से पहिले हमारे सब के भाग्य बता दो तुम उसमें बड़ी होशियार हो। बहन! ताश तो लाना!'

फिमुश्का ने अपने पति की ओर देखा, वह अब पूर्ण आश्वस्त मुद्रा में बैठे थे, वह भी आश्वस्त होगई।

'ताश,' उसने कहा 'लेकिन मैं तो सब कुछ भूल गई हूँ, अरसा हुआ मैंने उन्हें हाथ में ही नहीं लिया है।

लेकिन फिर भी उसने अपने आप ही स्तानदुन्या के हाथों से पुराने ताशों की खस्ता जोड़ी ली।

किस का भाग्य बताऊँ ?'

'ओह, सबका,' पाविलन ने कहा और अपने मन में कहा, 'कैसी जिन्दादिल बुढ़िया है!' उसे चाहे जिधर घुमाओ सचमुच बड़ी प्यारी है 'हर एक का मानी हर एक का उसने जोर से कहा 'हमें हमारा भाग्य,(बताओ हमारा चरित्र हमारा भविष्य···· सब कुछ हमें बताओ!'

फिमुश्का ताश फेंटने लगी, लेकिन एकाएक उसने सारे ताश फेंक दिए।

'मुझे ताश का उपयोग करने की जरूरत नहीं है। उसने कहा मैं बिना उनके ही तुम में से सबका चरित्र जानती हूँ। और जैसा चरित्र है वैसा ही भाग्य है। यह, (उसने सोलोमिन की ओर संकेत किया) शान्त स्वभाव का आदमी है, दृढ़, वह (उसने अपनी उंगली मार्केलोव कि ओर दिखाई) गरम स्वभाव का है, खतरनाक आदमी (फुफका ने उसकी ओर जीभ निकाली) 'और रहे तुम (उसने पाविलन की ओर देखा), तो तुम्हें कुछ बताने की जरूरत नहीं है, तुम खुद ही जानते हो—अस्थिर मनुष्य! रह यह सज्जन' (उसने नेज्दानोव की ओर संकेत किया, और हिच किचाई)।

यह क्या ?' उसने कहा, 'मुझे भी बताइए कृपया, मैं कैसा आदमी हूँ?

'तुम कैसे आदमी हो ? ' फिमुश्का ने धीरे से कहा 'आप पर दया करनी चाहिए—बस।

नेज्दानोव काँप गया।

'दया का पात्र? क्यों भला?'

'आह! मैं तुम पर दया करती हूँ—बस इतना ही।'

'लेकिन क्यों?'

'ओह कारण है? मेरी आँखें मुझे ऐसा बताती हैं। क्या आप समझते हैं मैं बेवकूफ हूँ? ओह, मैं आप से अधिक होशियार हूँ, तुम्हारे सारे लाल बालों के लिए मैं तुम पर दया करती हूँ यही तुम्हारा भाग्य है।'

सभी चुप थे सब एक दूसरे की ओर देख रहे थे, और फिर भी चुप थे।

'अच्छा, नमस्ते प्यारे दोस्तो' पाक्लिन ने कहा 'हम लोगों ने आप लोगों का काफी समय लिया, शायद आप को थका भी दिया है, इन सज्जनों के जाने का समय आ गया है मैं इन्हें सड़क तक छोड़ आऊँ। नमस्ते और आपके इस कृपालु स्वागत के लिए, धन्यवाद।'

नमस्ते, नमस्ते, फिर आना कोई तकल्लुफ की बात नहीं है, फोमुश्का और फिमुश्का ने एक स्वर से कहा। तब फोमुश्का ने किसी गीत की टेक गुना गुनाते हुए कहा

अनेक वर्षों तक जिओ।

'अनेक-अनेक वर्षों तक' अप्रत्याशित रूप से कैल्योपिव ने पीछे से दरवाजा खोलते हुए कहा।

और चारों हो सड़क पर आगए, उन्होंने खिड़की में से पुकार की आवाज सुनी, 'मूर्ख ' उसने चिल्लाया, 'मूर्ख! '

पाक्लिन ज़ोर से हँसा, लेकिन किसी ने भी उसका साथ नहीं दिया। मार्केलोव उम्मीद कर रहा था, कि उसे अभी और कुछ रोष पूर्ण शब्द सुनने होंगे

सिर्फ सोलोमिन चिरपरिचित सरलता से मुस्कुराया।



'अच्छा अब तक था', पाविनन ने पहिले बात शुरू की 'हम लोग अठारवीं सदी में थे अब जरा पूरी दुलकी चाल से बीसवीं में ले चलिए। मोलुश्किन इतना आगे बढ़ा हुआ आदमी है कि उन्नीसवीं में उसे रखने से काम नहीं चलेगा।

क्या, क्या तुम उसे जानते हो ? नग्धानोव ने पूछा।

'सारी दुनियां में उसके नाम के झंडे गड़े हुए हैं, और मैंने कहा 'ले चलिए' क्योंकि मेरा मतलब था कि मैं भी तुम लोगों के साथ चल रहा हूँ।

'यह कैसे ? क्यों तुम तो उसे जानते, नहीं या जानते हो ?

'बस चले चला ! क्या तुम मेरे दोनों को जानते थे ?

'सिपिन, तुमने उनसे हमारा परिचय जो कराया !'

और तुम मेरा परिचय कराना। तुम मुझ से कुछ छिपाने वाले आदमी नहीं, और

के चरम पर पहुँचा व्यक्ति होने के कारण फ्रेन्च भोजन प्रणाली को पसन्द करता था और उसने एक रसोइया रख छोड़ा था जिसको क्लब से गन्दिगी के कारण निकाल दिया गया था), और जो सब से महत्व पूर्ण बात थी यह यह कि शैम्पेन की अनेकों बोतलें निकाल कर बर्फ में ठंडी करने के लिए रख दी गई थीं।

मेजबान ने अपने चालाकी भरे तौर-तरीकों से तथा जल्दबाजी की उथल-पुथल की अपनी विशेषता से मेहमानों का स्वागत किया। जैसा पाल्किन ने पहिले ही कहा था उसे देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उसके बारे में पूछा 'मेरा विचार है, यह भी हमारे ही साथी हैं?' और *उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही चिल्लाया, होंगे कैसे नहीं, जरूर होंगे।'* तब उसने बताया कि वह अभी उस गवर्नर नामक विचित्र जन्तु से मिल कर आया है, जो कम्बख्त खुदा जाने क्यों किसी न किसी धर्मार्थ संस्था की ओर से उसे परेशान किया करता है। 'यह कहना मुश्किल था कि गासुस्किन गवर्नर के यहाँ जाने में खुश था या उन लोगों के सामने उसे गाली देने में। तब उसने अपने नए भर्ती किए कामरेड का परिचय कराया, जिसका परिचय कराने का वायदा उसने उन सबसे कर रखा था, और यह नया साथी और कोई नहीं यह पतला-दुबला मरियल सा नाटा लोमड़ीमुमा चेहरे का आदमी ही था जो सवेरे उसके पास सन्देश लेकर आया था और जिसे गोसुस्किन ने यास्त्या नाम का अपना क्लर्क बताया था। 'यह बातूनी नहीं है,' गोसुस्किन ने बताया पाँचों उँगलियों से एक साथ संकेत करते हुए, 'लेकिन अपने उद्देश्य के लिए दिल से और आत्मा से अनुरक्त है।' यास्त्या विनम्रता से झुका, शर्माते हुए, झेंपते हुए, मक्कारी से हँसा। यह बताना असम्भव है कि वह कुत्सित मूर्ख था या घुटा हुआ धूर्त और बदमाश! 'सज्जनो भोजन तैयार है चलिए।' बराबर वाली मेज पर से कुछ मूल्य बढ़ाने वाली चीजें मनभर के खाने के बाद सब लोग भोजन के लिए मेज पर बैठे। शोरबा के तुरन्त बाद गोसुस्किन ने शैम्पेन लाने

का आदेश दिया। जमी हुई आग के छिम्मे के रूप में शराब बोतल के मुँह में से होकर गिलासों में गिरी। 'अपने – कार्य की सफलता के लिए!' गोमुश्किन ने चिल्लाकर कहा और नौकरों की ओर मुड़ते हुए आँख मारी जैसे उन्हें बता रहा हो कि बाहिरी लोगों के सामने व जरा सावधान रहें! नया रंगरूट वास्या अब भी चुप था और यद्यपि वह कुर्सी के छोर पर बैठा था और ऐसे खुशामदाना और पिछलग्गूपन का आचरण कर रहा था जो उन विश्वासों के नितान्त विपरीत था जिनके लिए वह अपने मुरशिद के शब्दों में दिलो-जान कुर्बान करने को तैयार था। अपने स्वामी के शब्दों को सार्थक सा करता हुआ वह नादीदेपन से शराब पी रहा था। दूसरे, बहरहाल बात कर रहे थे कहना चाहिए, उनका मेजबान बात कर रहा था—और पाल्किन, पाल्किन विशेषतः। नेज्दानोव अन्दर ही अन्दर कुढ़ रहा था मार्केलोव नाराज था और उसे गुस्सा आ रहा था वैसा ही जैसा गुस्सा उसे सुबादेव के यहाँ आ रहा था। लेकिन थोड़ा भिन्न ढंग से सोलोमिन पर्यवेक्षक के रूप में सब देखता रहा।

पाल्किन मजे में रहा था! अपनी हाजिर जवाबी से उसने गोलुश्किन का खुश कर दिया था जिसको सपने में भी यह ख्याल न था कि यह लंगड़ा छोकरा अपने पड़ोस में बैठे नेज्दानोव से फुसफुसाहट में उसका मजाक खींच रहा है। उसने तो निश्चित रूप से समझा था कि वह कोई बड़ा सीधा लड़का है जिसे अपना बनाया जा सकता है और अपनी शागिर्दी में लिया जा सकता है और कुछ-कुछ इसी लिए वह उसे पसन्द भी आया था। अगर पाल्किन कहीं उसकी बगल में बैठा होता तो निश्चय ही उसने उसकी पसलियों में उँगली करदी होती या उसके कन्धे पर थपकार थपेड़ा मारा होता, क्योंकि वह उसकी ओर अपना सिर हिला हिला के संकेत कर आँख मार रहा था। – लेकिन उसके और नेज्दानोव के बीच में पहिले मार्केलोव बैठा था, तूफानी बादल की तरह, और उसके बाद सोलोमिन। जो भी हो

के चरम पर पहुँचा व्यक्ति होने के कारण फ्रेंच भोजन प्रणाली को पसन्द करता था और उसने एक रसोइया रख छोड़ा था जिसको बाद में गन्दिगी के कारण निकाल दिया गया था) और जो सब से महत्व पूर्ण बात थी यह थी कि शैम्पेन की अनेकों बोतलें निकाल कर बर्फ में ठंडी करने के लिए रख दी गई थीं।

मेजबान ने अपने चालाकी भरे तौर-तरीकों से तथा जल्दबाजी की उथल-पुथल की अपनी विशेषता से मेहमानों का स्वागत किया। जैसा पावित्सिन ने पहिले ही कहा था उसे देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उसके बारे में पूछा 'मेरा विचार है, यह भी हमारे ही साथी हैं?' और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही, चिल्लाया, 'होंगे कैसे नहीं, जरूर होंगे।' तब उसने बताया कि वह अभी उस गवर्नर नामक विचित्र जन्तु से मिल कर आया है, जो कम्बख्त खुदा जाने क्यों किसी न किसी धर्मार्थ संस्था की ओर से उसे परेशान किया करता है। यह कहना मुश्किल था कि गोलुश्किन गवर्नर के यहाँ जाने में खुश था या उन लोगों के सामने उसे गाली देने में। तब उसने अपने नए भर्ती किए कामरेड का परिचय कराया जिसका परिचय कराने का वायदा उसने उन सबसे कर रखा था और यह नया साथी और कोई नहीं वह पतला-दुबला मरियल सा नाटा लोमड़ीनुमा चेहरे का आदमी ही था जो सवेरे उसके पास सन्देश लेकर आया था और जिसे गोलुश्किन ने यास्या नाम का अपना क्लर्क बताया था। 'यह बातूनी नहीं है,' गोलुश्किन ने बताया पाँचों उँगलियों से एक साथ संकेत करते हुए, 'लेकिन अपने उद्देश्य के लिए दिल से और आत्मा से अनुरक्त है।' यास्या विनम्रता से झुका, दामतें हुए, झेंपते हुए, मसरे से हँसा। यह बताना असम्भव है कि वह कुत्सित मूर्ख था या धुरा हुआ धूर्त और बदमाश! 'सज्जनों भोजन तैयार है चलिए। बराबर वाली मेज पर से कुछ भूख बढ़ाने वाली चीजें मनभर के खाने के बाद सब लोग भोजन के लिए मेज पर बैठे। शोरबा के तुरन्त बाद गोलुश्किन ने शैम्पेन लाने

का आदेश दिया। जमी हुई आग के छिम्मे के रूप में शराब बोतल के मुंह में से होकर ग्लासों में गिरी। 'अपने " कार्य की सफलता के लिए!' गोलुविल्न ने चिल्लाकर कहा और नौकरों की ओर झुकते हुए आँख मारी जैसे उन्हें बता रहा हो कि बाहिरी लोगों के सामने वे जरा सावधान रहें! नया रंगरूट आप्या अब भी चुप था और यद्यपि वह कुर्सी के छोर पर बैठा था और ऐसे खुशामदाना और पिछलगुपन का आचरण कर रहा था जो उन विश्वासों के नितान्त विपरीत था, जिनके लिए वह अपने संरक्षक के शब्दों में दिलो-जान कुर्बान करने को तैयार था। अपने स्वामी के शब्दों को सार्थक सा करता हुआ वह नादीदेपन से शराब पी रहा था। दूसरे, वहरहाल बात कर रहे थे, कहना चाहिए, उनका मेजबान बात कर रहा था—और पाक्लिन पाक्लिन विशेषत। नेज्दानोव अन्दर ही अन्दर कुढ़ रहा था मार्केलोव नाराज था और उसे गुस्सा आरहा था वैसा ही जैसा गुस्सा उसे सुबोचेव के यहाँ आ रहा था। लेकिन थोड़ा भिन्न ढंग से, सालोमिन पर्यवेक्षक के रूप में सब देखता रहा।

पाक्लिन मजे मे रहा था! अपनी हाजिर जवाबी से उसने गोलुश्किन को खुश कर दिया था जिसको सपने में भी यह ख्याल न था कि वह लंगड़ा छोकरा अपने पड़ोस में बैठे नेज्दानोव से फुसफुसाहट में उसका खाका खींच रहा है। उसने तो निश्चित रूप से समझा था कि वह कोई बड़ा सीधा लड़का है जिसे अपना बनाया जा सकता है और अपनी शागिर्दी में लिया जा सकता है "और कुछ-कुछ इसी लिए वह उसे पसन्द भी आया था। अगर पाक्लिन कहीं उसकी बगल में बैठा होता तो निश्चय ही उसने उसकी पसलियों में उँगली करदी होती या उसके कन्धे पर कसकर थोटा मारा होता, क्योंकि वह उसको ओर अपना सिर हिला हिला कर मेज पर आँख मार रहा था। लेकिन उसके और नेज्दानोव के बीच में पहिले मार्केलोव बैठा था, तूफानी बादल की तरह, और उसके बाद सालोमिन। जो भी हो

गोलुश्किन पाविसन के प्रत्येक शब्द पर दिल खोल कर हँस रहा था, और कभी-कभी तो अपने पेट पर थप्पड़ मारता हुआ और अपने नीले मसूड़ों को दिखाता हुआ, वह पहिले ही हँस जाता था इस विश्वास में कि वह कोई जरूर हँसी की बात कहेगा। पाविसन ने तुरन्त ताड़ लिया कि उसे क्या पसन्द है और हर चीज को बुरा-भला कहने लगा (यह उसके स्वभाव के अनुरूप भी था)—हर चीज और हर किसी को, अनुदार दल वाला, उदार दल वालों, अफसरों, बैरिस्टरों, वर्गों, जमींदारों, जिला समितियों, स्थानीय मतलबजियों, मास्को और पीटर्सबर्ग, सबको।

'हाँ हाँ, हाँ, हाँ,' गोलुश्किन ने कहा, 'निश्चय ही, निश्चय ही। मिसाल के लिए हमारा यहाँ का मेयर पूरा गधा है। महा मूर्ख। मैं उसे लाख बताऊँ पर उसकी समझ में एक नहीं आती। वह भी हमारे गवर्नर जैसा ही है।'

'तुम्हारा गवर्नर भी मूर्ख है?' पाविसन ने पूछा।

मैं तुमसे कहता हूँ—वह गधा है।'

'क्या तुमने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि वह गुर्राता है या मिनमिनाता है?'

'क्या?' गोलुश्किन ने अचम्भे के स्वर में पूछा।

'क्या क्या तुम नहीं जानते? रूस में हमारे महान नागरिक गुर्राते हैं, और बड़े सैनिक अधिकारी नाक से बोलते हैं, और जो बहुत बड़े उच्च पद पर होते हैं वे गुर्राते भी हैं और नाक से भी बोलते हैं।'

गोलुश्किन जोर से हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया कि उसके आँसू बहने लगे।

'हाँ, हाँ' उसने कहा 'वह मिनमिनाता है वह फौजी आदमी है।'

'ओह ––ह ह तुम काठ के उल्लू!' पाविसन अपने मन में सोच रहा था।

'हर चीज निकम्मी है, सड़ गई है, चाहे जहाँ चले जाओ' गोमुश्किन ने थोड़ी देर बाद कहा। 'हर चीज खराब है, सारा ढाँचा ही बिगड़ा हुआ है।'

'परम सम्मानित कापितन एन्द्रिच, पाश्किन ने सहानुभूति के स्वर में कहा—(वह अभी नेग्पानोव के कान में फुसफुसा रहा था, 'वह अपने हाथ क्या इधर उधर नचाता रहता है, मानों मुँहों पर उसका चोट लग रहा हो ?)—सम्मानित कापितन एन्द्रिच मुझ पर विश्वास कीजिए आधे-पढ़े तरीका से अब काम नहीं चलेगा।'

'आधे-पढ़े तरीकों से।' गोमुश्किन ठहाका मार कर हँस दिया, एकाएक हँसना बन्द कर और चेहरे की एक अजीब भयानक भंगिमा बनाकर बोला, 'अब सिर्फ एक बात है जड़ से इन सब को खोद गिराना। खास्ता, पियो गन्दे कुत्ते, पियो।'

'और, मैं पी रहा हूँ, कापितन एन्द्रिच, क्लर्क ने ग्लास गले के नीचे उतारते हुए उत्तर दिया।

गोमुश्किन ने भी एक और ग्लास खाली कर लिया।

'क्या मामला है! इसका पेट क्या नहीं फटता ? पाश्किन ने फुस फुसाते हुए नेग्पानोव से पूछा।

'इसे आदत है।' नेग्पानोव ने कहा।

लेकिन सिर्फ क्लर्क ने ही नहीं पिया धीरे धीरे सभी पर शराब का नशा असर लाने लगा। नेग्पानोव, मार्कोनाव, मात्रोमिन भी धीरे धीरे बात चीत में रस लेने लगे।

पहिले तो कुछ-कुछ आत्म तिरस्कार, कुछ आत्म सन्ताप के रूप में कि वह अपने चरित्र का स्तर कायम नहीं रख सका कुछ कर नहीं सका नेग्पानोव के दिमाग में यह बात घर करने लगी कि अब समय आ गया है जब सहज ज्ञान से खिलवाड़ बन्द करना चाहिए, अब तो 'काम' करने का समय आ गया है—उसने मॉस्को निकट आजाने तक का इरादा किया और तब बिना ध्यान दिए कि वह अपनी ही बात

काट रहा है यह भौरा से पूछने लगा कि वह कौनसे ऐसे वास्तविक तत्व हैं जिन पर विश्वास किया जा सकता है, फिर खुद ही कहने लगा कि उसकी नजर में ऐसा कोई भी नहीं। समाज में कोई सहानुभूति नहीं है, जनता में कोई समझ नहीं है।

जाहिर है कि उसे कोई उत्तर नहीं मिला। इसलिए नहीं कि उसकी बात का कोई जवाब नहीं था, बल्कि इसलिए कि हर कोई अपनी अपनी डफली बजा रहा था। मार्केलोव अपनी बेजान क्रुद्ध आवाज में बराबर एकरस जिद्दी गूँज भरे रहा ('सारे संसार के लिए जैसे वह बन्दगोभी काट रहा है, पाक्लिन ने फब्ती कसी)। उसकी कोई बात साफ साफ नहीं सुनाई पड़ रही थी, 'तोप सेना' शब्द केवल साफ समझ में आया' वह शायद उसके संगठन में उसने जो दोष पाए, उन पर प्रकाश डाल रहा था। बाद में 'जर्मन' और 'सेना के अफसरों' पर भी टीका टिप्पणी कर रहा था। सोलोमिन ने भी कहा कि इन्तजार के दो ही तरीके हैं इन्तजार करना और कुछ न करना, इन्तजार करना और आगे भी बढ़ना।

'प्रगतिवादी लोग हमारे किसी काम के नहीं हैं', मार्केलोव ने अशान्त क्षुब्ध स्वर में कहा।

'प्रगतिवादी ऊपर से काम आरम्भ करते हैं', सोलोमिन ने कहा, 'और हम नीचे से करने की कोशिश कर रहे हैं।

'कोई लाभ नहीं, जहन्नुम में जाय, इसमें कोई लाभ नहीं!' गोलुश्किन ने एकाएक उत्तेजित होते हुए कहा, 'हमें तुरन्त अमल करना चाहिए, तुरन्त!

'अथात् वास्तव में तुम खिड़की में से कूद पड़ना चाहते हो?'

'मैं कूद पड़ूँगा? गोलुश्किन ने चीखते हुए कहा। 'मैं कूद भी पड़ूँगा! और वास्या भी! अगर मैं उससे कहूँगा तो वह भी कूद पड़ेगा! क्यों वास्या? तुम कूद पड़ोगे न, क्या जी?

क्लर्क ने शैम्पेन का एक ग्लास और चढ़ाया।

'जहाँ आप से चलाने का पतन एक हृथ में आपका साथ दूँगा। मैं दुबारा सोचने का भी साहस नहीं करूँगा।

'हाँ, तुम्हें करना भी नहीं चाहिए ? वरना मैं तुम्हें भेड़े के सींगों जैसा मरोड़ दूँगा।'

थोड़ी देर बाद ही पियक्कड़ों की भाषा में जिसे ऊलजलूल बक बक कहते हैं, शुरू हो गई। भयंकर कोलाहल मच गया।

शरद की शान्त वायु में उड़ती गिरती बर्फ की पहिली परतों की तरह शब्द गोलुबिन के भोजन-घर के गरम वातावरण में एक दूसरे से टकराने लड़खड़ाने और गिरने लगे—हर तरह के शब्द—प्रगति सरकार, साहित्य, टैक्स की समस्या, धर्म की समस्या, स्त्रियों की समस्या, अदालतों की समस्या पुरातन वाद पादरी वर्ग, यथार्थ वाद शून्यवाद साम्यवाद अन्तर्राष्ट्रीय श्रम वाद, उदारपंथी पूँजी शासन, संगठन, ऐसोसियेशन, और यहाँ तक कि स्थायित्व! और इस कोलाहल ने गोलुबिन के जोश को उभाड़ दिया, तथ्य का सारा निचोड़ इसी में मालूम दे रहा था उसके लिए। वह विजय गर्व का अनुभव कर रहा था! 'यह बात है। हट जाओ नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगा। कापितन गोलुबिन आ रहे हैं!' क्लर्क वास्या आखिर उन्मत्तता की ऐसी स्थिति पर पहुँच गया कि नाक से घुर घुर करने लगा और स्पष्ट से ही बात करने लगा। और एकाएक ऐसे चौंक पड़ा जैसे उस पर किसी ने टोना कर दिया हो 'इस कम्बख्त ओजिम्निज़ियम का क्या मानी है?'

गोलुबिन एकाएक चौंक कर उठ खड़ा हुआ और उसने अपने तमतमाए लाल चहरे को पीछे झटका जिस पर फिर एक अजीब मर्मरता और दोंगी, गुम आशंका और उन्माद का मिलाजुला भाव था और चीखा मैं एक हजार का और त्याग करूँगा! वास्या निकालो! इसके उत्तर में वास्या ने दबी आवाज में कहा 'गया काम से कम्बख्त!'

पाक्लिन का चेहरा पीला पड़ रहा था और उसे पसीना छूट रहा था (क्योंकि पिछले १५ मिनट से वह पीने में क्लर्क का साथ दे रहा था), पाक्लिन अपनी जगह से उछलते हुए और दोनों हाथ सिर के ऊपर उठाते हुए टूटी हुई आवाज से चिल्लाया, 'त्याग, बलिदान। आपने कहा। ओह उस पवित्र शब्द का कैसे पतन ! त्याग ! हे त्याग, किसी में तुम्हारी उच्चता तक पहुँचने की शक्ति नहीं, किसी में शक्ति नहीं है कि उन कर्तव्यों का पालन कर सके जो कि तुम उसे सौंपते हो, कम से कम इन लोगों में तो जो कि यहाँ मौजूद हैं और यह टुच्चा, यह अधम, रुपयों का बोरा, जो अपने फूलते हुए माल पर ऐंठता है ? मुट्ठी भर रूबल फेंक कर त्याग की डींग मारता है। और चाहता है कि हम इसके कृतज्ञ हों, उम्मीद करता है कि हम उसे यश के हार पहनाएँगे—नीच बदमाश।' पाक्लिन ने जो कुछ कहा उसे गोर्मुश्किन ने मानो सुना नहीं, या समझा नहीं और सम्भवतः उसकी बातों को मजाक समझा, क्योंकि उसने फिर एक बार जोर से चिल्लाकर कहा, 'हाँ ! एक हजार रूबल कापितन एन्ड्रिच बात का पक्का है।' एकाएक उसने अपनी बगल की जेब में हाथ डाला। यह लो यह रही रकम। इसे जेब में रखो, और कापितन को याद रखना। जैसे ही वह आवेश की एक विशेष स्थिति में पहुँचता तो अपने को अन्य पुरुष की कोटि में रखकर वह छोटे बच्चों की तरह बातें करने लगता। नेज्दानोव ने शराब से भीगे मेज के कपड़े पर बिखरे नोटों का बीन लिया। अब इसके बाद रुकने का कोई काम नहीं था और अब देर भी हो रही थी, वे सब उठ खड़े हुए, अपनी अपनी टोपियाँ उठाईं और चल दिए।

खुली हवा में आकर वे सभी एक उमस का अनुभव करने लगे खास तौर से पाक्लिन।

'तो ? अब हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?' वह बड़ी मुश्किल से कह पाया।

'तुम कहाँ जा रहे हो, मैं नहीं जानता,' सोलोमिन ने उत्तर दिया 'मैं तो घर जा रहा।'

'अपने कमरे को ?'

'हाँ ।'

'आधी रात में और वह भी पैदल ?'

'तो क्या हुआ ? न तो रास्ते में भेड़िए हैं और न डाकू, और मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ और चलने के योग्य हूँ । रात की ठंडक में चलना भी मजेदार होता है ।

'लेकिन, वह तो तीन मील है !'

'मगर वह चार भी हो तो क्या हुआ ! ... अच्छा ... नमस्ते दोस्तो !

सोलोमिन ने अपने कोट के बटन लगाए, टोपी माथे पर आगे को खींची, सिगार जलाया, और लम्बे कदम रखते हुए सड़क पर चल पड़ा ।

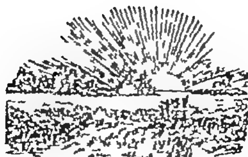
'और तुम कहाँ जा रहे हो ?' पाक्लिन ने नेज्दानोव से पूछा ।

'मैं इनके यहाँ जा रहा हूँ ।' उसने मार्केलोव की ओर संकेत किया, जो सीने पर हाथ बाँधे हुए एकदम स्थिर खड़ा था । 'हमारे साथ बग्घी है ।'

'ओह, तब तो ठीक है ... और मैं नखलिस्तान जा रहा हूँ, फोमुश्का और फिमुश्का के पास । और तुम तो जानते ही हो, मैं तुमसे क्या कहूँगा ? पागलपन वहाँ है और पागलपन यहाँ है ... सिर्फ वह पागलपन अठारहवीं सदी का पागलपन है जो तुम्हारी इस बीसवीं सदी के पागलपन के बजाय रूसी आत्मा के अधिक निकट है । नमस्ते महाशयो ! मैं पीए हुए हूँ, मुझसे नाराज मत होना । सिर्फ एक बात कहने की इजाजत दो ! मेरी बहन स्नानदुल्या से बढ़कर दयालु और भली औरत इस पृथ्वी पर दूसरी नहीं है ... और तुम देखते हो, वह क्या है—एक कुबड़ी और उसका नाम स्नानदुल्या है । इस संसार में हमेशा ऐसा ही होता है । हालाँकि यह ठीक ही है कि उसका

यही नाम होना चाहिए। क्या तुम जानते हो कि सन्त स्तानिस्लावा कौन थी? एक धर्मात्मा दयालु स्त्री जो जेल जाती थी और कैदियों के घावों को अच्छा करती थी और बीमारों की सेवा करती थी। अच्छा तो नमस्ते! नमस्ते, अलेक्सी—वह, जिस पर दया करनी चाहिए! और तुम! तुम अपने को एक अफसर कहते हो ओह! मनुष्य द्रोही! नमस्ते!'

वह भुनभुनाता हुआ और खाँसता हुआ चल पड़ा निकासस्थान की ओर, मार्केलोव और नेज्दानोव अड्डे की ओर चल पड़े, जहाँ उन्होंने अपनी बग्घी छोड़ी थी। पहुँचकर बग्घी जोतने का आदेश दिया और आध घन्टे बाद वे लोग सड़क पर बढ़े जा रहे थे।



इक्कीस

आसमान में नीचे तक गहरे बादल छाए हुए थे मगर अंधेरा कोई ज्यादा नहीं था। सड़क पर खड़ी गाड़ियों की चीजें पहचानी जा सकती थीं। दाँए-बाँए हर एक चीज छाया में थी और अलग-अलग चीजों की रेखाकृतियाँ आपस में मिलकर उलझे हुए काले धब्बे बना रही थीं। यह एक काली भयानक रात थी, विस्तृत आकाश के तले और बर्फ की सुगन्ध से भीनी ठंडी नम हवा के झोंके दम में चल रहे थे। जब वे बलूत की झाड़ी को पार कर गए जो एक मील स्तम्भ बनाती थी तो वे एक दूसरी सड़क पर मुड़े। इस सड़क पर गाड़ी हाँकना और भी मुश्किल हो गया, यह पतली डगर कहीं-कहीं तो बिल्कुल ही [illegible] हो जाती थी [illegible] सावधान और धीमी गति से गाड़ी हाँक रहा था।

हम ठीक यहीं रास्ता तो नहीं भूल रहे हैं? अलग्ज़ानाव ने पूछा जो अभी तक चुप बैठा था।

'नहीं, हम रास्ता तो नहीं भूलेंगे !' मार्कलोव ने उत्तर दिया। 'एक दिन में दो दुर्भाग्य एक साथ नहीं आते।'

'क्यों, पहिला दुर्भाग्य भला क्या था ?'

'तुमने अभी ही अपना सारा दिन बर्बाद किया—क्या यह कोई दुर्भाग्य ही नहीं है ?'

'ओ, हाँ हाँ हाँ यह शैतान गोलुश्किन ! हमें इतनी शराब नहीं पीनी थी। मेरा तो सर दर्द कर रहा है बड़े जोर से ?'

'मैं गोलुश्किन की बात नहीं कर रहा था, उससे हम कम से कम कुछ पैसे तो झटक लाए, उसके यहाँ, हमारे आने का कुछ तो लाभ हुआ !

'पाक्लिन हमें अपने रिश्तेदारों के यहाँ ले गया क्या भला वह उन्हें कहता था—तोता उस पर तो तुम कहीं पश्चाताप नहीं कर रहे ?'

'उसमें तो पश्चाताप करने की कोई बात नहीं है' 'और न प्रसन्न ही होने की कोई बात है। मैं उनमें से नहीं जो ऐसी छोटी मोटी बातों में दिलचस्पी लेते हैं' 'मैं उस दुर्भाग्य की बात नहीं कर रहा था।'

तब, फिर ?

मार्कलोव ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह सिर्फ थोड़ा अपने कोने की एक ओर को घुस गया जैसे वह अपने को सिकोड़ रहा हो। नेज्दानोव स्पष्ट रूप से उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था, सिर्फ उसकी मूँछें आड़ी तिरछी काली लकीरों के रूप में दीख पड़ रही थीं, लेकिन सवेरे से ही वह देख रहा था कि मार्कलोव के मन में कुछ हो रहा है, लेकिन उसे न कुरेदना ही अच्छा था—कुछ धुँधली अस्पष्ट उत्तेजना।

'अलाक्सेइ, दमीत्रिहावित्च,' काफी देर की चुप्पी के बाद उसने पूछा 'क्या तुम ईमानदारी से किस्त्याकोव के उन पत्रों को, जो तुमने

भाज सवेरे मुझे पढ़ने को दिए थे पसन्द नहीं हो ? तुम तो जानते ही हो—मेरे भद्दे और सीधे शब्दों के लिए मुझे माफ करना—यह सब व्यर्थ की बकवास है !

मार्केलोव भाया।

'पहिली बात तो यह है,' उसने रोषपूर्ण स्वर में कहना शुरू किया, 'उन पत्रों के बारे में मैं तुम्हारी राय से बिल्कुल भी सहमत नहीं। मैं उन्हें बहुत महत्वपूर्ण और सजग समझता हूँ। और दूसरी बात यह कि किस्ल्याकोव मेहनत करता है और लोगों को अपना बना लेता है और फिर इससे भी बढ़ कर यह विश्वास करता है, वह हमारे उद्देश्य में विश्वास करता है, वह क्रान्ति में विश्वास करता है। मैं तुमसे एक बात साफ कह देना चाहता हूँ अलक्सी दिमित्रिविच, कि मैं देखता हूँ कि तुम—उद्देश्य के प्रति लिए बड़े निरुत्साही हो, तुम उसमें विश्वास नहीं करते।'

'ऐसा तुमने कैसे सोचा ?' नज्दानोव ने धीरे से विरोध किया।

'तुम्हारी सारी बातें तुम्हारा सारा व्यवहार यह प्रकट करता है। आज गोलुश्किन के यहाँ किसने यह कहा था कि किन पर विश्वास किया जा सकता है कुछ पता नहीं ? तुमने। किसने पूछा था कि एक भी बताओ ? तुम ! और जब यह तुम्हारा दोस्त वह दाँत निपोरने वाला बन्दर, यह मोटा, मि० पाकलिन आसमान की ओर आँख उठा कर एलान करने लगा—कि हममें से कोई भी त्याग के योग्य नहीं है, तो किसने उस बढ़ावा दिया था कौन था जिसने सहमति में सिर हिलाया था ? क्या वह तुम नहीं थे ? तुम अपने लिए चाहे जो कहो और अपने लिए चाहे जो सोचो, तुम्हारी मर्जी यह तुम्हारा मामला है सकिन मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जो जीवन को मधुर बनाने वाली हर चीज को त्यागने के लिए तैयार रहते हैं और अपने आदर्शों के प्रति वफादार रहने के लिए प्रेम के सौभाग्य तक का त्याग देते हैं। अपने आदर्शों के साथ कभी गद्दारी नहीं करते। ओह, आज तुम उनके योग्य नहीं हो, निश्चय ही।

हमारी झोंपड़ियाँ , कोचवान ने कहा , 'ओ, बढ़े चलो मेरे हीरो, बढ़े चलो !'

प्रकाश बार-बार दीखने लगा ।

'उस अपमान के बाद,' नेज्दानोव ने आखिरकार कहना शुरू किया, 'तुम समझ सकते हो, सर्गो मिहालोविच कि मैं अब तुम्हारे घर में रात नहीं बिता सकता , इसलिए, हालांकि अप्रिय बात है, फिर भी मुझे कहना पड़ रहा है कि घर पहुंचकर तुम मुझे अपनी बग्घी दे दो ताकि मैं शहर तक वापस जा सकूँ । वहाँ से फिर मैं सवेरे घर पहुंचने का कुछ प्रबन्ध कर लूंगा , और फिर तुम्हें मैं वहाँ से सूचना भेज दूँगा, जिसकी तुम्हें निश्चय ही चाह है ।'

मार्केलोव ने तुरन्त कोई उत्तर नहीं दिया ।

'नेज्दानोव,' उसने नीचे पर निराश स्वर में कहा, 'नेज्दानोव ! ईश्वर के वास्ते मेरे घर चलो, ताकि मैं घुटनों के बल बैठ कर तुमसे माफी माँग सकूँ ! नेज्दानोव ! भूल जाओ अलेक्सी ! भूल जाओ, भूल जाओ मेरी मूर्खतापूर्ण बातों को ! ओह, काश कोई समझ पाता कि कितना दुखी हूँ मैं !' मार्केलोव ने अपनी छाती पर घूँसा मारा और एक कराह उसके मुँह से निकली । 'अलेक्सी ! मुझ पर दया करो ! मुझे अपना हाथ दो ! मुझे माफ करने से इन्कार मत करना !'

नेज्दानोव ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया—अनिच्छा से—फिर भी बढ़ा दिया । मार्केलोव ने उसे इतनी जोर से दबाया कि वह करीब-करीब चीख पड़ा ।

कोचवान ने मार्केलोव के घर की सीढ़ियों पर बग्घी लाकर रोक दी ।

मार्केलोव थोड़ी देर बाद अपने कमरे में बैठा नेज्दानोव से कह रहा था 'सुनो, अलेक्सी , प्यारे भाई , उसने प्रेमासिक्त सम्बोधन किया, ऐसा स्नेह सिक्त सम्बोधन, जिसमें अपने सफल प्रतिद्वन्द्व के प्रति,

जिसका उसने अभी मूतक अपमान किया था, जिसे वह मार डालना चाहता था, टुकड़े-टुकड़े कर डालना चाहता था, अखंड आत्म त्याग का भाव था और विनम्र विनय थी और एक प्रकार की अधिकार पूर्ण याचना भी

नेज्धानोव ने मार्केलोव को भी उसी स्नेहपूर्ण स्वर में सम्बोधन करना आरम्भ कर उस अधिकार पूर्णयाचना को स्वीकार कर लिया था।

'सुनो अलेक्सी! मैंने अभी कहा था कि मैंने प्रेम का सुख त्याग दिया है, उसे छोड़ दिया पूरी तरह ताकि पूरी तौर से अपने उद्देश्य की सेवा कर सकूं यह सब बकवास थी, कोरी शेखी थी! मुझे यह सब कुछ कभी मिला ही नहीं। मेरे पास कुछ त्याग करने को था ही नहीं।—मैं अभागा ही पैदा हुआ और अभागा ही रहा और शायद यह ठीक भी था होना भी यही चाहिए था। क्योंकि मैं उसके योग्य भी नहीं। मुझे कुछ और करना है! तुम दोनों कर सकते हो प्रेम कर सकते हो और प्रेम किए जा सकते हो और साथ ही साथ उद्देश्य की भी सेवा कर सकते हो तुम बड़े भाग्यशाली हो! मैं तुमसे ईर्षा करता हूँ लेकिन यह भी मेरे भाग्य में नहीं। मैं ईर्षा भी नहीं कर सकता। तुम सुखी हो! सुखी हो! मैं नहीं हो सकता।

मार्केलोव ने यह सब एक नीची कुर्सी पर बैठे-बैठे दबी जुबान से कहा उसका सिर उसके हाथों के बीच में झुका हुआ अगल का निर्जीव सा लटका हुआ था। नेज्धानोव उसके सामने खड़ा था, स्वप्निल सतर्कता में अभिभूत सा हालांकि मार्केलोव उसे सुखी कह रहा था, न यह सुखी दीख रहा था और न सुख का अनुभव ही कर रहा था।

'युवावस्था में मुझे धोखा दिया गया 'मार्केलोव कहता गया, वह बड़ी उत्तम सुन्दर लड़की थी फिर भी उसने मुझे धोखा दिया और किसके लिए? एक जर्मन के लिए! एक सहायक मेजर के लिए! जबकि मरियाना—'

वह रुक गया   पहिली बार उसने उसका नाम लिया था और लगा कि उसके होंठ जल उठे।

'मरियाना ने मुझे धोखा नहीं दिया, उसने मुझे पहिले ही साफ-साफ बता दिया था कि वह मेरी परवाह नहीं करती, मुझे प्रेम नहीं करती   और करे भी क्यों? उसने अपने को तुम्हें दे दिया है खैर, तो क्या हुआ? क्या वह खुदमुख्तार नहीं है?

ओह, ठहरो, ठहरो!' नेज्दानोव चिल्लाया, 'यह तुम क्या कर रहे हो? अपने को दे दिया है? मैं नहीं जानता कि तुम्हारी बहन ने तुम्हें क्या लिखा है, लेकिन मैं कसम खाकर तुमसे कहता हूँ—

'मैं नहीं कहता कि शारीरिक रूप से, मेरा मतलब है मन से वह तुम्हारी होगई है, हृदय से, आत्मा से' मार्केलोव ने बात काट कर कहा। वह निश्चय ही किसी न किसी कारण से नेज्दानोव के इस कथन से आहतस्त ही हुआ। 'और उसने अच्छा ही किया! रही मेरी बहन की बात   निश्चय ही कोई चोट पहुँचाने का उसका इरादा नहीं है   कम से कम, उस उसकी परवाह भी नहीं, लेकिन वह तुमसे घृणा करती है और मरियाना को भी। वह झूठ नहीं कह रही'   लेकिन, खैर छोड़ो उसकी बातों को!

'हाँ, नेज्दानोव ने अपने मन में सोचा। 'वह हमसे घृणा करती है।

अब मरने के ही लिए है, मार्केलोव ने उसी स्थिति में रहते हुए कहना जारी रखा। मेरे लिए अब पीछे हटने के अन्तिम रास्ते भी बन्द होगए, अब मेरे लिए कोई बाधा नहीं है! कोई परवाह नहीं गोलुश्किन भले ही काठ का उल्लू है, इससे कुछ नहीं बनता बिगड़ता। और किस्त्याकोव ने पत्र   से बरबास हैं, शायद   'लेकिन हमें तो अपने मुख्य उद्देश्य पर ध्यान देना है। उसके अनुसार हर जगह तैयारी पूरी है। तुम्ह शायद विश्वास नहीं हो रहा है?

मेग्यानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'तुम्हारा कहना ठीक है शायद लेकिन अगर उस समय का इन्तजार करें जब हर चीज पूरी तरह तैयार हो जाय तो वह समय कभी न आएगा और हम अपना काम कभी शुरू भी न कर पाएंगे। अगर कोई प्रारम्भ में ही सारे परिणामों को परखने लग जाय तो निश्चय ही कुछ न कुछ बुरे परिणाम हर एक काम में मिल ही जायगे। मिसाल के लिए जब हमारे पीछे के लोगों ने किसानों की मुक्ति का आन्दोलन संगठित करना शुरू किया था तब क्या वे देख सके थे कि इस मुक्ति का एक परिणाम होगा—महाजनी जमीदारी वर्ग का जन्म जो किसानों को छः रूबल में चौथाई मन मिट्टी मिली राई कर्ज में देगा और बदले में उनसे वसूल करेगा (मार्केलाव ने एक उँगली उठाई) 'मजदूरी में पहिले पूरे छः रूबल और फिर (मार्केलोव ने दूसरी उँगली भी उठाई) चौथाई मन राई और तब (मार्केलोव ने तीसरी उंगली भी उठाई) ऊपर से उसका सूद भी!—वास्तव में, वे किसान को आखिरी बूंद तक चूस लेते हैं। हमारे मुक्तिदाताओं ने इसकी कल्पना भी न की थी यह तुम्हें मानना होगा। और फिर अगर उन्होंने यह कल्पना कर भी ली हो तो भी किसानों को आजाद कराना ही उनके लिए उचित था बजाय इसके कि उन परिणामों पर सोचते रहना! तो मैंने तो निश्चय कर लिया है।'

मेग्यानोव ने अपने की सी हालत में प्रश्न सूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा, लेकिन वह तो दूसरी ओर ध्यान से नजर गड़ाए हुए था। उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं उसकी आँखों पर झुकी हुईं। वह अपना होंठ काट रहा था और मूँछें चबा रहा था।

'हाँ मैंने तो निश्चय कर लिया है।' उसने दुहराया और अपना रोंयेदार घूसा अपनी जाँघों पर मारता हुआ वह बोला। 'मैं तब हठी स्वभाव का आदमी हूँ, तुम जानते हो मैं बरार में यह छाप क्यों नहीं है।'

तब वह उठ खड़ा हुआ, और लड़खड़ाते हुए जैसे गिर रहा हो, वह अपने शयन-कक्ष में चला गया और एक मरियाना की फ्रेम में जड़ी छोटी सी तस्वीर लिए वापस आया।

'इसे लेलो,' उसने दुखी किन्तु स्थिर स्वर में कहा, यह मैंने कभी बनाई थी। मैं अच्छी तस्वीर नहीं बना पाता, लेकिन देखो, यह बिल्कुल वैसी ही लगती है—सजीव, (वह पेन्सिल की तस्वीर सचमुच सजीव लगती थी।) इसे लेलो मेरे भाई, यह मेरी अन्तिम वसीयत है। इस तस्वीर के साथ में तुम्हें अपने सारे अधिकार सौंपता हूँ वैसे तो कोई थे भी नहीं ""लेकिन तुम तो सब कुछ जानते हो, अलेक्सी! मैं तुम्हें सब कुछ देता हूं, अलेक्सी" और उसे प्यारे भाई, वह बड़ी अच्छी" "बड़ी भली"

मार्केलोव थम गया। उसके सीने की धड़कन साफ दिखाई दे रही थी।

'लो इसे। तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो! अलेक्सी? 'तो फिर लेलो। अब मेरे पास कुछ नहीं है "और मैं कुछ चाहता भी नहीं।' नेज्दानोव ने चित्र लेलिया, लेकिन एक अजीब अनुभूति ने उसके मन को दबोच लिया। उसे लगा कि जैसे उसे यह भेंट लेने का कोई अधिकार नहीं है कि अगर मार्केलोव का पता चल जाय कि उसके मन में क्या था तो शायद वह यह चित्र उसे न देता। काले रंग के चौखटे में सावधानी से जड़े सुनहले कागज पर बने गोल चित्र को सम्हाल कर वह अपने हाथ में थामे हुए था और समझ नहीं पा रहा था कि उसका क्या करे। 'एक मनुष्य का सारा जीवन उसके हाथ में है,' उसके मन में विचार आया। उसने अनुभव किया कि मार्केलोव कितना आत्म त्याग कर रहा है, लेकिन आखिर क्यों, क्यों! क्या वह चित्र वापस कर दे? नहीं! यह तो और भी क्रूरता होगी" और फिर क्या वह चेहरा उसे प्यारा नहीं? क्या वह उसे प्रेम नहीं करता?

मेज्मानोव ने किसी ग्रान्तरिक भाव से प्रेरित होकर मार्केलोव की ग्रोर देखा' क्या वह उसके भावों को पढ़ने का प्रयास करता हुग्रा उसकी ग्रोर नहीं देख रहा था ? लेकिन मार्केलोव फिर उसी कोने में एकटक देख रहा था ग्रौर ग्रपनी मूँछें कुतर रहा था।

बूढ़ा नौकर हाथ में मोमबत्ती लिए हुए कमरे में ग्राया।

मार्केलोव चौंकता हुग्रा बोला।

'सोने का समय हो गया है, प्रिय ग्रलैक्सी !' प्रातःकाल में शुभ विचार ग्राते हैं। मैं तुम्हारे घर पहुँचने का प्रबन्ध कर दूँगा, ग्रच्छा ग्रब ग्रलविदा मेरे दोस्त।

'ग्रौर तुम्हें भी नमस्ते मेरे बुजुर्ग।' उसने एकाएक नौकर की ग्रोर घूमते हुए ग्रौर उसके कन्धों को थपथपाते हुए कहा मेरे लिए शुभ कामना करना।'

वह वृद्ध ऐसा भौंचक्का सा रह गया कि मोमबत्ती उसके हाथों से छूट कर गिरते गिरते रह गई ग्रौर उसकी ग्राँखें ग्रपने मालिक पर झुक गईं जिनसे हमेशा की निराशा से भिन्न—कुछ ग्रौर ही भाव प्रगट हो रहा था।

मेज्मानोव ग्रपने कमरे में गया। वह बड़ा दुखी था। रात में शराब पीने से उसके सिर में ग्रब भी दर्द हो रहा था। उसके कान गूँज रहे थे, ग्रौर ग्राँखों के सामने चिनगी उड़ रही थी हालाँकि उसने ग्राँखें बन्द कर रखी थीं। गोलुश्किन क्लर्क वास्या फोमुश्का फिमुश्का, सब उसकी ग्राँखों के सामने नाच रहे थे ग्रौर दूर पर मरिग्राना की ग्राकृति ग्रविश्वसनीय सी लग रही थी, पास नहीं ग्राती थी। उसने जो कुछ कहा था या किया था सब उसे झूठ लग रहा था ग्रौर प्रेम ऐसा दिखाऊ ग्रौर फिजूल बकवास ग्रौर जो काम करना चाहिए था, उद्देश्य, जिसके लिए उद्योग करना चाहिए था, कहीं भी नहीं दीख पड़ रहा था, ताने ग्रौर शीशों में भी ग्रप्राप्य ग्रतल तम में डूबा हुग्रा

वह उठ कर मार्कलोव के पास आना चाहता था और उससे कहना चाहता था कि 'अपनी भेंट वापस लेलो, वापस लेलो ! लेकिन वह उठने में असमर्थ था ।

'ओह ! कैसा घृणित है यह जीवन !' वह आखिर चीख पड़ा ।

दूसरे दिन सवेरे वह तड़के ही चल दिया । मार्कलोव पहिले से ही पौढ़ियों पर किसानों से घिरा हुआ खड़ा था। पता नहीं उसने उन्हें एक साथ बुलाया था या वे अपने आप आगए थे, नेज्धानोव नहीं समझ सका, मार्कलोव ने बड़े ही संक्षिप्त रूप में और रूखता से उसे नमस्ते की - लेकिन लग रहा था जैसे वह किसानों के सामने कोई अत्यन्त महत्वपूर्ण ऐलान करने जा रहा है। बूढ़ा नौकर अपनी उसी भाव भंगिमा में सीढ़ियों पर खड़ा था।

बग्घी तेजी से नगर को पार कर गई, और खुले मैदानों में होकर बड़ी तेजी से बढ़ी जा रही थी। घोड़े बढ़ी थे, लेकिन कोचवान, शायद इसलिए कि नेज्धानोव एक आलीशान मकान में रहता है, या और किसी कारण से वोडका की उम्मीद किए था - और हम सब जानते हैं कि अब कोचवान को वोडका मिल जाय या उसे मिलने की आशा हो, तो घोड़े बहुत तेजी से भागते हैं। वह जून का महीना था, पर वातावरण ताजा था, घने-घने बादल आसमान में फिर रहे थे, हवा तेज चल रही थी, पिछले दिन की वर्षा से सड़क पर धूल दब गई थी, सरों के पेड़ों से टकरा कर हवा सरसरा रही थी, हर चीज गतिशील थी, हरे जंगलों में दूर के बलाव से उल्लू की बोली सुनाई पड़ रहा थी, जैसे बोली के पंख हो और वह उनपर उड़ रही हो, कौए आसमान में उड़ रहे थे, काली मक्खियों जैसी कोई चीज निर्मल खुले आकाश में सीधी रेखा के रूप में रेंग रही थी—यह किसान थे जो दूसरी बार अपने खेतों को जोत रहे थे।

लेकिन नेज्धानोव ने यह सब कुछ नहीं देखा, उसने यह भी ध्यान

नहीं लिया कि वह किन्नागिन की गीर में होकर चल रहा है। वह अपने विचारों में ही खोया हुआ था।

अब उसने मकान की ऊपरी मंजिल की खिड़की देखी तब वह चौंका वह मरियाना की खिड़की थी। हाँ उसने अपने से कहा और उसके मन में प्रेम की चमक भी उत्पन्न हो गई यह ठीक कहता था वह बड़ी अच्छी लड़की है और मैं उससे प्रेम करता हूँ।



बाईस

उसने जल्दी-जल्दी अपने कपड़े बदले, और कोल्या को पढ़ाने गया। रास्ते में लिप्यागिन से भोजन घर में उसकी भेंट होगई। लिप्यागिन ने विनम्रता से किन्तु उदासी से नमस्ते की और अपने मुँह ही मुँह में बुदबुदाकर पूछा, 'यात्रा सुखदायक हो रही?' और अपनी अध्ययनशाला की ओर चला गया। उसने अपनी कूटनीतिज्ञ बुद्धि से यह निश्चय कर लिया था कि अब छुट्टियाँ समाप्त हो रही हैं और वह जल्दी ही इस शिक्षक को पीटर्सबर्ग रवाना कर देगा क्योंकि वह जान गया था कि उसके विचार 'निश्चित रूप से अधिक क्रान्तिकारी' हैं और इस बीच में वह उस पर कड़ी नजर रखेगा उसने सोचा, 'खैर कोमी हो।

वालेन्तिना मिखाइलोवना की गेन्यानोव के प्रति भावनाएँ, बड़ी तीव्र और स्पष्ट थीं। वह अब उसे किसी तरह सहन नहीं कर सकती थी 'इसने—इस मामूली लड़के ने—उसका अपमान किया है। मरियाना ने

गलत नहीं समझा था   वालेंतिना मिखाइलोवना ही थी, जो गैलरी में बड़ी उम्र पर और नेज्दानोव पर जासूसी कर रही थी   वह महान महिला भी इस ईर्ष्या द्वेष से ऊपर नहीं थी। नेज्दानोव की उन दो दिनों की अनुपस्थिति में हालांकि उसने अपने मुँह से मरियाना से कहा तो कुछ नहीं, लेकिन अपने हर व्यवहार से वह बार-बार उसे यह संकेत देती रही थी कि वह सब कुछ जानती है, और अगर वह उस आधे मन से घृणा और आधे मन से उन पर दया न करती होती तो उसकी दशा अत्यन्त दयनीय हो जाती   उसके चेहरे पर कठोरता और आन्तरिक घृणा भरात की उसकी भौंहें कटुता से तनी हुई थीं पर साथ ही जब वह मरियाना की ओर देखती या उससे बात करती, तो उसका मन उसके प्रति दया से भर उठता, उसकी अनुपमय आँखें कोमल उलझन और दुख भरी सीख के साथ उस स्वाभिमानिनी हठी लड़की पर जम जातीं जो अपनी तमाम उन्मत्त कल्पनाओं के बाद इतनी पतित हो गई थी कि उस अँधेरे कमरे में चुम्बन में आबद्ध थी एक क्षुद्र लड़के के साथ।

बेचारी मरियाना! उसके कठोर गर्वीले होंठ किसी आदमी के चुम्बन का स्वाद अभी तक नहीं जानते थे।

वालेन्तिना मिखाइलोवना ने अपने पति को इस बात की जरा भी खबर नहीं होने दी थी उसने सिर्फ उसकी उपस्थिति में मरियाना से एक अप पूर्ण मुस्कान के साथ कुछ शब्द विनिमय करके ही सन्तोष कर लिया था, जो किसी तरह अपने प्रसंगित अर्थ के अनुरूप में बिल्कुल भी न थे। वालेन्तिना मिखाइलोवना निश्चित रूप से अपने मा. का सारी घटना का ब्योरा देते हुए पत्र लिखकर दुख—का अनुभव कर रही थी   लेकिन सारी बातों को समझ कर उसने पश्चात्ताप करना ही उचित समझा और वह उसने कर लिया, यह सोच कर कि अगर उसने पत्र न लिखा होता तो अच्छा होता।

भोजन के समय नेज्दानोव को मरियाना की एक झलक मिली।

उसे लगा जैसे वह दुबली और पीली पड़ गई है, वह उस दिन जरा भी सुन्दर नहीं लग रही थी, लेकिन उसके कमरे में प्रवेश करते समय मरिआना ने उस पर जो उड़ती नजर डाली, वह सीधी उसके हृदय में घुसती चली गई। और वासेल्तिना निकोलायेवना ने उसकी ओर इस दृष्टि से देखा मानो वह मन ही मन बार-बार दुहरा रही हो, 'मैं तुम्हें बधाई देती हूँ!' और साथ ही साथ वह उसके चेहरे से यह पता लगाना चाहती थी कि मार्केलोव ने उसे वह पत्र दिखाया है या नहीं। अन्त में उसने निश्चय किया कि उसने पत्र दिखा दिया है।

सिप्यागिन ने यह सुन कर कि नेज्दानोव उस कारखाने में भी गया था जिसका मैनेजर सोलोमिन है, उससे उस दिलचस्प कारखाने के बारे में प्रश्न-पर-प्रश्न पूछने शुरू कर दिए लेकिन उसके उत्तरों से शीघ्र ही समझ कर कि उसने वहाँ कुछ भी नहीं देखा उसने मौनी धुनी साध ली। उसके चेहरे पर एक प्रकार के पछतावे का भाव था कि क्यों उसने ऐसे अविकसित छोकरे से ऐसी मूल्यवान जानकारी रखने की आशा की! जब वे लोग भोजन घर से चले गए तो मरिआना को नेज्दानोव से इतना फुस-फुसा ने का अवसर मिल गया, 'पुराने भोज पत्र के बाग में मेरी प्रतीक्षा करना अलेक्सी मैं मौका लगते ही सीधी वहीं आऊँगी।' नेज्दानोव ने सोचा 'यह भी मुझे अलेक्सी कहती है, जैसे वह कहता था। और उसे यह निकटता कितनी मधुर लगी! हालांकि भयंकर भी। और कितनी आश्चर्य जनक, और कितनी अविश्वसनीय बात होती अगर, वह एकाएक उसे फिर मि० नेज्दानोव करके कहने लग जाती अगर वह उससे दूर हो जाती! उसने महसूस किया कि यह स्थिति उसके लिए बड़ी दुखदायी होगी। वह उससे प्रेम करने लगा है इसका निश्चय अभी उसे स्वयं भी नहीं था, लेकिन यह कि वह उसके लिए मूल्यवान है और उसके निकट है और आवश्यक भी—हाँ, सबसे अधिक आवश्यक—यह अनुभव उसके हृदय की सबसे नीची गहराई तक में हो रहा था।

मरिमाला जहाँ नेत्रनाथ का अपना इन्तज़ार करने के लिए कहा था, उस स्थान पर कुछ सौ आम पन के चीगण मोगु पुराने पेड़ थे अधिराधि च रस टपकता था। हवा कम नहीं हुई थी धनी धारें इया स झोंके स रही थीं, बादल ठेलों म आसमान में दौड़ रहे थे और उनमें से जब एक म सूरज का ढक लिया म हर चीज—मानो मा नहीं पर पुधल रग से रंग उठी। जब सूरज बादल के पीछे से निकल आता तो प्रकाश के चमकते धब्बे यहाँ वहाँ ज़मीन पर बार-बार स उतर ला करते हुए आपस में आँख मिचौली का खेल सा खेलते हुए नाचने लग पत्तों की सरसराहट और गंध दोनों ही थी बस एक प्रकार का अलबेला आनन्द उसम भर गया था। इस तरह क आनन्द पूर्ण वातावरण में कामना का भाव पीड़ा स परिपूर्ण और शान्त हृदय म प्रवेश करता है और नेत्रनाथ का हृदय उस समय ऐसा ही हो रहा था।

वह एक मोटे पत्थर क सहारे बैठ गया और प्रतीक्षा करने लगा। वह सचमुच नहीं जानता था कि वह कैसा अनुभव कर रहा है और वह जानना भी नहीं चाहता था। वह प्रसन्न था नेत्रनाथ के यहाँ न भी अनिश्च परेशानी और हल्के पन का अनुभव कर रहा था। जो हो यह सब का सब अधिक उत्साह का था उसे याद आने का अनुभव हो रहा था। जो जाना की दिशा का कारण में सोच रही है, नदी के साथ उसके हृदय में आविर्भूत हो रही। नेत्रनाथ उस समय के दिमाग में आया था। जब नाव घाट पर पहुँच जाती है, जब कि यह आश्वासन होता है कि अब वह घाट के खूँटे से बाँध दी गई है और सुरक्षित है।

बस इतना ही। ईश्वर की कृपा है।

वह एकाएक चौंक उठा। दूर पर सड़क के मोड़ पर किसी का पदचाप सुनाई दिया। वह मरिमाला थी। लेकिन जब उसने पास आकर देखा कि वह अकेली नहीं थी और उसके साथ एक और व्यक्ति था

सरक रहे हैं तब तक वह यह नहीं निश्चय कर पाया कि वह आ रही थी या जा रही थी। तो वह आ रही थी। अगर वह पीछे की ओर जा रही होती तब वह अपने ऊपर से नीचे की ओर सरकते दीख पड़ते। थोड़ी देर और बीती कि वह उसके पास खड़ी थी, उसके सामने। स्वागत के भाव से उसका चेहरा चमक रहा था, उसकी आँखों में एक स्निग्ध चमक थी, एक हल्की किन्तु प्रफुल्ल मुस्कान उसके होठों पर थिरक रही थी। नेज्दानोव ने उसके फैले हुए हाथों को पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया, लेकिन मुँह से एक शब्द भी न बोल सका। उसने भी कुछ नहीं कहा। वह बहुत तेज चल कर आई थी इसलिए उसकी साँस फूल रही थी, लेकिन यह देखा जा सकता था कि वह अत्यन्त प्रफुल्लित थी और वह भी उसे देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ था।

पहिले वही बोली।

अच्छा, तो अब तुम जल्दी से बताओ तुमने क्या निश्चय किया!”

नेज्दानोव आश्चर्य में पड़ गया।

‘निश्चय किया। क्या हमें अभी ही किसी बात का निश्चय करना था?

ओह तुम मेरा मतलब समझते हो! बताओ तुमने क्या-क्या बातें कीं, तुम किस-किस से मिले? सोलोमिन से तुम्हारा परिचय हुआ? मुझे सब कुछ बताओ, सब कुछ! अच्छा एक मिनट ठहरो—चलो हम लोग यहाँ चलें, थोड़ा और आगे। मैं एक जगह जानती हूँ जहाँ आसानी में किसी की नजर नहीं पड़ सकती।

वह उसे अपने पीछे-पीछे घसीट ले गई। वह लम्बी सूखी घास में होकर आज्ञाकारी की तरह उसके पीछे-पीछे चला गया।

वह उसे उस स्थान पर ले गई जहाँ एक बड़ा पेड़ पड़ा हुआ था जो आँधी से गिर गया था। वे दोनों उसके तने पर बैठ गए।

'तो, अब बताओ मुझे,' उसने दुहराया लेकिन वह स्वयं ही कहती गई 'ओह तुम्हें देख कर मैं कितनी प्रसन्न हूँ मेरे प्यारे ! मुझे लगता था कि यह दो दिन कभी नहीं बीतेंगे। जानते हो अलेक्सी ? अब तो मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि मार्नेन्तिना मिखालोवना ने हमारी बातें सुन ली थीं।

'उसने उनके बारे में मार्केलोव को लिखा था', नेज्दानोव ने कहा।

'मार्केलोव को !'

एक मिनट को मरियाना कुछ न बोल सकी और धीरे-धीरे एक दम लाल पड़ गई, शर्म से नहीं, लेकिन किसी दूसरे अधिक शक्तिशाली भावावेग से।

'दुष्ट, कमीनी औरत !' उसने बुदबुदाया धीरे से, उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था और कोई बात नहीं ! मुझे बताओ, मुझे सब कुछ बताओ।

नेज्दानोव ने बात शुरू की मरियाना अचल प्रस्तर प्रतिमा की तरह ध्यानावस्थित उसकी बातें सुनने लगी और तभी टोकती जब वह समझती कि वह बतान में जल्द बाजी कर रहा है, और घटनाओं को टाल रहा है। उसकी यात्रा के सभी वृत्तान्त उसके लिए समान दिलचस्पी के नहीं थे। वह फोमुश्का और फिमुश्का के बारे में बातें सुनकर खूब हँसी, लेकिन उनमें उसे कोई दिलचस्पी नहीं आई। उनका जीवन उसके लिए बहुत दूर की चीज था।

'यह तो ऐसा है, जैसे तुम मुझे नेबुचादन्जार के बारे में बता रहे हो', उसने कहा।

लेकिन मार्केलोव ने जो कुछ कहा मासुरिन ने भी क्या सोचा (हालांकि जल्दी ही उसने जान लिया कि वह किस प्रकार का प्राणी है), और सबके ऊपर सोलोमिन के क्या विचार हैं और वह कैसा है— यह बातें थीं, जिन्हें वह सुनना चाहती थी और हृदयगंम करना चाहती थी। कब ? कब ?—यह प्रश्न निरन्तर उसके मन से उठ रहा था

अन्तिम आदेश के लिए।' ('यद्यपि यह झूठ है,' नेख्यानोव ने मन में सोचा।)

'किस से ?'

'तुम जानती हो ... वासिली निकोलाइविच से। और फिर हमें क्रीस्त्रोवुमोव के लौटकर आने तक की प्रतीक्षा करनी चाहिए।'

मरियाना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से नेख्यानोव की ओर देखा।

'क्या तुमने कभी वासिली निकोलाइविच को देखा है ?'

'मैंने उसे दो बार देखा है ... सिर्फ एक झलक भर, बस।

'वह कैसे हैं ?' ... बड़े ही रौबदार विशिष्ट आदमी हैं ?'

'मैं कैसे तुम्हें बताऊँ ? वही अब प्रधान हैं, और हर चीज पर नियन्त्रण करते हैं। बिना अनुशासन के हमारा काम नहीं चल सकता, आदेश का पालन आवश्यक है।' (और यह सब व्यर्थ है, उसके मन ने कहा।)

'वह कैसे लगते हैं ?'

'ओह, मोटा, भारीभरकम, काला ... ऊँची उठी ठोड़ी रूखा सा चेहरा। सिर्फ उसकी आँखें बड़ी पैनी और चमकदार हैं।'

'और वह बात कैसी करते हैं ?'

'वह बात उतना नहीं करते, जितना नियन्त्रण करते हैं।

'वह प्रधान कैसे बनाए गए ?'

'ओह ! वह बड़े दृढ़ चरित्र के हैं।' वह किसी बात से पीछे नहीं हटते। अगर जरूरत हो तो वह किसी को भी मार सकते हैं। लोग इसीसे उनसे भय खाते हैं।

'और सोलोमिन कैसा है ! थोड़ी देर की चुप्पी के बाद मरियाना ने पूछा।

'सालोमिन भी कोई खूबसूरत आदमी नहीं, बस उसका चेहरा

भोला, सरल और ईमानदार है। ऐसे चेहरे तुम्हें धार्मिक विद्यार्थियों में ही देखने को मिलेंगे, भले भोम वाले।'

मेग्यानोव ने विस्तार के साथ सोसोमिन का वर्णन किया। मरियाना देर तक मेग्यानोव के चेहरे पर टकटकी बाँध देखती रही तब उसने कहा, जैसे अपने से कह रही हो 'तुम्हारा चेहरा भी अच्छा है, मेरा विचार है तुम्हारे साथ जीवन मधुर होगा अलेक्सी।

इस वाक्य ने मेग्यानाव के हृदय को स्पर्श किया, उसने पुन उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अपने होठों के पास उठा रहा था कि 'अभी अपनी यह शिष्टता रहने दो' मरियाना ने मुस्कराते हुए कहा—जब जब उसका हाथ चूमा जाता, तब तब वह मुस्कराने लगती, तुम नहीं जानते मुझे अभी तुम्हारे सामने अपना एक पाप बताना है।

'क्या किया है तुमने ?'

'मैं तुम्हारे पीछे तुम्हारे कमरे में गई थी और वहाँ तुम्हारी मेज पर मैंने तुम्हारी कविताओं की कापी देखी ' नेग्यानाव चौंक पड़ा। उसे याद आया कि वह अपनी नोटबुक मेज पर ही पड़ी भूल गया था ?—और मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मैं उसे पढ़ने की अपनी उत्सुकता को नहीं रोक सकी, और मैंने उसे पढ़ डाला। वे तुम्हारी कविताएँ हैं, क्या ?

'हाँ, और तुम जानती हो मरियाना, मैं तुम्हें कितना प्रेम करता हूँ, इसका सबसे उत्तम सबूत यही है कि मैं तुमसे शायद जरा भी नाराज नहीं हुआ।

'जराभी ? तो कितना भी जरा पर हो तुम नाराज ? लेकिन तुम मुझे मरियाना पुकारते हो—यह ठीक है मैं तुम्हें मेग्यानाव नहीं कह सकती' मैं तुम्हें अलेक्सी ही पुकारा गी। और वह कविता जो इन पंक्तियों से शुरू होती है कि 'मेरे प्यारे, मर मरने के समय क्या वह कविता तुम्हारी है '

'हाँ   'हाँ। लेकिन कृपया उस सबको रहने दो   'मुझे दुखी मत करो।'

मरियाना ने अपना सिर हिलाया।

'यह कविता बड़ी ही करुण है निराशा से भरी हुई। मुझे आशा है, यह कविता तुमने मुझे जानने से पहिले लिखी होगी। लेकिन जहाँ तक मैं समझ सकती हूँ यह सच्ची कविता है। मुझे लगता है, तुम एक लेखक हो सकते थे, लेकिन निश्चित रूप से मैं यह भी जानती हूँ कि साहित्य से अधिक जरूरी और अच्छा काम तुम्हारे पास है। उसमें पहिले व्यस्त रहना बड़ा अच्छा था—और कुछ करना सम्भव जो नहीं था।

नेज्दानोव ने एक उड़ती सी पैनी नजर उस पर डाली।

'तुम ऐसा सोचती हो? हाँ, मैं भी तुमसे सहमत हूँ। इसमें असफल होना और कामों में सफल होने से अच्छा है।

मरियाना भावाभिभूत होकर उठ खड़ी हुई।

'हाँ मेरे प्राण तुम ठीक कहते हो!' उसने कहा और उसका समस्त चेहरा लाल सुर्ख हो गया हर्ष की चमक से आभासित, स्नेह शील उदार भावों से स्निग्ध हो उठा। 'तुम ठीक कहते हो, अलेक्सी! लेकिन शायद हम बिल्कुल असफल नहीं होंगे हम सफल होंगे, तुम देखना—हमारा जीवन सार्थक होगा। हमारा जीवन व्यर्थ नहीं जायगा, हम जनता के बीच में जाकर जीवित रहेंगे।   क्या तुम कोई काम जानते हो?   नहीं? खैर, कोई बात नहीं, हम काम करेंगे, हम उनकी सेवा करेंगे, अपने भाइयों की जैसा भी कुछ हम जानते हैं। मैं खाना पकाऊँगी और सिलाई करूँगी कपड़े धोऊँगी, अगर जरूरत पड़ी तो तुम देखना, देखना तुम   और उसमें भले ही कोई लाभ न हो, पर सुख होगा, सुख होगा   ' मरियाना की आवाज रुँध गई, लेकिन उसकी आँखें दूर क्षितिज पर टिकी थीं उत्सुकता से, उस पर नहीं जो उसके सामने विस्तृत था बल्कि दूसरे अनदेखे, अनजाने क्षितिज पर

जो उसकी कल्पना का क्षितिज था—उसकी आँखें चमक उठीं।

मेग्यानाथ उसके सामने झुक गया।

'ओह् मरियाना !' उसने फुसफुसाया 'मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ।

उसने एकाएक अपने को झकझोरा।

'अब घर चलने का समय हो गया। वरना वे हमारी तलाश करेंगे, यद्यपि मार्सेलिना मिसालोवना अब मुझसे निराश हो चुकी है। मेरा ख्याल है। उसकी नजर में मैं बर्बाद हो चुकी हूँ।'

मरियाना ने यह शब्द इतने भावनायुक्त और खुशी चेहरे से कहे कि नेग्यानोव भी मुस्कराए बगैर नहीं रह सका। उसने उसकी ओर देखा और दुहराया बर्बाद कर दिया।

'लेकिन वह बुरी तरह घायल हो गई है,' मरियाना कहती गई 'क्योंकि तुम उसके चरणों पर नहीं झुके। लेकिन वह सब किसी काम का न रहा, एक बात है जो मुझे कह देनी चाहिए तुम देखते हो मेरा यहाँ रहना अब असम्भव हो जायगा 'मुझे भाग जाना होगा।'

'भाग जाना होगा? नेग्यानोव ने दुहराया।

'हाँ, भाग जाना होगा ~ तुम भी यहाँ नहीं रहोगे या रहोगे? हम साथ-साथ चलेंगे—हमें साथ-साथ काम करना चाहिए तुम मेरे साथ चलोगे न?

'धरती के छोर तक!' नेग्यानोव ने कहा, उसके स्वर में प्रेम का आवेग था और एक कृतज्ञता का भाव था। 'धरती के छोर तक। उस समय निश्चय ही वह उसके साथ जहाँ वह चाहती, चला जाता, बिना पीछे मुड़ कर देखे, सोचे समझे।

मरियाना ने उसे समझ लिया और आनन्दपूर्ण दीर्घ निश्वास ली।

'तो मेरा हाथ पकड़ो पर चूमो मत, बस पकड़ लो और मजबूत पकड़े रहो एक साथी की तरह, मित्र की तरह—हाँ ऐसे ही।

वे साथ-साथ विभोर, ध्यान मग्न, प्रसन्न मन घर की ओर चल पड़े। हरी घास उनके पैरों को गुदगुदा रही थी, हरी पत्तियाँ उनके स्पर्श से सिहर उठतीं, प्रकाश और छाँह के धब्बे उनके कपड़ों पर खेल रहे थे और वे प्रकाश के इस खेल पर और वायु के हर्ष दायक झोंकों पर और पत्तियों की ताजी चमक पर तथा अपनी दोनों की जवानी पर मुस्कराते हुए चले आ रहे थे।



भाग २

तेईस

फैक्टरी को घेरे हुए ऊँची चहार दीवारी के फाटक को जब सोलोमन ने केमपास से चार मील की यात्रा करने के बाद खटखटाया तो आसमान पर से रात का अंधेरा छट रहा था और सवेरे का सुनहला प्रकाश उसकी जगह लेता जा रहा था। चौकीदार ने उसके लिए तुरन्त फाटक खोला और तीन मोटे कुत्तों के साथ जो अपनी बारम्बार पूँछ जोर जोर से हिला रहे थे उसे उसके छोटे से बंगले तक पहुँचाया। वह अपने अफसर के स्वस्थ और सफलतापूर्वक घर लौटने पर स्पष्ट ही प्रसन्न दिखायी दे रहा था।

'आप आज ही कैसे लौट आए वासिली फेदोरोविच? हम तो कल सवेर तक आपके आने की आशा नहीं करते थे।'

'ओह वैसे ही, पायग्सा, रात में चलना बड़ा सुहाना होता है।' सोलोमिन और उसके मातहतों में आपस में बड़े मधुर सम्बन्ध थे, वे उसे अपना अफसर मानकर उसका आदर

करते थे और अपने आत्मीय के रूप में उसके साथ समानता का व्यवहार करते थे, बस वह उनकी नजरों में आश्चर्यजनक विद्वान था। 'वासिली फैदोतिच जो भी कहते हैं', वह कहा करते, 'वह हमेशा ही होता है। क्योंकि ऐसा कोई अध्ययन नहीं जो उनसे बचा रह गया हो और कोई ऐसा नहीं जिसकी वह समानता न कर सकें !' एक बार एक अंग्रेज कारखानेदार फैक्टरी देखने आया था, पता नहीं सोलोमिन अंग्रेजी बोलता था, इसलिए या वह सचमुच उसके ज्ञान से प्रभावित हुआ था, निरन्तर उसके कन्धे थपथपाता रहा था, और हँसता रहा और उसे डीवरपूल आने का निमन्त्रण दे गया था और उसने टूटी-फूटी रूसी भाषा में मजदूरों से कहा था, 'यह बड़ा अच्छा आदमी है, यहाँ तुम्हारे बीच में, ! बहुत अच्छा !' मजदूर खूब खुलकर उसकी बातों पर हँसे थे, कुछ गर्व के साथ, यह अनुभव करते हमारा आदमी ऐसा है ! हममें से एक !

और सचमुच वह उन्हीं में से एक था, और उनका अपना था।

दूसरे दिन सवेरे सोलोमिन का चहेता पवेल, उसके कमरे में आया, उसे जगाया और हाथ मुँह धोने को पानी दिया, कुछ बातें बताईं, और उससे कुछ प्रश्न पूछे। तब उन्होंने साथ साथ जल्दी-जल्दी चाय पी, और सोलोमिन ने अपनी काम के समय पहनने वाली जाकेट पहनी और कारखाने में चला गया, और उसका जीवन एक बड़े पहिए की तरह फिर पूर्ववत् घूमने लगा।

लेकिन एक नया अवरोध अभी प्रतीक्षा में था।

सोलोमिन के कारखाने में वापस आने के पाँच दिन बाद, एक खूब सूरत और शानदार चार घोड़ों की बग्घी पर बैठ कर हल्के हरे रंग की वर्दी पहिने एक चपरासी कारखाने में आया। पवेल उसे सोलोमिन के बंगले पर लेगया। उसने सोलोमिन को एक सीलबन्द पत्र दिया उस पर लिखा था 'बोरिस एन्ड्रीविच सिप्यागिन की ओर से। इस पत्र में, सुगन्ध आ रही थी, इत्र की नहीं, ओह नहीं ! लेकिन कोई अजीब

तीव्र पचौली सुगन्धि। पत्र अन्य पुरुष में लिखा था, सिक्रेटरी द्वारा नहीं वरन् सिप्यागिन द्वारा ही। अरज्ञानो जागीर के विद्वान स्वामी ने पहिले तो उससे इसलिए क्षमा माँगी थी कि वह उसे पत्र लिख रहा है, जिससे उसका व्यक्तिगत रूप से परिचय नहीं था, लेकिन जिसके बारे में सिप्यागिन ने बहुत कुछ सुन रखा था। तब उसने सोलोमिन को अपनी जागीर में आने की दावत दी थी क्योंकि शायद उसकी सलाह सिप्यागिन के बड़े उद्योग के लिए बड़ी लाभप्रद हो। और इस आशा में कि सोलोमिन उसके निमन्त्रण को स्वीकार कर लेगा, वह उसके पास अपनी बग्घी भेज रहा है। और अगर किसी कारण से आज आने का अवसर न हो, तो सिप्यागिन ने बड़ी विनम्रता से अपनी सुविधा का कोई अन्य दिन निश्चित करने की प्रार्थना की थी और वह सहर्ष अपनी गाड़ी उसकी सेवा में भेज देगा। उसके बाद वही साधारण व्यवहार की रस्मी बातें थीं और अन्त में पत्र प्रथम पुरुष में हो गया 'और मुझे आशा है आप मेरे साथ भोजन करने से इन्कार न करेंगे बिल्कुल साधारण ढंग से—सन्ध्या कालीन पोशाक में नहीं। (बिल्कुल साधारण ढंग से शब्द रेखांकित थे।) उसी पत्र के साथ उस आगन्तुक पत्र-वाहक ने एक और पत्र दिया, जो नेज्दानोव का था और खुला था और बड़ा संक्षिप्त था, 'कृपया आओ, तुम्हारी यहाँ बड़ी जरूरत है और तुम बड़े काम के साबित हो सकते हो, मुझे यह कहने की जरूरत नहीं कि मिस्टर सिप्यागिन के लिए नहीं, हमारे लिए।

सिप्यागिन का पत्र पढ़कर सोलोमिन ने सोचा 'बिल्कुल साधारण ढंग से! और भला मैं कैसे आ सकता था? मेरे पास तो जीवन में कभी 'सन्ध्या कालीन सूट' रहा ही नहीं ... और फिर मैं वहाँ जाऊँ ही क्यों? कम्बख्त! ... महज समय की बर्बादी है।' लेकिन नेज्दानोव का पत्र पढ़कर उसने अपना सिर खुजाया और सोचता हुआ खिड़की के पास तक गया।

'आप क्या उत्तर देने की कृपा कर रहे हैं?' नौकर ने विनम्रता से पूछा।

सोलोमिन थोड़ी देर खिड़की पर खड़ा सोचता रहा और अन्त में अपने बालों को पीछे की ओर झटकते हुए और माथे पर हाथ फेरते हुए उसने कहा, 'मैं अभी चलता हूँ। जरा कपड़े बदल लूँ।'

वाहक विनम्रता प्रकट करके चला गया और सोलोमिन ने पवेल को बुलवाया, उससे कुछ बातें कीं, एक बार कारखाने का चक्कर लगाया, और फिर एक लम्बे गले का काला कोट पहिन कर, जिसे एक प्रान्तीय दर्जी ने बनाया था और एक पुराना हैट लगा कर, जिसके लगाते ही उसका चेहरा अजीब सा लगने लगा था, वह गाड़ी में बैठ गया, तब एकाएक उसे याद आया कि उसने दस्ताने तो लिए ही नहीं हैं और पवेल को पुकारा, जो दौड़कर सफेद चमड़े के दस्ताने लाकर उसे दे गया, जो हाल ही में धोए गए थे, जिनमें से सिरे पर हर उँगली बाहर निकल रही थी। सोलोमिन ने दस्ताने जेब में रखे और कहा अब गाड़ी हाँकी जा सकती है। तब वाहक निरर्थक शीघ्रता के साथ हाँकने की सीट पर उछल कर चढ़ा और कोचवान ने घोड़ों की रासों को झटकारा, घोड़े दुलकी दौड़ने लगे।

जब धीरे-धीरे वे लोग सोलोमिन को सिप्यागिन की जागीर की ओर ले जा रहे थे, तब उधर सिप्यागिन अपने ड्राइंगरूम में एक राजनीतिक पुस्तिका को लिए बैठा, उसके बारे में अपनी पत्नी को बता रहा था कि उसने उसे यह जानने के लिए बुलाया था कि क्या वह उसे व्यापारी के कारखाने से फुसलाकर अपने कारखाने में बुला सकता है, क्योंकि उसके कारखाने की हालत वास्तव में बहुत खराब थी और उसमें आमूल सुधार की आवश्यकता थी। सोलोमिन आने से मना भी कर सकता है या आने का और कोई दिन निश्चित कर सकता है यह सिप्यागिन उस समय सोच भी नहीं सकता था, हालाँकि उसने स्वयं अपने पत्र में उसे दिन निश्चित करने की छूट दी थी।

'लेकिन हमारी तो कागज की मिलें हैं कपड़े की नहीं!' वालेन्तिना मिखाइलोवना ने कहा।

'यह एक ही बात है, मशीनें दोनों में ही हैं और यह मशीनों का कारीगर है।'

'लेकिन वह तो शायद विशेषज्ञ है।'

'मेरी प्यारी, पहिले तो इस में कोई विरोध नहीं है और, मैं फिर, फिर कहता हूं कि वह मशीन का कारीगर है।'

वालेन्तिना मिखाइलोवना मुस्कुराई।

'मार्टीडियर ज़रा ध्यान रखना तुम एक बार तो नोजवाना से गच्चा खा चुके हो, अब दुबारा भी कहीं भूल न कर बैठो।'

'तुम्हारा मतलब नेज्दानोव से है? लेकिन मैं समझता हूं कि मैंने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया किसी तरह, वह बोल्या के लिए बड़ा अच्छा शिक्षक है। और फिर तुम तो जानती ही हो मैं बहुत सोच समझ कर काम करता हूं। मेरे इस ढंग के लिए माफ करना मानी एक सी बात दो बार नहीं होती।'

'तुम समझते हो, नहीं होती? लेकिन मेरा ख्याल है कि दुनियां में हर चीज दुहरती है? और खास तौर से उन लोगों के स्वभाव में हो और खासतौर से नोजवाना के।'

'क्या कहना चाहती हो तुम?' रात्रीनी अंगिमा से पुस्तिका को मेज पर रखते हुए सिप्यागिन ने पूछा।

'ज़रा आँखें खोलकर देखो।'

श्रीमती सिप्यागिन ने जवाब दिया।

'हूं! सिप्यागिन ने कहा, क्या तुम उस विद्यार्थी की ओर संकेत कर रही हो।'

'जी हां, उन्हीं महाशय की ओर—हां।'

'हूं! क्या उन हजरत ने' (उसने अपने माथे पर हाथ फेरा) 'यहां कोई मामला गांठ लिया है? एं? एं?'

'अपनी आँखें खोलो !'

'मरियाना ? ऐं ?' (दूसरी ऐं ?' पहिली की अपेक्षा अधिक आनुनासिक थी)

'मैं तुमसे कहती हूँ अपनी आँखें खोलो !'

सिप्यागिन की भौहें तन गइं।

'खैर, उसके विस्तार में हम लोग पीछे जायेंगे। इस समय तो मैं एक बात कहना चाहता था यह व्यक्ति यहाँ कुछ संकोच का अनुभव करेगा यह स्वाभाविक भी है, वह बड़े लोगों के समाज से अपरिचित है न ! तो हम लोगों को उसके साथ जरा मित्रता का व्यवहार करना होगा ताकि वह चौंके न ! मैं तुम्हारे लिए नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि तुम तो खुद ही होशियार हो, तुम्हारा तो कहना ही क्या है, अगर तुम चाहो तो जरा देर में ही किसी को अपना बना सकती हो, तुम में वह खूबी है ! मेरा मतलब और लोगों से है, जैसे हमारे वह मित्र !'

उसने एक फैशनबिल भूरे रंग के हैट की ओर संकेत किया जो बिना दरवाजे की आलमारी पर रखा था। वह हैट कालोमियेत्सव का था, जो उसी दिन सवेरे यहाँ आया था।

'वह बड़ा मुँहफट है, तुम तो जानती ही हो, उसे ऐसे लोगों से ऐसी जबर्दस्त घृणा है, जिसे मैं तो ठीक नहीं समझता। कुछ दिनों से मैं देख रहा हूँ कि वह बड़ी जल्दी उत्तेजित हो उठता है और झगड़ पर उतर आता है क्या उसका वह मामला ठीक नहीं चल रहा है? क्यों ?' (सिप्यागिन ने एक अनिश्चित दिशा में अपना सिर झुकाया लेकिन उसकी पत्नी ने उसे समझ लिया)।

'मैं तुमसे फिर कहती हूँ, अपनी आँखें खोलो ?'

[illegible] उठकर खड़ा हो गया।

[illegible] ? बिल्कुल दूसरे ढंग की थी और एक दूसरे ही स्वर

में (अधिक धीमे।) 'सच कह रही हो? मैं अपनी आँखें ज्यादा न खोल बैठूँ, हम लोगों को अधिक सावधान रहना चाहिए।

'यह तुम्हारी मर्जी है, लेकिन यह तुम्हारा नया मेहमान अगर आज आता है, तो उसके लिए तुम्हें चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं, पूरी सावधानी रखी जायगी।

और बाद में हुआ यह कि कोई सावधानी नहीं रखी गई थी। सोलोमिन को जरा भी संकोच और उद्विग्नता का अनुभव नहीं हुआ। जब नौकर ने आकर उसके आने की सूचना दी, सिप्यागिन एकदम उठ खड़ा हुआ और इतने जोर से चिल्लाकर बोला कि हाल में भी सुनाई पड़ जाय 'उन्हें यहीं ले आओ, यहीं ले आओ!' और वह भी ड्राइंग रूम के दरवाजे तक गया और ठीक उसके सामने खड़ा हो गया। सोलोमिन दरवाजा पार भी न कर पाया था कि सिप्यागिन ने जिससे उसकी करीब-करीब टक्कर हो ही गई, उसकी ओर अपने दोनों हाथ बढ़ा दिए और बड़ी मिलनसारिता से सिर हिलाते हुए मुस्कुराकर अत्यन्त सौजन्यता से कहा 'यह बड़ा ही अच्छा रहा सचमुच! मैं कितना आभारी हूँ!' और उसे वालेन्तिना मिखाइलोव्ना के पास ले गया।

'यह मेरी प्यारी पत्नी है' उसकी पीठ पर अपना हाथ दबाते हुए, जैसे वह उसे वालेन्तिना मिखाइलोव्ना की ओर बढ़ा रहा हो, उसने स्वर में गम्भीरता लाकर कहा 'और यह हैं प्रमुख इन्जीनियर और मैनेजर, वासिली फेद्योतिच सोलोमिन।'

श्रीमती सिप्यागिन उठकर खड़ी हो गई और अपनी सुन्दर आँखों को ऊपर उठाकर पहिले तो उसकी ओर मुस्कराई—मामूली तौर से—जैसे किसी दोस्त से मुस्कराया जाता है तब अपना कुहनी से आगे का हाथ बढ़ाया। उसकी कुहनी उसके सीने को स्पर्श कर रही थी और उसका सिर उसके हाथ की ओर झुका हुआ था — कुछ निवेदन करने की भंगिमा में। सोलोमिन ने पति पत्नी दोनों को अपनी आँखें

अपने ऊपर धम्म से ले लीं। उसने दोनों से हाथ मिलाया और बैठने के पहले ही आमन्त्रण पर बैठ गया। सिप्यागिन ने किसी के स्वागत की सी परेशानी में उससे पूछा 'क्या आप कुछ खाना पसन्द नहीं करेंगे?' पर सोलोमिन ने जवाब दिया कि उसे कुछ नहीं चाहिए, यात्रा से वह ज़रा भी नहीं थका है और तुरन्त उनकी सेवा के लिए प्रस्तुत है।

'आपका मतलब है कि हम आपसे तुरन्त फैक्टरी देखने को चलने का अनुरोध कर सकते हैं?' सिप्यागिन ने गदगद स्वर में कहा, जैसे उसे अपने अतिथि से इतनी विनय और कृपा पाने पर विश्वास करने का साहस नहीं हो रहा हो।

'तुरन्त' सोलोमिन ने उत्तर दिया।

'ओह आप कितने अच्छे हैं! क्या मैं गाड़ी लाने का आदेश दूँ? या शायद आप पैदल ही चलना पसन्द करेंगे?'

'क्यों, यहाँ से कोई खास दूर तो नहीं होगी, आपकी फैक्टरी?

'यही कोई आधा मील होगी।'

तब गाड़ी क्यों मँगवाते हैं?'

'बड़ी खुशी है! लड़के, मेरा हैट मेरी छड़ी, तुरन्त! और तुम श्रीमतीजी हमारे लिए अच्छा भोजन तैयार करवाना। मेरा हैट!

अपने आगन्तुक की अपेक्षा सिप्यागिन अधिक घबड़ा उठा था। फिर एक बार दुहराते हुए, 'लेकिन मेरा हैट कहाँ है?' यह महान सम्मानित व्यक्ति खिलवाड़ी स्कूली लड़के की तरह कमर से बाहर निकला। जब वह सोलोमिन से बातें कर रहा था, तब वालेन्तिना मिखाइलोवना इस 'नवागन्तुक नौजवान' की ओर गुप्त रीति से तत्पर तल्लीनता से देख रही थी। वह आराम कुर्सी पर आराम से शान्त बैठा था। उसके नंगे हाथ (उसने अपने दस्ताने नहीं पहने थे) उसकी जाँघों पर रखे थे, और वह सहज भाव से यद्यपि उत्सुकता से फर्नीचर और तस्वीरों को देख रहा था। 'यह मामला क्या है? मिखाइलोवना ने सोचा, 'यह है तो एक सामान्य मनुष्य ही   निश्चितरूप से सामान्य

मनुष्य लेकिन कितना स्वाभाविक रूप से व्यवहार करता है।

सोलोमिन सचमुच स्वाभाविक रूप से व्यवहार कर रहा था, उनकी तरह से नहीं जो सरल तो होते हैं, पर कुछ ऐसी व्यग्रता से व्यवहार करते हैं, मानो कह रहे हैं, 'मेरी ओर देखो, समझो मैं कैसा आदमी हूँ', लेकिन उस आदमी की तरह जिसके भाव और विचार शक्तिशाली हैं, बिना उलझन के। श्रीमती सिप्यागिन उससे बात चीत करना चाहती थीं लेकिन आश्चर्य है कि उन्हें कहने को कुछ उपयुक्त मिल ही नहीं रहा था।

'हे भगवान!' उसने सोचा, 'क्या मैं इस कारखाने से प्रभावित हो रही हूँ?'

'वासिल निकोलायेविच आपको यह सूचना देंगे' उसने अन्त में कहा, 'कि आपने अपना कीमती समय उन्हें देना स्वीकार कर लिया'

'इसमें तो कोई बात नहीं, श्रीमती जी' सोलोमिन ने उत्तर दिया 'और मुझे कोई बहुत दूर से तो आना भी नहीं पड़ा।'

अब आगे क्या बात चलाए, वालेन्तिना मिखाइलोव्ना इसी सोच में पड़ी थी कि उसी समय दरवाजे पर स्वयं पति हाथ में हैट लिए आ गए।

आधा घूमते हुए उसने बड़े वैराग्यपूर्ण से कहा 'वासिली फैदोरोविच! तैयार है वसन का'

सोलोमिन उठकर खड़ा हो गया, वालेन्तिना मिखाइलोव्ना को नमस्ते की और सिप्यागिन के पीछे-पीछे बाहर चला गया।

'इधर आइए, इधर! मेरे साथ वासिली फैदोरोविच!' सिप्यागिन ने पुकारा, जैसे वह घने जंगल में जा रहा हो और सोलोमिन को पथ प्रदर्शक की जरूरत हो। 'इधर से! यहाँ सीढ़ियाँ हैं, वासिली फैदोरोविच!'

'जब आप मुझे मेरे पिता के नाम से ही पुकारना पसन्द कर रहे

हैं', सोलोमिन ने जानबूझ कर कहा, 'सो मैं फ़ैदोरयेविच नहीं, फ़ैदोतिच हूँ।'

सिप्यागिन ने चौंकते हुए उलट कर अपने कंधों पर से उसे देखा।

'आह! सचमुच, क्षमा कीजिए वासिली फ़ैदोतिच।'

'ओह, कोई बात नहीं, कोई बात नहीं।'

रास्ते में उन्हें कालोमियेत्सेव से भेंट हो गई।

'कहाँ चल दिए?' उसने सोलोमिन की ओर कनखियाते हुए सिप्यागिन से पूछा, कारखाने को? यही हैं वे सज्जन?'

सिप्यागिन ने अपनी आँखें विसिफारित की ओर चेतावनी देते हुए थोड़ा सा सिर हिलाया।

'हाँ, कारखाने अपने पापों और अत्याचारों को इन महाशय इन्जीनियर को दिखाने। मैं तुम्हारा इनसे परिचय कराऊँ मिस्टर कालोमियेत्सेव, यहाँ हमारे पड़ोसी हैं, और आप, मि० सोलोमिन।'

कालोमियेत्सेव ने बेमालूम तौर पर दो बार सिर हिलाया, सोलोमिन की ओर नहीं बल्कि बिना उसकी ओर देखे। लेकिन उसने कालोमियेत्सेव की ओर देखा। उसकी अर्धनिमिलित आँखों में किसी चीज की चमक थी।

'मैं भी आपके साथ चल सकता हूँ? कालोमियेत्सेव ने पूछा। आप जानते हैं कि मुझे हिदायतें पसन्द हैं।

'हाँ, हाँ, क्या नहीं।

भवन के घेरे से निकल कर वे लोग सड़क पर आ गए। अभी बीस कदम भी नहीं चले होंगे कि उन्होंने लम्बा चुस्त लबादा और पेटी पहिने गाँव के पादरी को देखा। वह अपने घर जा रहा था, जिसे 'पोप का घर' कहा जाता था। कालोमियेत्सेव अपने दोनों साथियों का साथ छोड़कर लम्बे कदम रखता हुआ पादरी के पास जा पहुँचा। पादरी को इसकी आशा भी नहीं थी। वह उनकी ओर बिना ध्यान दिए चला

आ रहा था इसलिए मेरा बीच पड़ा। कालोमियत्सेव ने उससे आशीर्वाद माँगा, पसीने से चिपचिप उसके मांस हाथ को चूमा और सोलोमिन की ओर घूमकर उस पर एक मसखरा भरी दृष्टि डाली। वह स्पष्ट 'एक दो बातें' जानता था और उसके प्रति, उस शैतान विद्वान के प्रति अपनी घृणा व्यक्त करना चाहता था और उस पर अपना रौब गालिब करना चाहता था।

'इस दिखावे की जरूरत भी क्या थी?' सिप्यागिन ने अपने मुँह ही मुँह में कहा।

कालोमियेत्सेव ने नाक से शब्द किया।

'कभी-कभी थोड़ा बहुत दिखावा भी आवश्यक होता है।'

वे लोग कारखाने पहुँचे। वहाँ उन्हें एक मोटा रूसी मिला जिसकी लम्बी दाढ़ी थी और नकली दाँत लगे थे जो पिछले जर्मन सुपरिनटेनडेन्ट की जगह पर नियुक्त हुआ था। यह मोटा रूसी, अस्थायी तौर पर एवजी था। वह स्पष्ट ही अनाड़ी था और विश्वास लेने में तथा बार-बार दुहराते रहने के 'हो सकता है' और 'ठीक ऐसा ही।' के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था।

कारखाने का निरीक्षण आरम्भ हुआ। कुछ मजदूर सोलोमिन को सूरत से जानते थे। उन्होंने उसे नमस्ते किया और उनमें से एक ने उससे कहा, 'ओहो, ग्रिगोरी तुम! तुम यहाँ हो?

शीघ्र ही उसने देख लिया कि कारखाने का प्रबन्ध अत्यन्त खराब है। धन फिजूलखर्च में व्यय बेकार हो रहा है। मशीनें रद्दी हैं और बहुत सी तो नाकारा हैं और बहुत सी बढ़िया मशीनें, नहीं हैं। सिप्यागिन निरन्तर सोलोमिन की राय जानने के लिए उसके चेहरे की ओर ही देख रहा था। उसने कुछ साधारण प्रश्न भी किए और जानना चाहा कि वह उस समय कारखाने की व्यवस्था को देखकर जो कुछ हुआ ही होगा।

'व्यवस्था ठीक है', सोलोमिन ने उत्तर दिया 'लेकिन इससे कुछ पैदा हो सकता है, इसमें मुझे सन्देह है।'

सिप्यागिन ने ही नहीं, कालोमियेत्सेव ने भी अनुभव किया कि कारखाने में सोलोमिन अजनबीपन का अनुभव नहीं कर रहा था। कारखाने की हर चीज उसके लिए जानी पहिचानी सी लग रही है। और वह मामूली सी मामूली बात को समझता है—जैसे कि वह यहाँ का स्वामी हो। उसने मशीन पर ऐसे हाथ रखा, जैसे कोचवान घोड़े की गर्दन थपथपाता है, उसने एक पहिए में अपनी उँगलियाँ डालीं और और उसका चलना बन्द हो गया या चक्कर काटने लगा, उसने थोड़ी सी लुबदी को जिससे कागज बनता था अपने हाथ में लिया और तुरन्त उसके सारे दोषों को बता दिया। सोलोमिन ने बहुत कम कहा और उस नाटे रूसी की ओर तो देखा भी नहीं, और चुपचाप ही कारखाने के बाहर चला आया। सिप्यागिन और कालोमियेत्सेव उसके पीछे-पीछे निकल आए।

सिप्यागिन ने किसी का अपने साथ चलने को नहीं कहा वह निश्चित रूप से दाँतों को भींचे, उन्हें किटकिटा रहा था। वह बड़ा बेचैन था।

'मैं आपके चेहरे से देखता हूँ', उसने सोलोमिन का सम्बोधन करते हुए कहा कि आप मेरे कारखाने को देखकर खुश नहीं हैं, और मैं खुद भी जानता हूँ कि वह अत्यन्त ही असन्तोष जनक स्थिति में है, और घाटे में चल रहा है, खैर, आप सब कुछ साफ साफ कहने में संकोच मत कीजिए कि इसकी क्या-क्या महत्वपूर्ण कमियाँ हैं? और उन्हें सुधारने के लिए क्या-क्या करना चाहिए?'

कागज बनाना मेरे क्षेत्र का काम नहीं है', सोलोमिन ने उत्तर दिया, 'लेकिन एक बात मैं आपको बता सकता हूँ—उद्योग धन्धे जागीरदारों के बस के रोग नहीं हैं।'

'आपका मतलब है कि यह उनके लिए अपमानजनक बातें हैं?' कालामियेत्सेव ने बीच में पूछा।

सोलोमिन के मुख पर परिचित शीर्ण मुस्कान प्रगट हो गई।

'ओह, नहीं। आप भी क्या समझ बैठे! उसमें अपमानजनक की क्या बात है? और अगर हो भी तो जागीरदार लोग उससे चिढ़ते भी नहीं।

'तो? आपका मतलब?'

मेरा सिर्फ इतना मतलब है, सोलोमिन ने धीरता से कहा जागीरदार इस तरह के व्यवसाय के आदी नहीं होते। इसके लिए व्यवसायिक बुद्धि की आवश्यकता होती है, हर काम एक अलग ढंग से करना होता और उसके लिए ट्रेनिंग की जरूरत होती है। जागीरदार उसे नहीं समझते। मैं देखता हूँ कि वे लोग जैसे भी जो भी हो कपड़े के कारखाने खोल रहे हैं, लेकिन अन्त में यह सब कारखाने व्यापारियों के हाथ में चले जाते हैं। यह बड़ा दुख का विषय है। क्योंकि व्यापारी और भी खून चूसा होते हैं। लेकिन कोई चारा नहीं है।

आपका मतलब है कालामियेत्सेव ने कहा कि आर्थिक मामले हमारे वर्ग के लोगों की समझ से बाहर हैं?

नहीं बल्कि ठीक इसके विपरीत! जागीरदार तो इसके लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं। रेल की पटरियों के लिए सुविधा प्राप्त करने, बैंक स्थापित करने, अपने लिए टैक्स की छूट माँगने, या इसी तरह की और बातों में जागीरदारों की समता कोई नहीं कर सकता। वे अपार धन जमा कर लेते हैं। मैंने अभी उधर संकेत किया, जब आपने उनके बुरा मानने की शंका की थी। लेकिन मैं तो कल कारखाना के उद्योग के नियमित एवं क्रमिक विकास की बात कर रहा हूँ। नियमित एवं क्रमिक विकास में, इस लिए यह रहा हूँ कि व्यक्तिगत होटल और मामूली दुकान खोलना और किसानों का गेहूँ या रुपया

सौ फीसदी या एक सौ पचास फीसदी सूद पर उधार देना, जैसा कि बहुत से जमींदार करते हैं, को मैं नियमित व्यवसायिक उद्योग-धन्धा नहीं कह सकता।

कालोमियेत्सेव ने कोई जवाब नहीं दिया। वह स्वयं उन नए महाजनी जमींदार वर्ग के जन्तुओं में से ही था जो कर्ज बाँटने वाले जमींदार थे, जिनके बारे में मार्केलोव ने नेज्दानोव से अपनी वार्ता में जिक्र किया था। यह वर्ग सबसे अधिक निर्दयी होता, वह कभी किसानों को अपने योरोपीय सुगन्ध से सुवासित कक्ष तक में भी नहीं घुसने देता था और उनसे सीधे बात न करके एक दलाल के द्वारा किसानों से लेन-देन करता था। जब वह सोलोमिन की निष्पक्ष वार्ता सुन रहा था तो अन्दर ही अन्दर सुलग रहा था लेकिन चुप था, इस बार सिर्फ उसके चेहरे की शिराओं का तनाव उसके हृदय की बात को प्रगट करने की गद्दारी कर रहा था।

'लेकिन, वासिली फैदोतिच, मुझे आज्ञा दीजिए, आज्ञा दीजिए', सिप्यागिन ने शुरू किया। 'आप जो कुछ कह रहे हैं, वह सही आलोचना थी, पिछले दिनों में जब जमींदार बिल्कुल दूसरी ही सुविधाओं का सुख भोगते थे' और दूसरी स्थिति में थे। लेकिन आजकल, सुधारों के " इस औद्योगिक युग में जमींदार अपनी शक्ति और योग्यताओं को इस तरह के कामों में क्यों नहीं लगा सकते? वह सब क्यों नहीं समझ सकते जो एक नितान्त अपढ़ बनियाँ भी समझ लेता है? वह अपढ़ नहीं हैं, और किसी हद तक व प्रगति और विकास के प्रतिनिधि अपने को कह सकते हैं।

बोरिस एंड्रिच ने अपनी बात बड़े ढंग से कही, उनकी इस धारा प्रवाह वक्तृता का पीटर्सबर्ग में बड़ा प्रभाव पड़ता—अपने विभाग में—और ऊँचे सर्कल्स में भी लेकिन सोलोमिन पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

'जागीरदार यह सब नहीं कर सकते', उसने दुहराया।

'क्या नहीं ? क्यों ? कालोमियत्सेव ने लगभग चीखते हुए पूछा।

'क्योंकि ये हमेशा महज अफसर ही बने रहेंगे।

'अफसर ? कालोमियत्सेव द्रोह से मुस्कुराया। 'आप नहीं अनुभव कर रहे कि आप क्या कह रहे हो मैं समझता हूँ मि० सोलोमिन। सोलोमिन अब भी पहिले की ही तरह मुस्कुराता रहा।

आपने यह कैसे सोचा मिस्टर कालोमियत्सेव ?' (कालोमियेत्सेव अपने नाम की इस विकृति पर निश्चित रूप से चिढ़ गया।) 'नहीं, मैं जो कहता हूँ उसे पूरी तरह समझता हूँ।'

तब स्पष्ट कीजिए कि आपकी अन्तिम त से आपका क्या मतलब है।'

'निश्चय ही मेरे विचार में हर अफसर बाहर का आदमी होता है, और हमेशा ही ऐसा ही होता रहा है, और अब जागीरदार बाहर के होगए हैं।

कालोमियेत्सव और भी हँसा।

'मैं क्षमा चाहता हूँ जनाब मैं इसका सिर पूँछ कुछ भी नहीं समझ सका।

'तब और भी बुरा हुआ। जरा कोशिश कीजिए शायद समझ में आ जाय।

'जनाब !

'हजरात, हजरात', सिप्यागिन ने जल्दी से बीच में टोका किसी को कुछ हुए की सी भंगिमा में। और आप कृपया, अगर आप कृपया " "। और भोजन निश्चय ही तैयार हो गया होगा, कृपया मेरे साथ चलिए।

वालेन्तिना मिखाइलोवना ! कालोमियत्सेव ने पाँच मिनट बाद उसके कमरे में घुसते हुए विचार के स्वर में कहा।

"तुम्हारा पति जो कुछ कर रहा है, वह निश्चय ही हद से बाहर है। एक शून्यवादी पहले से ही जमा रखता है और अब वह दूसरे को लारहा है और यह उससे भी चार हाथ आगे है।'

'कैसे, कैसे ?'

"विश्वास करो, वह न जाने क्या-क्या उपदेश दे रहा है, और फिर—एक बात तो देखो वह तुम्हारे पति से पूरे एक घंटे तक बात करता रहा और एक बार भी उसने उनसे 'महामहिम' नहीं कहा।'



१
चौबीस

भोजन से पहिले सिप्यागिन ने अपनी पत्नी को अलग लायब्रेरी में बुलाया। वह उससे अकेले में बात करना चाहता था वह परेशान दिखाई पड़ रहा था। उसने उसे बताया कि निश्चितरूप से कारखाना एक परेशानी का कारण बनता जा रहा है, और यह सोलोमिन उसे बड़ा योग्य आदमी लगा है, यद्यपि साधारण 'ठेठ', और उन्हें उसके साथ बड़ी सावधानी से व्यवहार करना होगा। आह! अगर कहीं हम उसे अपने यहाँ आने के लिए मना सकें, तो कितना अच्छा हो!' उसने दो बार दुहराया। सिप्यागिन कालो मियत्सेव की उपस्थिति से बेहद बेचैन था 'शैतान उसे यहाँ ले आया! वह हर तरफ शून्यवादी देखता है, और उनका दमन करने के अतिरिक्त और, कुछ नहीं सोचता। वह अपने घर जाकर ऐसा करे। कम्बख्त अपनी जुबान पर भी काबू नहीं रख सकता!

वालेंतिना मिखाईलोवना ने कहा कि वह इस नए अतिथि के साथ यथासम्भव अच्छा

पसन्द करेंगे‌ " ' सिप्यागिन ने पीसते हुए बीयर लाने का आदेश दिया। वालेन्तिना मिखालोवना की ओर उन्मुख होते हुए सोलोमिन ने धीरे से कहा, 'श्रीमती जी आप नहीं जानतीं शायद, कि मैंने इंगलैण्ड में दो साल बिताए हैं और अंग्रेजी समझ सकता हूँ और बोल भी सकता हूँ, मैं आपको यह पहिले ही से इसलिए बताए दे रहा हूँ कि शायद कहीं आप अपने पति से मेरे सामने कोई आपसी बात करना चाहें।' वालेन्तिना मिखालोवना हँस पड़ी और उसे आश्वासन देने लगी कि इस सावधानी की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह अपनी तारीफ के अतिरिक्त और कुछ नहीं सुनेगा मन में उसने सोचा सोलोमिन की बातें बड़ी अजीब होती हैं, लेकिन अपने तरीके में स्निग्ध और विनम्र।

अब आखिरकार कालोमियेत्सेव बोल ही पड़ा।

'तो आप इंगलैंड में भी रहे हैं, 'उसने शुरू किया और शायद आपने वहाँ के तौर तरीके भी सीखे होंगे। मुझे जानने की आज्ञा दीजिए, क्या वे अनुकरण के योग्य हैं?'

'कुछ थे कुछ नहीं।'

बात कुछ साफ नहीं हुई', कालोमियेत्सेव ने कहा, सिप्यागिन के इशारा की ओर ध्यान न देते हुए कहा। लेकिन आज ही सबेर अन्य लोगों के बारे में बातें कर रहे थे। 'निःसन्देह आपको वहाँ के भद्र जागीरदारों के जीवन का अध्ययन करने का अवसर तो मिला होगा?'

'जी नहीं मुझे ऐसा कोई अवसर नहीं मिला मैं बिल्कुल ही दूसरे वातावरण में रहा लेकिन उन लोगों के विषय में मैंने अपनी राय जरूर कायम की है।

'तो क्या आप यह समझते हैं कि इस तरह के भद्र जागीरदार हमारे बीच में मिलना असम्भव है और हमें वैसा बनने की इच्छा भी किसी तरह नहीं करनी चाहिए?'

'पहली बात तो यह, कि मैं इसे सचमुच ही असम्भव समझता हूँ, और फिर, ऐसा होने की कामना करना भी किसी काम का नहीं।'

'क्यों, जनाब ?' कालोमियेत्सेव ने कहा। 'जनाब' सिप्यागिन को सन्तुष्ट करने के लिए कहा गया था जो बड़ा बेचैन हो रहा था और धैर्य से कुर्सी में नहीं बैठ पा रहा था।

'क्योंकि अगले बीस-तीस साल में आपका यह भद्र जागीरदार वर्ग नहीं रहेगा।

लेकिन क्या, ऐसा क्या होगा जनाब ?

क्योंकि उस समय तक जमीन-जमीन वालों की हो जायगी, बिना किसी वर्ग या स्तर भेद के।

'और व्यापारी ?

'शायद अधिकांशतः व्यापारी भी।

'यह कैसे होगा ?

'उनके जमीन खरीदने से, मेरा मतलब है वे जमीन खरीद लेंगे।'

जमींदारों से ?

'हाँ, जमींदारों से।

कालोमियत्सेव खोखला भरने की सी हँसी हँसा। आपने ऐसी बात पहिले भी कही थी, मुझे याद है, मिलों और कारखानों के बारे में और अब आप यही बात जमीन के बारे में भी कह रहे हैं।'

हाँ, अब यही बात मैं सारी जमीन के बारे में कहता हूँ।

'और आपको बड़ी खुशी होगी ?

बिल्कुल नहीं, जैसा कि मैंने पहिले ही स्पष्ट कर दिया है, क्योंकि जनता की स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा।'

कालोमियत्सेव ने धीरे से अपना एक हाथ उठाया। 'जनता की भलाई के लिए कैसी उत्कंठा है !

'वासिली फैडोरोविच !' सिप्यागिन ने पूरे जोर से चीख कर कहा। 'आपके लिए बीयर आ गई है। उसने धीरे से कहा।

लेकिन कालोमियेत्सेव चुप नहीं हुआ।

'व्यापारियों के प्रति भी आपकी कोई अच्छी राय नहीं है, लेकिन वे भी तो जनता से ही आए हैं या नहीं ?'

'तो ?'

'मैं समझता था कि जनता से सम्बन्ध रखने वाली हर चीज या जनता से प्राप्त चीज आपकी नजर में अच्छी होगी।

'ओह नहीं, जनाब ! आप ऐसा समझ कर गलती कर रहे हैं। हमारी जनता में बहुत सी बुराइयाँ हैं हालांकि हमेशा वही ही दोषी नहीं होते। हमारे बीच में व्यापारी वर्ग डाकुओं का एक गुट है, वह लूट के लिए अपनी सम्पत्ति का प्रयोग करता है। वह क्या करे ? वह चूसा जाता है और वह चूसता है। रही जनता की बात—

'जनता !' कालोमियेत्सेव ने मुँह बनाते हुए कहा।
'जनता सोई पड़ी है।
'और आप उसे जगाएँगे ?'
यह कोई अनुचित तो होगा नहीं।'
आहा ! आहा ! तो यह है—

'माफ करना भाई, माफ करना मुझे', सिप्यागिन ने व्यग्रता से बीच में दखल देते हुए कहा। उसने अनुभव किया कि रेखा खींचने का समय आ गया है। कहना चाहिए बहस को रोक देने का। और उसने रेखा खींच दी। उसने बहस बन्द कर दी। कलाई पर से अपने दाहिने हाथ को हिलाते हुए जबकि कुहनी मेज पर ही टिकी रही उसने एक लम्बा और विस्तृत व्याख्यान दे डाला। एक तरफ तो उसने अनुदार दल की तारीफ की, तो दूसरी ओर उदारदल की भी। उदारदल की कुछ अधिक, अपने को ही उनमें शामिल करते हुए, उसने जनता का

पढ़ लिया, पर कुछ उनके दावों पर भी प्रकाश डाला, सरकार में पूर्ण विश्वास प्रगट किया और अपने आप से ही प्रश्न किया कि क्या सब अधिकारी उसके उद्देश्यों को ईमानदारी से पूरा कर रहे हैं। साहित्य के महत्व को स्वीकार किया लेकिन कहा कि बिना पूरी सावधानी के उसका उपयोग प्रसिद्ध कर रहे हैं। उ । पश्चिम को पूर्व की तारीफ की और उससे कुछ सीखने की बात कही फिर उसमें भी शंका प्रगट की पश्चिम की बात की। पहले सी उदासीनता से फिर जैसे जाग पड़ा हो। अन्त में उसने तीन के नाम टोस्ट प्रस्तावित किया— धर्म, कृषि, और उद्योग धन्धों के नाम पर।'

'शक्ति की रक्षा में ! आलामियस्सव ने मद्धता से जोड़ा।

विद्वान और दयालु अधिकारियों की रक्षा में सिप्यागिन ने संशोधन किया।

टोस्ट खुशी में पिया गया। सिप्यागिन के बगल में बैठे नेज्दानोव ने जो सिप्यागिन के लिए एक प्रकार से वहाँ नहीं था, जरूर कुछ प्रसन्नतासूचक ध्वनि की लेकिन उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, अतः वह फिर चुप हो गया और जोश सन्तापप्रद अन्त को प्राप्त हुआ। फिर किसी बहस से उसमें आघात नहीं पहुँचा।

वालेन्तिना मिखाइलोवना ने प्रसन्न मादक मुस्कान के साथ काल्लोमियत्सेव को एक कप काफी दी। उसने उसे पिया और अपने हैट को उसारा परने की दृष्टि से देख रहा था कि, सिप्यागिन ने बड़ी कोमलता से उसका हाथ पकड़ा और उसे जल्दी से अपनी अध्ययनशाला में लिया ले गया और उसे बहुत बढ़िया सिगार दिया और उससे प्रस्ताव किया कि वह उनके कारखाने में प्रबन्ध करने पर आ जाय। 'आप वहाँ पूरा तरह मालिक होंगे, पामिन्ती फैदोतिच, सम्पूर्ण मास्टर ! सिगार काल्लोमिन ने स्वीकार कर लिया, और प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। जितना ही सिप्यागिन ने जोर दिया उतना ही वह अपनी अस्वीकृति पर अड़ा रहा।

'ना बिल्कुल मत करो, प्रिय वासिली फैदोतिच। कम से कम यह तो कहो कि मैं कल तक इस पर विचार करूँगा।

'लेकिन इससे कोई अन्तर तो पड़ेगा नहीं। मैं आपका प्रस्ताव नहीं स्वीकार कर सकता।'

'कल तक! वासिली फैदोतिच! अपने निश्चय को बदलने में आपका नुकसान क्या होता है?

सोलामिन ने स्वीकार किया कि निश्चय ही इससे उसका कोई नुकसान नहीं होगा वह अध्ययनशाला से बाहर चला गया और फिर अपने हैट की तलाश करने लगा। मेज्भानोव जो उस समय तक उससे एक बात भी नहीं कर पाया था, उस समय उसके पास आया और उससे जल्दी-जल्दी फुसफुसा कर बोला खुदा के वास्ते अभी न जाओ, वरना हमारी बात हो सकना असम्भव हो जायगा।'

सोलामिन ने अपना हैट छोड़ दिया। सिप्यागिन ने उसे ड्राइंगरूम में ऊपर नीचे घूमते देखकर, चौंककर कहा 'आप रात को हमारे साथ ठहरेंगे निश्चय ही?'

'मैं पूरी तरह से आप की मर्जी पर हूँ। आप जैसी आज्ञा दें। सोलोमिन ने उत्तर दिया।

मरियाना की कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि ने, जो खिड़की के पास खड़ी थी, सोलोमिन को विचारमग्न कर दिया।



पच्चीस

मरियाना ने अपने मन में सोलोमिन की एक अलग ही तस्वीर बना रखी थी। पहली नजर में वह उसे अजीब सा व्यक्तित्वहीन व्यक्ति लगा। उसने सोचा—उसने उस जैसे भूरे बालों वाले पतले-दुबले शरीर वाले अनेकों व्यक्ति देखे हैं। लेकिन जितना ही वह उसे ध्यान से देखती, जितना ही वह उसकी बातों को गौर से सुनती, उतना ही उसके मन में उसके ऊपर विश्वास की भावना बलवती होती जाती—

शान्त, गम्भीर स्वभाव का यह आदमी न सिर्फ झूठ बोलने या शेखी बघारने वाला ही न था, वरन् उस पर विश्वास भी किया जा सकता था, पत्थर की दीवाल की तरह। वह गद्दारी नहीं करेगा किसी के साथ, और इससे भी अधिक वह दूसरों की भावना को समझेगा और उनको सहारा देगा। मरियाना ने देखा कि यह उसी की भावना नहीं है, वरन् जितने भी वहाँ उपस्थित थे, सभी उसके बारे में ऐसा ही अनुभव कर रहे थे। उसने उसकी बातों

अनाथ बच्चे जैसा है' 'दस बार प्रयास करो, क्योंकि एक बार तो सफलता मिल ही जायगी', 'जहाँ श्रम होगा वहाँ चटखरे तो मिल ही जायेंगे', 'संत एगोर दिवस तक सहूत के पत्ते फादिङ्ग के बराबर बड़े हो जायें, तो काज़ान की महिला की दावत के समय तक खलिहान में अनाज हो जायगा।' इसमें सन्देह नहीं कि वह कभी-कभी इन कहावतों को गलत इस्तेमाल करता था, जैसे, 'अन्त तक बढ़ई को जुटा रहने दो।' या अच्छे घरों से पेट भर जाता है। लेकिन वह समाज, जिसमें ऐसी असंगत बातें होती हैं, अधिकांशतः यह सन्देह भी नहीं करता कि कहने वाले ने भारी भूल,की है, और सचमुच राजकुमार कोबिल्स्किन को धन्यवाद देते हैं, यहाँ रूसी का भद्दे ढंग से प्रयोग करने में अभ्यस्त हैं। और सिप्यागिन इन सब कहावतों को बड़े प्रशंसात्मक ढंग से भारी आवाज में कहता, पीटर्सबर्ग में ऐसे वाक्य उचित अवसर पर कहे जाने पर ऊँचे स्तर की महिलाएँ कहतीं, 'बहुत खूब कहा शानदार बात है!' समाज प्रगति के और उच्चवर्ग के लोग उसमें जोड़ देते 'इसका जनता से निकट सम्बन्ध है।

वालेन्तिना मिखालोवना ने सोलोमिन को प्रभावित करने की पूरी कोशिश की, लेकिन उसकी कोशिश की प्रत्याशित असफलता ने उसे निराश कर दिया, तभी जब वह कालोमियेत्सव के बगल से गुजर रही थी, तो फुसफुसाए बिना न रह सकी कि, 'मैं तो बाज आई!

जिसका उत्तर उसने व्यंग में दिया, 'नहीं और करो खुशामद!'

आखिरकार विनम्रता और मिलनसारिता के सामान्य दिखावे के बाद, एकाएक हाथ मिलाने के साथ बैठने समाप्त होने के समय बनावटी मुस्कान के साथ क्लान्त अतिथि और क्लान्त अतिथेय अलग हुए।

सोलोमिन, को दूसरी मंजिल पर स्थित सजल सुन्दर शयन कक्ष में ले जाया गया जिसमें अंग्रेजी ढंग का स्नान प्रसाधन और साथ में एक स्नानागार भी था। वह सीधा नेज्दानोव के पास गया।

नेग्दानोव ने उस रात को ठहरना स्वीकार करने पर धन्यवाद दिया।

'मैं जानता हूँ ... यह तुम्हारा त्याग है।'

'क्या फिजूल की बात करते हो!' सोलोमिन ने सपाट स्वर में जवाब दिया, 'भला त्याग है! मैं तुम्हारी बात टाल कैसे सकता था।'

'क्यों?'

'क्योंकि मैं उन्हें पसन्द करता हूँ।'

नेग्दानोव प्रसन्न भी हुआ और चकित भी। सोलोमिन ने उसका हाथ दबाया। फिर वह एक कुर्सी पर बैठ गया, सिगार जलाया, और दोनों कुहनियाँ कुर्सी की पीठ पर टिका कर उसने कहा, 'अच्छा, अब बताओ। बात क्या है?'

नेग्दानोव सोलोमिन के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया, लेकिन उसने सिगार नहीं जलाया।

'तुम पूछते हो मामला क्या है? ... मामला यह है कि मैं यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ।'

'यानी तुम इस मकान को छोड़ देना चाहते हो? तो इसमें मुसीबत की बात क्या है? तुम्हारा दिल खुश कामना करता हूँ।'

'छोड़ना नहीं ... भागना चाहता हूँ।'

'क्यों? क्या वे तुम्हें जबरदस्ती रोकते हैं? तुम ... शायद कुछ वेतन पेशगी ले चुके हो? अगर ऐसा है, तो तुम्हें कहने भर की देर है ... मुझे बड़ी खुशी होगी तुम्हारी ... ।'

'सोलोमिन तुम मेरी बात समझ नहीं रहे हो, भाई ... मैंने कहा भाग जाना—छोड़ना नहीं—क्योंकि यहाँ से मैं अकेला नहीं जा रहा हूँ।'

सोलोमिन ने सिर ऊपर उठाया।

'किसके साथ ...'

'उस लड़की के साथ जिसे तुमने आज देखा था ,

'वह लड़की ! उसका चेहरा तो खूबसूरत है । तुम दोनों प्रेम करते हो, क्यों ? या सिर्फ तुम दोनों ने इस घर में जहाँ तुम दोनों ही दुखी हो, साथ साथ भागने का निश्चय किया है ?

'हम आपस में प्रेम करते हैं ।

ओह !' सोलोमिन थोड़ी देर के लिए चुप हो गया । 'क्या वह इन लोगों की रिश्तेदार है ?'

'हाँ । लेकिन वह पूरी तरह से हमारे विचारों को मानती है और हर तरह के काम के लिए तैयार है ।

सोलोमिन मुस्कुराया ।

'और तुम तैयार हो नेज्दानोव ?'

नेज्दानोव की भौंहों में तनाव आ गया ।

'ऐसा प्रश्न क्यों ? मैं तैयार हूँ, यह मैं अपने कार्यों के द्वारा साबित कर दूँगा ।

'मैं तुम पर सन्देह नहीं करता, नेज्दानोव । मैंने तो सिर्फ पूछा क्योंकि सिवाय तुम्हारे और कोई तैयार नहीं है ।

और मार्केलोव ?'

'हाँ सचमुच मार्केलोव भी है लेकिन वह, मैं समझता हूँ पैदा ही तैयार हुआ था ।

तभी किसी ने दरवाजे पर हल्के से, पर जल्दी-जल्दी खटखट की, और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए, उसे खोल लिया । वह मरिआना थी । वह सीधी सोलोमिन के पास आ गई ।

'मुझे विश्वास है,' उसने कहना शुरू किया कि मुझे यहाँ इस समय देखकर, आपको आश्चर्य नहीं हुआ होगा । "इन्होंने (मरिआना ने नेज्दानोव की ओर संकेत किया) आपको सब कुछ बता ही दिया

होगा। मुझे अपना हाथ दीजिए, और मुझ पर विश्वास कीजिए, यह एक ईमानदार लड़की आपके सामने खड़ी है।'

'हाँ, यह तो मैं जानता हूँ', सोलोमिन ने गम्भीरता से कहा। जब मरियाना आई थी तो वह अपनी कुर्सी पर से उठ कर खड़ा हो गया था। 'मैं भोज के समय तुम्हारी ओर देख रहा था और सोच रहा था, 'कैसी ईमानदार आँखें हैं इस महिला की!' नेज्धानोव मुझे सचमुच तुम लोगों की योजना के बारे में बता रहे थे। लेकिन तुम लोग भागना ही क्यों चाहते हो?'

'क्योंकि उद्देश्य मेरे दिल में बस गया है " आश्चर्य मत कीजिए, नेज्धानोव ने मुझे सब कुछ समझा दिया है वह काम कुछ दिनों में ही शुरू होने वाला है और मैं इस अभिजात्य वर्गीय मकान में रहूं! जहाँ सब ओर धोखा झूँठ और फरेब है? जनता जिससे मैं प्रेम करती हूं खतरे में हो और मैं—'

सोलोमिन ने उसे हाथ के संकेत से रोक दिया।

लेख में मत आओ बैठ जाओ, और मैं भी। और तुम भी बैठ जाओ नेज्धानोव। अगर उसके अतिरिक्त तुम्हारे भागने का और कोई कारण नहीं है, तो मैं कहूँगा कि तुम्हारे भागने की कोई आवश्यकता नहीं है अभी। वह काम, तुम जितना जल्दी समझते हो उतना जल्दी नहीं शुरू होने जा रहा है। उसमें अभी और गम्भीर सोच-विचार की आवश्यकता है, बिना सोचे समझे कदम उठाना उचित नहीं है। मेरा विश्वास करो।

मरियाना बैठ गई और उसने अपने को अपने कंधे पर पड़े शाल में लपेट लिया।

'लेकिन मैं तो यहाँ, अब एक क्षण भी नहीं रह सकती। यहाँ सभी मेरा अपमान करते हैं। आज उस मूर्ख बुढ़ी अन्नाअक्हारोवना ने कोल्या के सामने मेरे पिता की ओर संकेत करते हुए कहा कि सेब कभी सेब के पेड़ से दूर नहीं गिरता। कोल्या को भी यह सुनकर आश्चर्य हुआ

ग्रौर उसने पूछा, इसके क्या मानी हैं। ग्रौर यालेन्तिना मिखाइलोवना का तो कहना ही क्या है।

सोलोमिन ने फिर उसे रोका, पर इस बार मुस्कान से मरिग्राना को लगा कि वह कुछ कुछ उसी पर हँस रहा है, लेकिन उसकी मुस्कान ने कभी किसी को ग्राघात नहीं पहुँचाया होगा।

'तुम्हारा मतलब क्या है! मैं नहीं जानता वह ग्रन्नाजहारोवना कौन है ग्रौर न जाने तुम किस सेब के पेड़ की बात कर रही हो ~ लेकिन जो भी हो, ग्रगर कोई मूर्ख ग्रौरत तुमसे कोई मूर्खतापूर्ण बात कह जाती है ग्रौर तुम उसे सहन नहीं कर सकतीं, तो तुम जीवन में क्या करोगी? सारी दुनियाँ ही मूर्खों से भरी पड़ी है। नहीं, यह कोई कारण नहीं है। क्या इसके ग्रलावा भी ग्रौर कोई बात है?'

नेज्दानोव ने भारी ग्रावाज में कहना शुरू किया, 'मुझे निश्चय है कि मिस्टर सिप्यागिन एक या दो दिन में स्वयं ही मुझे घर से बाहर कर देंगे। निश्चय ही उनके कान भरे गए हैं। वह बड़े तिरस्कार के साथ मुझ से पेश ग्राते हैं।'

सोलोमिन नेज्दानोव की ग्रोर घूमा।

'ग्रगर तुम निकाल भी दिए जाग्रोगे तो भागना किस लिए?'

नेज्दानोव तुरन्त कोई उत्तर न दे सका।

'मैं तुम्हें पहिले ही बता रहा था—' उसने कहना शुरू किया।

पर मरिग्राना ने बात पूरी की 'उन्होंने पहिले ही बताया कि मैं उनके साथ ग्रा रही हूँ।'

सोलोमिन ने उसकी ग्रोर देखा ग्रौर सुख का ग्रनुभव करते हुए सिर हिलाया।

'ठीक है, ठीक है, सो तो ठीक है, लेकिन मैं तुमसे फिर कहता हूँ यह सोचकर छोड़ना चाहते हो कि शीघ्र ही क्रान्ति ग्रारम्भ होने जा रही है तो—'

'यही मब जानने समझने के लिए तो हमने आपको आने के लिए लिखा था, मरियाना ने बीच में कहा 'यह जानने के लिए कि स्थिति क्या है।'

'अगर यह बात है, तो मैं फिर कहता हूँ कि तुम घर रुक सकते हो—काफी दिनों तक।' सोलोमिन ने स्वर में बल देते हुए कहा और अगर तुम लोग इस लिए जानना चाहते हो कि तुम दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हो और यहाँ रहकर तुम दोनों का सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है तो—

'तो क्या?'

तो मेरे लिए तुम लोगों को बधाई देने का काम रह जाता है, जैसा कि पुरानी कहावत है, स्नेह और आशीर्वाद देने का। मगर जरूरत हो तो म अपनी शक्ती भर तुम्हारी सहायता करने को तैयार हूँ क्योंकि तुम दोनों को मैं पहिली ही नजर में स्नेह करने लगा हूँ, जैसे तुम दोनों मेरे सगे भाई बहन हो।

मरियाना और नेज्दानोव दोनों ही उसके दाएं-बाएं आकर खड़े हो गए और दोनों ने उसके हाथ अपने हाथ में ले लिए।

'हमें बताओ हम क्या करें' मरियाना ने कहा। मान लो क्रान्ति अभी दूर है तो उसकी तैयारी तो करनी ही है, यह भी तो इस घर में करना असम्भव है, इन परिस्थितियों में। हम बड़ी उत्सुकता के साथ जाने को और सब कुछ करने को तैयार हैं मान हमें बता कर दीजिए कि हमें कहाँ जाना और क्या करना है। हमें भेजिए। आप हमें भेजेंगे न, क्यों, भेजेंगे न '

'कहाँ?

'जनता में' जनता में, नहीं तो और हम कहाँ जाएँगे?

'जंगल में', नेज्दानोव ने सोचा पाकिन के शब्द उसके मन में सजीव उठे। सोलोमिन ने मरियाना की ओर ध्यान से देखा।

'तुम जनता को जानना चाहते हो ?'

'हाँ, हम सिर्फ जानना ही नहीं चाहते बल्कि प्रभावित करना उनकी सेवा करना चाहते हैं।'

'बहुत ठीक, मैं वायदा करता हूँ, तुम उन्हें जानोगी। मैं तुम्हें उन्हें प्रभावित करने और उनकी सेवा करने का अवसर दूँगा। और तुम नेज्दानोव, जाने को तैयार हो 'इसके लिए और उनके लिए ?'

'हाँ, मैं तैयार हूँ', उसने जल्दी से दुहराया। 'जगन्नाथ का रथ' पाक्लिन का एक और कथन उसे याद हो आया, वह बढ़ता आ रहा है, विशाल रथ और वह रही उसके पहियों की चरमराहट' '

'बहुत ठीक', सोलोमिन ने सोचते हुए दुहराया। लेकिन तुम कब भागना चाहते हो ?'

कल ही ?' मरियाना ने जल्दी से कहा।

'बहुत ठीक—लेकिन कहाँ ?'

'श्' धीरे ' नेज्दानोव ने फुसफुसाया। 'गैलरी में कोई आरहा है।

थोड़ी देर के लिए सभी चुप हो गए।

'तुम कहाँ जाना चाहते हो ?' सोलोमिन ने फिर पूछा, धीमी आवाज में।

हम नहीं जानते, मरियाना ने उत्तर दिया।

सोलोमिन ने नेज्दानोव की ओर देखा उसने भी नकार में सिर हिला दिया।

सोलोमिन ने अपना हाथ फैलाया और सावधानी से मोमबत्ती का गुल झाड़ दिया।

'मेरे बच्चो, मैं और क्या बताऊँ मेरे कारखाने में आ जाओ।' उसने अन्त में कहा, 'वहाँ बड़ी गन्दगी है लेकिन बहुत सुरक्षित है।

मैं तुम्हें छिपा दूँगा। मेरे पास एक छोटा सा स्थान है। कोई तुम्हारा पता नहीं लगा पायेगा। तुम्हें सिर्फ वहाँ पहुँच भर जाना है और हम तुम्हारे साथ गद्दारी नहीं करेंगे। वहाँ तुम्हें जनता भी खूब मिल जायगी। यह बहुत अच्छी बात है। जहाँ लोग बहुत होते हैं, छिपना आसान होता है। क्यों इससे काम चलेगा न, ऐं, क्या ?'

'हम कैसे आपको धन्यवाद दें।' नेज्दानोव ने कहा, जब कि मरिआना ने जो पहिले कारखाने का विचार सुनकर सकपका गई थी, जल्दी से कहा हाँ हाँ। आप कितने अच्छे हैं। लेकिन आप हमें वहाँ ज्यादा दिन तो नहीं रोकेंगे, मैं समझती हूँ। आप हमें जल्दी ही जनता के बीच भेजेंगे।'

यह तुम पर निर्भर करता है लेकिन अगर तुम लोग शादी करना चाहोगे, तो कारखाने में तुम्हारे लिए बड़ी आसानी होगी। वहाँ पड़ोस में ही एक पादरी रहता है, जो मेरा भतीजा होता है—जोसिम बड़ा मिलनसार और उदार है। उसे तुम्हारी शादी कराके बड़ी प्रसन्नता होगी।

मरिआना मन में मुस्कुरा उठी और नेज्दानोव ने एक बार फिर सोलोमिन का हाथ दबाया, और थोड़ी देर की खामोशी के बाद फिर पूछा, 'लेकिन आपका मालिक, तो आपसे इस पर कुछ नहीं कहेगा ? यह आपके लिए तो कोई मुसीबत नहीं खड़ी कर देगा ?'

सोलोमिन ने नेज्दानोव की ओर जिज्ञासा पूर्ण दृष्टि से देखा।

'मेरी चिन्ता मत करो — अपना समय बर्बाद करना होगा। जब तक कारखाना ठीक चलता है, तब तक मेरे मालिक को, मैं क्या करता हूँ, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। तुम्हें और तुम्हारी प्रेमिका को उससे डरने या चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सिर्फ मुझे पहिले से यह बता दो कि तुम लोग कब और किस समय आओगे ?'

नेज्दानोव और मरिआना एक दूसरे की ओर देखने लगे।



'परसों तड़के, या उसके अगले दिन', नेज्दानोव ने अन्त में कहा। 'हम इससे अधिक और नहीं टाल सकते। उम्मीद है कि कल तो वे लोग मुझे घर से निकाल ही नहीं देंगे।'

'ठीक है ' सोलामिन ने सहमति प्रगट की, और अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। 'मैं हर दिन सवेरे तुम लोगों का इन्तजार करूँगा। 'और मैं पूरे सप्ताह घर से बाहर नहीं जाऊँगा। इस बीच में सब प्रबन्ध हो जायगा।'

मरिआना उसके और निकट आ गई (वह कमरे से बाहर जाने को उद्यत थी)। नमस्ते प्रिय दयालु वासिली फ़ैदोतिच यही आपका नाम है न ?'

'हाँ।

'नमस्ते 'कम से कम अब तक हम फिर मिलेंगे और धन्यवाद—आपको धन्यवाद!

'नमस्ते 'नमस्ते मेरे प्यारे बच्चो।'

'और नमस्ते नेज्दानोव कल तक' उसने कहा और मरिआना जल्दी से बाहर चली गई।

दोनों नौजवान थोड़ी देर तक निश्चल खड़े रहे।

'नेज्दानोव ' सोलोमिन ने आखिरकार कहना शुरू किया, पर रुक गया। 'नेज्दानोव' उसने फिर कहना शुरू किया 'इस लड़की के बारे में मुझे बताओ जो कुछ तुम बता सकते हो। उसका अब तक का जीवन कैसा रहा है? वह कौन है? और वह यहाँ कैसे आई?

नेज्दानोव ने, जो कुछ वह उसके बारे में जानता था संक्षेप में बताया।

अन्त में फिर उसने कहना शुरू किया, 'नेज्दानोव तुम उस

लड़की की ख़ैर ख़बर रखना, क्योंकि अगर कुछ उसे हो जाता है तो तुम्हीं उसके दोषी होगे। नमस्ते।'

वह चला गया, और नेज्दानोव कमरे के बीच में थोड़ी देर शान्त खड़ा रहा, तब स्वयं से ही बुदबुदाया, आह! न सोचना ही अच्छा है' और वह औंधे मुँह बिस्तर पर गिर पड़ा।

जब मरिआना अपने कमरे में पहुँची तो उसे मेज पर एक छोटा सा पर्चा मिला जिस पर लिखा था 'मुझे तुम्हारे लिए दुख है। तुम अपनी बर्बादी के रास्ते पर जा रही हो। सोचो तुम क्या कर रही हो। तुम आँखें बन्द करके किस मुश्किल में अपने को झोंक रही हो?—किसके लिए, और किस लिए?—वा०।

कमरे में एक अजीब मोहक सुगन्ध व्याप्त थी जाहिर था कि अभी अभी वालेन्तिना मिखालोवना वहां से गई थी। मरिआना ने कलम उठा ली और उसके नीचे लिखा 'मुझ पर दया मत करो! ईश्वर जानता है कि हम दोनों में से किसको दया की अधिक जरूरत है। मैं तो सिर्फ इतना जानती हूँ कि मैं तुम्हारी जगह नहीं हूँगी—म०। उसने पत्र मेज पर ही रख दिया। उसे निश्चय था कि उसका यह पत्र वालेन्तिना मिखालोवना के हाथों में पहुँच जायगा।

दूसरे दिन सवेरे सोलोमिन, नेज्दानोव से मिलकर और सिप्यागिन के प्रस्ताव को अन्तिम रूप से अस्वीकृत करके, अपने कारखाने वापस चल दिया। वह रास्ते भर ध्यान मग्न रहा। ऐसी स्थिति उसके साथ कभी-कभी ही आती थी। बग्घी के झटकों से उसे आमतौर पर झपकी सी आने लगती थी। पर उस समय वह नेज्दानोव और मरिआना के बारे में सोचता रहा। उसने सोचा कि अगर वह प्रेम में पड़ा होता, वह—सोलोमिन—तो उसका चेहरा कुछ दूसरा ही होता तो वह कुछ और ही ढंग से बात करता, कुछ और ही ढंग से दीखता। 'लेकिन, उसने सोचा, 'जब ऐसा मेरे साथ कभी हुआ ही नहीं, तो मैं कैसे बता सकता हूँ, कि अगर ऐसा होता तो मैं कैसा लगता।'

उसे एक आयरिश लड़की की याद आगई, जिसे उसने एक दूकान पर देखा था, उसे याद आया कि उसके बाल कैसे शानदार और लगभग काले थे, उसकी आँखें नीली और बिरोनियाँ घनी थीं और उसने कैसी व्यथित और लालसा भरी आँखों से उसको देखा था और बड़ी देर तक देखती रही थी। और वह कैसे उसके दरवाजों के आगे चक्कर काटता रहा था, कितना उत्तेजित हो गया था वह और कैसे वह इस उलझन में पड़ा कि उससे परिचय करे या न करे? उन दिनों में वह लन्दन में रह रहा था। उसके मालिक ने उसे कुछ रुपया देकर अपने लिए कुछ सामान खरीद करने को भेजा था। सोलोमिन ने एक बार तो मन में सोचा था कि वह लन्दन में ही रुक जाय और अपने मालिक का रुपया वापस भेज दे। ऐसा तगड़ा प्रभाव था जो उस पर उस मनमोहक पौली ने डाला था "(उसे, उसके नाम का पता लग गया था, जब एक दूसरी दुकानदार लड़की ने उसे इसी नाम से पुकारा था।) उसने अपने पर जैसे-तैसे संयम किया, और अपने मालिक के पास वापस चला गया। पौली मरियाना से कहीं अधिक खूबसूरत थी लेकिन इस लड़की की दृष्टि में भी वैसी ही व्यथा और चिन्ताकुलता तथा लालसा थी और यह रूसी थी।

'लेकिन मैं यह सब क्या सोच रहा हूँ?' सालोमिन ने बुदबुदाया, 'दूसरों की प्रेमिकाओं के बारे में सोचना।' और उसने अपने कोट के कालर को झटका जैसे वह इन बेकार के विचारों को झटकार देना चाहता हो। तभी वह फैक्टरी के पास पहुंच गया और उसे अपने बंगले के सामने स्वामिभक्त पवेल की झलक दिखाई पड़ी।



छब्बीस

सोलोमिन की अस्वीकृति से सिप्यागिन को बड़ी चोट पहुँचाई—इतनी कि वह एकाएक इस राय पर पहुँचा कि यह घर पर तैयार स्टवमुखन इतना अच्छा कारीगर नहीं था और अभी ही वह पूरी तरह से शर्मनाक रूप से निकम्मा न हो लेकिन आम आदमी की तरह बड़ा ऐंठू था और अपने को बड़ा तीसमारखाँ समझता था। 'यह सभी रूसी जब से, यह समझने लगते हैं कि उन्हें कुछ आता है, तो फिर उनके दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ जाते हैं। बकवासी कालोमियत्सव ही ठीक है। इस प्रकार की उत्तेजित और कटुतापूर्ण मानसिक स्थिति में जब नेता—उस एक नायक—ने नेज्दानोव को देखा तो वह उसके प्रति और भी सहानुभूति रहित और रूखा हो गया। उसने कोल्या को कहला दिया कि उसे आज अपने मास्टर से पढ़ने की जरूरत नहीं है—उसे आत्मनिर्भर होना सीखना चाहिए। और उसने स्वयं मास्टर को बर्खास्तगी का आदेश नहीं दिया

कि मैं चुप रहूँ और तुम्हारी करतूतों पर परदा डालूँ? क्या यह तुम्हारे योग्य है? मैं एक चरित्रवान स्त्री होने के नाते अपने घर में यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती।'

वालेन्तिना मिखालोवना एक आराम कुर्सी पर गिर पड़ी, जैसे दुख के भार से दबी जा रही हो।

मरिम्राना पहली बार मुस्कुराई।

'मैं आपके गुणों पर विगत, वर्तमान और भविष्य में—शंका नहीं करती,' उसने कहना शुरू किया, 'और ऐसा मैं पूरी गम्भीरता के साथ कह रही हूँ, लेकिन तुम्हारा दुखी होना व्यर्थ है, मैंने तुम्हारे घर में ऐसा कोई काम नहीं किया जो लज्जा करने की बात हो, वह नौजवान, जिसका तुम जिक्र कर रही हो हाँ, निश्चय ही मैं उससे प्रेम करने लगी हूँ।'

'तुम मौम्धिमर मेज्खामोव से प्रेम करती हो?'

हाँ मैं उनसे प्रेम करती हूँ।

वालेन्तिना मिखालोवना अपनी कुर्सी पर सीधी बैठ गई।

'हाय भगवान! मरिम्राना! वह तो एक सामान्य विद्यार्थी है, जिसका न कोई अच्छा कुल है और न परिवार, और फिर वह तो उमर में तुमसे भी छोटा है! (इन शब्दों के कहने में विद्वेषपूर्ण आनन्द का भाव था।) 'इसका परिणाम क्या निकलेगा? और तुमने उसमें ऐसी क्या खूबी देखी? वह तो बस एक साधारण छोटा लड़का है।'

'पहिले तो उसके बारे में तुम्हारी यह राय नहीं थी, वालेन्तिना मिखालावना!'

'ओह, मुझ पर दया करो, मेरी बात रहने दो ... । बात तुम्हारी हो रही है—तुम्हारी और तुम्हारे भविष्य की। जरा सोचो तो! तुम्हारा उसका क्या मेल है!'

'वालेन्तिना मिखालावना मैं मानती हूँ कि मैंने उस दृष्टि से इस पर नहीं सोचा था।

'प्राह, ऐं? क्या ? उसस में क्या समझूं? तुमने अपने दिल की बात मानी है, हमें अनुमान करना चाहिए 'लेकिन इसका अन्त तो शादी में ही होगा, है न?'

'मैं नहीं जानती 'मैंने उसके बारे में सोचा ही नहीं।'

'तुमने उसके बारे में सोचा ही नहीं? क्यों, तुम कहीं पागल तो नहीं होगई!

मरिप्राना थोड़ा दूसरी एक भार घूम गई।

हमें यह बातें यहीं बन्द कर देनी चाहिए, वालेन्तिना मिखालोवना इसका कोई नतीजा नहीं निकलगा। हम कभी एक दूसरे को नही समझ पाएंगे।

वालन्तिना मिखालोवना प्रावेश में उठ खड़ी हुई।

'मैं नहीं कर सकती मुझे इस बात चीत का अन्त नहीं करना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है मुझे तुम्हारे लिए उत्तर देना है' वालेन्तिना मिखालोवना कहना चाहती थी 'ईश्वर के सामने, लेकिन वह हकला गई, और बोली, सारे संसार को। मैं ऐसी बेहया बातें सुनकर चुप नहीं रह सकती! और फिर मैं तुम्हें समझ क्यों नहीं सकती? आजकल के छोकरे-छोकरिया का ऐसा अहंकार! नहीं! मैं तुम्हें खूब समझती हूँ, तुम इन नए विचारों से प्रभावित हो गई हो, जो तुम्हें निश्चितरूप से नाश की ओर ले जाएँगे? लेकिन तब बहुत देर हो चुकी होगी।

'शायद, लेकिन उसका विश्वास रखो कि मैं अपनी बर्बादी में भी तुमसे सहायता के लिए एक उँगली भी नहीं फैलाऊँगी।'

'फिर वही अहंकार, प्राह, ऐसा भारी अहंकार! मेरी बात पर ध्यान दो मरिप्राना,' अपने स्वर को एकाएक बदलते हुए उसने कहा' वह मरिप्राना को अपनी ओर खींचने वाली ही थी, लेकिन मरिप्राना एक कदम पीछे हट गई। मरिप्राना! तुम जानती हो मैं

इतनी बूढ़ी नहीं हूँ और न इतनी मूर्ख ही, कि हम लोगों के लिए एक दूसरे को समझना मुश्किल हो। मैं भी अपनी जवानी के दिनों में जनतन्त्रवादी समझी जाती थी तुम्हारी ही तरह। मेरी बात पर ध्यान दो। मैं जो महसूस नहीं करती, वह नहीं कहूँगी। मैंने आज तक कभी तुम्हारे प्रति माँ की ममता का अनुभव नहीं किया और उसकी शिकायत करना भी तुम्हारे स्वभाव में नहीं है लेकिन मैं मानती रही हूँ और आज भी मानती हूँ कि तुम्हारे प्रति मेरे कुछ कर्तव्य हैं और मैंने हमेशा उन्हें पूरा करने की कोशिश की है। शायद तुम्हारे लिए जिस वर का मैंने सपना देखा था, और जिसके लिए बोरिस एन्द्रिविच और मैं दोनों ही कोई भी त्याग करने को तैयार रहते वह पूरी तरह तुम्हारे विचारों से मेल नहीं खाता लेकिन अपने हृदय से मैं—

मरिआना ने वालेन्तिना मिखालोवना की ओर— प्रवृत्त आँखों, गुलाबी होंठों, गोरे हाथों, और अँगूठियों से सजी हुई उँगलियों की ओर जिन्हें वह सुन्दरी अपने रेशमी गाउन की ऊपरी चोली से सटाए हुए थी—देखने लगी और बीच में उसकी बात काट कर बोली

'तुम योग्य वर की बात कहती हो, वालेन्तिना मिखालोवना? तुम्हारा मतलब उसी हृदयहीन अपने कुत्सित फूहड़ मित्र मि० कालोमिएत्सेव से है?

वालेन्तिना मिखालोवना ने अपनी चोली पर से उँगलियाँ हटा ली।

'हाँ, मरिआना विकन्त्यवना, मेरा मतलब कालोमिएत्सेव से ही है—वह सुशिक्षित, और बड़ा ही अच्छा नौजवान है। निश्चय ही अपनी पत्नी को सुखी रखेगा, और उससे और कोई भी स्त्री, पागल औरत को छोड़कर, शादी करने से मना नहीं करेगी।'

'क्या किया जाय? लगता है वह पागल औरत मैं ही हूँ।

'लेकिन उसमें बुराई क्या है ? कौनसी ऐसी बड़ी बुराई तुमने देखी उसमें ?'

'ओह कोई भी नहीं । बस मैं उससे घृणा करती हूँ... और कुछ नहीं ।'

वालेन्तिना मिखालोवना ने अधीरता से अगल-बगल अपना सिर हिलाया और फिर एक आराम कुर्सी में पसर गई ।

'अच्छा भाड़ में जाने दो उसे । और... तो तुम नेज्दानाव से प्रेम करती हो ?'

'हाँ ।'

'और तुम उससे... मिलते रहने पर तुली हुई हो ?'

'हाँ बिल्कुल ।'

'और... अगर मैं तुम्हें मना करूँ तो ?'

'तो मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगी ।'

वालेन्तिना मिखालोवना एकदम अपनी कुर्सी से उछल पड़ी ।

'आह, तुम मेरा कहना नहीं मानोगी ! ओह सचमुच ही ! और यह मुझसे... यह लड़की कह रही है, जो मेरे एहसाना से लदी हुई है, जिसकी मैंने अपने घर में रखकर परवरिश की है—यह मुझसे ऐसा कहती है... मुझसे कहती है...'

'एक बात और—यह भी एक तिरस्कृत पिता की लड़की,' मरियाना ने तीखेपन से कहा । 'कहती जाओ कोई बात मन में दबी न रह जाय ।'

'बहरहाल बात कुछ भी हो पर उसमें गर्व करने की तो कोई बात है नहीं । एक लड़की जो मेरा खाती-पहनती है—'

'यह ताना मत दो मुझे, वालेन्तिना मिखालोवना । कोल्या के लिए अगर फ्रेन्च पढ़ाने वाली रखतीं तो ज्यादा खर्च पड़ जाता... तुम जानती हो मैं उसे फ्रेंच पढ़ाती हूँ ।'

वालेन्तिना मिखाइलोवना ने अपना हाथ ऊपर उठाया, जिसमें उसने हाथ से बना हुआ एक रेशमी रूमाल, जिस पर एक कोने में नाम कढ़ा हुआ था, ले रखा था और कुछ प्रत्युत्तर देने की कोशिश की, लेकिन मरिआना आवेश में बिना रुके कहती ही गई

'तुम्हें हजार बार बोलने का हक होता, अगर तुम जो कुछ अभी अपने एहसान गिना रही थीं, जो त्याग और कृपा की बातें कर रही थीं, उनके बजाय कह सकने की स्थिति में होतीं, 'लड़की जिसको मैंने प्रेम किया।" लेकिन तुम इतनी ईमानदार हो कि ऐसा झूठ नहीं बोलोगी। मरिआना काँप रही थी, जैसे बुखार चढ़ा हो। 'तुमने हमेशा मुझ से घृणा की है। इस समय भी अपने पूरे दिल से, जैसा तुमने अभी इसी समय कहा तुम प्रसन्न हो—हाँ प्रसन्न हो—कि मैं तुम्हारी भविष्यवाणियों को सही सिद्ध कर रही हूँ कि मैं अपने लिए बदनामी मोल ले रही हूँ, तुम्हें सिर्फ इस बात की चिन्ता और दुख है कि यह सब बदनामी तुम्हारे इस अभिजातीय सुसंस्कृत परिवार पर आ सकती है,

'तुम मेरा अपमान कर रही हो' वालेन्तिना मिखाइलोवना गुस्से से हकलाने लगी। 'कृपया कमरे से बाहर चली जाओ।

लेकिन मरिआना अपने को संयत न कर सकी।

'तुम्हारा यह परिवार, तुम कहती हो तुम्हारा सारा परिवार और अन्ना जखारोवना और सभी मेरे कुकृत्य को जानते हैं। और सभी भयभीत और नाराज हैं लेकिन क्या तुम समझती हो कि मैं तुमसे कुछ पूछूँगी या इन लोगों से पूछूँगी? क्या तुम समझती हो कि मैं उनकी नेक सलाहों की कोई कीमत समझती हूँ? क्या तुम समझती हो, तुम्हारे सहारे रहना जैसा तुम कहती हो, मेरे लिए मधुर और सुखद रहा है? मैं इस सुखी जीवन की अपेक्षा गरीबी का जीवन लाख दर्जे अच्छा समझती। क्या तुम नहीं देखतीं कि तुम्हारे परिवार वालों में और मेरे बीच एक गहरी खाई है। ऐसी खाई जिसे कोई नहीं पाट

सकता? क्या तुम-तुम तो एक समझदार महिला हो, यह सब नहीं समझतीं? और अगर तुम मुझसे घृणा करती हो तो क्या तुम यह नहीं समझ सकतीं कि मेरा तुम्हारे बारे में क्या भाव है? उसको मैं विशिष्टता नहीं प्रदान करती, क्योंकि वह तो साफ है।

'दूर हो जाओ मेरी आँखों के सामने से दूर हो जाओ!' वालेन्तिना मिखाइलोवना ने दुहराया और उसने अपना सुन्दर छोटा पैर जमीन पर पटका।

मरिआना ने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया।

'मैं यहाँ अपनी उपस्थिति से तुम्हें जल्दी ही मुक्ति दे दूँगी। लेकिन क्या तुम जानती हो, वालेन्तिना मिखाइलोवना? ऐसा कहा जाता है कि राशिन के 'बजाजे' में रोशल के मुँह से भी यह, 'दूर हो जाओ!' कोई बहुत प्रभाव शाली नहीं हो सका था और तुम तो उससे बहुत पीछे हो! और एक बात और, तुमने क्या कहा था — 'मैं बड़ी चरित्रवान और सच्ची हूँ।' मुँह मियाँ मिट्ठू बनलो भले ही, लेकिन मैं पक्का जानती हूँ कि मैं तुमसे कहीं ज्यादा चरित्रवान और सच्ची हूँ! अच्छा नमस्ते!

मरिआना तेजी से बाहर निकल गई और वालेन्तिना मिखाइलोवना अपनी कुर्सी से उछल पड़ी। वह चीखना चाहती थी, वह चिल्लाना चाहती थी... लेकिन क्या चीखे, वह नहीं समझ पाई, और आँसू भी उसके आदेश पर आए नहीं।

उसे अपने हाथ के रूमाल से अपना पंखा करने से ही सन्तोष करना पड़ा, लेकिन जिस ढंग से यह सब हुआ था उसने उसकी स्नायुओं पर और भी असर डाला। वह बहुत दुखी, और अपमानित अनुभव कर रही थी। उसने अभी जो कुछ सुना था उसकी सच्चाई के कण-कण के प्रति वह सचेत थी, लेकिन कोई उसके बारे में ऐसी अन्यायपूर्ण धारणा कैसे बना सकता है। क्या मैं ऐसी घृणित चीज हूँ। उसने सोचा और उसने शीशे में अपनी सूरत देखी, जो उसके सामने

वालेन्तिना मिखालोवना ने अपना हाथ ऊपर उठाया, जिसमें उसने कस से पकड़ा हुआ एक रेशमी रुमाल जिस पर एक कोने में नाम कढ़ा हुआ था, ले रखा था और कुछ प्रत्युत्तर देने की कोशिश की, लेकिन मरियाना आवेश में बिना रुके कहती ही गई

'तुम्हें हजार बार बोलने का हक होता अगर तुम जो कुछ अभी अपने एहसान गिना रही थीं, जो त्याग और कृपा की बातें कर रही थीं, उनके बजाय यह कहने की स्थिति में होतीं 'लड़की जिसको मैंने प्रेम किया।" लेकिन तुम इतनी ईमानदार हो कि ऐसा झूठ नहीं बोलोगी। मरियाना काँप रही थी जैसे बुखार चढ़ा हो। 'तुमने हमेशा मुझ से घृणा की है। इस समय भी अपने पूरे दिल से जैसा तुमने अभी इसी समय कहा, तुम प्रसन्न हो—हाँ प्रसन्न हो—कि मैं तुम्हारी भविष्यवाणियों को सही सिद्ध कर रही हूँ, कि मैं अपने लिए बदनामी मोल ले रही हूँ, तुम्हें सिर्फ इस बात की चिन्ता और दुख है कि यह सब बदनामी तुम्हारे इस अभिजातीय सुसस्कृत परिवार पर आ सकती है,

'तुम मेरा अपमान कर रही हो' वालेन्तिना मिखालोवना गुस्से से हकलाने लगी। कृपया कमरे से बाहर चली जाओ।'

लेकिन मरियाना अपने को संयत न कर सकी।

'तुम्हारा यह परिवार तुम कहती हो तुम्हारा सारा परिवार और अन्ना जहारोवना और सभी मेरे कुकृत्य को जानते हैं। और सभी भयभीत और नाराज हैं लेकिन क्या तुम समझती हो कि मैं तुमसे कुछ पूछूँगी या इन लोगों से पूछूँगी? क्या तुम समझती हो कि मैं उनकी नेक सलाहों की कोई कीमत समझती हूँ? क्या तुम समझती हो, तुम्हारे सहारे रहना जैसा तुम कहती हो, मेरे लिए मधुर और सुन्दर रहा है? मैं इस सुखी जीवन की अपेक्षा गरीबी का जीवन साग-रुखा अच्छा समझती। क्या तुम नहीं देखती कि तुम्हारे परिवार वालों में और मेरे बीच एक गहरी खाई है। ऐसी खाई जिसे कोई नहीं पाट

सकता ? क्या तुम-तुम तो एक समझदार महिला हो, यह सब नहीं समझतीं ? और अगर तुम मुझसे घृणा करती हो तो क्या तुम यह नहीं समझ सकतीं कि मेरा तुम्हारे बारे में क्या भाव है ? उसको मैं विशिष्टता नहीं प्रदान करती, क्योंकि वह तो साफ है।

'दूर हो जाओ मेरी आँखों के सामने से, दूर हो जाओ! '
वालेन्तिना मिखाइलोवना ने दुहराया और उसने अपना सुन्दर छोटा पैर जमीन पर पटका।

मरिआना ने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया।

'मैं यहाँ अपनी उपस्थिति से तुम्हें जल्दी ही मुक्ति दे दूँगी। लेकिन क्या तुम जानती हो वालेन्तिना मिखाइलोवना? ऐसा कहा जाता है कि रासिन के 'बजाजे' में रासिन के मुँह से भी यह, 'दूर हो जाओ!' कोई बहुत प्रभाव शाली नहीं हो सका था और तुम तो उससे बहुत पीछे हो! और एक बात और, तुमने क्या कहा था —"मैं बड़ी चरित्रवान और सच्ची हूँ। मुझे मिया मिदहू समझा मत ही लेकिन मैं पक्का जानती हूँ कि मैं तुमसे कहीं ज्यादा चरित्रवान और सच्ची हूँ! अच्छा नमस्ते!

मरिआना तेजी से बाहर निकल गई और वालेन्तिना मिखाइलोवना अपनी कुर्सी से उछल पड़ी वह चीखना चाहती थी, वह चिल्लाना चाहती थी लेकिन क्या चीखे वह नहीं समझ पाई, और आँसू भी उसके आदेश पर आए नहीं।

उसे अपने हाथ के रूमाल से अपना पंखा करने से ही सन्तोष करना पड़ा लेकिन जिस ढंग से यह क्या हुआ था उसने उसकी स्नायुओं पर और भी असर डाला। वह बहुत दुखी, और अपमानित अनुभव कर रही थी। उसने अभी जो कुछ सुना था उसकी सच्चाई के कण-कण के प्रति वह नतन थी, लेकिन कोई उसके बारे में ऐसी अन्यायपूर्ण धारणा कैसे बना सकता है। 'क्या मैं ऐसी घृणित जीव हूँ। उसने सोचा और उसने शीशे में अपनी सूरत देखी, जो उसके सामने

दो खिड़कियों के बीच टंगा हुआ था। शीशे में एक सुन्दर चेहरा दिखाई पड़ा, कुछ विकृत सा, लाल धब्बे पड़ा हुआ, लेकिन फिर भी मोहक चेहरा, सुन्दर, स्निग्ध मखमली आँख। 'मैं? घृणित?' उसने फिर सोचा 'ऐसी आँखों के होते हुए?'

लेकिन उसी अवसर पर उसका पति कमरे में आया और उसने फिर से अपना चेहरा रूमाल में छिपालिया।

'क्या हुआ है तुम्हें?' उसने व्यग्र होते हुए पूछा। 'यह क्या है वाल्या?' (यह नाम उसी का दिया हुआ था जिसे वह स्वयं भी तभी लेता, जब वे दोनों एकान्त में बात चीत करते होते और वह भी देहात में रहने के समय।)

पहिले तो उसने बात टाली, बोली कि कोई बात नहीं है, लेकिन थोड़ी देर बाद ही बड़े ही रोबील और मार्मिक ढंग से अपनी कुर्सी पर घूमकर और उसके कन्धों के ऊपर गले में हाथ डालकर (वह उस पर झुका खड़ा था) उसकी खुली वास्केट में मुँह छिपाते हुए उसने उसे सब कुछ बता दिया। बिना किसी कपट भाव का गुप्त मन्तव्य के उसने मारग्राना की, अगर माफ करने की नहीं, तो कम से कम कुछ हद तक उसके पक्ष को संगत सिद्ध करने की कोशिश की, उसने सारा दोष उसकी जवानी, उसके उत्तेजनात्मक स्वभाव और उसकी प्रारम्भिक शिक्षा की कमियों को दिया उसने कुछ हद तक, और वह भी किसी दुहरे मन्तव्य से नहीं, अपने को भी दोष दिया। मेरी बेटी होती तो उसके साथ ऐसा कभी न हुआ होता! मैंने उसकी और ही तरह से देखभाल की होती। सिप्यागिन ने उसकी बातों को ध्यान, सहानुभूति और कठोरता से सुना जब तक कि वालेन्तिना मिखालोवना ने अपने हाथ उसके कंध और सिर उसके सीने पर से अलग नहीं कर लिए, तब तक वह उसी तरह उस पर झुका खड़ा रहा, उसने उसे देवी कहा, उसके माथे को चूमा और कहा कि घर के स्वामी के नाते उसकी क्या स्थिति है और उसे क्या करना चाहिए, यह सब

उसकी खूब समझ में खूब आगया है, और यहाँ से एक सहृदय किन्तु शक्तिशाली चरित्र के व्यक्ति की जोशपूर्ण सजगता से, जिसे एक दुःखदायी किन्तु अनिवार्य कर्तव्य करने का निश्चय करना है, वह कमरे से बाहर चला गया।

भोजन के बाद लगभग आठ बजे, मजधानोव अपने कमरे में बैठा अपने मित्र सिलिन को पत्र लिख रहा था "प्रिय व्लादिमीर, मैं तुम्हें यह पत्र तब लिख रहा हूँ जब मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। इस मकान से मैं बर्खास्त कर दिया गया हूँ और इसे मैं छोड़कर जा रहा हूँ। लेकिन यह कोई खास बात नहीं है। मैं यहाँ से अकेला नहीं जा रहा हूँ। वह लड़की भी जिसके बारे में मैं तुम्हें पहिले लिख चुका हूँ, मेरे साथ आ रही है। जीवन में अपने भाग्य की समानता के कारण हम दोनों एक हो चुके हैं, अपने विचारों और कार्यों तथा अपनी भावनाओं से हम भी एक हो चुके हैं। हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं, कम से कम मैं तो यह विश्वास करता हूँ कि मैं जिस रूप में आज प्रेम का अनुभव कर रहा हूँ, उससे भिन्न और किसी रूप में प्रेम की उत्तेजना और वासना का अनुभव, कर सकना मेरे लिए सम्भव नहीं है। लेकिन मैं तुमसे झूठ बोलूँगा अगर मैं यह कहूँ कि मेरे अन्दर भय की कोई छिपी हुई भावना नहीं है, और मैं दिल में एक अजीब घुटन का अनुभव नहीं कर रहा हूँ। भविष्य अंधकार मय है और हम दोनों साथ-साथ इस अंधकार में आगे बढ़ रहे हैं। मुझे तुम्हें यह समझाने की जरूरत नहीं है कि हम किस मार्ग पर जा रहे हैं और हमने क्या काम करने का निश्चय किया है। मरियाना और मैं सुख के खोजी नहीं हैं, हम जीवन का सुख प्राप्त करना नहीं चाहते, बल्कि साथ-साथ संघर्ष करना चाहते हैं, कंधे से कंधा मिलाकर, एक दूसरे का सहारा देते हुए। हमारा उद्देश्य हमारे सामने स्पष्ट है, लेकिन उद्देश्य प्राप्ति होगी कैसे, किस मार्ग से, हम नहीं जानते क्या हम अगर हम दर्दी और मदद नहीं, तो कम से कम काम करने की स्वतन्त्रता पा

सकेंगे ? मरियाना बड़ी ईमानदार और ईमान्दार लड़की है। मगर यही किस्मत में लिखा है कि हम मिट जायें, तो मैं उसके नाश का जिम्मेदार होने के लिए सन्ताप नहीं करूँगा क्योंकि अब उसके लिए और कोई जीवन सम्भव ही नहीं रहा है। लेकिन ब्लादिमीर, मेरा दिल भारी है। शंकाओं में मैं पीड़ित हो रहा हूँ निश्चय ही उसके प्रति अपनी भावना की शंका से नहीं, लेकिन मैं नहीं जनता। खैर, अब पीछे जाने का समय नहीं रहा। वहीं से हमारे लिए अपना दोस्ती का हाथ बढ़ाओ और हमारे लिए धैर्य, आत्म त्याग की शक्ति और प्रेम और प्रगाढ़ प्रेम की कामना करो, और तुम, ओ, हमारे लिए अनजानी रूसी जनता लेकिन हम दोनों जिसे अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करते हैं, अपने कलेजे के खून के हर कतरे से जिसे प्रेम करते हैं, वह रूसी जनता, हमसे उदासीन न होना। हमें ग्रहण करना, हमें रास्ता दिखाना, सिखाना, हम तुमसे क्या आशा करें। विदा, ब्लादिमीर विदा।

पत्र लिख चुकने के बाद नेज्दानोव गाँव को चल दिया। अगले दिन अभी सवेरा होने में देर थी, जब नेज्दानोव जंगल के बाहर सिप्यागिन के बाग के पास ही खड़ा था। उससे थोड़ा पीछे झाड़ी की ओट में एक छोटी सी दो घोड़ों की गाड़ी जुती खड़ी थी। गाड़ी के भीतर सीट के नीचे एक भूरे बालों वाला नाटा बूढ़ा किसान घास के ढेर पर सोया पड़ा था। उसने अपने चिथड़े लगे ओवरकोट से अपने सिर को ढक रखा था। नेज्दानोव टकटकी बाँधे धूर-धूर कर उत्सुक दृष्टि से सड़क पर बाग के सिरे पर लगी सरपत की झाड़ियों की ओर देख रहा था। रात की फीकी स्थिरता अब भी हर चीज पर छाई हुई थी। अपनी चमक से एक दूसरे को मात देने के लिए मन्द-मन्द टिमटिमाते छोटे-छोटे तारे आकाश की अतल गहराइयों में खोए हुए एक दूसरे से अधिक चमकने की होड़ा-होड़ी में लगे थे। फैले हुए बादलों के गोल निचले किनारे के सहारे पूरब की ओर से फीकी चमक फैल रही थी,

तड़के की ठंडी हवा के झोंके भी आरहे थे। एकाएक नेज्धानोव चौंक पड़ा और सतर्क होगया कहीं पास में पहिले तो हल्की मरमराहट हुई और तब दरवाजे की थपथपाहट की ध्वनि हुई, और फिर एक शाल में लिपटी एक नारी मूर्ति अपने नंगे हाथ में एक पोटली लिए सरपत की झाड़ियों की स्थिर परछाइयां में से सड़क की मुलायम धूल पर दृढ़ किन्तु अथक अथक कदमों से अंगूठे के बल सड़क को तिरछे पार करती हुई जंगल की ओर मुड़ी। नेज्धानोव उसकी ओर दौड़ा।

'मरिआना ?' वह फुसफुसाया।

हाँ, मैं ही हूँ। ऊपर से नीचे तक लिपटे हुए शाल में से कोमल स्वर में उत्तर आया।

'इधर से मेरे पीछे-पीछे आओ' नेज्धानोव ने पोटली वाले हाथ को झटपटे ढंग से पकड़ते हुए कहा।

वह कांप उठी जैसे उस कोहरे से ठंड लगी हो। वह उसे गाड़ी के पास ले गया और किसान को उठाया। किसान जल्दी से उछल पड़ा और कोचवान की जगह पर तुरन्त बैठ गया अपने लबादे में हाथ बढ़ाकर उसने रासें पकड़ लीं। घोड़े हिले उसने सोने से भारी पड़ी आवाज में उन्हें बढ़ावा दिया और तिकतिकाया। नेज्धानोव ने मरिआना को रस्सी की सीट पर अपना ओवरकोट बिछा कर बैठाया। उसने उसके पैर भी एक कम्बल से ढक दिए। क्योंकि सीट के नीचे की घास सीली हुई थी। तब स्वयं भी उसकी बगल में बैठते हुए उसने किसान से कहा तुम जानते हो कहीं से चलो। किसान ने रासों को झटकारा, घोड़े हिनहिनाए और उन्होंने फुरफुरी सी एक झटका देते हुए गाड़ी झाड़ी में से सड़क पर आ अपने पुराने पहिया पर खड़खड़ाती तथा हिचकोलें खाती सड़क पर चल पड़ी। नेज्धानोव ने मरिआना को सहारा देने के लिए उसकी कमर में हाथ डाल दिए मरिआना ने अपनी ठंडी उंगलियों से शाल को थोड़ा ऊपर हटाया और उसकी ओर थोड़ा

घूम कर मुस्कराते हुए उसने कहा, 'कितनी ताजगी है, कितना सुहाना लगता है, अल्योशा !

'हाँ' किसान ने उत्तर दिया, 'गहरी ओस पड़ेगी अभी !'

सचमुच ही बड़ी ओस पड़ रही थी कि गाड़ी के पहियों से टकरा कर सड़क के किनारों पर लगे सरपत की पत्तियों पर जमी ओस की बूँदें टपक पड़ती, और हरी घास हल्के नीले रंग की लग रही थी।

मरियाना ठंड से फिर काँप उठी।

'कितनी ताजगी, कितना नयापन !' उसने फिर दोहराया विभोर स्वर में। 'और आज़ादी अल्योशा आज़ादी !'



सताईस

सोसोमिन का जैसे ही बताया गया कि एक श्रीमान् और श्रीमती एक छोटी सी गाड़ी में आए हैं और उसे पूछ रहे हैं, वह भाग कर कारखाने के फाटक पर आया। आगन्तुकों को नमस्ते किए बिना ही, सिर्फ अनेक बार सिर झुकाते हुए उसने गाड़ीवान से गाड़ी फाटक के भीतर हाँक ले चलने को कहा और सीधी अपने छोटे से घर के सामने ले जाकर खड़ी करवा दी। उसने मरिआना को गाड़ी में से उतरने में मदद की। नेज्दानोव उसके पीछे ही गाड़ी से बाहर कूद पड़ा। सोलोमिन उन दोनों को एक लम्बे अँधेरे सँकरे मार्ग में से होकर और फिर सँकरी घुमावदार सीढ़ियों पर से होकर, अपने मकान की दूसरी मंजिल के पीछे के हिस्से में ले गया। वहाँ उसने एक नीचा सा दरवाजा खोला और तीनों ने ही एक छोटे से किन्तु साफ-सुथरे कमरे के भीतर प्रवेश किया, जिसमें दो खिड़कियाँ थीं,

'स्वागत है!' सोलोमिन ने अपनी सदैव

की मधुर मुस्कान के साथ कहा, जो आज हमेशा से अधिक मामा पुष्ट और दीप्त लग रही थी।

'यह है तुम लागा के रहने का क्वार्टर, यह कमरा और यह देखो, एक उसके बगल में है। देखने में तो कोई खास नहीं है, पर कोई बात नहीं, काम चलेगा, इसमें भी आराम से रहा जा सकता है, और यहाँ तुम्हारी जासूसी करने वाला भी कोई नहीं होगा। खिड़की के नीचे मकान मालिक के कब्जे में फूल बाग है, लेकिन मैं इसे 'रसोई बाग' यानी साग-सब्जी का बाग कहता हूँ यह वहाँ दीवाल तक फैला है। बड़ा निर्जन स्थान है। खैर, दुबारा स्वागत करता हूँ प्रिय देवी जी और तुम्हारा भी नेक्पानोव। तुम दोनों का स्वागत है।

उसने उन दोनों से हाथ मिलाए। वे स्थिर खड़े थे। उन्होंने अपने लबादे भी नहीं उतारे थे, और शान्त, अब चकित अर्ध हर्षित भावतिरेक से वे अपने सामने देख रहे थे।

तो अब बोलो? सोलोमिन ने फिर कहना शुरू किया 'अपना सामान उतारो! तुम लोगों के पास क्या-क्या सामान है?'

मरियाना ने अपनी पोटली दिखा दी, जिसे वह अब भी अपने हाथ में पकड़े हुए थी।

'मेरे पास तो बस यही है।

'और मेरा बक्सा और झोला अभी गाड़ी में ही है। लेकिन मैं अभी जाकर लाता हूँ।

'ठहरो ठहरो सोलोमिन ने दरवाजा खोला। 'पवेल! सीढ़ियों के अँधेरे में उसने चिल्लाया, 'देखो तो बाहर गाड़ी में कुछ सामान है' उसे ऊपर ले आओ।'

'अभी लाया। उन्हें पवेल की आवाज सुनाई पड़ी।

सोलोमिन मरियाना की ओर उन्मुख हुआ, जिसने अपना शाल उतार दिया था और अब अपने लबादे के बटन खोल रही थी।

'कोई दिक्कत तो नहीं आई किसी बात में? उसने पूछा।

'बिल्कुल नहीं' 'हमें किसी ने भी नहीं देखा। मैं मि० सिप्यागिन के लिए एक पत्र छोड़ आयी हूँ। मैं अपने साथ पहिनने का कोई कपड़ा नहीं लाई आसिली फेदोसिच, क्योंकि आप हमें भेजने जा रहे हैं' — ' (मरिआना किसी कारण से 'जनता के पास' कहकर बात पूरी करने का निश्चय नहीं कर पाई) 'खैर व मेरे किसी काम के भी न होते, लेकिन मेरे पास जरूरत का सामान खरीदने को पैसा है।

'यह सब बाद में करती रहना' और अब, सोलोमिन ने, पवल की ओर इशारा करते कहा जो नेज्दानोव का सामान लेकर आ गया था और बोला 'अपने अच्छे दोस्त से तुम लोगों का परिचय कराता हूँ तुम लोग उस पर पूरी तरह विश्वास कर सकते हो जैसे मुझ पर। तुमने तात्याना से समावर के लिए कह दिया है?' उसने धीमे स्वर में पवेल से पूछा।

'वह अभी यहाँ हाजिर होती है,' पवेल ने उत्तर दिया 'और क्रीम और सब कुछ।

तात्याना इसकी पत्नी है, सोलोमिन ने बताया 'और वह भी इतनी विश्वसनीय है, जितना यह। जब तक तुम ... मेरा ... इस सबकी आदी नहीं हो जातीं देवीजी, तब तक यह तुम्हारा काम कर देगी।

मरिआना अपना लबादा कोने में रखे कमरे के सोफे पर फेंकती हुई बोली 'मुझे मरिआना पुकारो, वासिली फेदोसिच—मैं देवीजी नहीं होना चाहती। और मैं यह भी नहीं चाहती कि कोई मेरी सेवा करे। मैं यहाँ नौकर रखने के लिए नहीं आई हूँ। मेरे वस्त्रों की ओर मत देखिए मेरे पास—यहाँ—इनके अतिरिक्त और कुछ था ही नहीं। यह सब बदल देना होगा।

दालचीनी के पेड़ के रंग के वस्त्र की यह पोशाक बड़ी सादी थी लेकिन पीटर्सबर्ग के दर्जी की सिली थी कमर और कंधों पर की चुन्नटें बड़ी सुन्दर लगती थीं और पूरी तरह से फैशनेबिल लगती थीं।

'खैर नौकर नहीं, लेकिन सिर्फ मदद के लिए ही सही, अमरीकन ढंग से। खैर तुम चाय तो पीओ। अभी सवेरा है और तुम दोनों थक गए होंगे। मैं तो अब कारखाने में काम-धाम देखने जा रहा हूँ, बाद में हम फिर मिलेंगे। जो तुम्हें चाहिए, पवेल या तात्याना से बोल देना।'

मरियाना ने अपने दोनों हाथ शीघ्रता से उसकी ओर बढ़ा दिए।

'हम कैसे आपको धन्यवाद दें, वासिली फैदोतिच ?' उसने उसकी ओर भावावेश से गदगद होते हुए देखा।

सोलोमिन ने स्नेह से उसका एक हाथ थपथपाया। नहीं, नहीं इसमें धन्यवाद की तो कोई बात नहीं लेकिन नहीं यह सच नहीं है। मैं कहता हूँ कि तुम्हारे धन्यवाद से मुझे अपार आनन्द हो रहा है। तो तुम अब आज़ाद हो। नमस्ते, फिलहाल के लिए! पवेल चलो मेरे साथ आओ।'

मरियाना और नेज्दानोव अकेले रह गए।

वह झपटकर उसके निकट बढ़ आई। और उसकी ओर जिस भाव से उसने सोलोमिन को देखा था उसी भाव से उसे देखती हुई, सिर्फ उसमें थोड़ा अधिक हर्ष और प्रसन्नता का और अधिक सुख का भाव था, बोली 'ओ मेरे प्राण! 'हम अपना नया जीवन आरम्भ कर रहे हैं आखिरकार। तुम विश्वास नहीं करोगे, उस घिनौने महल के मुकाबिले कितना प्यारा है यह छोटा-सा मकान, जहाँ हमें कुछ दिन बिताने हैं। बोलो मेरे प्रियतम तुम खुश हो न ?'

नेज्दानोव ने उसके हाथ लेकर अपने सीने पर दबाए।

'मैं खुश हूँ, मरियाना, कि मैं यह नया जीवन शुरू कर रहा हूँ, तुम्हारे साथ! तुम मेरा मार्गदर्शक तारा होगी मेरा प्राण, मेरा सहारा, मेरी शक्ति '

मेरे प्यारे अल्योशा! 'लेकिन रुको। जरा मैं नहा धोकर अपन

को ठाबा कर लूँ"। मैं अपने कमरे में जाऊँगी और तुम तब तक यहीं ठहरो। बस एक मिनट '

मरिआना दूसरे कमरे में चली गई, और दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया, पर एक मिनट बाद आया दरवाजा खोलकर, उसकी संध में से सिर बाहर निकाल कर बोली 'और आह! सोलोमिन भी कितना भला है!' और फिर दरवाजा बन्द कर लिया और अन्दर से चटखनी लगाने की आवाज आई।

नेज्दानोव खिड़की के पास चला गया और बाहर बाग में देखने लगा एक पुराने अत्यन्त पुराने सेब के पेड़ ने न जाने क्या उसका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया, उसने अपने को झकझोरा, अंगड़ाई ली और अपना बक्स खोलने लगा निकाला कुछ भी नहीं, बस किसी ध्यान में खोगया

थोड़ी देर बाद मरिआना आए चहुर की ताजगी और शरीर में स्फूर्ति लिए हुए कमरे में आ गई और थोड़ी देर बाद पावल की बीबी तारयाना समोवर चार क्रीम तथा क्रीमरोल लेकर कमरे म आगई।

जिप्सी जैसे अपने पति की तुलना में वह एक विशिष्ट रूसी स्त्री थी, भारी बदन, भूरे बाल जिनको सख्ती से उमेठ कर जूड़ा बाँधा गया था, जो एक सींग जैसा लग रहा था, और सिर पर कोई टोपी नहीं थी, मानो लेकिन सुन्दर मुखाकृति, और अत्यन्त भली भूरी आँखें। उसने साफ हल्की छींट की पाशाक पहन रखी थी। उसके हाथ यद्यपि बड़े थे, पर साफ, सुन्दर और सुडौल थे। उसने शान्तिपूर्वक अभिवादन किया, और एक संक्षिप्त सम्बोधन के बाद, बिना किसी प्रदर्शन के उसने कहा, 'आप लोग स्वस्थ हों', फर्म-फूले, और चाय बनाने में लग गई।

मरिआना उसके पास गई।

'लाओ मैं भी तुम्हारा हाथ बटाऊँ तारयाना, मुझे सिर्फ एक तौलिया दे दो।'

'कोई जरूरत, नहीं है मेमसाहब, हमारा तो यह काम ही है। वासिली फैयोदोविच ने मुझसे सब कह दिया है। अगर किसी चीज की जरूरत हो, तो कृपया मुझ से कह दीजिएगा, आपकी सेवा करके हम सब को बड़ा आनन्द होगा।'

'तात्याना, कृपया मुझे मेमसाहब मत कहो' यद्यपि मैंने एक अमीर महिला की सी पोशाक पहन रखी है, लेकिन फिर भी मैं बिल्कुल बिल्कुल मैं '

तात्याना की पैनी सतर्क नजर ने मरिआना को चुप कर दिया।

'और नहीं तो भला क्या होंगी आप!' तात्याना ने दबी आवाज में पूछा।

इसमें झूठ नहीं कि मैं जन्म से तो अवश्य धनी घराने की महिला हूँ लेकिन मैं अब उस सबसे अपने को मुक्त करना चाहती हूँ और सब जैसी बन जाना चाहती हूँ 'साधारण' आम स्त्रियों जैसी।

'ओह, तो यह बात है। अब समझी मैं। तुम भी उन्हीं में से हो जो अपना समानीकरण करना चाहते हैं। सबके समान बनना चाहते हैं।' आज कल उनकी संख्या काफी है।

क्या कहा तुमने तात्याना? समानीकरण करना चाहते हैं?'

हाँ यही शब्द आज कल हम लोगों के बीच चालू है। आम लोगों के समान होना इसके मानी है, समानीकरण। निश्चय ही यह, यह अच्छा काम है—किसानों को अच्छी बातों की शिक्षा देना। लेकिन जरा मुश्किल काम है। मुश्किल। ईश्वर तुम्हें सफल करे।'

'समानीकरण!' मरिआना ने दुहराया। सुनते हो पत्योदा? हम और तुम अब समानीकृत जीव हैं। सबके समान हो गए हैं।

नेज्दानोव हँसा और उसने दुहराया भी।

समानीकृत जीव!

और यह तुम्हारे क्या लगते है—तुम्हारे पति या भाई ? तात्याना ने अपने चतुर हाथों से सावधानी से प्यालों को धोते हुए, अपनत्वपूर्ण मुस्कान के साथ पूछा।

'नहीं' मरिआना ने उत्तर दिया 'यह न तो मेरे पति हैं और न भाई।

तात्याना ने ऊपर देखा।

तब लगता है आप लोग स्वच्छन्द जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज कल यह भी खूब चल रहा है। पहिले यह नास्तिकों में खूब चलता था, लेकिन लेकिन आजकल यह औरों में भी चलन लगा है। वहाँ भी ईश्वर की कृपा है, शान्ति और सुख से रहा जा सकता है। और उसके लिए पादरी की भी जरूरत नहीं है। यहाँ हमारे यहाँ कारखाने में ऐसे बहुत से हैं। और वह लोग बुरे नहीं हैं।

'तुम कैसी अच्छी बातें करती हो तात्याना। स्वच्छन्द जीवन। मैं उसे बहुत पसन्द करती हूँ। अच्छा अब मेरा एक काम कर दो मेरे लिए अपने जैसे सूती कपड़े खरीद दो या इससे भी साधारण। और जूते मोजे और रूमाल भी। हर चीज वैसी ही जैसी तुम्हारे पास है। मेरे पास उनके खरीदने का काफी पैसा है।

'जरूर मेम साहब हम सब प्रबन्ध कर देंगे ओ गलती हुई माफ कीजिएगा। अब मेम साहब नहीं कहूँगी पर यह तो बताइए फिर कहूँगी क्या ?

'मरिआना !

'और पिताजी का क्या नाम है ?

'लेकिन तुम मेरे पिता का नाम क्या पूछ रही है ? सिर्फ मुरिआना पुकारो, जैसे ही जैसे मैं तुम्हें तात्याना पुकारती हूँ।

'बात एक ही है और नहीं भी है, फिर भी बता दीजिए।

अच्छी बात है, मेरे पिता का नाम विकेन्त था और तुम्हारे पिता का नाम ?

'मेरे पिता का नाम भ्रोसिप था।

'तो फिर मैं तुम्हें तात्याना भ्रोसिपोवना कहा करूँगी।'

'और मैं तुम्हें मरिम्राना विकेन्त्येवना। यह ठीक रहेगा।'

'हमारे साथ एक प्याला चाय नहीं पीयोगी तात्याना भ्रोसिपोवना?'

'इस पहिली मुलाकात के समय पी तो सकती हूँ, मरिम्राना विकेन्त्येवना, पर मैं छोटा प्याला ही लूँगी, यद्यपि यगोरिच नाराज होंगे।'

'यह यगोरिच कौन है?'

'पवेल मेरे पति।'

'बैठ जाओ तात्याना भ्रोसीपोवना।

'जरूर, जरूर मरिम्राना विकेन्त्येवना।

तात्याना कुर्सी पर बैठ गई और चीनी की डेली के साथ चाय पीने लगी। वह चीनी की डेली को लगातार अपनी उँगलियों के बीच उलटती-पुलटती जा रही थी और जिस तरफ से डेली को कुतरती उधर अपनी आँखें घुमाती जाती थी। दोनों में बातें होने लगीं। तात्याना बिना किसी संकोच के उत्तर देने लगी और प्रश्न पूछने लगी। उसने अपनी ओर से अनेकों बातें बताईं लेकिन उसने अपने पति को वासिली फेदोतिच से दूसरा स्थान दिया। यद्यपि वह कारखाने में जीवन से ऊब उठी थी।

'यहाँ न तो शहर ही है और न ठेठ गाँव ही' 'अगर वासिली फेदोतिच न होते, तो मैं यहाँ एक मिनट भी न ठहरती।

मरिम्राना ध्यान से उसकी बातें सुनती रही। नेज्दानोव थोड़ा एक ओर हट कर बैठा, अपनी संगिनी की ओर देख रहा था और उसकी दिलचस्पियों पर उसे जरा भी आश्चर्य नहीं हो रहा था मरिम्राना के लिए यह सब नयी बात थी, लेकिन उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसने

सात्याना जैसी सैकड़ों स्त्रियाँ देखी हैं और उनमें सैकड़ों बार बातें की हैं।

'क्या तुम जानती हो, सात्याना ओसीपोवना' मरियाना ने कहा, तुम समझती हो हम जनता को शिक्षा देना चाहते हैं, नहीं, हम उसकी सेवा करना चाहते हैं।

'कैसी सेवा? उन्हें शिक्षित करो, यही उनकी सबसे बड़ी सेवा होगी। मिसाल के लिए मुझे ही ले लो। जब एगोरिच से मेरी शादी हुई थी तब मेरे लिए पढ़ना-लिखना काला अक्षर भैंस बराबर था, लेकिन अब मैं पढ़ लिख गई हूँ। ईश्वर भला करे वासिली फैदोतिच का। उन्होंने स्वयं मुझे नहीं पढ़ाया, बल्कि एक बूढ़े मास्टर को मुझे पढ़ाने के लिए रख लिया था, और उसने मुझे पढ़ाया तुम देख रही हो, मेरी उमर अभी कम है, पर औरों के लिए मैं प्रौढ़ औरत हूँ।'

मरियाना थोड़ी देर शान्त रही।

'मैं कोई काम करना सीखना चाहती हूँ सात्याना ओसीपोवना', उसने फिर कहना शुरू किया, 'मैं सीना अच्छा नहीं जानती, हाँ, अगर खाना पकाना सीखूँ तो मैं रसोइयन अच्छी बन सकती हूँ।

तात्याना सोच में पड़ गई।

'रसोइयन क्यों? रसोइए तो अमीर घरों में होते हैं या फिर व्यापारियों के यहाँ होते हैं, गरीब आदमी तो अपना खाना अपने आप बनाते हैं। और किसी संस्था के लिए खाना पकाना मजदूरों के लिए—तो, वह सबसे अन्तिम बात है।'

'लेकिन यह भी तो हो सकता है कि मैं काम करूँ धनी घर में और दोस्ती करूँ गरीबों से। वरना मैं उन्हें जानूँ गी कैसे? हमेशा तुम जैसे ही लोग मिलते रहें ऐसा भाग्य कहाँ होगा।

तात्याना ने अपना प्याला तश्तरी में उलट दिया।

'यह टेढ़ी खीर है' गौर्ष निःश्वास छोड़ते हुए उसने कहा, 'यह

उतना आसान नहीं है, मैं, जितना जानती हूँ, सब बता दूँगी, लेकिन मैं कोई ज्यादा समझदार नहीं हूँ। तुम्हें इस सब के बारे में मगोरिच से बातें करनी होंगी वह ऐसा आदमी है। वह हर तरह की किताबें पढ़ता है और वह पलक मारते ही सब कुछ देख-समझ सकता है। उसने मरियाना की ओर देखा, जो एक सिगरेट बना रही थी

और' एक और भी बात है, जो मैं कहना चाहूँगी, मरियाना विकेन्त्येवना, अगर तुम मुझे क्षमा करो अगर तुम सचमुच ही सबके समान होना चाहती हो, तो तुम्हें यह सब छोड़ना होगा। उसने सिगरेट की ओर संकेत किया। 'क्योंकि रसोइयन के काम में यह सब नहीं चलेगा, हर एक ताड़ जायगा कि तुम एक पढ़ी लिखी जवान महिला हो। हाँ।

मरियाना ने सिगरेट खिड़की के बाहर फेंक दी।

म अब नहीं पाऊँगी 'इसे छोड़ना कोई मुश्किल नहीं है। जनता की स्त्रियां सिगरेट नहीं पीती, इसलिए म भी नहीं पीऊँगी।

यह तुमने ठीक कहा, मरियाना विकेन्त्येवना। आदमी तो हमारे साथ में पीते हैं, पर स्त्रियाँ—नहीं ओह, वासिली फेदोतिच आ रहे हैं। यह उन्हीं के पैरों की आवाज है। तुम उनसे कहना, वह सब कुछ तुम्हारे लिए, बड़ी अच्छी तरह प्रबन्ध कर देंगे।

उसने ठीक कहा था, दरवाजे पर सोलोमिन की आवाज सुनाई पड़ी।

क्या मैं भीतर आ सकता हूँ ?'

आइए, आइए' मरियाना ने कहा।

'यह मेरी अंग्रेजी आदत है सोलोमिन ने भीतर आते हुए कहा। खैर, कैसा लग रहा है ? ऊब तो नहीं रहे हो ? मैं देखता हूँ, तात्याना के साथ तुम लोगों की चाय चल रही है। तुमने इसकी बातें सुनी यह बड़ी समझदार औरत है। मेरा मालिक आज मुझ से मिलने'

भागया है' जब कि भाज उसकी बिल्कुल भी जरूरत नहीं थी! और वह भोजन के समय तक ठहरेगा। कोई चारा नहीं है। वह मालिक जो है।

'कैसा आदमी है वह ?' कोने में से उठते हुए नेज्दानोव ने पूछा।

'ओह, ठीक ही है उसकी नजर बड़ी पैनी है। अगली पीढ़ी का व्यक्ति है। अत्यन्त मिलनसार और बड़ा खुशमिज़ाज है, लेकिन हर एक चीज का मूल्य आँकने में पुराने लोगों से जरा भी कम नहीं। वह अपने हाथों से सारी चमड़ी उधेड़ लेगा और कहेगा, "थोड़ा अभी इधर और पलटो यहाँ इधर अभी थोड़ा सजीव भाग बाकी बचा है इसको भी मैं प्राप्त करूँगा।' खैर मेरे साथ तो वह रेशम की तरह मुलायम है, मैं उसके लिए जरूरी जो हूँ। मैं सिर्फ तुमसे यह कहने आया था कि आज शायद मैं तुम लोगों से न मिल पाऊँगा। तुम्हारा भोजन तुम्हारे पास यहीं आ जायगा और बाहर चौक में मत निकलना। क्या सोचती हो तुम मरियाना —क्या सिप्यागिन तुम्हारी तलाश करेंगे ?'

'मेरा ख्याल तो है, कि नहीं करेंगे मरियाना ने उत्तर दिया।

लेकिन मेरा विश्वास है कि वे जरूर करेंगे, नेज्दानोव ने कहा।

'और कोई बात नहीं, सोलोमिन ने कहा,'तुम्हें अभी जरा होशियार रहना चाहिए फिर जो चाहे सो करना।

'हाँ, सिर्फ एक बात है, नेज्दानोव ने कहा, 'मार्केलोव का मेरा पता मालूम हो जाना चाहिए, उसे बता देना जरूरी है।

'क्या ?

'उसे मालूम होना ही चाहिए कि मैं कहाँ हूँ। उद्देश्य की माँग है। न जाने कब क्या जरूरत हो। मैंने वायदा किया है। पर वह किसी से कहेगा तो नहीं!'

'अच्छी बात है। पवेल को भेज देंगे।

'और क्या मेरे पहनने के लिए कोई कपड़ा तैयार होगा?' नेख्लानोव ने पूछा।

'अपने रूप परिवर्तन के लिए, तुम्हारा मतलब है? जरूर। यह पूरा स्वांग है। पर कोई बुरा नहीं है, भाग्य से। नमस्ते, तुम लोग आराम करो अब। तात्याना आओ।

मरियाना और नेख्लानोव फिर अकेले रह गए।



अट्ठाईस

पहिले तो दोनों ने फिर एक दूसरे के हाथ थाम लिए, और तब मरियाना ने कहा, 'लाओ मैं तुम्हारा कमरा ठीक कर दूं', और उसने उसके बकस और थैले में से सामान निकालना शुरू कर दिया। नेज्दानोव ने हाथ बटाना चाहा, लेकिन उसने कहा कि वह सब अकेली ही करेगी।

'क्योंकि मुझे अपने को उपयोगी बनाने की आदत डालनी चाहिए।' और सचमुच उसने, वे खूंटियाँ गाड़ीं, जो उसे मेज की दराज में मिल गई थीं उन पर कोट टाँगा, खिड़कियों के बीच में रखे एक पुराने बकस में कपड़े रखे।

'यह क्या है? उसने एकाएक पूछा, पिस्तौल? क्या भरी हुई है? यह तुमने काहे को रख छोड़ी है?

'भरी नहीं है लेकिन इसे मुझे दो। तुम पूछ रही हो, यह मैंने क्यों रख छोड़ी है? क्रान्ति के अवसर पर बिना पिस्तौल के कैसे काम चलेगा?' वह हँस पड़ी और अपने काम में जुटी रही। उसने हर चीज निकाल कर

साफ की और करीने से रखी। दो जोड़ी जूते भी निकाल कर सोफे के नीचे रख दिए। कुछ किताबें, कागजों का एक बंडल और कविताओं की एक छोटी सी कापी बड़े ढंग से, कोने में रखी तीन पायों वाली मेज पर सजा दी और कहा कि यह तुम्हारे पढ़ने लिखने की मेज है और दूसरी गोल मेज को उसने खाने की और चाय पीने की मेज बनाया। यह सब कर चुकने के बाद उसने कविताओं की कापी को अपने मुँह तक दोनों हाथों से ऊपर उठा लिया और उसके सिरों पर से होकर नेज्दानोव की ओर देखकर मुस्कुराती हुई बोली 'हम साथ-साथ कभी इसे पूरा पढ़ेंगे फुर्सत से, क्यों ठीक है न?

'यह कापी मुझे दो। मैं इसे जला दूँगा।' नेज्दानोव ने स्वर में बल देते हुए कहा। 'यह सब किसी काम की नहीं है।'

'अगर ऐसा है, तो फिर इसे अपने साथ क्यों लाए थे? नहीं, नहीं मैं तुम्हें इसे जलाने नहीं दूँगी। हालाँकि कहा यही जाता है कि लेखक हमेशा यही धमकी देते हैं लेकिन अपनी कृतियों को जलाते कभी नहीं। और जो भी हो मैं इसे अपने पास रखूँगी।'

नेज्दानोव ने विरोध करना चाहा लेकिन मरिआना कापी लेकर दूसरे कमरे में भाग गई और उसे छिपाकर खाली हाथ वापस लौट आई।

वह नेज्दानोव के पास बैठ गई, और फिर एकाएक तुरन्त उठ बैठी। तुम मेरे कमरे में नहीं गए अभी तक। क्या तुम उसे देखना नहीं चाहोगे? वह भी ऐसा ही अच्छा है। आओ मैं तुम्हें दिखाऊँ।

नेज्दानोव उठकर खड़ा हो गया और मरिआना के साथ उसके कमरे में गया। उसका कमरा जैसा उसने बताया था उसके कमरे से थोड़ा छोटा था लेकिन उसमें का फर्नीचर नया और साफ लगता था खिड़की में फूलों का गुलदस्ता रखा था और कोने में लोहे का एक पलंग।

नेग्दानाव थमा गया और भाड़ा एक तरफ घूम गया।

'जब मैं तुम्हें वैसा बताऊँगा '

'हाँ, तब ! लेकिन तुम खुद ही देख रहे हो कि तुम वैसा प्रेम मुझ से अभी नहीं करते ओह हाँ अल्योशा तुम सचमुच ही एक सच्चे आदमी हो। खैर, आओ अब हम दूसरे महत्वपूर्ण विषयों पर बातचीत करें।'

'लेकिन तुम जानती हो कि मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ मरिआना!

'मैं उस पर सन्देह नहीं करती ---और मैं प्रतीक्षा करूँगी। ओह, मैंने अभी तुम्हारी मेज पूरी तरह से ठीक नहीं की, और यह अभी कुछ बंधा रखा है कुछ कड़ा-कड़ा।

नेज्दानोव अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा।

'उसे रहने दो, मरिआना कृपया उसे मत छूओ।

मरिआना ने घूम कर उसकी ओर देखा और आश्चर्य से उसकी भौंहें तन गई।

क्या यह कोई रहस्य है ? कोई भेद ? तुम्हारा भी कोई भेद है ?'

'हाँ हाँ', नेज्दानोव ने कहा, और अनमने स्वर में, स्पष्टीकरण के लिए कहा, यह एक चित्र है।'

अनचाहे रूप से यह शब्द उसके मुँह से निकल गया। मरिआना जो कागज लिए खड़ी थी, सचमुच उसमें उसका वही चित्र था जो मार्केलाव ने नेज्दानोव को दिया था।

'एक चित्र ? उसने हर अक्षर पर जोर देते हुए पूछा। 'स्त्री का ? उसने वह बंडल उसे दे दिया, लेकिन नेज्दानोव ने सकपकाते हुए उसे लिया। वह उसके हाथ से खिसक ही पड़ा और नीचे गिरकर खुल गया।

ह यह तो मेरा चित्र है ! मरिआना ने शीघ्रता से बोलते हुए

रहा था कि हमें ऐसा व्यवहार करना चाहिए, जिससे किसी को सन्देह न हो—'

एकाएक मरिग्राना हँस पड़ी।

'मुझे याद आ गया, ग्रल्योशा, मैंने तुम दोनों को "समानीकृत जीव" कहा था।'

नेज्दानोव ने भी मुस्करा दिया, और उसने भी दुहराया 'समानीकृत' और फिर विचारों में डूब गया।

मरिग्राना भी ध्यानमग्न थी।

'ग्रल्योशा!' उसने कहा।

'क्या?'

'मैं समझती हूँ कि हम दोनों ही कुछ झिझक का अनुभव कर रहे हैं। नौजवान लोग, नवविवाहित', उसने स्पष्ट किया, 'अपनी सुहागरात के दिन उन्हें कुछ ऐसा ही अनुभव होता होगा—आनन्द, सन्तोष और कुछ-कुछ झिझक।'

नेज्दानोव मुस्कुराया—जबर्दस्ती की मुस्कान।

'तुम अच्छी तरह जानती हो मरिग्राना, कि हम उन ग्रर्थों में नवदम्पति नहीं हैं।

मरिग्राना उठकर नेज्दानोव के ठीक सामने खड़ी हो गई।

'यह तुम पर निर्भर करता है।

'सो कैसे?'

'ग्रल्योशा, तुम जानते हो कि जब तुम ईमानदारी से मुझ से कहोगे—और मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगी, क्योंकि तुम सचमुच एक ईमानदार आदमी हो—जब तुम मुझे बताओगे कि तुम मुझे वैसा प्रेम करते हो वैसा प्रेम जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के जीवन पर अधिकार देता है—जब तुम मुझे यह बताओगे, मैं तुम्हारी हो जाऊँगी।'

नेज्दानाव थमा गया और आज़ा एक तरफ घूम गया।

'अब मैं तुम्हें कैसा बताऊँगा ~ '

'हाँ, अब ! लेकिन तुम खुद ही देख रहे हो कि तुम वैसा प्रेम मुझसे अभी नहीं करते ओह, हाँ, अल्योशा तुम सचमुच ही एक सच्चे आदमी हो। ख़ैर, आओ अब हम दूसरे महत्वपूर्ण विषयों पर बात चीत करें।

'लेकिन तुम जानती हो कि मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ मरियाना'

'मैं उस पर सन्देह नहीं करती ""और मैं प्रतीक्षा करूँगी। ओह मैंने अभी तुम्हारी मेज़ पूरी तरह से ठीक नहीं की और यह अभी कुछ बंधा रखा है, कुछ कड़ा-कड़ा।

नेज्दानोव अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा।

'उसे रहने दो मरियाना कृपया उसे मत छूना।'

मरियाना ने घूम कर उसकी ओर देखा और आश्चर्य से उसकी भौंहें तन गईं।

'क्या यह कोई रहस्य है ? कोई भेद ? तुम्हारा भी कोई भेद है ?'

'हाँ हाँ', नेज्दानाव ने कहा, और अनमने स्वर में, स्पष्टीकरण के लिए कहा 'यह एक चित्र है।

अनचाहे रूप से यह शब्द उसके मुँह से निकल गया। मरियाना जो कागज लिए खड़ी थी, सचमुच उसमें उसका वही चित्र था जो मार्केलाव ने नेज्दानोव को दिया था।

'एक चित्र ? उसने हर अक्षर पर ज़ोर देते हुए पूछा। 'स्त्री का ? उसने वह बंडल उसे दे दिया लेकिन नेज्दानोव ने लपकाते हुए उसे लिया। वह उसके हाथ से खिसक हो पड़ा और नीचे गिरकर खुल गया।

ऐं 'यह तो मेरा चित्र है ! मरियाना ने शीघ्रता से बोलते हुए

कहा। 'तो मुझे अपना चित्र लेने का तो अधिकार है।' उसने उसे नेज्दानोव से ले लिया।

'यह तुमने बनाया है?'

'नहीं' मैंने नहीं।'

'तब किसने? मार्केलोव ने?'

'तुमने सही अनुमान लगा लिया'' उसी ने।

'यह तुम्हें कैसे मिला?'

'उसने ही मुझे दिया।

'कब?'

नेज्दानोव ने मरिआना को बताया कि कब और कैसे मार्केलोव ने उसे यह चित्र दिया था। जब वह बोल रहा था तो मरिआना ने पहिले तो उसकी ओर देखा, फिर चित्र की ओर और दोनों के मन में एक ही विचार उत्पन्न हुआ 'अगर वह कहीं इस कमरे में होता तो उसे कहने का अधिकार होता।' ''लेकिन न मरिआना ही और न नेज्दानोव ने ही यह विचार जोर से प्रगट किया सम्भवतः इसलिए कि दोनों ही एक दूसरे के विचारों को जानते थे।

मरिआना ने चित्र को बड़ी सावधानी से फिर कागज में लपेट कर मेज पर रख दिया।

'वह अच्छा आदमी है। उसने बुदबुदाया अब वह कहाँ है?

कहाँ? अपने घर। मुझे कल या परसों, उससे मिलने और उससे किताबें और पर्चे लेने जाना है। वह उन्हें मुझे स्वयं ही देना चाहता था लेकिन जब मैं वहाँ से चलने लगा तो शायद वह उन्हें देना भूल गया।

'और क्या तुम समझते हो अल्योशा कि यह चित्र देकर उसने सब कुछ त्याग दिया'' बिल्कुल सब कुछ?'

'मैं तो ऐसा ही समझा।'

'और तुम्हें उम्मीद है कि वह तुम्हें घर मिल जायगा ?'

'हां।'

ओह!—मरियाना ने आँखें झुका लीं और हाथ भींच कर लिए। ओह तात्याना हमारे लिए भोजन ला रही है' उसने एकाएक कहा! 'कैसी भली औरत है यह ?'

तात्याना कांटा-छुरी, मेज के रुमाल और प्लेट तथा तश्तरियाँ लेकर आई! वह मेज पर चीज लगाते समय बताती जा रही थी कि इस समय फैक्टरी में क्या हो रहा है।

मालिक मास्को से रेल द्वारा आया और सारी फैक्टरी में घूमता रहा, लेकिन जानता जानता कुछ भी नहीं है, वह सिर्फ राब गाठने के लिए ऐसा करता है, सिर्फ दिखाने के लिए। लेकिन वासिली फ्रेदोविच उससे गाद के बच्चे की तरह व्यवहार करता है। *मालिक ने सोचा था* कि वह उसे थोड़ा डांट पिलाएगा, लेकिन वासिली फेदोविच ने पहिले से ही उसे कस दिया 'मैं यह सब अभी छोड़ दूँगा! उसने कहा तो तुरन्त ही महाशय ने अपना स्वर बदल दिया। अब वे दोनों भोजन कर रहे हैं, साथ-साथ मालिक के साथ उसका कोई साथी भी आया है' उसने सारे काम को बड़ा पसन्द किया है। वह बेहद शान्त रहता है और अपना सिर हिलाता है, उससे लगता है कि वह भी कोई रईस आदमी है। और वह मोटा भी है, बहुत मोटा! मास्को का एक विशिष्ट 'खून चूसा!' आह, यह सही कहावत बिल्कुल सही है 'रूस के हर हिस्से से माल मास्को की ओर है, हर चीज लुढ़क कर वहीं जाता है।'

'यह सब तुम कैसे देख-समझ लेती हो! मरियाना ने पूछा।

'क्या मेरी आँखें तेज हैं, तात्याना ने कहा। आओ तुम्हारा भोजन तैयार है। तुमको इससे हित होगा। मैं यहाँ थोड़ी देर बैठूंगी, और तुम्हें देखूंगी।

मरिग्राना और नेज्वानाव खाना-खाने बैठे तारयाना खिड़की की चौखट का सहारा लेकर खड़ी रही और अपना गाल अपने हाथ पर टिका लिया।

'मैं तुम्हें देख रही हूँ' उसने फिर कहा 'और कैसे मासूम हो तुम दोनों! तुम्हें देखना इतना आनन्ददायक है कि मेरा दिल धड़कने लगता है! और मेरे प्यारो! तुम लोग अपनी शक्ति से अधिक बड़ा भार अपने ऊपर ले रहे हो! तुम्हीं जैसे लोगों को ही चंगुल में फँसाने के लिए, ज़ार के दरोगा हरदम उत्सुक रहते हैं।

'हमारी भली तारयाना, हमें खामखां डराया मत', नेज्वानोव ने कहा। 'तुम यह कहावत जानती हो अगर तुम कुकुरमुत्ता होना चाहते हो तो तुम्हें सबके साथ झोलची में जाना ही पड़ेगा।

'जानती हूँ जानती हूँ, लेकिन आजकल झोलचियाँ इतनी गहरी हैं कि उनमें से बाहर सरक आना कठिन है।'

'तुम्हारे कोई बच्चा है? मरिग्राना ने बात बदलने के लिए पूछा।

'हाँ एक लड़का। वह स्कूल जाता है! एक छोटी सी लड़की भी थी, लेकिन वह अब नहीं रही। उसके साथ एक दुघटना होगई, वह पहिए के नीचे आगई। और अगर वह तुरन्त मर जाती तो भी अच्छा होता, लेकिन नहीं, वह बहुत दिनों तक जीती रही तकलीफ़ सहती रही, तभी से मेरा दिल बड़ा कमज़ोर होगया है। इससे पहिले में वैसी ही कठोर थी जैसे पेड़।

'क्या क्या तुम अपने पति पवेल यगोरिच का प्रेम नहीं करतीं?'

'ओह! यह तो बात ही और है एक लड़की की भावना। तुम अपनी कहो, क्या तुम अपने आदमी का प्रेम करती हो?'

'हाँ!'

'बहुत!'

'हाँ।

'हाँ?   ', तात्याना ने नग्धानाथ की ओर देखा और तब मरिआना की ओर, पर कहा कुछ भी नहीं।

मरिआना ने फिर बात बदली। उसने तात्याना को बताया कि उसने सिगरेट पीना बन्द कर दिया है। तात्याना ने उस पर प्रसन्नता प्रगट की। तब मरिआना ने उससे फिर कपड़ों के बारे में पूछा और उसे याद दिलाया कि उसने भोजन बनाना सिखाने का वायदा किया था।

'ओह, और एक बात और क्या तुम मेरे लिए कुछ मोटा मामूली रा सा सकती हो? मैं अपने लिए कुछ मोजे अपने आप बनाना चाहती हूँ — बिल्कुल सादे।

तात्याना ने जवाब दिया कि सब कुछ धीरे-धीरे हो जायगा और साफ करके बरतनों को बटोर कर वह शान्त स्थिर मुद्रा में कमरे से गई।

'अब बताओ क्या किया जाय', नग्धानाथ की ओर उन्मुख होकर मरिआना ने पूछा और उसे उत्तर का अवसर न देकर बोली, 'क्या चाहते हो? जब हमारा वास्तविक काम कल से ही शुरू होगा तो हम यह शाम साहित्य चर्चा में क्या न लगाएँ? आओ तुम्हारी कविताएँ पढ़ें! मैं बड़ी सख्त आलोचिका सिद्ध हूँगी।

काफ़ी देर तक तो नेज्धानाव राजी न हुआ ...खैर बाद को वह मान गया और अपनी कविताएँ सुनाने लगा। मरिआना उसके पास बैठी रही और पढ़ते समय उसका चेहरा देखती रही। उसने ठीक ही कहा यह सचमुच ही बड़ी सख्त आलोचिका सिद्ध हुई। कुछ कविताएँ उसे अच्छी लगीं उसने छोटे गीत पसन्द किए, जिनमें जैसा कि उसने कहा उपदेशात्मकता नहीं थी। नेज्धानाव ने पढ़ा भी अच्छी तरह नहीं था। गा कर, जोर से पढ़ने का उसमें उत्साह ही नहीं था। पर वह ऐसे भी नहीं पढ़ना चाहता था कि पढ़ने से नाम हो न प्रगट हो मत हुआ

२०

वह बाहर चली गई लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसने दरवाजा थोड़ा सा खोला और झांक कर बोली 'नमस्ते !' और फिर और कोमल स्वर में, 'नमस्ते !' और फिर चटखनी बन्द करली।

नज्दानोव सोफे पर पड़ गया और उसने अपने हाथों से आँखें ढक लीं ... थोड़ी देर बाद ही वह तेजी से उठा, उसके दरवाजे तक गया, और खटखटाया।

'क्या है ! भीतर से आवाज आई।

'कल तक नहीं, मरियाना ... बल्कि कल !'

'कल,' कोमल मधुर स्वर ने उत्तर दिया।



उन्तीस

दूसरे दिन सवेरे फिर नेज्दानोव ने मरियाना के कमरे का दरवाजा खटखटाया।

उसके पूछने पर कि कौन है? उसने कहा, 'मैं हूँ। क्या तुम बाहर आ सकती हो?'

एक मिनट ठहरो ... अभी आई।'

वह बाहर आई, और नेज्दानोव को देखते ही आश्चर्य से चीख पड़ी। पहिले क्षण तो वह उसे पहिचान ही नहीं सकी। उसने एक लम्बा घाघरेन्दार पीले रंग का सूती कोट पहन रखा था, जिसमें छोटे-छोटे बटन लगे थे और उसके ऊपर एक ऊँची सी वास्केट पहिन रखी थी, उसने अपने बाल रूसी ढंग से बीच में से माँग निकाल कर काढ़े थे, गर्दन में नीले रंग का रूमाल लपेट रखा था, हाथ में एक टोप था, जिसका ऊपरी भाग टूटा हुआ था, पैरों में उसने बिना पॉलिश के ऊँचे जूते पहिन रखे थे।

'ओह, तुमने तो गजब ही कर दिया!' मरियाना ने चीखते हुए कहा, 'कैसे अजीब और भयानक लगते हो!' और उस

झपटकर गाढ़ आलिंगन में कस लिया और जोर से उसे चूम लिया। 'लेकिन ऐसा भेष क्या बना लिया है तुमने? तुम एक गरीब छोटे दुकानदार लगते हो या फेरी वाले, या फिर निकाले हुए घरेलू नौकर से लगते हो। यह धारीदार कोट क्यों पहिन रखा है, किसानों की फतूही क्यों नहीं पहिनी?'

'यही तो बात है,' नेख्लानोव ने कहना शुरू किया, जो अपनी वेश भूषा में सचमुच एक फेरी वाला लग रहा था और स्वयं भी ऐसा ही महसूस करने के कारण वह संकोच और पीड़ा का अनुभव कर रहा था। वह इतना अटपटा और संकोच का अनुभव कर था कि अपने सीने पर वह अपनी उँगलियाँ ऐसे चला रहा था, जैसे मानों अपने को झाड़ रहा हो।

'फतूही में तो मैं तुरन्त पहचान लिया जाता, पवेल ने ऐसा ही कहा, और यह कपड़ा उसके बक्सा में ऐसा लगता है जैसे मैंने कभी और कोई कपड़ा पहना ही न हो!

'क्या तुम सचमुच अभी बाहर जा रहे हो काम शुरू करने के लिए?' मरिआना ने गहरी दिलचस्पी से पूछा।

हाँ, मैं कोशिश करूँगा, यद्यपि वास्तव में '

'बड़े भाग्यशील हो!' मरिआना ने कहा।

यह पवेल सचमुच ही बड़ा विचित्र आदमी है' नेख्लानोव कहता गया वह नजर डालते ही सब कुछ जान समझ लेता है लेकिन एकाएक ऐसी मुद्रा बना लेता जैसे उसे इस सबसे कोई सरोकार ही नहीं है और किसी बात में नहीं पड़ेगा। यह स्वयं उद्देश्य के लिए काम करता है—और हमेशा ही उसका मखौल भी उड़ाता रहता है। उसने मेरे लिए मार्केलाव के यहाँ से पुस्तिकाएँ और पर्चे ला दिए हैं, वह उसे जानता है और उसे सर्जी मिहाइलोविच नाम से पुकारता है। लेकिन सालामिन के लिए वह आग-पानी से भी लंघ जाने को तैयार रहता है।

मौर तात्याना का भी यही हाल है' मरिश्राना ने कहा। 'क्या बात है कि सभी लोग उस इतनी श्रद्धा करते हैं ?

नेजधानोव ने उत्तर नहीं दिया।

पवेल म कैसी पुस्तिकाएँ लाकर दी है ?' मरिश्राना ने पूछा।

'मोह। वही हमेशा वाली कोई नयी नहीं। 'चार भाइयों की कहानी'' और कुछ और ऐसी ही साधारण जानी हुई बातें। खैर, न कुछ म तो अच्छी ही हैं।

मरिश्राना ने इधर उधर उत्सुकता स देखा।

लेकिन तात्याना का क्या हो गया ? उसने तो तड़के ही माने का वायदा किया था।

'वह हाजिर है' तात्याना ने हाथ में एक छोटा सा बंडल लिए कमरे में आते हुए कहा। वह दरवाजे पर खड़ी थी और उसने मरिश्राना की बात सुन ली थी।

'तुम्हें जल्दी करने की कोई ऐसी जरूरत नहीं है यह कोई ऐसी चीज नहीं है।

मरिश्राना उसस मिलन क लिए उसकी ओर लपकी।

'तुम स भाइ !'

तात्याना ने अपन हाथ का बंडल थपथपाया।

हर चीज इसमें है बिल्कुल तैयार' ""तुम्हें बस पहिनने की दर है और नया वश धारण कर बाहर जाना भर है, लोगबाग तुम्हें देखते रह जायेंगे।

मोह, इधर आओ इधर आओ तात्याना आसोपावना मेरी प्यारी ~ ।

मरिश्राना उस अपने कमरे में ल गई।

नेजधानोव अकेला रह गया। उसन कमरे में सभी सहमी चाल स

दो तीन चक्कर लगाए। (किसी कारण से उसने कल्पना कर रखी थी कि छोटे दुकानदार कुछ इसी तरह से चलते होंगे), उसने अपनी आस्तीन और टोप को ध्यान से सूंघा, और उसकी भौंहें चढ़ गईं। उसने खिड़की के पास लटके एक छोटे शीशे में अपनी सूरत देखी और अपने सिर को एक झटका दिया। वह सचमुच बड़ा अनाकर्षक लग रहा था। 'चलो यह और भी बढ़िया है', उसने सोचा। फिर उसने कुछ पर्चे लेकर अपने घाघरे की जेबा में ठूँस लिए और छोटे दुकानदार के बोलने के लहजे का अनुकरण करते हुए कुछ शब्द कहे। 'ठीक, मेरा ख्याल है, वह ऐसे ही बोलते होंगे, उसने सोचा, 'लेकिन इस सब अभिनय की क्या क्या जरूरत है? मेरी वेषभूषा स्वयं ही प्रगट कर देगी कि मैं क्या हूँ। तभी उसे एक जर्मन कैदी की याद आ गई जो सारे रूस को एक सिरे से दूसरे सिरे तक पार करता हुआ भागा था और वह रूसी भाषा भी टूटी-फूटी ही बोल पाता था, लेकिन धन्यवाद है एक व्यापारी की टोपी का जिस पर बिल्ली की खाल चढ़ी थी और जो उसने एक शहर में खरीद ली थी, उसकी वजह से हर जगह उसे व्यापारी ही समझा गया और वह सीमा पार करने में सफल हो गया।

उसी समय सोलोमिन ने कमरे में प्रवेश किया।

'ओहो! अलेक्सी भाई, उसने चीखते हुए कहा, तुम अपना पार्ट याद कर रहे हो! माफ करना मित्र इस वेश में तुम्हें देखकर कोई तुमसे सम्मानपूर्वक नहीं बोल सकता।'

'ओह, कृपया मैं यही तो चाहता हूँ कि तुम मुझे इसी नाम से पुकारो।

'लेकिन यह तो अभी बहुत जल्दी है। शायद तुम अपने को अभ्यस्त करना चाहते हो! तो ठीक है। लेकिन बाहर जाने के लिए अभी तुम्हें थोड़ा रुकना होगा, अभी मेरा मालिक गया नहीं है। वह अभी पड़ा सो रहा है।'

'मैं बाद में बाहर निकलूँगा।' नेज्दानोव ने उत्तर दिया', जब तक

मुझे पार्टी की कुछ हिदायतें नहीं मिलती तब तक मैं यहीं आस-पड़ोस में जाकर किसानों से मिलूँ-जुलूँगा।

'यह तो ठीक है। लेकिन एक बात मैं कहना हूँ तुमने अमक्सी नाइ' 'मैं तुम्हें अलक्सी कह सकता हूँ न?' जैसी तुम चाहो तो' नेज्धानोव ने मुस्कुराते हुए कहा।

'नहीं, बहुत नहीं पड़ना चाहिए। सुनो? कहा जाता है कि अच्छी सलाह धन से भी अच्छी होती है। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे पास पर्चे और पुस्तिकाएँ भी आगई हैं तुम उन्हें जिसे चाहे बाँट सकते हो—वस कारखाने में नहीं।

'क्यों?

'क्योंकि पहिले तो यह तुम्हारे लिए खतरा मोल लेना होगा और फिर दूसरी बात यह कि मैंने अपने मालिक से यह वायदा किया है—कि यहाँ कोई गड़बड़ी नहीं होगी। कारखाना उसका है, तुम जानते हो और तीसरी बात यह कि हमने यहाँ कुछ शुरू कर दिया है—स्कूल वगैरह और हो सकता है तुम्हारे इस काम से वह सब नष्ट हो जाय। जैसा चाहो करो और जहाँ जाना चाहो जाओ—मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा लेकिन मेरे कारखाने के मजदूरों को हाथ मत लगाना।

'सावधानी कभी बुरी नहीं है 'क्यों ठीक बात है न?' नेज्धानोव ने द पपूर्ण हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।

सोलोमिन के मुख पर वही सुपरिचित दीर्घ मुस्कान व्याप्त हो गई।

'यही तो अलैक्सी भाई यही तो, वह कभी बुरी नहीं होती। पर यह कौन है? और हम कहाँ हैं?'

अन्तिम वाक्य मरियाना को देखकर कहा गया था, जो अपने कमरे के दरवाजे पर एक पुरानी अनेक बार की धुली छींटे की साधारण फ्राक पहिन, कंधे पर पीले रंग का रूमाल डाल और सिर पर लाल

रूमाल बाँधे खड़ी थी। सरल स्नेह पूर्ण प्रशंसा में आह्लादित तात्याना उसकी पीठ के पीछे से झांक रही थी। मरिआना इस सादी पोशाक में और भी कम उम्र की और सुन्दर लग रही थी। यह पोशाक उसे नेज्दानोव के लम्बे घाघरे दार कोट की अपेक्षा अधिक भा रही थी।

'वासिली फेदोतिच कृपया हँसो मत उसने कहा और लाज से गुलाबांस के फूल सी लाल हो उठी।

कैसा सुन्दर जोड़ा है ?' तात्याना ने ताली बजाते हुए कहा। ओ, मेरी प्यारी महीला, ओ नाराज मत हो, तुम बड़ी अच्छी हो, बड़ी ही अच्छी—मेरी नन्ही मुन्नी चिड़ो क्या कहने हैं तुम्हारे।

'और, सचमुच ही यह बड़ी सुन्दर लग रही है', नेज्दानोव ने सोचा, 'ओह! मुझे यह कितनी प्यारी लगती है।'

'और जरा देखो तो इसकी बात,। इसने अपनी सोने की अंगूठी मुझे देदी है और मेरी चाँदी की खुद लेली है। तात्याना ने कहा।

'जनता की लड़कियाँ कहीं सोने की अगूँठी पहनती होंगी', मरिआन ने कहा।

तात्याना ने निःश्वास भरी।

'उसे मैं सुरक्षित रखूँगी।

'अच्छा बैठ तो जाओ तुम दोना सोलोमिन ने कहा , जो निरन्तर मरिआना की ओर अपने सिर को थोड़ा झुकाए हुए देख रहा था, 'पुराने जमाने में लोग-बाग कहीं यात्रा पर जाने से पहिले थोड़ी देर साथ बैठा करते थे और तुम दोनों के सामने एक दीर्घ और कठिन मार्ग है।

मरिआना जो अब भी लाज से सिंदूरी हो रही थी, बैठ गई, नेज्दानोव भी बैठ गया और सोलोमिन भी और सबके अन्त में तात्याना भी कमरे के एक किनारे पर रखे लकड़ी के एक टुकड़े पर बैठ गई।

मालामिन ने यारा-यारी से सब की ओर देखा

आओ पीछे हटो।
और देखो।
बैठे हैं यहाँ हम सब
कितनी अच्छी तरह ‑ ,

उसने अपनी आँखों को नचाते हुए कहा और एकाएक ठहाका मार कर हँस पड़ा इतना कि बुरा मानने के बजाय सब मधुर आनन्द से विभोर हो उठे।

लेकिन नज्मानोव एकाएक उठ बैठा।

'मैं तो चला', उसने कहा, 'यह सब बड़ा आनन्द दायक है यद्यपि—इन फंदों में बस थोड़ा सा लगता है। तुम चिन्ता मत करो', उसने सोलामिन की ओर उन्मुख होकर कहा 'तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे मजदूरों को नहीं छूऊँगा। मैं जरा आस-पड़ोस के देहात में जाकर कुछ बात चीत कर आऊँ बस, और वापस आ जाऊँगा और फिर आकर सारा हाल बताऊँगा तुम्हें मरियाना बात है अगर कोई बताने की बात हुई तो शुभ कामना के रूप में अपना हाथ दो जरा मुझे।'

'एक प्याला चाय भी गुण करेगी' तात्याना ने कहा।

नहीं! अगर पीने की तबियत होगी तो कहीं किसी सराय या होटल में बैठ कर पी लूँगा।

तात्याना ने अपना सिर हिलाया।

'आजकल सराय और होटल तो सड़कों के किनारे ऐसे भरे पड़े हैं जैसे भेड़ की खाल पर मक्खियाँ। गाँव भी बड़े बड़े हैं तात्या तोनो'

अच्छा अलविदा फिर मिलने तक क्या मैं तुम्हारे लिए शुभ कामनाएँ कर सकता हूँ', नेज्दानोव ने छोटे दुकानदार का पार्ट अदा

करते हुए कहा। लेकिन वह दरवाजे पर पहुंचा ही था कि गेलरी में से निकलकर पवेल ठीक उसके नाक के नीचे आकर खड़ा होगया और एक लम्बी पतली मूठदार छड़ी उसके हाथ में थमा दी, और बोला 'कृपया इसे साथ ले जाइए अलैक्सी दिमित्रिच चलते समय इस पर झुक कर चलना और छड़ी को अपने से जितनी दूर रखोगे उतना ही ज्यादा प्रभाव पड़ेगा।'

नेज्धानोव ने छड़ी लेली और बिना बोले बाहर चला गया, और पवेल उसके पीछे-पीछे। तात्याना भी जाने को हुई, लेकिन मरियाना ने उसे रोक लिया।

'रुको थोड़ी देर, तात्याना ग्रोसीपोवना', मुझे तुम्हारी जरूरत है।'

'लेकिन मैं अभी आई समोवर लेकर। तुम्हारा कामरेड बिना चाय पिए ही चला गया—वह इतनी जल्दी में था' लेकिन तुम क्या बाचत रहती हो ? धीरे-धीरे सब बातें साफ होजायंगी।'

तात्याना बाहर चली गई, सोलोमिन भी खड़ा होगया। मरिग्राना उसकी ओर पीठ करके खड़ी थी, अब वह उसकी ओर घूमी—यह देखकर कि बड़ी देर तक वह चुप है—तो उसने देखा कि वह एकटक उसकी ओर विभोरता से देख रहा है, ऐसे भाव से जैसा उसने उसकी आंखों में पहिले कभी नहीं देखा था, एक जिज्ञासा, कुछ जानने का भाव, लगभग कौतूहल का। वह फिर सकुचा गई और लजा गई। और सोलोमिन भी अपनी चोरी पकड़ जाने पर लजा गया और हमेशा से अधिक तेज आवाज में बोलने लगा

'खूब, बहुत खूब' तुमने अपने नए रास्ते पर चलना आरम्भ कर दिया आखिर!'

'बड़ा शानदार आरम्भ है, वासिली फेद्रोविच। इस आरम्भ कैसे कोई कह सकता है। फिर भी कभी-कभी मुझे बड़ा बेतुका सा लगता

है। अलैक्सी ने ठीक ही कहा था, तुमलोग सचमुच ही स्वांग का अभिनय कर रहे हैं।

सोलोमिन फिर अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

'लेकिन मरिआना मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ ... तुमने अपने इस नए आरम्भ की कैसी कल्पना मन में कर रखी थी ? इस आरम्भ के बारे में यह पेशबन्दी बनाकर उस पर झंडा गाड़ कर और 'प्रभातम्य के नामपर हुर्रा" चिल्ला देना भर ही काफी नहीं है। और न यह स्त्रियों का ही काम है। तुम अब आज किसी लुकेर्या को कुछ भली बात सिखाना शुरू करोगी, और यह काम तुम्हारे लिए कठिन होगा क्योंकि लुकेर्या जल्दी तुम्हारी बात समझेगी नहीं और वह तुमसे शर्माएगी और सोचेगी कि तुम जो कुछ सिखाना या पढ़ाना चाहती हो उससे उसका तो कोई लाभ होना नहीं और दो या तीन हफ्ते बाद तुम किसी और लुकेर्या से सर मारोगी और या तो किसी बच्चे को पढ़ाओगी या धो-धा, इ-ई, या उसके कपड़े धोओगी या बीमारों को दवा बाँटोगी यह होगा तुम्हारा आरम्भ।'

'लेकिन यह काम तो धार्मिक संस्थाओं की समाज सेविकाएँ पहिले से ही कर रही हैं, वासिली फेदोतिच ! तब फिर उसकी क्या जरूरत है ? मरिआना ने अपनी ओर इशारा करते हुए एक अस्पष्ट भंगिमा से बात कही। 'मैंने तो कुछ और ही सपने देखे थे।'

'तुम त्याग करना चाहती थीं, अपना बलिदान करना चाहती थी ?'

मरिआना के नेत्र चमक उठे।

'हाँ' हाँ 'हाँ !'

और नेज्दानोव ?

मरिआना ने अपने कन्धे सिचकाए।

'आप हमेशा इतने चुप रहते हैं पर मुझसे बात करने में इतने मुखर हो जाते हैं सो क्यों? आप नहीं जानते कि इस सबसे मुझे कितना आनन्द होता है।'

'क्यों है ऐसा?—सोलोमिन ने उसके दोनों छोटे मासूम कोमल हाथ अपने बड़े और खुरदुरे हाथों में ले लिए—क्यों?—हो सकता है इसलिए, कि तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो। नमस्ते।'

वह चला गया मरियाना थोड़ी देर तक तो वहीं स्थिर खड़ी उसको जाते देखती रही और सोचती रही, फिर तात्याना के पास चली गई, वह अभी तक समोवर लेकर नहीं आई थी। उसके साथ जाकर उसने चाय पी बतन मांजे और मुर्गी के बच्चों का घेरा और एक छोटे बच्चे के बालों की लटों का भी कथा करके सुलझाया।

भोजन के समय तक वह कमरे में वापस आगई। उसे नेज्दानोव का अधिक देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। वह लौटा—थका हारा और धूलधूसरित। और आकर सोफा पर धड़ाक से गिर पड़ा। वह तुरन्त उसके बगल में बैठ गई।

'वाला, बोलो! मुझे बताओ!

तुम्हें वह दो लाइनें याद हैं, उसने टूटती सी आवाज में कहा

''यदि यह इतना दुखद न होता तो, निश्चय ही यह सब पूरी तरह हास्यास्पद हो होता।'

'तुम्हें याद है?'

हाँ, याद है।

'मेरे आज के अनुभव पर यह पंक्तियाँ बिल्कुल फिट बैठती हैं। लेकिन नहीं! निश्चित रूप से इसमें उपहास का अंश अधिक है। पहिली बात तो यह कि मैं पक्की तरह से यह समझ गया हूँ कि अभिनय करने से आसान काम कोई नहीं किसी ने मुझ पर सन्देह करने की कल्पना तक नहीं की। लेकिन एक बात मैंने पहिले से नहीं सोची थी—कि एक कहानी गढ़न की भी तो जरूरत थी" "व पूछते

है—तुम कहाँ से आ रहे हो, क्या करते हो—और जवाब के लिए अपने पास कुछ नहीं। खैर यह भी कोई ऐसी बात नहीं। सिर्फ किसी शराबखाने में शराब पीने का प्रस्ताव भर करने की देर है और जितना चाहो झूठ बोला।

और तुमने झूठ बोला ?' मरियाना ने पूछा।

हाँ मैंने झूठ बोला और जितना अच्छी तरह हो सका उतना झूठ बोला। और दूसरी बात यह है कि जितने भी लोगों से मैंने बातें की वे सभी असन्तुष्ट हैं, पर तमाशा यह कि कोई भी यह सोचने की तकलीफ करने को तैयार नहीं कि इस असन्तोष को दूर कैसे किया जाय। लेकिन प्रचार में मैं बड़ा अनाड़ी साबित हुआ हूँ। दो पुस्तिकाएँ मैंने यों ही एक कमरे में डाल दीं—और एक गाड़ी में। उनका परिणाम क्या निकलेगा ईश्वर ही जाने! मैंने चार आदमियों को भी पुस्तिकाएँ दीं। एक ने पूछा कि क्या यह कोई धार्मिक पुस्तक है, और फिर नहीं। दूसरे ने कहा कि वह पढ़ना नहीं जानता और चूँकि उसके कवर पर चित्र था सो वह उसे अपने बच्चे के खेलने के लिए ले गया, और तीसरे ने शुरू में तो मुझसे सहमति प्रगट की आप सही कहते हैं बिल्कुल सही है। और फिर एकाएक बकने लगा अजीब ढंग से और उसने भी अन्त में किताब नहीं ली। चौथे ने जरूर एक किताब लेली और मुझे उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद भी दिया लेकिन मैं विश्वास से जानता हूँ कि जो कुछ मैंने उससे कहा, वह सब भी उसकी समझ में खाक-धूल नहीं आया होगा। फिर कम्बख्त एक कुत्ते ने मुझे काट लिया एक किसान औरत ने अपनी झोंपड़ी के दरवाजे पर से ही मुझ पर एक जलता चैला फेंका और गालियों की बौछार कर दी बदमाश, शैतान गुण्डे, मास्को के लोफर नासपीटे, तेरा नाश हो! कहीं डूबने को भी जगह नहीं है तुझे?" और एक सैनिक भी जो छुट्टी आया हुआ है मुझ पर चिल्ला कर पड़ा, 'ठहरो तो अभी मैं तुम्हें गोली मारता हूँ, मेरे दास, और मजा यह कि उसने मेरे ही पैसा से शराब पी थी।'

'और कुछ ?'

'और कुछ ? मेरी एड़ी में एक छाला पड़ गया है। मेरा एक जूता बुरी तरह दबा है। और अब मैं भूखा हूँ, शराब की तेजी से मेरा सिर दर्द के मारे फट कर दो फाँप हुआ जा रहा।'

'तो क्या तुमने ज्यादा पीली है ?'

'नहीं, कोई बहुत ज्यादा तो नहीं—सिर्फ थोड़ी थोड़ी साथ देने के लिए, लेकिन मैं पाँच शरायखानों में गया। लेकिन वह सब गन्दियी! आफ। मैं उसे सहन नहीं कर सकता—वह गन्दी वोडका—जरा भी नहीं। लेकिन हमारे किसान यह वोडका भी कैसे लेते हैं, मेरी तो समझ से बाहर की बात है। अगर सबके समान होने के लिए वोडका पीना ही जरूरी है तो भाई मुझे तो माफ किया जाय।

'तो किसी ने तुम पर सन्देह नहीं किया ?'

'किसी ने भी नहीं। हाँ बस एक सराय वाला जरूर था—तगड़ा, पीला कंजी आँख वाला—उसने तो जरूर मुझे कुछ कुछ सन्देह भरी दृष्टि से देखा था। मैंने उसे अपनी पत्नी से कहते सुना इस लाल बालों वाले छोकरे पर जरा नजर रखना उस भेंडे पर।' (तब तक मैं नहीं जानता था कि मेरी आँख भेंड़ो है) 'यह कोई धूत है। देख रही हो कैसा मनन करता हुआ सा पी रहा है ?' उस प्रसंग में मनन करता हुआ सा' से क्या मतलब मैं नहीं समझा लेकिन यह कोई भली बात तो होगी नहीं यह निश्चय है। रिवाइजिंग इन्सपैक्टर' में कुछ कुछ गोगोल के 'मोबीटोन' की शैली में, तुम्हें याद है ? शायद उसने यह सब इसलिए कहा क्योंकि मैंने वोडका मेज के नीचे लुढ़का दी थी। एक कलाप्रेमी और सौन्दर्य प्रेमी व्यक्ति के लिए यथार्थ जीवन से सम्पर्क स्थापित करना बहुत कठिन है, सचमुच बहुत ही कठिन।

कोई बात नहीं अगली बार सही,' मरियाना ने नेज्धानोव को सान्त्वना दी। 'लेकिन मुझे खुशी है कि तुम अपने प्रथम प्रयास को विनोदी रूप में ले रहे हो तुम सचमुच उकताए नहीं ?'

'नहीं मैं उकताया नहीं, सच बात तो यह है कि मजा आया। लेकिन यह निश्चय है कि अब मैं इस सब पर सोचना शुरू करूँगा और जितना सोचूँगा उतना ही दुख और पीड़ा का अनुभव करूँगा।'

'नहीं, नहीं! मैं तुम्हें सोचने ही नहीं दूँगा। अच्छा अब मेरी सुनो मैंने क्या नया किया। भोजन अभी आता ही होगा, तब तक मैं तुम्हें बताऊँ कि मैंने बर्तन माँजे खूब साफ चमाचम वही बर्तन जिनमें तात्याना ने सूप बनाया था मैं तुम्हें सब विस्तार के साथ खाते समय बताऊँगी।

और उसने ऐसा ही किया भी। नज्यानोव उसकी बात सुनता रहा और उसकी ओर टकटकी बाँधे ऐसे देखता रहा देखता रहा मि मरियाना को बीच में कई बार बात करना बन्द करके उससे पूछना पड़ा कि वह ऐसे क्या उसकी ओर देख रहा है लेकिन वह मौन रहा।

भोजन के बाद मरियाना ने जोर जोर से कुछ पढ़ने का प्रस्ताव किया लेकिन उसने पहिला पृष्ठ ही समाप्त किया कि नेज्दानोव एकाएक उठ बैठा और उसके पैरों को अपने हाथों के आलिंगन में ले भावावेग में न जाने क्या-क्या कहता रहा—बेतरतीब, असंगत! मैं मरजाना चाहता हूँ मैं जानता हूँ कि मैं जल्दी ही मर जाऊँगा' ... वह हिली तक नहीं और न उसे रोका ही, उसने चुपचाप शान्ति से उसके आकस्मिक आलिंगन में अपने को समर्पित कर दिया और प्यार भरी दृष्टि से उसकी ओर देखती भी रही उसके सिर को सहलाती रही। उसके कपड़ों की सिकुड़न में उसका सिर निरन्तर हिल रहा था। मरियाना के शान्त स्निग्ध व्यवहार ने उसे बड़ा प्रभावित किया। अगर मरियाना ने उसके उस आकस्मिक भावावेग का विरोध किया होता तो शायद इतना और ऐसा प्रभाव न पड़ता। वह उठ बैठा और धीरे से बोला 'मुझे माफ कर दो मरियाना -- जो कुछ आज और तब हुआ, उसके लिए मुझे माफ करदो। मुझसे फिर कहो कि तुम

उस समय तक मेरा इन्तजार करोगी, जब तक कि मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य न बन जाऊँ, और मुझे माफ कर दो, माफ कर दो।'

'मैंने तुमसे वायदा किया है और मैं उसे कभी बदल नहीं सकती।

'धन्यवाद, नमस्ते।'

नेख्मानोव बाहर चला गया, मरिआना ने अपने को अपने कमरे के भीतर बन्द कर लिया।



तीस

एक पखवारे के बाद, उसी स्थान पर मेज्धानोव अपने मित्र सिलिन को तिपेरी मेज पर झुका पत्र लिख रहा था। मेज पर मोमबत्ती का हल्का पीला प्रकाश छिटका हुआ था। रात काफी से ज्यादा बीत चुकी थी। सोफे और फर्श पर कीचड़ से सने कपड़े बिखरे पड़े थे जिनसे प्रकट था कि जल्दी में उतार कर फेंके गए हैं। खिड़की के शीशा पर वर्षा की बौछार पड़ रही थी और हवा के जोर जोर के झोंके आ रहे थे।

प्रिय ब्लादिमीर—मैं बिना अपना पता लिखे तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ और यह पत्र भी किसी आदमी के द्वारा दूर से डाक घर में डाला जायगा क्योंकि मैं यहाँ छिप कर रह रहा हूँ और इसका पता लग जाना सिर्फ मेरी ही जिन्दगी की बर्बादी का कारण हो जायगा वरन् किन्हीं और की जिन्दगी की बर्बादी का कारण भी हो जायगा। तुम्हारे लिए मेरा इतना ही जानना काफी है कि मैं पिछले पन्द्रह दिनों से एक बड़े कारखाने में रह रहा हूँ,

मरिआना भी मेरे साथ है। हम लोग सिप्यागिन के यहाँ से उसी दिन भागे थे जिस दिन मैंने पिछली बार तुम्हें पत्र लिखा था। यहाँ हमें हमारे मित्र ने रहने का स्थान दिया है। मैं उसे वासिली के नाम से पुकारूँगा। वह यहाँ का सबसे बड़ा अधिकारी है—और बड़ा शानदार और प्यारा आदमी है। इस कारखाने में हमारा निवास अस्थायी है। क्रान्ति आरम्भ होने तक हम लोग यहाँ ठहरेंगे—हालाँकि अब तक जो कुछ हुआ, उससे तो अनुमान होता है कि वह समय शायद ही कभी आए। ब्लादिमीर मेरा दिल भारी हो रहा है, बहुत भारी। पहिले तो मैं तुम्हें यह बताऊँ कि यद्यपि मैं और मरिआना साथ साथ भाग आए हैं लेकिन अब तक हम दोनों में बहन भाई का ही रिश्ता है। वह मुझसे प्रेम करती है और उसने कहा है कि वह मेरी हो जायगी अगर मगर मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि मैं उसे प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हूँ।

ब्लादिमीर, मैं नहीं समझता कि मैं अधिकारी हूँ! वह मुझ में विश्वास करती है, मेरी ईमानदारी में—मैं उसे धोखा नहीं दूँगा। मैं जानता हूँ कि मैंने उससे अधिक कभी किसी को प्यार नहीं किया और न कभी करूँगा। वह निश्चय ही बड़ी सुन्दर है। लेकिन फिर भी मैं कैसे अपने साथ उसकी किस्मत को बाँध सकता हूँ? एक जीवित प्राणी को—एक लाश के साथ? नहीं, लाश के साथ नहीं—एक अर्धमृत जीव के साथ! कैसे किसी की आत्मा इसे गवारा करेगी? तुम कहोगे अगर चाह तीव्र है तो आत्मा उसमें क्या करेगी। यही तो बात है कि मैं एक लाश हूँ, एक ईमानदार भली मानुस लाश, अगर तुम चाहो तो कह सकते हो। कृपया यह मत कहना कि मैं हमेशा ही बड़ा भावुक हो जाता हूँ और कहने में अतिशयोक्ति करता हूँ "मैं तुम्हें जो कुछ भी लिख रहा हूँ वह सब सत्य है। अक्षरशः सत्य। मरिआना बड़ी ही भावुक फेंकिल स्वभाव की जीव है और अब वह अपनी सक्रियताओं में ही व्यस्त है, जिनमें वह विश्वास करती है" ... जब कि मैं?

'और प्रेम और व्यक्तिगत सुख की बातें बहुत हो गईं। पिछले पन्द्रह दिनों से मैं निरन्तर जनता में जा रहा हूँ, और ओफ! उससे अधिक निकम्मी और बेहूदा बात सोच नहीं सकते। हालाँकि उसमें भी दोष मेरा ही है 'कार्य' में नहीं। मैं मानता हूँ कि मैं जनता का आदमी नहीं हूँ, उनमें का, उनका एक अपना। मैं उनके हृदय को नहीं छू पाता। मैं उन पर अपना प्रभाव जमाना चाहता हूँ, लेकिन कैसे? उसे कैसे छिपा जाय? ऐसा लगता है कि जब मैं जनता के बीच में होता हूँ तो सिर्फ हमेशा उनके सामने झुकता हूँ और उनकी बातें सुनता हूँ और जब ऐसा मौका आता है कि मैं उनसे कुछ कहूँ, तो सब बेकार हो जाता है। मेरी बात उनके दिल में घर नहीं कर पाती। ऐसा लगता है कि मैं निकम्मा हूँ। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे किसी अनाड़ी अभिनेता को गलत पार्ट दे दिया जाय। आत्म शुद्धि और कर्तव्यपरायणता का यहाँ प्रश्न नहीं उठता, और यही बात अविश्वास के साथ है और लोग मुझ पर तरस खाते हुए मेरा उपहास भी करते हैं यह सब कौड़ी मोल का भी नहीं है! यह सब याद करके जी मचलता है, जो चिथड़े पहिन कर मैं जाता हूँ ओफ! बास्तिनी के जल्सा में इस 'स्तोम' पर आता हूँ, उन्हें देखकर ही जी मचलाने लगता है। लोग कहते हैं कि जनता को बात सीखने के लिए पहिले उनके चरित्र और भावना को जानना जरूरी है वाहियात! निहायत वाहियात बात है! आदमी को जो कुछ वह कहता है पहिले उस पर खुद विश्वास होना चाहिए, फिर हर एक से भी चाहे सो कह सकता है। मुझे एक बार एक संकीर्णताबादी नेता का उपदेश सुनने का अवसर मिला। क्या बताऊँ, क्या-क्या बेहूदी वाहियात बातें उसने उछालीं, सब छीछ पोच, छिछली और निकम्मी बातें, सस्ते किताबी मुहावरों में और वह भी शुद्ध रूसी में नहीं बल्कि दफ्तरी रूसी में और वह मेरा बार बार बार एक ही बात पर जोर दिए जाय मेढक की टर्र टर्र की तरह! "आग कम हो गया है, पाप कम हो गया!" लेकिन तभी उसकी आँखें चमक उठीं, उसकी आवाज तेज और भारी हो गई, मुट्ठियाँ तन गईं—वह ऊपर से नीचे तक फौलाद का सा लग रहा था! योतामा

को उसकी बात समझ में नहीं आ रही थी, लेकिन वे उसकी पूजा करते थे। और उसके आदेशों का पालन करते थे। जब कि मैं एक अपराधी की तरह बोलना शुरू करता हूँ—और सारे वक्त माफी सी माँगता रहता हूँ। मुझे उन रुकीर्णशानारिया के पास जाना चाहिए, उनको क्या महान नहीं है लेकिन उनमें विश्वास जीतने की शक्ति है, विश्वास! मरिआना को उन पर विश्वास है। वह सबेरे तड़के से ही तात्याना, नाम की एक रूसी और होशियार किसान औरत, के साथ दिन भर काम में व्यस्त रहती है। वह हमारे बारे में कहती है कि हमें सबक समान होना है, यानी हमारा समानीकरण होना है और हमें समानीकृत लोग कहती है, खैर, तो मरिआना इसके साथ दिन भर व्यस्त रहती है और एक मिनट को भी नहीं बैठती, वह एक चींटी की तरह है। वह खुश है कि उसके हाथ लाल और खुरदुरे होते जा रहे हैं और आशा लगाए है कि किसी दिन अगर जरूरत पड़े तो फाँसी के तख्ते पर झूलने से भी न हिचकेगी। फाँसी के तख्ते के इंतजार में उसने जूते पहनने छोड़ने की भी कोशिश की, वह कहीं नंगे पैर गई और नंगे पैर ही वापस आई। मैंने बाद में सुना कि वह काफी देर पैर धोती रही। मैंने देखा है कि वह बहुत सम्हाल-सम्हाल कर चलती है—नंगे पैर चलने की आदत न होने से उसके पैर सूज गए हैं लेकिन वह बड़ी खुश नजर आती है, इतनी खुश कि जैसे उसे खजाना मिल गया हो जैसे सूर्य उसके ऊपर चमक रहा हो। हाँ, इसमें सन्देह नहीं कि मरिआना लाजवाब है! और जब मैं उससे अपनी भावनाओं की बात करने लगता हूँ तो मुझे कुछ लज्जा का अनुभव होने लगता, जैसे मैं किसी ऐसी चीज पर हाथ डाल रहा हूँ जो मेरी नहीं है, और तब उसकी दृष्टि, ओह वह अजीब श्रद्धापूर्ण निर्विरोध दृष्टि "मुझे ग्रहण करो" जैसे कह रही हो 'लेकिन याद रखना! और फिर इस सब की क्या जरूरत है? क्या धरती पर इससे अच्छी, इससे महान् और कोई दूसरी बात नहीं?' दूसरे शब्दों में, "अपना नदबूदार

कोट पहिनो और जनता के बीच में जाओ।' और मैं जनता के बीच में चला जाता हूँ।

ओह, ऐसे अवसरों पर मैं अपनी घबड़ाहट सुकुमारता, भावुकता, नकचढ़ापन और संकोची स्वभाव को जो मैंने अपने अभिजात्यवर्गीय पिता से पाया, कितना कोसता हूँ। मुझे जीवन में ढकेलने का उन्हें क्या अधिकार था, मुझे ऐसे स्वभाव देकर जो जिन परिस्थितियों में मुझे रहना है, उनके लिए बिल्कुल अनुपयुक्त हैं? मुर्गी के बच्चे को पकड़ कर पानी में ढकेल देना। एक कलाकार को कीचड़ में। एक प्रजातन्त्रवादी जनता का प्रेमी जिसे वोडका सस्ती शराब की तीव्र गंध ही बीमार कर देती है?

देखो तो मैं कैसा हो गया हूँ—अपने पिता को ही भला-बुरा कहने लगा। लेकिन जनवादी तो मैं अपने से ही हुआ हूँ उसमें तो उनका कोई हाथ नहीं था।

सच व्लादिमीर, मेरी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं है। अजीब अजीब निकम्मे विकृत विचारों से मन ग्रस्त है। तुम मुझ से पूछोगे कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि इन पिछले पन्द्रह दिनों में मुझे कोई भी ऐसा भला सजीव आदमी नहीं मिला जिससे मुझे सान्त्वना प्राप्त होती भले ही वह कितना भी जाहिल क्यों न हो? अब क्या कहूँ? पन्द्रह दिनों में बहुतों से मिला लेकिन सब बेकार हाँ एक आदमी अवश्य भला और शानदार मिला लेकिन मैं और मेरी किताबें उसके किसी मसरफ के नहीं हैं। उसका नाम पयेल है यहीं कारखाने में ही काम करता है—यह यासिली का दाहिना हाथ है, बड़ा ही होशियार बड़ा ही तेज कारखाने का भावी मैनेजर मेरा ख्याल है मैंने तुम्हें पहिले भी उसके बारे में लिखा है—उसका एक दोस्त है, एक किसान, एगिजार उसका नाम है बड़ी साफ समझ है उसकी और स्वतन्त्र विचारों का है, किसी भी तरह आम में न फँसने वाला लेकिन हम मित्र हैं, लेकिन ऐसा लगता है जैसे हम दोनों के बीच में एक दीवाल

है, उसके चेहरे पर मेरे लिए यस 'नहीं" है ! एक और आदमी स मैं मिला यह जरा गरम मिजाज का है। 'तब फिर, जनाब" वह कहता है , "यह कोई साबुन की बटिया नहीं है, लेकिन यह तो बताओ क्या तुम अपनी सारी जमीन दे रहे हो, या नहीं ? तुम्हारा मतलब क्या है ? "मैंने उत्तर दिया मैं जमीदार नहीं हूँ ! (और मुझे याद है मैंने यह भी कहा था, 'ईश्वर तुम्हारा भला करे ?')। लेकिन अगर तुम हम जैसे ही साधारण आदमी हो, तो फिर तुमसे क्या लेना-देना, फिर तो बेकार हो ? बस मुझे अकेला छोड़ देने की कृपा करो।'

'एक बात और मैंने देखी है कि अगर कोई ध्यान से बात सुनता भी है, और तुरन्त किताब ले लेता है, तो तुम निश्चय समझ लो कि वह कोई या तो धूर्त है, या मूर्ख है या फिर सी० आई० डी० है और अगर कोई अच्छा कानूनी पढ़ा लिखा व्यक्ति मिल जाता है, तो वह सिवाय कुछ रटे रटाए वाक्यों को बार-बार दुहराने क और कुछ नहीं करता। एक ने तो मुझे बुरी तरह बातों में उलझा लिया , उसके लिए हर चीज "उत्पादन" है। तुम उससे कुछ भी कहो, वह यही कहता रहेगा, 'निश्चय ही एक उत्पादन !' ओफ, शैतान की आंत, जहन्नुम में जाय ! एक बात और तुम्हें याद है, एक बार काफी दिन पहिले 'फालतू' जन—हैमलेटों क बार में बड़ी चरचा थी ? ऐसे ही 'फालतू' लोग आज कल किसानों में खूब मिलते हैं। उनकी बात करने का लहजा ही अपना अलग है और फिर उनका ढांचा लीकिया पहन जाना जैसा है, जैसे क्लोरिक हो गई हो। बड़े दिलचस्प लोग, हमारी ओर बड़े तैयार मन से आते हैं लेकिन क्रान्ति के उद्देश्य के लिए बिल्कुल निकम्मे—ठीक पहिले जैसे हैमलेटों की ही तरह। तब फिर कोई क्या करे ? एक गुप्त प्रेस खोले, लेकिन क्या ? ऐसी भी हैं, किताबें काफी हैं, हर तरह की 'भगवान को याद करो और हाथ में कुल्हाड़ा सम्हालो", और कुछ 'कुल्हाड़ा सम्हालो" तरह की। किसानों क जीवन पर उपन्यास लिखे, लकिन वे छपते नहीं सम्भवतः। या पहिले

कुम्हाड़ा सम्हालूँ ? लेकिन किसके विरुद्ध किसके साथ और किस लिए ? ताकि राष्ट्रीय सैनिक राष्ट्रीय राइफिल से गोली मार दे। लेकिन यह तो सीधी-साधी आत्म हत्या है। उससे तो अपने आप अपनी आत्म हत्या कर लेना अच्छा होगा। कम से कम मैं यह तो जानूँगा कि मुझे कब और कैसे मरना है और अपने मन से तै करूँगा कि शरीर के किस भाग का भक्ष्य किया जाय" सचमुच मैं तो यह सोचता हूँ कि अगर कहीं भी स्वतन्त्रता संग्राम छिड़ जाय तो मैं उसमें शामिल हो जाऊँ। किसी को आजाद करने के लिए नहीं (दूसरों को आजाद करने का विचार जब कि अपने ही लोग आजाद नहीं हैं, मजाक है !) बल्कि अपने जीवन का किसी प्रकार से अन्त करने के लिए।

'हमारा मित्र वासिली, जिसने हमें अपने यहाँ पनाह दी है, बड़ा ही सुखी व्यक्ति है, वह भी हमारे ही खेमे का है और एक प्रकार से बड़ा ही शान्त स्वभाव का व्यक्ति है। वह किसी जल्दी में नहीं है। उसके लिए मैं किसी और का दोषी ठहरा सकता हूँ... पर उसे नहीं। और ऐसा लगता है, जैसे उसका सारा मूल विश्वासों पर आधारित नहीं है वरन् चरित्र पर है। वासिली का चरित्र ऐसा है कि आप उसमें कहीं भी छिद्र नहीं पा सकते। और निःसन्देह वह सही भी है। वह हमारे साथ काफी उठता-बैठता है खासतौर से मरिमाना के साथ। एक बड़ा अजीब सत्य है। मैं मरिमाना को प्रेम करता हूँ और वह मुझे प्रेम करती है (तुम इस बात पर मुस्कुरा रहे हो, मैं देख रहा हूँ, लेकिन कसम से बात ऐसी ही है !) लेकिन हमें आपस में बहुत कम कहना होता है, लेकिन उसके साथ वह तर्क करती है बहुत करती है और उसकी बातों को सुनती है। मैं उससे ईर्षा नहीं करता वह उसे कहीं काम दिलाने की कोशिश कर रहा है, कम से कम वह उसे इसके लिए बार बार कोंचती रहती है पर जब मैं उन दोनों को देखता हूँ तो मेरे दिल में पीड़ा होती है, पर फिर भी जरा सोचो अगर मैं शादी के लिए एक बार भी इशारा भी कर दूँ तो वह तुरन्त

तैयार हो जायगी , और पादरी जोसिम साहब आ पधारेंगे और सब कुछ हो जायगा, पलक मारते ही। लेकिन इससे भी मेरा कोई भला न होगा, कोई परिवर्तन न होगा इसका तो कोई इलाज ही नहीं है! मेरा जीवन तो ट्रैक हो गया है, प्यारे व्लादिमीर याद है तुम्हें हम लोगों के उस पियक्कड़ दर्जी मित्र की, जो अपनी पत्नी की शिकायत किया करता था।

'फिर भी मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि यह सब ऐसा ही बहुत दिन नहीं चलेगा, मैं महसूस करता हूँ कि कुछ तैयार हो रहा है

'क्या मैंने यह माँग नहीं की और सिद्ध नहीं किया है कि हमें "अमल" करना है? अब हम अमल करने जा रहे हैं।

'मुझे याद नहीं आता कि मैंने तुम्हें अपने एक और मित्र के बारे में लिखा था या नहीं—एक साँवला व्यक्ति सिप्यागिन का रिश्तेदार। संभव है वह ऐसी मछली पका डाले जिसे सम्भवतः आसानी से निगला भी न जा सके।

'मैं यह पत्र पहिले ही समाप्त करना चाहता था लेकिन फिर भी। खैर! यद्यपि मैं कुछ करता नहीं, बिल्कुल भी कुछ नहीं कविताएँ घसीटता रहता हूँ। मैं उन्हें मरिआना को नहीं सुनाता, वह उनकी ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं देती लेकिन तुम कभी कभी उनकी तारीफ भी करते हो और फिर खास बात तो यह है कि तुम उनकी इधर उधर चर्चा नहीं करते फिरोगे। मेरा रूस में एक आम बात देखी है जो रात में है। खैर उस पर यह कविता है

नींद

काफी दिन से मैं अपने देश में नहीं था
लेकिन मुझे देखने लायक कोई परिवर्तन नहीं मिला—
हर जगह वैसे ही भयानक मृत्युपूर्ण गतिरोध
बिना छतों के मकान, ढहती दीवारें,

और वैसी ही गन्दिगी और बदबू और गरीबी और ऊब।
और वैसी ही दासता पूर्ण निगाहें, पल में प्रसन्ना पूरा पल में
निरोह!

हमारी जनता स्वतन्त्र कर दी गई और स्वतन्त्र जुवा
पहिले की ही तरह ऐसी लटकती रहती है जैसे कि बिना प्रयोग की
हुई चाबुक।

सब कुछ, सब कुछ पहिले जैसा ही है और केवल एक चीज में
याद्रप एशिया सारे संसार का हमने निराकरण कर दिया है!
नहीं! मेरे प्रिय देशवासी अब तक कभी भी
ऐसी भयंकर नींद में लीन नहीं हुए थे।
हर चीज सो रही है सब जगह, गाँव में और कस्बे में
बैलगाड़ी में स्लेज में रात हो दिन हो बैठे हुए और खड़े हुए –
व्यापारी अधिकारी सब सो रहे हैं अपने पहर पर पहरेदार
बर्फीली सर्दी में और जलती हुई गर्मी में सोया पड़ा है।
और बन्दी सोया हुआ है और जज खर्राटे भर रहा है,
किसान गहरी नींद में हैं सोते हुए ही वह फसल काटते हैं और
सब बोते हैं
यह सोते हुए ही बरसाबनी करते हैं, पिता सोया हुआ है, माँ
और बच्चे सब सोए पड़े हैं! कोड़े मारने वाला सोया हुआ है और
वह भी जो कोड़ा खा रहा है!
केवल ज़ार का शराबखाना कभी भी झपकी नहीं लेता
और अपने शराब के प्याले को कसकर पकड़े हुए,
उत्तरी ध्रुव के ऊपर अपना नाम और काकेसस के ऊपर अपने
चरण रखे हुए हैं।
अनन्त निद्रा में सोया पड़ा है हमारा देश, पवित्र रूस।
'रुपया मुझे माफ करना मुझे ऐसा व्यथापूर्ण पत्र लिखने का
…ा कोई इरादा नहीं था इतना कि अन्त में भी थोड़ा सा मना

और यद्यपि सोलोमिन ने काफी देर पहिले हाथ मुँह धोकर कपड़े बदल लिए थे, पर उसका चेहरा भी म्लान और पीला हो रहा था, उसके ऊपर के दाँत थोड़े-थोड़े दीख रहे थे वह भी कुछ कुछ विक्षिप्त, उखड़ा उखड़ा सा—उतना ही जितना एक सुसन्तुलित स्वभाव का व्यक्ति लग सकता है,—लग रहा था।

तो मार्केलोव अपने पर संयम नहीं रख सका, उसने कहना शुरू किया, 'इसके परिणाम घातक हो सकते हैं, खासतौर से उसके लिए और दूसरों के लिए भी।'

'मैं वहाँ की स्थिति देखने जाना चाहता हूँ। नेज्दानोव ने कहा।

और मैं भी', मरिआना ने भी दरवाजे पर प्रगट होते हुए कहा।

सोलोमिन धीरे से उसकी ओर घूमा।

'मैं तुम्हें जाने की सलाह नहीं दूँगा, मरिआना। तुम अपने को खतरे में डाल सकती हो और हम सब को भी व्यर्थ ही और बिल्कुल अनावश्यक रूप से। मगर वह चाहता ही है तो सिर्फ नेज्दानोव को स्थिति देखने के लिए, जाने दो और अगर वह भी न जाय, तो सबसे अच्छा!—लेकिन तुम क्या जाओगी?'

'जब वह जायगा तो मैं यहाँ पीछे नहीं रहना चाहती।

'तुम उसके रास्ते में बाधा पैदा कर दोगी।'

मरिआना ने नेज्दानोव की ओर देखा। वह अचल खड़ा था, उसका चेहरा भी उदास और मूर्ति की तरह स्थिर था।

'लेकिन अगर वहाँ खतरा हुआ तो?' मरिआना ने पूछा।

सोलोमिन मुस्कुराया।

'चिन्ता मत करो जब खतरा आएगा, तो मैं तुम्हें जाने से नहीं रोकूँगा।'

मरिआना ने चुपचाप अपने सिर पर से रूमाल उतार लिया और बैठ गई।

तब सालामिन नेग्यानाव की भार उन्मुख हुआ।

क्या तुम सचमुच जाना ही चाहते हो? जरा मेरी ग्रार तो देखो, नाई। इस सब में भ्रकबाना का भंश ज्यादा है। जरा सावधान रहना, यद्यपि तुम्हार साथ कोई न कोई जायगा। ग्रौर जितना जल्दी हो सक वापस ग्रा जाना। वायदा करत हो न? नेग्यानोव, वायदा करते हो न?

'हाँ।

निश्चित रूप स, हाँ?'

जब यहाँ सभी तुम्हारा कहना मानते हैं, मरियाना भ्रौर सभी" तो ।

नेग्यानाव म्हटक क साथ बिना नमस्ते किय ही बाहर चला गया। पवल भी उसक पीछ-पाछे लपका। उसक जूता में सभी साह की कीलें चलते में "ख" कर रही था। ता क्या उन्ही का नेग्यानाव के साथ जाना था?

सालामिन मरियाना क पास बैठ गया।

'तुमने नग्यानोव क ग्रन्तिम शब्द सुन?'

हाँ म उसकी ग्रप ा ग्रापकी बात ज्याद मानती हैं, इसस वह नाराज है। भ्रौर वास्तव में यह सही भी है। मैं उस प्रेम करती हूँ, लकिन भ्राता ग्रापरी मानती हूँ। वह मरे लिए प्रियतम है 'लेकिन ग्राप निकटतम।

सोलामिन न सजगता स उसका हाथ थपथपाया।

'यह बड़ी ही दुखदायी बात है, उसने ग्रन्त में कहा। ग्रगर उसने नाकैनाम पा हाथ है—ता उस ता खतम ही समझो फिर।'

मरियाना काँप उठी।

खतम?'

'हाँ' वह कभी काइ काम ग्रधूर मन से नहीं करता ग्रौर न दूसरों सामने ग्रपने को छिपायगा ही।

खतम? मरियाना फिर बुदबुदाइ ग्रौर उसक गाला पर ग्राँसुग्रों

की धारा वह चली। ओह, वासिली फैदोविच! मुझे उसके लिए बहुत दुख है। लेकिन वह विजयी क्यों नहीं हो सकता? क्या जरूरी है कि वह खतम ही हो जाय?

'क्योंकि ऐसे विद्रोहों में पहल करने वाला शहीद हो जाता है, मगर सफल हो जाते हैं तो भी और इस काम में, जिसका संगठन वह कर रहा है न सिर्फ पहला, और दूसरा ही, लेकिन दसवाँ और बीसवाँ भी शहीद हो जायगा।'

'तो फिर हम उसे देखने के लिए कभी जीवित नहीं रहेंगे?'

'तुम काहे का सपना देख रही हो? कभी नहीं। अपनी आँखों से हम इसे कभी नहीं देखेंगे इन जीवित आँखों से। आत्मा से! आत्मा की और बात है। उस तरह से तो उसे देख कर हम जरूर इस समय भी सन्तुष्ट हो सकते हैं, इसमें सन्देह नहीं। इसके लिए कोई बाधा भी नहीं।'

'तो फिर आप सोलोमिन—

'क्या?'

तो फिर आप भी उसी रास्ते पर कैसे चल रहे हैं?'

'क्योंकि कोई दूसरा रास्ता नहीं है, सही-सही कहा जाय, तो यही बात है। मेरा लक्ष्य भी वही है, जो मार्केलोव का है, लेकिन हमारे रास्ते अलग अलग हैं।'

'बेचारा सर्गे मिहाइलोविच! मरिआना ने दुखी स्वर में कहा। सोलोमिन ने फिर उसे स्नेह से थपथपाया।

'छोड़ो छोड़ो, अभी कुछ निश्चय नहीं है। देखो पवल क्या खबर लाता है। हमारे काम में बड़े साहस की जरूरत है। अंग्रेजी कहावत है, "मृत्यु का नाम कभी मत लो।" अच्छी कहावत है। रूसियों से अच्छी, "जब संकट आए तो दरवाजे चौपट्टा खोल दो।' पहिले से दुख करना व्यर्थ है।

सोलोमिन उठ कर खड़ा हो गया।

'और मेरे लिए जो काम आप तलाश करना चाहते थे उसका क्या हुआ ?' मरियाना एकाएक पूछ बैठी। आँसू अब भी उसके गालों पर चमक रहे थे, लेकिन उसकी आँखों में अब दुख न था।

सोलोमिन फिर बैठ गया।

'क्या तुम सचमुच इतनी जल्दी यहाँ से जाना चाहती हो ?'

'ओह, ऐसी बात नहीं है! लेकिन मैं कुछ उपयोगी होना चाहती हूँ।'

'मरियाना, तुम यहाँ भी बहुत उपयोगी हो। हमें छोड़ो मत, थोड़ा और प्रतीक्षा करो। 'क्या बात है ?' सोलोमिन ने तात्याना की ओर देखते हुए पूछा जो तभी भीतर आई थी।

'कोई स्त्री आप की खोज अलेक्सी दिमित्रिच को पूछ रही है', तात्याना ने हँसते हुए और मुँह बनाते हुए कहा। 'मैंने उससे साफ कहा कि वह यहाँ नहीं है बिल्कुल नहीं है और हम ऐसे किसी आदमी को जानते भी नहीं। लेकिन वह तो—'

'कौन है वह ?'

'उसने इस पर्चे पर अपना नाम लिख दिया है और बोली, कि मैं इसे ले जाकर दिखा दूं, यह मुझे भीतर बुला लेगा, और अगर अलेक्सी दिमित्रिच सचमुच ही इस समय घर पर नहीं हैं, तो वह उसका इन्तजार कर सकती है।'

पर्चे पर बड़े अक्षरों में लिखा था, 'मशुरिना।'

'उसे भीतर ले आओ' सोलोमिन ने कहा। अगर वह यहाँ आती है, तो, तुम बुरा तो नहीं मानोगी मरियाना ? वह भी हम में से ही है।'

'बिल्कुल नहीं।'

थोड़ी देर में ही मशुरिना कमरे के दरवाजे पर दिखाई पड़ी, उसी पोशाक में जिसमें हमने उसे पहिले अध्याय के आरम्भ में देखा था।



इकत्तीस

'क्या नेज्दानोव घर पर नहीं है ?' उसने पूछा, और तब सोलोमिन को वहाँ देख कर, वह उसके पास गई और उसे अपना हाथ देती हुई बोली 'कैसे हो सोलोमिन ?' मरियाना पर उसने सिर्फ एक तिरछी उड़ती नजर डाली।

'वह जल्दी ही लौटकर आजायगा,' सोलोमिन ने उत्तर दिया। लेकिन पहिले यह तो बताओ कि तुम्हें यह कैसे पता लगा कि वह यहाँ है ....?'

'मार्केलोव से। हालांकि शहर में दो-तीन आदमी पहिले से ही जानते हैं।

'सच ?'

'हाँ। किसी ने बात फैला दी है। और फिर लोग यह भी कहते हैं कि नेज्दानोव खुद ही पहचान लिया गया है।'

'यह सब स्वांग योंही बेकार गया ! सोलोमिन बुदबुदाया। उसने सस्वर कहा, 'आओ मैं तुम दोनों का परिचय कराऊँ, कुमारी सिनत्स्की, कुमारी मर्यारिना ! बैठ जाओ !'

मगुरिना ग्रनियादन सूचन में थोड़ा झुकी और बैठ गई।
न मस्म्यानाव के लिए एक सन्त नाई थी और सोमोमिन तुम्हारे
लिए एक पुरानी सन्देश।
कैसा सन्देश? किसका?'
'एक व्यक्ति का तुम जानते हो उसे ~ ~ तुम्हारे यहाँ कैसी स्थिति
है? - क्या सब तैयार है?
'कुछ भी तैयार नहीं है।
मगुरिना अपनी छोटी आँखें जितना हो सकती थीं उतनी फाड़
कर देखने लगी।
'कुछ भी नहीं?
'कुछ भी नहीं।
तुम्हारा मतलब है, बिल्कुल कुछ नहीं?'
बिल्कुल भी कुछ नहीं।
क्या यही मुझे जाकर उत्तर देना है?
बिल्कुल यही उत्तर देना है।
मगुरिना थोड़ी देर सोचती रही तब उसने अपनी जेब से एक
सिगरेट निकाली।
'माचिस दे सकते हो जरा मुझे?'
'यह लो।
मगुरिना ने सिगरेट जला.।
'उन्हें तो कुछ और ही आशा थी बिल्कुल इससे भिन्न,' उसने
कहना आरम्भ किया। 'और चारों ओर तैयारी हो रही है, और तुम
चुप बैठे हो। खैर यह तुम्हारा मानना है, तुम जानो। मैं यहाँ देर तक
रुकने के लिए नहीं आई हूँ। मुझे सिर्फ मेग्मानोव से मिलना है और
उसे एक पत्र देना है।
तुम कहाँ जा रहे हो?
माद्, यहाँ से बहुत दूर।

यह वास्तव में जिनेवा जा रही थी, लेकिन उसने सोलोमिन को बताने की जरूरत नहीं समझी। उसने उसे पूरी तरह से विश्वासनीय न समझा, और फिर एक 'बाहिरी' व्यक्ति भी वहाँ बैठा था। मश्रुरिना जो जर्मन का एक शब्द भी नहीं जानती थी, एक व्यक्ति को, जिसे वह बिल्कुल भी नहीं जानती थी, दत्ती का एक टुकड़ा देने के लिए, जिस पर अँगूर की एक बेल चित्रित थी और दो सौ उनहत्तर रूबल देने के लिए, जिनेवा भेजी जा रही थी।

'ओस्त्रोदुमोव कहाँ है? क्या वह तुम्हारे साथ है?'

'नहीं। वह यहीं ग्रास पास है वह रास्ते में कहीं रुक गया है। लेकिन वह जरूरत पड़ते ही आजायगा। पिमेन ठीक है। उसके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं।'

'तुम यहाँ कैसे आई?'

'गाड़ी में और कैसे आती? मुझे जरा दूसरी दियासलाई दो' '

सोलोमिन ने उसे एक दूसरी दीयासलाई जलाकर दी।

'वासिली फैदोतिच!' एकाएक दरवाजे पर से किसी ने धीमी आवाज में पुकारा। 'कृपया इधर आइए!'

कौन है? क्या चाहिए?'

'कृपया इधर आइए,' आवाज ने आग्रहपूर्ण स्वर में दुहराया। 'कुछ अजीब मजदूर आये हैं और उन्होंने अजीब बकवक लगा रखी है और पवल यगारिच भी यहाँ हैं नहीं।

सोलोमिन उठ कर बाहर गया।

मश्रुरना मरियाना की ओर एकटक देखने लगी और इतनी देर तक देखती रही कि मरियाना घबरा उठी।

'माफ करना,' उसने एकाएक कर्कश रूखे स्वर में कहा, 'मैं जरा बड़ी उजड्ड स्वभाव की हूँ मैं नहीं जानती कि बात कैसे करनी चाहिए। नाराज मत होना और अगर न चाहो तो मेरी बात का उत्तर

भी मत देना। क्या तुम्हीं वह लड़की हो जो सिप्पागिन के यहाँ से भागी थीं?'

मरियाना कुछ सकपका सी गई और अनिच्छुक थी फिर भी उसने उत्तर दिया, 'हाँ।'

'नेज्दानोव के साथ?

'हाँ।'

'अगर तुम्हारी इच्छा हो तो मुझे अपना हाथ दो। माफ करना मुझे, कृपया। तुम जरूर अच्छी होगी क्योंकि वह तुम्हें प्रेम करता है।

मरियाना ने उसका हाथ दबाया।

तुम नेज्दानोव को खूब अच्छी तरह जानती हो?

'हाँ, जानती हूँ। मैं पीटसबर्ग में उससे मिला करती थी। इसीलिये तो मैंने यह सब कहा। सर्जी मिहालोविच ने भी मुझे बताया था'

'ओह मार्केलोव! तुम उससे अभी जल्दी ही मिलीं थीं?

'हाँ। अब वह चला गया।

'कहाँ?'

'जहाँ का आदेश दिया गया।

मरियाना ने निश्वास भरी।

आह, कुमारी मशुरिना मैं उसके लिये डरती हूँ।

'पहली बात तो यह कि, मैं 'कुमारी" नहीं हूँ। तुम्हें यह सब आदतें छोड़नी होंगी। और, दूसरी बात यह कि " तुमने अभी कहा, तुम उसके लिये डरती हो। यह सब तो नहीं चलेगा। तुम्हें अपने लिये भी नहीं डरना होगा और दूसरों के लिए भी नहीं। यद्यपि मेरे लिए यह आसान है, तभी बात करना। मैं बदसूरत हूँ। लेकिन तुम तुम निश्चय ही सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति हो। इससे यह सब तुम्हारे लिए और भी कठिन है। (मरियाना नीचे की ओर देखने लगी और थोड़ा दूसरी ओर घूम गई।) 'सर्जी मिहालोविच ने मुझसे कहा था उसे मालूम था कि मुझे नेज्दानोव का एक पत्र देने जाना है।

"कारखाने मत जाना" उसने मुझसे कहा "पत्र मत ले जाना, इससे वहाँ सब कुछ गड़बड़ हो जायगा। वहाँ से दूर रहना। वे दोनों वहाँ सुखी हैं उन्हें सुखी रहने दो। उनके बीच में विघ्न मत बनो!" मैं विघ्न न बनने में खुश होती लेकिन इस पत्र का क्या करूँ ?'

'तुम इसे जरूर दो,' मरिग्राना ने जोर देते हुए कहा। 'लेकिन ओह, वह कितने कृपालु हैं, सर्जो मिहाइलोविच! क्या हो सकता है कि वह मारे जायँ, मधुरिना — या साइबेरिया भेज दिए जायँ?'

'तो क्या? क्या लोग साइबेरिया से वापस नहीं आते? और रही मृत्यु की बात! जीवन किसी के लिए मधुर है तो किसी के लिए कटु, दुखदाई। उसका जीवन भी साफ की हुई चीनी का नहीं बना है।'

मधुरिना ने फिर मरिग्राना पर एक उत्सुक और जिज्ञासु दृष्टि डाली।

'हाँ, तुम निश्चय ही सुन्दर हो', उसने चिल्लाया, 'एक सुन्दर नन्हीं चिड़िया! मैं देखती हूँ कि अलेक्सी के आने में अभी देर है वह खत तुम्हें क्यों न दे दूँ? इन्तजार क्या करूँ?'

'हाँ मैं उसे दे दूँगी, तुम विश्वास करो।'

मधुरिना ने अपने हाथों पर अपने गाल टिकाये और बड़ी देर तक चुप बैठी रही।

'मुझे साफ-साफ बताओ', उसने कहना शुरू किया 'माफ करना क्या तुम सचमुच उसे बहुत प्यार करती हो?

'हाँ।

मधुरिना ने अपना भारी भरकम सिर झुकाया।

तो, वह तुम्हें प्रेम करता है, अब इसके पूछने की जरूरत नहीं। मैं जा रही हूँ, नहीं तो मुझे बहुत देर हो जायगी। तुम उससे कह देना मैं यहाँ आई थी उसे मेरी बधाई देना। कहना मधुरिना आई थी। तुम मेरा नाम तो नहीं भूलोगी न? नहीं न मधुरिना। और अब जरा ठहरो, मैंने कहाँ रख दिया उसे?

मगुरिना खड़ी हुई, एक बार घूमी, जैसे मैं सब ढूढ़ने का बहाना रती हो, लेकिन इसी बीच उसने एक छोटे से मुड़े हुए कागज को पने मुँह में रख लिया और उसे निगल गई। 'प्राह गजब हो गया! सी मूरखता हुई! कहीं मैंने खो तो नहीं दिया उसे? सचमुच खो या। कैसा दुर्भाग्य है! गजब हो गया! अगर उसे कोई पा गया ! नहीं, यहाँ तो कहीं नहीं है। तो आखिर वही हुआ, जो र्जी मिहालोविच ने चाहा था।

फिर देखो', मरिआना ने फुसफुसाया।

मशुरिना ने निराशापूर्वक में अपने हाथ हिलाए।

'नहीं! क्या फायदा है? वह तो खो गया अब!

मरिआना उसके पास गई।

अच्छा तो, मेरा चुम्बन लो!'

मशुरिना ने एकाएक मरिआना को अपनी बाहों में भर लिया और उसे एक स्त्री की शक्ति से अधिक शक्ति से उसे अपने सीने पर भींच लिया।

'मैंने यह और किसी के लिए नहीं किया होता, उसने भरे स्वर से कहा, यह मेरी आत्मा के विरुद्ध है - यह पहला अवसर है! उससे कह देना मेरा प्यार सावधान रहे - और तुम भी सावधान रहना। ध्यान रखना! यह जगह भी तुम्हारे लिए अब जल्दी ही संकट ग्रस्त हो जायगी, बहुत संकट ग्रस्त। यहाँ से निकल जाना, तुम दोनों ही, जब तक अच्छा, नमस्ते!' उसने मुखर तेज स्वर में कहा। लेकिन एक और भी बात है - उससे कह देना -- नहीं कोई जरूरत नहीं इससे कोई फायदा नहीं।

मशुरिना दरवाजा को जोर से बन्द करती, हुई बाहर चली गई, और मारिआना कमरे के बीच में अकेली खड़ी रह गई, सोचती हुई।

'क्या मतलब है इस सबका?' अन्ततः उसने कहा, यह स्त्री उसे मुझसे ज्यादा प्रेम करती है! और उसके संकेतों में क्या मतलब है?

भौर सोलोमिन इतना यकायक यहाँ से क्या चला गया भौर अभी तक वापस भी नहीं भाया ?'

वह इधर उधर टहलने लगी। एक अजीब अनुभूति—त्रास, भय और झुंझलाहट और भौचक्केपन—के मिले-जुले प्रभाव ने उसे अभिभूत कर दिया। वह नेज्दानोव के साथ क्यों नहीं गई ? सोलोमिन ने उसे रोक लिया और अब खुद न जाने कहाँ है ? और उसके चारों तरफ बाहर क्या कुछ हो रहा है ? मशुरिना ने निश्चय ही वह प्राणान्तक पत्र नेज्दानोव के प्रति सहानुभूति के कारण ही नहीं दिया लेकिन वह अनुशासन हीनता का ऐसा गम्भीर अपराध कर कैसे सकी ? क्या वह अपनी उदारशीलता दिखाना चाहती थी ? उसे इसका क्या अधिकार था ? और वही क्यों उसके इस कार्य से इतना अधिक प्रभावित हुई ? और क्या सचमुच वह इससे प्रभावित हुई ? एक बदसूरत औरत एक नौजवान के प्रति आकर्षित हुई आखिर इसमें विचित्र बात क्या है ? और मशुरिना ने यह कैसे सोच लिया कि उसके कर्तव्य की अपेक्षा नेज्दानोव के प्रति मरिआना का प्रेम अधिक महत्त्व का है, अधिक शक्तिशाली है ? शायद मरिआना ने ऐसे त्याग की कभी कामना नहीं की थी ! और उस पत्र में क्या हो सकता है ! तुरन्त अमल के लिए आह्वान ? तो फिर ?

'और मार्केलाव ? वह संकट में है और क्या हम उसके लिए कुछ कर रहे हैं ? उसने अपने से पूछा। 'मार्केलाव ! हम दोनों को बचाना चाहता है, हमको सुखी होने का एक अवसर दे रहा है, चाहता है हम अलग न हों यह सब क्या है ? उदारशीलता या तिरस्कार ?

'और क्या हम उस घृणित मकान से इसीलिए भागे थे कि हम साथ साथ रहें कबूतरों की तरह चाय मारते फिर और गुटरगूँ-गुटरगूँ करते रहें ?'

एस थे मरिआना के विचार और उसके इन विचारों में उसी

उत्तेजित मुँझलाहट का जोरदार हाथ था। और फिर उसके मङ्गम् का तो भी आघात पहुँचा था। क्या सभी ने उस अकेला छोड़ दिया—सभी ने ?

इस 'मोटी' औरत ने उसे सुन्दर कहा, एक नन्हीं चिड़िया गुड़िया क्या नहीं कह दिया ? और नग्यानोव अकेला क्यों नहीं गया, पवेल के साथ क्यों गया ? जैसे उसकी देखभाल करने के लिए किसी की जरूरत हो ? और आखिरकार इस मोसानिन की विचारधारा क्या है, वास्तव में ? वह क्रान्तिकारी तो नहीं है, बिल्कुल भी नहीं। और क्या यह सम्भव है कि लोगों ने यह सोचा हो कि मैं क्रान्ति के प्रति गम्भीर नहीं थी ?

एक ये विचार जो मरियाना के उत्तेजित मस्तिष्क में एक के बाद एक एक दूसरे से उलझे हुए तूफान की तरह, एक दूसरे का पीछा कर रहे थे। अन्तत वह अपने होंठों को भींचकर आदमी की तरह अपने सीने पर हाथ बाँधकर, खिड़की के पास कुर्सी पर सतर अचल, चौकन्नी जैसे किसी भी क्षण उठ खड़ी होगी और सोच में डूबी सी बैठ गई। मास्लोवा के पास जाकर वह काम नहीं करना चाहती थी वह सिर्फ एक काम करना चाहती थी—सिर्फ प्रतीक्षा ! और वह व्यग्रता और मुँझलाहट भरी मङ्गलाहट से प्रतीक्षा करती रही। कभी-कभी उसे अपना मूड स्वयं ही बड़ा अजीब सा लगता समझने में न आने योग्य। लेकिन इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ा। एक बार उसके मन में यह भी भाव उठा कि कहीं उसके इन भावों के मूल में ईर्ष्या की भावना तो नहीं है। लेकिन मर्युरिना की सूरत याद करके, उसने सिर्फ अपने कंधे सिकोड़े और हाथ का संकेत करते हुए उस विचार को अपने मन से निकाल दिया।

मरियाना को काफी देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। आखिर उसने दो आदमियों के सीढ़ी पर चढ़ने की पदचाप सुनी। उसने दरवाजे की ओर आँखें फेरी पदचाप नजदीक आती गई। दरवाजा खुला और

पवेल के हाथों का सहारा लिए हुए दरवाजे पर नेज्दानोव दिखाई पड़ा। वह मरणासन्न रूप से पीला पड़ गया था। सिर से टोपी गायब थी। उसके बाल बिखरे हुए थे। उसकी आँखें ठीक सामने की ओर स्थिर दृष्टि से देख रही थीं, पर किसी को देख नहीं पा रही थीं। पवेल उसे कमरे में लाया (नेज्दानोव के पैर लड़खड़ा रहे थे) और उसे सोफा पर लिटा दिया।

मरिआना उछल पड़ी।

'यह क्या हुआ? क्या हुआ उसे? क्या बीमार है?'

पवेल ने नेज्दानोव को लिटाते समय अपने कंधे पर से मुड़कर देखते हुए मुस्करा कर उत्तर दिया।

'आप चिंता न करें, जल्दी ही ठीक हो जायगा यह सब आदत न होने के कारण हुआ है।

'लेकिन हुआ क्या है?' मरिआना ने जोर देकर व्यग्रता से पूछा।

'यह थोड़ा बेहोश हो गया है, और कुछ नहीं। खाली पेट शराब पीने के कारण, बस।

मरिआना नेज्दानोव के पास गई। वह सोफे पर लेटा था, उसका सिर उसके सीने पर झुका हुआ था, उसकी आँखें धोंधे सी *स्थिर थीं उसके मुँह से शराब की बू आ रही थी, और नशे में* बेहोश था।

अलेक्सी!' मरिआना के होठों से निकला।

उसने बड़े प्रयत्न से अपनी बोझिल पलकों को उठाया और मुस्कराने की कोशिश की।

आह! मरिआना! वह हकलाया 'तुम हमेशा कहा करती थीं स—स—मानीकरण, अब देखो, अब मैं सचमुच सबके समान हो गया हूँ। क्योंकि जनता हमेशा पीती है, सा—'

उसका स्वर टूट गया, फिर कुछ अस्पष्ट सा बुदबुदाया, आँख बंद की और सो गया। पवेल ने सोफे पर उसे ठीक से सुला दिया।

'चिंता मत करो, मरियाना मिकाइलोवना' उसने दुहराया, 'वह कुछ घंटे सोयेगा और फिर बिल्कुल ताजा होकर जगेगा।'

मरियाना पूछने ही जा रही थी कि यह सब कैसे हुआ, लेकिन उसके प्रश्न पवेल को रोक देते, और वह अकेली रहना चाहती थी क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि पवेल उसके सामने ही नेज्दानोव को ऐसी स्थिति में देखे। वह खिड़की की ओर घूम गई, जबकि पवेल ने स्थिति को देखकर सावधानी से उसके लम्बे कोट के दामन से उसके पैर ढक दिये, एक तकिया उसके सिर के नीचे लगा दिया, एक बार फिर बुदबुदाया, 'कुछ भी नहीं हुआ है।' और पंजों के बल बाहर चला गया।

मरियाना ने घूम कर देखा। नेज्दानोव का सिर तकिये में धँस गया था। उसके सफेद चेहरे पर एक ऐसी स्थिरता व्याप्त थी जैसी किसी मरणासन्न रोगी के चेहरे पर होती है।

'यह सब कैसे हुआ?' मरियाना सोचने लगी।



बत्तीस

यह सब ऐसे हुआ कि पवेल के संग गाड़ी में बैठते ही नेज्दानोव एकाएक तीव्र जोश से भर उठा, और जैसे ही गाड़ी कारखाने के घेरे से बाहर निकल कर सड़क पर 'ट' शहर की ओर चल पड़ी कि नेज्दानोव राह चलते किसानों को रोक कर उन्हें सम्बोधित करता हुआ, छोटे छोटे असंगत वाक्यों में चिल्लाने लगा ? 'ए, तुम तो सो रहे हो ? उठो ! वक्त आगया है ! टैक्सों का नाश हो ! जमींदारों का नाश हो !' कुछ किसान आश्चर्य से उसकी ओर देखते, कुछ अनसुनी कर अपना रास्ता लेते—वे उसे पीया हुआ समझते, एक ने तो अपने घर पहुंच कर यहां तक कहा कि उसे रास्ते में एक फ्रान्सीसी मिला था जो न जाने क्या ऊलजलूल बक रहा था कि कुछ समझ में नहीं आया ! नेज्दानोव जानता था और समझता भी था कि वह कैसी-कैसी अनर्गल ऊलजलूल और मूर्खता पूर्ण बातें बक रहा है, लेकिन धीरे-धीरे उसने अपनी मानसिक स्थिति को ऐसा कर लिया था कि वह यही नहीं

अनुभव कर रहा था कि क्या कहने लायक और क्या नहीं। पर्येन ने उसे शान्त करने की कोशिश की, उसे टोका भी कि इस तरह चिल्लाते रहना बेकार है कि जल्दी ही 'ट' शहर की सीमा पर पहिले बड़े गाँव 'सावज़ स्प्रिंग' में वे लोग जल्दी ही पहुँच जायेंगे जहाँ वे सारी बातों का पता लगा सकते हैं लेकिन नेज्दानोव ने उसकी एक न सुनी और तमाशा यह कि उसका चेहरा आश्चर्यजनक रूप से उदास और दुखी था, लगभग निराशा से क्लान्त। उनका घोड़ा भारी मटोल और तगड़ा था उसकी मोर सी गर्दन के बाल छटे हुए थे। वह गर्दन को ताने अपनी लगाम को आगे की ओर झटकता अथवा दोनों टाँगों को आग सीना उभाड़ कर फेंकता एक लय में दौड़ा जा रहा था जैसे मानों वह उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों को घटनास्थल पर ले जाने की जल्दी में हो। 'सावेर्जस्प्रिंग' गाँव से बाहर ही नेज्दानोव ने एक सूने खलिहान में आठ किसानों को बैठा आपस में बात करते देखा। वह तुरन्त गाड़ी में से बाहर उछल पड़ा और चिल्लाता हुआ और ऊपर को हाथ हिलाता हुआ उनकी ओर दौड़ा। उसकी अस्पष्ट बेतुकी चिल्लाहट में से, 'आजादी'! आगे बढ़ो! कन्धे से कन्धा मिलाकर!' स्पष्ट सुनाई पड़ रहे थे। किसान जो खलिहान में यह निश्चय करने के लिए जमा हुए थे, कि खत्तों का अनाज से कैसे भरा जाय कम ही ऊपर से दिखाव भर के लिए ही सही (वह सबकी सामूहिक जायदाद थी और खाली पड़ी थी), नेज्दानोव की ओर चौंक कर देखने लगे लगता था जैसे उसकी चीखों को ध्यान से सुन रहे थे लेकिन उनकी समझ में शायद ही कुछ आ रहा था, क्योंकि जब वह उनके पास से—'आजादी' चिल्लाता हुआ निकला, तो उनमें से एक ने जो शायद उनमें सबसे ज्यादा चतुर था हवा में गम्भीर विचार शीलता की गरिमा से सिर हिलाया और टिप्पणी की, 'क्या यह भयंकर बातें नहीं हैं?' एक दूसरे ने कहा 'कोई कप्तान लगता है।' जिस पर पहिले वाले किसान ने कहा 'निश्चय ही— शान-सी ही यह अपने गले को नहीं फाड़ता। आजकल वे इसे हमारे पैसों के बदले में यहीं ला देते हैं।' नेज्दानोव ने, जब वह लौट कर

गाड़ी में ग्राकर पवेल की बगल में बैठा तो स्वयं अपने बारे में सोचा, 'या खुदा! कैसी बच्चा सूझता है! तुममें से कोई भी जनता को आन्दोलित करना नहीं जानता—क्या ऐसी ही बात नहीं है?' खैर, अब सोच विचार का समय नहीं है। बस, आगे बढ़ते जाओ! तुम्हारे दिल में दर्द होता है? तो होने दो।

वे लोग गाँव की सड़क पर होकर जा रहे थे। एक शराबखाने के सामने किसानों की काफी भीड़ जमा थी। पवेल ने नेज्दानोव को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वह गाड़ी में से कूद पड़ा और जोर से चिल्लाते हुए 'भाइयो! वह भीड़ के बीच में पहुँच गया भीड़ ने उसके लिए रास्ता कर दिया और उनके बीच में खड़ा होकर उसने बिना किसी की ओर देखे उपदेश देना शुरू कर दिया, एक भावुक जोश में रुक लगता था, जैसे वह रो रहा है।

लेकिन यहाँ उसका जो परिणाम निकला वह बिल्कुल ही भिन्न था। एक लहीम शहीम दाढ़ी विहीन किन्तु भयानक मुख वाला आदमी, छोटा चीफ्ट कोट, ऊँचे बूते और भेड़ की खाल की टोपी पहिने, नेज्दानोव के पास गया और उसके कन्धों को पूरी शक्ति से थपकते हुए उसने कहा 'शाबाश! तुम बड़े शानदार आदमी हो। और गरजती आवाज में कहा पर थोड़ा रुको! क्या तुम नहीं जानते कि सूखे शब्द मुँह को जलाते हैं? इधर आओ! यहाँ क्या बात करना! वह नेज्दानोव को होटल के भीतर खींच ले गया सारी भीड़ भी उनके पीछे पीछे भीतर घुस पड़ी। 'मिहेइच!' दानव सा वह जवान गुर्राया, 'जल्दी करो! उठो दो गिलास लाओ! जल्दी! मेरी अपनी प्यारी शराब। मैं अपने एक मित्र को दावत दे रहा हूँ। वह कौन है, उसका धंधा क्या है और यह कहाँ से आया है, खुदा जाने जो भी हो, लेकिन वह इन अमीरों पर दिल खोलकर बरस रहा है। 'लो पीओ! उसने नेज्दानोव की ओर घूमते हुए और एक भरा हुआ गिलास जिसका भाग बाहर गिर रहा था, उसे देते हुए कहा, पीओ—अगर तुम्हारे

हृदय में हम जैसे लोगों के प्रति जरा भी लगाव है ! 'चश्मो !' सब एक साथ कहा। नेज्यानोव ने गिलास को कसकर पकड़ लिया (वह एक प्रकार के स्वप्नलोक में पहुँच गया था), और चिल्लाया 'तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये जवानो !' और उसने एक साँस में सारा गिलास, उसने हताश वीरता के आवेश में जिसमें वह अपने को गोलियों की बौछार में झोंक सकता था खाली कर दिया। ... लेकिन उसके अन्दर क्या हो रहा था ? कोई चीज उसकी रीढ़ में होकर पैरों तक बर्छी सी चीरती चली गई और उसका गला सीना और पेट जलने लगा, आँखों से आँसुओं की धार बह गई। ... एक प्रकार की खुमारी ने उसे अवश कर दिया। उसे मतली सी आने लगी। वह बड़ी मुश्किल से अपने को सँभाल पा रहा था ... वह अपने पूरे जोर से चिल्लाने लगा। वह अपने मस्तिष्क में होने वाले उद्वेलन को दबाने की भरसक कोशिश कर रहा था। शराबखाने का अंधेरा कमरा जैसे एकाएक गर्म हो गया था, लोगों की भीड़ से उसकी हवा में उमस भर उठी थी। नेज्यानोव बोलने लगा अंटसंट ऊल-जलूल चिल्लाता हुआ वह गुस्से और निराशा से, अपने हाथों को हवा में हिलाता सामने खड़े लोगों की दाढ़ियों को चूमता। दानव जैसे लहीम शहीम नौजवान का भी उसने चूमा। उसने भी नेज्यानोव को चूमा, और उसे इतनी जोर से अपनी बाहों में भींचा कि उसकी हड्डियाँ चरमरा उठीं। और उसने अपनी दानवी बर्बरता का प्रदर्शन भी कर दिया। 'मैं उसकी गर्दन मरोड़ दूँगा !' वह गुर्राया, मैं उसकी गर्दन मरोड़ दूँगा ! अगर किसी ने मेरे मित्र की ओर आँख उठाई ! और नहीं तो मैं उसका भेजा निकाल दूँगा ... मैं उसकी चोख निकाल दूँगा ! मैं इस पर तुला हुआ हूँ, जानते हो मैं कसाई रहा हूँ ! ऐसे कामों में मेरे हाथ बड़े माहिर हैं !' और उसने अपना भारी घूँसा हवा में ताना ... और तब, क्या मजाल था किसी की ! फिर किसी ने आवाज लगाई, पीओ !' और नेज्यानोव फिर उस मधुर जहर को एक साँस में गटक गया, लेकिन इस दूसरी बार ! बड़ा भयानक था कष्ट कर ! ऐसा लगता था जैसे

मोपरे भाँकवे भन्दर ही भन्दर उसे फाड़े डाल रहे हैं। उसका सिर भम रहा था, उसकी भाँखों के सामने हरे गोले भयंकर रूप से चक्कर काट रहे थे भौर उसके कान गूँजने लगे थे। भाह भयानक! फिर एक तीसरा गिलास क्या यह सम्भव था कि वह उसने खाली कर दिया हो? भनेक नीली नाकें चारों भोर से उस पर झुकी सी दीख रही थीं। उत्सुक भीड़ व्यग्र हो उठी, लोगों के सिर उसकी भोर झुक गये पीछे से गर्दन उचका उचका कर लोग उसे देख रहे थे, खुरदुरे उजड्ड हाथों ने उसे पकड़ लिया। 'बढ़े चलो', गूँजती हुई कई भावाजों ने कहा। भौर बोलो! कल भी एक इसी तरह का भजनवी भाया था, वह भी ऐसी ही बात करता था। चढ़ाये चलो भौर बोलते चलो! नेज्वानोव को अपने पैरों के नीचे की धरती घूमती हुई सी लगी। उसे भपना ही स्वर भजीब सा लग रहा था, जैसे वह बहुत दूर से भा रहा हो क्या यह मृत्यु थी, या कुछ भौर।

भौर यकायक उसके चेहरे की भंगिमा कुछ भजीब सी हुई,—ताजी हवा का एक झोंका सा उसने भपने चेहरे पर महसूस किया भौर फिर सब शान्त हो गया, लाल चेहरे, शराब की तीव्र गंध, भेड़ की खालें, चमड़े सब कुछ गायब हो गया। भाँखों के भागे धुंधला धा सा छा गया। भौर वह फिर पवेल के साथ गाड़ी पर बैठा था। पहले तो वह भकड़ा भौर चिल्लाया, 'ठहरो! कहाँ ले जा रहे हो? मुझे उन्हें समझाने का तो कुछ वक्त मिला ही नहीं' भौर तब उसने जोड़ा—'तुम स्वयं, तुम मूर्ख' सत्यवदमाश, शैतान, तुम्हारे क्या विचार हैं? इस पर पवेल ने उत्तर दिया 'बड़ा भच्छा होगा भगर भमीर भौर जमींदार न रहें भौर सारी जमीन पर हमारा भधिकार हो जाय—इससे भौर भच्छा क्या होगा? लेकिन भभी ऐसा सम्भव कहाँ है, भौर उसने घोड़े की रास मोड़ी, एक झटका दिया, खींचा भौर घोड़ा सरपट दौड़ने लगा, उस भीड़ के शोरगुल से दूर कारखाने की भोर।

नेज्यानोव गाड़ी के हिचकोलों से इधर उधर झोंके ले रहा था और उसे झपकी सी आने लगी थी। मीठी हवा मधुरता से उसके चेहरे को थपक रही थी और दुखदाई असान्त विचारों को पीछे रोके हुए थी।

वह नाराज और मुर्झाया हुआ था कि उसे अपने विचारों को पूरा तरह से भागने को समझने का अवसर नहीं दिया गया। लेकिन हवा ने फिर उसके उत्तेजित चेहरे को शान्त किया।

और तब मरियाना की धुंधली सी शक्ल एक क्षण को उसके सामने आगई, उसका मन कड़ु तलखी भरे अपमान से जल उठा और ... तब नींद भारी मृत्यु जैसी नींद ने उसे घेर लिया।

यह सब बाद में पबल ने सोलोमिन को बताया। उसने सोलोमिन से यह नहीं छुपाया कि उसने नेज्यानोव को पीने से नहीं रोका था और वह रोक भी नहीं सकता था। दूसरे लोग उसे वहाँ से जाने ना नहीं देते।

लेकिन जब वह खूब शराब पीकर बेहोश सा होने लगा था मैंने अनेक बार उनके सामने झुककर उनसे प्रार्थना की "भले मानुसो" मैंने कहा इस बिचार लड़के को अब जाने दो, देखो न यह भी कितना कच्चा उम्र का है ...' और उन्होंने उसे जाने दिया। 'सिर्फ हमें इस जाने देने के लिए आधा रूबल दे जाओ,' उन्होंने कहा। सो मैंने उन्हें दे दिया।

'बहुत ठीक किया,' सोलोमिन ने सहमति प्रकट करते हुए कहा।

नेज्यानोव सोता रहा और मरियाना खिड़की पर बैठी बाहर छोटे से घर को और शून्य में ताकती रही और आश्चर्य है कि नेज्यानोव के जाने से पहिले जो अपमान लगभग शैतानी भावनाएँ उसके मन में उठ रही था, वह सब की सब एकदम से तिरोहित हो गई, नेज्यानोव के प्रति उसके मन में क्रोध, कुढ़ झुंझलाहट या घृणा की भावना नहीं थी, वरन् उस पर दया आ रही थी। वह खूब अच्छी तरह जानती थी कि वह न तो असली है और न शराबी और बैठी सोच रही थी

कि जब वह जगे तो वह उससे क्या कहे कुछ स्नेहपूर्ण, कि वह दुख और लज्जा का अनुभव न करे। 'मुझे कुछ इस ढंग से उससे बात करनी चाहिए कि वह अपने आप सब कुछ बता दे, कि यह सब कैसे हुआ।'

वह उद्विग्न नहीं थी, लेकिन दुखी थी अत्यधिक दुखी। यह कुछ ऐसा था जैसे—जिस संसार में पहुँचने के लिए वह संघर्ष कर रही थी, उसकी हवा का झोंका उस पर से होकर प्रवाहित हो गया हो और वह अपने इस निराशापूर्ण भावा पर काँप उठी। कैसी विडम्बना थी? वह कौन सी वस्तु थी जिसके लिए वह अपना बलिदान करने जा रही थी?

लेकिन नहीं! यह नहीं हो सकता। यह कोई खास बात नहीं, यह तो हो ही गया किसी तरह और जल्दी ही सब ठीक हो जायगा।

वह एक क्षणिक प्रभाव था जिसने उसको सिर्फ इसलिए प्रभावित किया था क्योंकि इस सब की उसे आशा नहीं थी। वह उठ बैठी, सोफे के पास गई, जिस पर नेज्दानोव लेटा था, और उसने उसकी पीली पलकों पर, जो पीड़ा के कारण नींद में भी सिकुड़ी हुई थी, रूमाल फेरा और उसके बालों को मुँह पर से हटा कर पीछे की ओर किया

फिर वह उसके लिए दुखी हो उठी वैसी ही दुखी जैसे एक माँ अपने बीमार बच्चे के प्रति दुखी हो उठती है। लेकिन इससे उसकी ओर देखने में उसका दिल दुखने लगा, और वह आहिस्ता से अपने कमरे में चली गई और दरवाजे को आधा खुला छोड़ गई।

कमरे में जाकर वह बिचारा में खोई निष्क्रिय बैठ गई। वह अनुभव कर रही थी कि समय बीतता जा रहा है, मिनट के बाद मिनट उड़ता जा रहा है और ऐसा अनुभव करना निश्चित रूप से उसे मधुर लग रहा था, उसका दिल धड़क रहा था और फिर वह सोच में पड़ गई—किसी चीज प्रतीक्षा करती सी।

सोलोमिन कहाँ चला गया ?

धीरे से दरवाजा चर्राया और तात्याना कमरे में आई।

क्या चाहिए तुम्हें ? मरियाना ने झुँझलाहट से उससे पूछा।

मरियाना विकेन्त्येवना' तात्याना ने दबे स्वर में कहना शुरू किया देखो, घबड़ाना मत। क्योंकि यह तो ऐसी बात है जो जीवन में होती ही रहेगी, और ईश्वर को धन्यवाद भी दो—

मैं बिल्कुल भी नहीं घबड़ा रही हूँ तात्याना ओसीपोवना', मरियाना ने बीच में ही उसकी बात काट दी। अलेक्सी दिमित्रिच की तबियत जरा ठीक नहीं है, लेकिन कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है।'

'तुम घबड़ा नहीं रहीं यह तो बहुत ही अच्छा है। लेकिन मैं उधर यह सोच रही थी कि न जाने क्या बात है कि मरियाना विकेन्त्येवना अभी आ नहीं रही है? लेकिन उसके लिए मैं तुम्हारे पास नहीं आती क्योंकि इस मामले में पहिला नियम यह है कि अपना काम देखो। लेकिन बाहर कोई आया है—मैं नहीं जानती कि कौन है। वह एक नाटे कद का लंगड़ा आदमी है और वह अलेक्सी दिमित्रिच से मिले बिना किसी भी तरह सन्तुष्ट नहीं हो रहा है। वह बड़ा अजीब सा लग रहा है आज सवेरे ही वह स्त्री उसे पूछती हुई आई और अब वह लंगड़दीन आ धमका। 'और अगर' वह कह रहा है, 'अलेक्सी दिमित्रिच यहाँ नहीं है, तो हम उस वासिली फेदोतिच से ही मिला दें। मैं किसी न किसी से बिना मिले नहीं जाऊँगा' वह अड़ पकड़े हुए है, कहता है—"क्योंकि मिलना बहुत ही जरूरी है, एक बहुत जरूरी काम है।' मैंने उस स्त्री की तरह ही इसे भी रफूचक्कर करना चाहा, उससे कहा कि वासिली फेदोतिच यहाँ नहीं हैं कहीं बाहर गए हैं लेकिन वह लंगड़ा तो जम कर बैठ गया है, कहता है, 'मैं मिले बिना नहीं जाऊँगा, चाहे मुझे आधी रात तक इन्तजार करना पड़े" सो वह बाहर चौक में चहलकदमी कर रहा है। आओ,

इधर आओ गैलरी में, खिड़की में से तुम्हें वह दिखाई दे जायगा' क्या तुम मुझे बता सकती हो कि वह कौन और कैसा आदमी है?

मरिआना तात्याना के पीछे-पीछे गई। उसे नेज्धानोव की बगल से गुजरना पड़ा—और उसने फिर देखा कि उसकी भौंहें पीड़ा से सिकुड़ी हुई थीं, उसने फिर अपना रूमाल उस पर फिराया। धूल से अटे खिड़की के शीशों में से उसने आगन्तुक को देखा। वह इसके लिए अजनबी था, लेकिन उसी समय हाते के एक ओर से सोलोमिन आता दिखाई दिया।

वह नाटा लंगड़ा आदमी तेजी से उचकता हुआ उसके पास गया और उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। सोलोमिन ने उसका हाथ थाम लिया। जाहिर था कि वह उस आदमी को जानता था। फिर दोनों ही ओझल हो गए।

लेकिन अब उन दोनों की पदचाप सीढ़ियों पर सुनाई दी वे लोग ऊपर आ रहे थे

मरिआना तेजी से अपने कमरे में वापस चली गई और कमरे के बीच में स्थिर खड़ी हो गई। वह बस मुश्किल से साँस ले रही थी और भय का अनुभव कर रही थी लेकिन किस से? वह स्वयं नहीं जानती थी।

दरवाजे पर सोलोमिन का चेहरा दिखाई पड़ा।

'मरिआना विकेन्त्येवना हम लोगों को अन्दर आने की इजाजत दीजिए। मैं आपसे मिलने के लिए एक व्यक्ति को लाया हूँ, जिनसे आपको मिलना अत्यन्त आवश्यक है।'

मरिआना ने उत्तर में सिर्फ सिर हिलाया, और सोलोमिन के पीछे-पाक्लिन ने कमरे में प्रवेश किया।



तैंतीस

"मैं तुम्हारे पति का एक दोस्त हूँ," उसने मरियाना के सामने अभिवादन के लिए झुकते हुए कहा। ऐसा लगता था जैसे वह अपना हवाइयाँ उड़ता और उद्विग्न चेहरा उससे छिपाने के लिए प्रयत्नशील हो, "मैं वासिली फेरापोंतिच का भी मित्र हूँ। अलक्सी इलिनिश्न सो रहे हैं मैंने सुना कि उनकी तबियत खराब है, और मैं दुर्भाग्य से एक बुरी खबर लाया हूँ जो मैंने थोड़ी सी तो वासिली फैरापोंतिच से बता दी है और उसके परिणाम स्वरूप कुछ निर्णयात्मक कदम तुरन्त उठाने जरूरी हैं।

पाक्लिन का स्वर बीच-बीच में उद्विग्नता के कारण टूट-टूट जाता उस मनुष्य की तरह जो प्यासा हो और प्यास के मारे उसका गला सूख गया हो। जो खबर वह लाया था वास्तव में ही बड़ी बुरी थी।—मार्केलोव किस्ताना के ही द्वारा पकड़ कर शहर में लाया गया है। उस मूर्ख सम्मान्य क्लर्क ने गोलुश्किन के साथ गद्दारी की है, और वह भी गिरफ्तार हो गया

है। और अब वह हर एक के साथ और पूरे उद्देश्य के साथ ही गद्दारी कर रहा है और उसने सब कुछ अधिकारियों को बता दिया है। और फिर से पुरातनपन्थी होने को तैयार है, हाई स्कूल को बड़े पादरी फिलार्ट का चित्र भेंट कर रहा है और उसने 'अपाहिज सैनिकों' ने बाँटने के लिए पाँच हजार रूबल दान कर दिए हैं। उसमें जरा भी सन्देह नहीं कि उसने मेज्वानोव का नाम भी खोल दिया होगा, किसी भी क्षण पुलिस कारखाने पर छापा मार सकती है। वासिली फ़ेदोतिच के लिए भी खतरा है, 'और रही मेरी बात', सो मुझे सचमुच आश्चर्य है कि मैं अभी तक स्वतन्त्रता से घूम रहा हूँ, हालांकि ठीक ठीक कहा जाय तो सचमुच मैंने राजनीति में कभी भाग नहीं लिया और किसी योजना में मेरा कैसा भी हाथ नहीं रहा। पुलिस ने शायद इसी सबसे मेरी ओर ध्यान नहीं दिया, और इसी का फ़ायदा उठाकर अवसर मिलते ही मैं यहाँ तुम लोगों को सारी स्थिति बताने और सलाह करने चला आया कि इस दुखदायी स्थिति से मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्या कुछ किया जाय।

मरिआना अन्त तक पाक्लिन की बात ध्यान से सुनती रही। वह भयभीत न हुई—बल्कि बिल्कुल शान्त बनी रही ... 'लेकिन निश्चय ही कुछ तो कदम उठाने ही चाहिए थे। उसने सोलोमिन की ओर देखा।

वह भी सोच में डूबा था, सिर्फ उसके मुख की पेशियां की फड़कन दिखाई दे रही थी और उसके मुख पर उसकी सदैव की परिचित मुस्कान के विपरीत एक दुख पूर्ण चिन्ता का भार व्याप्त था।

बात तो उद्विग्न बना देने वाली है,' उसने अन्ततः कहना प्रारम्भ किया। 'लेकिन मेरी समझ में अभी मेज्वानोव का छिपा रहना ही अच्छा है, अच्छा यह तो बताओ पाक्लिन,—तुम्हें यह कैसे पता लगा कि वह यहाँ है?

पाक्लिन ने उत्तर दिया, 'एक आदमी ने मुझ से कहा था। उसने इस आसपड़ोस प्रचार करते हुए घूमते देखा था। उसने इस पर नजर

रखो, किसी बुरी नीयत से नहीं। वह भी एक अपना हमदर्द ही है। लेकिन माफ कीजिए 'उसने मरियाना की ओर उन्मुख होते हुए कहा, 'नेज्मानोव भी बहुत असावधान रहा, इसमें भी सन्देह नहीं।

'अब उसे दोष देने से कोई लाभ नहीं' सोलोमिन ने कहना शुरू किया। यह बड़े दुख की बात है कि इस समय उससे सलाह-मशविरा नहीं कर सकते लेकिन कल तक वह स्वस्थ हो लेगा और पुलिस अपने काम में उतनी मुस्तैद और तेज नहीं है, जितनी तुम समझते हो। मरियाना विकन्स्येवना मुझे लगता है कि तुम्हें भी उसके साथ जाना होगा।

'निःसन्देह', मरियाना ने उदासी से किन्तु निश्चयात्मकता से उत्तर दिया।

हाँ', सोलोमिन ने कहा। 'हमें सारी बातों पर विचार करना होगा और कोई न कोई रास्ता निकालना ही होगा।

मुझे एक सुझाव देने की आज्ञा दीजिए, पाक्लिन ने कहना शुरू किया, 'यह विचार यहाँ आते समय रास्ते में ही मेरे दिमाग में आया है। मैंने गाड़ीवान को रास्ते से ही नगर से एक मील दूर ही छोड़ दिया है।'

तुम्हारा सुझाव क्या?' सोलोमिन ने पूछा।

'मैं अभी बताता हूँ, पहिले मेरे लिए घोड़ों का प्रबन्ध कर दो और मैं भाग कर सिप्यागिन के पास जाऊँगा।'

'सिप्यागिन के यहाँ!' मरियाना ने दुहराया' 'किस लिए?'

'अभी बताता हूँ।

'लेकिन क्या आप उन्हें जानते हैं?

'बिल्कुल भी नहीं! लेकिन मेरी बात सुनिए और सुझाव पर गम्भीरता से सोचिए।

'मुझे तो यह बहुत ठीक और उचित लगता है। आप जानते हैं कि मार्केलोव सिप्यागिन का साला है। है न? क्या यह सुझाव है कि वे

महाशय अपने साले को बचाने के लिए कुछ भी न करें ? और फिर नेज्दानोव भी ! माना कि सिप्यागिन उससे नाराज हैं फिर भी अब तो वह भी आपसे शादी करके उनका रिश्तेदार हो गया है। और हमारे मित्र के सिर पर लटकता संकट—'

'मेरा अभी विवाह नहीं हुआ है,' मरिआना ने कहा।

पाक्लिन चौंक पड़ा।

'क्या ? अभी तक' यह सब नहीं हो पाया ! खैर, कोई बात नहीं', उसने अपनी बात जारी रखी, 'थोड़ी सी तो बात बनाई जा सकती है। यह एक ही बात है। आप दोनों की शादी तो होने जा रही है न जल्दी ही। इसके अतिरिक्त और कोई तरकीब नहीं सोची जा सकती ! जरा इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि अभी तक सिप्यागिन ने आपको दंडित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया है। और फिर वह बड़ा उदारशील है। — मैं देख रहा हूँ कि यह बात आपको रुचिकर नहीं हो रही है, तो कहा जाय कि कम से कम उदारता के प्रति थोड़ा सा लगाव तो उसे है ही। हम क्या न इस मामले में उसके इस स्वभाव का उपयोग करें ? जरा गौर कीजिए मेरी बात पर, गम्भीरता से।

मरिआना ने अपना सिर उठाया और बालों पर हाथ फेरा।

'आप उसका उपयोग चाहें तो मार्केलोव के हित में कर सकते हैं, मिस्टर पाक्लिन या अपने हित में, लेकिन अलैक्सी और मैं न तो सिप्यागिन की मदद चाहते हैं और न उनकी दया और कृपा ही। हमने उनका घर इसलिए नहीं छोड़ा था कि हम वहाँ दुबारा भिखारी की हैसियत से जायेंगे। हमें न तो उनकी पत्नी की उदारता की चाह है और न उनकी दया की !

'निःसन्देह यह भावनाएँ बड़ी ही प्रशंसनीय हैं,' पाक्लिन ने कहा (लेकिन 'मेरा ! यह बड़ा ही सुन्दर नम कम्बल है। उसके मन ने कहा), मगर आप जरा विचार करें 'खैर, मैं हर तरह से आपकी आज्ञा मानने को तैयार हूँ। मैं सिर्फ मार्केलोव के लिए ही

कोशिश करूंगा सिर्फ अपने प्रिय भले मार्केलोव के लिए! लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि मार्केलोव से तो उसका ख़ून का रिश्ता नहीं है सिर्फ पत्नी के भाई के नाते रिश्ता है, जब कि आप से तो—'

'मिस्टर पाक्लिन, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ।

'ओह, हाँ हाँ। लेकिन मैं अफसोस प्रगट किए बिना नहीं रह सकता कि सिप्यागिन बड़ा प्रभावशाली व्यक्ति है।'

'तो, तुम्हें अपने लिए कोई खतरा नहीं है?' सोलोमिन ने पूछा।

पाक्लिन ने अपना सीना ताना।

'ऐसे मौकों पर अपनी अपनी बात किसी को नहीं सोचनी चाहिए,' उसने गर्व से कहा पर बात सचमें यह थी कि वह निरन्तर अपने बारे में सोचता रहा था। वह जैसा की कहावत है, (बेचारा दुर्बल, नाटा प्राणी) सबसे पहिले मौके से लाभ उठाना चाहता था। उसे आशा थी कि सिप्यागिन उसकी इस सेवा से प्रसन्न होकर ज़रूरत पड़ने पर उसकी सिफारिश भी कर सकता है। क्योंकि वास्तव में कहे चाहे वह कुछ भी कह भी, तो इसमें फँसा हुआ था। उसने सुना भी ऐसा था बल्कि अपने बारे वह कहता भी यही फिरता था।

'मेरा ख्याल है कि तुम्हारा विचार तो बुरा नहीं, आखिर में सोलोमिन ने कहा 'यद्यपि उसकी सफलता में मुझे सन्देह है। खैर, फिर भी तुम कोशिश कर सकते हो। तुम कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे।

'निश्चय ही नहीं। अच्छा, मानलो उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया और मेरी बात नहीं सुनी तो उससे नुकसान ही क्या होना है?

'निश्चय ही इससे कोई हानि नहीं होगी' — '('दया हो!' पाक्लिन ने सोचा) और सोलोमिन अपनी बात कहता गया 'इस समय क्या बजा है? पाँच बजे हैं, समय खोने का वक्त नहीं है। तुम्हें अभी घोड़े मिल जायेंगे। चलेस!'

लेकिन वजाय पवेल के उन्होंने दरवाजे पर नेख्यानोव को देखा। वह लड़खड़ा रहा था और दरवाजे पर सहारा लेकर खड़ा था, मुँह लाल स्तिम्मित शून्य नेत्रों से घूरते हुए।

पाविलन सबसे पहिले उसकी ओर लपका।

'अल्याशा !' वह चिल्लाया, 'तुम मुझे जानते हो जानते हो न ?'

नेख्यानोव ने धीरे से पलक झपकाते हुए उसकी ओर ध्यान से देखा।

'पाविलन ? उसने अन्ततः कहा।

'हाँ हाँ, यह मैं ही हूँ। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है ?'

'हाँ मैं अस्वस्थ हूँ। लेकिन तुम यहाँ कैसे ?'

मैं यहाँ लेकिन तभी मरिआना ने चोरी से पाविलन के कोहनी छुई। उसने घूम कर देखा। मरिआना उसे इशारा कर रही थी आह, हाँ !' उसने बात बनाई मैं एक जरूरी काम से आया हूँ और तुरन्त ही मुझे चला भी जाना चाहिए सोलोमिन तुम्हें सारी बात बता देगा—और मरिआना मरिआना विकेन्त्येवना भी। वह दोनों ही मेरी योजना से पूरी तरह सहमत हैं—यह एक ऐसी बात है, जिससे हम सबका सम्बन्ध है यह नहीं, नहीं, उसने जल्दी से मरिआना के दृष्टिपात और संकेत के प्रत्युत्तर में बात सभाली 'यह मार्केलोव के सम्बन्ध की बात है, हम सबके मित्र मार्केलोव के, बस उसी से सम्बन्धित। लेकिन अब, नमस्ते ! हर क्षण कीमती है नमस्ते, मित्र हम फिर मिलेंगे। वासिली फेदोतिच, घोड़ों के लिए आज्ञा देने को तुम मेरे साथ चलोगे ?

'जरूर ! मरिआना मैं तुमसे कहना चाहता था घबड़ाना मत ! लेकिन अब कोई जरूरत नहीं। तुम खुद फौलादी हो !'

'ओ, हाँ ! ओ, हाँ ! पाविलन ने सुर में सुर मिलाया 'आप काटो युग की सच्ची रोमन नारी हैं ! यूटिका का काटो। लेकिन चलो, वासिली फदोतिच, हम लोग चलें।'

'बहुत समय है,' अनसाई मुस्कान के साथ सामोमिन ने कहा। नेग्यानोव ने एक ओर हटकर उन्हें बाहर जाने का रास्ता दिया। लेकिन अब भी उसकी आँखों में वही शून्यता व्याप्त थी। तब वह दो कदम आगे बढ़ा और आहिस्ते से मरिआना के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। 'अलेक्सी' मरिआना ने बात छेड़ी 'सारी बात खुल गई है मार्केलोव उन्हीं किसानों के द्वारा जिन्हें वह विद्रोह के लिए भड़का रहा था पकड़ लिया गया है और अब वह शहर में गिरफ्तार है। यही हाल उस व्यापारी का भी है, जिसके साथ तुमने भोजन किया था, बहुत सम्भव है पुलिस यहाँ भी हम लोगों की खोज करती हुई आ धमके। पाक्लिन, सिप्यागिन के पास गया है।'

'किस लिए?' नेग्यानोव ने व्यग्रता से किन्तु अस्पष्ट स्वर में कहा। लेकिन उसकी आँखें साफ हो गई थीं, उसका चेहरा चैतन्य हो गया था। उसकी मूर्च्छा यकायक गायब हो गई थी।

'उसे मध्यस्थ बनाने की कोशिश में।' नेग्यानोव ने सचेत होकर पूछा—'हमारे लिए?'

'नहीं, मार्केलोव के लिए, वह हमारे लिये भी प्रार्थना करना चाहता था लेकिन मैंने उसे मना कर दिया। मैंने ठीक किया न, अलेक्सी?'

'ठीक किया?' नेग्यानोव ने कहा, और अपनी कुर्सी से बिना उठे ही उसने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ा दिये। 'ठीक कहा?' उसने दुहराया, और उसके नजदीक झुकते हुए और उसके चेहरे से अपने चेहरे को छिपाते हुए, वह एकाएक फूट कर रोने लगा।

'क्या बात है, मेरे प्राण? क्या बात है?' मरिआना उद्विग्न होती हुई चिल्लाई। अब भी वह उसी दिन की तरह, जब वह उसके सामने घुटनों के बल बैठ कर भावुकतापूर्ण बातें करने लगा था, उसके काँपते हुए सिर को अपने दोनों हाथों से सहला रही थी।

लेकिन अब उसके मन में उस दिन से बिल्कुल भिन्न भावनाएँ उठ रही थीं। उस दिन उसने अपने आपको उसे समर्पित कर दिया था। उसने समर्पित कर दिया था और बस इस बात की प्रतीक्षा में थी कि वह उससे क्या कहता है। अब वह उस पर दया कर रही थी और कैसे उसे सान्त्वना दे इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं सोच रही थी।

'क्या बात है, मेरे प्राण ?' उसने कहा। 'तुम रो किस लिये रहे हो ? निश्चय ही इसलिए नहीं कि तुम बड़ी अजीब हालत में घर लौटे थे ! यह नहीं हो सकता। या तुम मार्कलोव के लिए दुखी हो, और मेरे लिए और अपने लिए डर रहे हो ? या हम सबकी खण्डित हुई आशाओं पर दुखी हो ? तुम यह तो नहीं सोच सकते कि हर काम आसानी से हो जायगा।

नज्दानोव ने एकाएक अपना सिर उठाया।

'नहीं, मरियाना' अपनी सिसकियों को नियन्त्रित करता हुआ सा वह बोला मैं तुम्हारे लिए भयभीत नहीं हूँ और न अपने ही लिए लेकिन हाँ मैं दुखी हूँ' 'पर किसके लिए ?

'तुम्हारे लिए, मरियाना। मुझे दुख है कि तुमने अपना जीवन उस आदमी के साथ बाँधा है जो तुम्हारे लिए नितान्त अयोग्य है।

'ऐसा क्यों ?

'इसीलिए कि वह ऐसे मौके पर भी आँसू बहा रहा है !'

'यह तुम नहीं रो रहे हो , यह तुम्हारी स्नायुएं रो रही हैं !'

'मेरी स्नायुयें और मैं एक ही हैं ! देखो, मरियाना, मेरे चेहरे पर देखो क्या तुम अब भी सचमुच कह सकती हो कि तुम्हें पछतावा नहीं है

'क्या ?'

'कि तुम मेरे साथ आयीं ?'

'नहीं।

और तुम मेरे साथ भाग भी सकोगी जाओगी ? हर जगह, जाऊं ,

'हां ।

हां ? मरिमाना हां ?

'हां । मैंने तुम्हें वचन दिया है, और जब तक तुम वही रहते हो जिससे मैंने प्रेम किया था तब तक मैं पीछे नहीं हटूंगी ।

नेज्दानोव अपनी कुर्सी पर ही बैठा रहा, मरिमाना उसके खड़ी थी । उसके हाथ उसकी कमर को घेरे हुए थे और मरिमाना के हाथ उसके कंधों पर टिके हुए थे । हां नहीं, नेज्दानोव ने सोचा लेकिन—पहले जब मुझे इस अपने आलिंगन में मन का सौभाग्य हुआ था तब इसका शरीर कम से कम निश्चल था लेकिन अब मुझे अनुभव हो रहा है कि यह इसकी इच्छा के विपरीत है और मुझसे अलग हो जाना चाहती है । उसने अपने हाथ ढीले कर दिए मरिमाना सचमुच धीरे से पीछे हट गई ।

'मेरा ख्याल है, उसने स्पष्ट स्वर में कहा अगर हम भागना ही है उसके पहले कि पुलिस हमारा पता लगाले तो मैं समझती हूं, हम लोगों को धोखा पर सना ही अच्छा होगा । अनवत फिर हम कहीं जासिम जैसा पादरी न मिल सके ।

मैं तैयार हूं, मरिमाना ने कहा ।

नेज्दानोव गौर से उसकी ओर देखता रहा ।

'रानन कुमारी । उसने दुष्टतापूर्ण अर्थ मुस्कान के साथ कहा । कैसा कर्तव्य भावना है ।

मरिमाना ने अपने कंधे उचकाए ।

हमें सालोमिन से बात करनी चाहिए ।

हां सोलोमिन , नेज्दानोव मंद स्वर में बुदबुदाया । लेकिन मेरा ख्याल है, उसे भी तो कोई खतरा होगा । पुलिस उसे भी तो पकड़ेगी । मुझे लगता है कि 'उद्देश्य के लिए उसने मुझसे ज्यादा

काम किया है और उसके विषय में मुझ से ज्यादा जानता-समझता भी है।

'मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानती', मरियाना ने कहा। 'वह कभी अपने बारे में बात नहीं करता।'

'मुझसे बिल्कुल विपरीत।' नेज्दानोव ने सोचा। 'यही इसका अभिप्राय है। सोलोमिन ... सोलोमिन' उसने लम्बी चुप्पी के बाद दुहराया। 'तुम जानती हो मरियाना, अगर जिस आदमी से तुमने अपने जीवन को सम्बन्धित किया है वह सोलोमिन जैसा होता या वह खुद सोलोमिन ही होता तो मुझे तुम्हारे लिए जरा भी दुख न होता।'

मरियाना ने नेज्दानोव की ओर व्यग्र दृष्टि से देखा।

'तुम्हें ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है' उसने अंततः कहा।

'मुझे कोई अधिकार नहीं था। उन शब्दों से भला मैं क्या समझूँ?

'क्या तुम्हारा मतलब है कि तुम मुझसे प्रेम करती हो? या कि इस प्रश्न को पूछने का मुझे कोई अधिकार नहीं था?

ऐसा कहने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं था', मरियाना ने फिर दुहराया।

नेज्दानोव का सिर नीचे को झुक गया।

मरियाना। वह थकते रुकते कुछ बदले हुए स्वर में बोला। हाँ,

मगर मैं अब ... मगर मैं अब वही सवाल तुमसे पूँछूं—तुम जानती हो? ... नहीं मैं तुमसे कुछ नहीं पूछता' ... नमस्ते।

वह उठ बैठा और बाहर चला गया। मरियाना ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। नेज्दानोव अपने कमरे में जाकर सोफे पर बैठ गया और उसने अपने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया। वह अपने

ही विचारों से भयभीत था और न सोचने की कोशिश कर रहा था। सिर्फ एक ही भाव उसके मन में बार-बार उठ रहा था कि किसी काले अदृश्य हाथ ने उसको सम्पूर्ण रूप से जकड़ लिया है और अब वह उसे छोड़ेगा नहीं। वह जानता था कि वह मनोहर अमूल्य नारी जैसे वह बगल के कमरे में छोड़ आया है उसके पास नहीं आयेगी और उसे स्वयं उसके पास आने का साहस नहीं है। और फिर लाभ क्या है? वह कहेगा भी क्या?

सधे हुए।

तेज हुए पदचापों ने उसे चौंका दिया। उसने अपनी आँखें खोलीं।

शातामिन ने उसके कमरे को पार करते हुए भरियाना का दरवाजा खट-खटाया और भीतर चला गया।

अपने से घृणा के लिए माग खाला करना। नेज्दानोव ने मन ही मन कड़वी फुस-फुसाहट की।



चौंतीस

रात के दस बजे थे। अन्तूनिना भवन के ड्राइंग रूम में स्पियागिन, उसकी पत्नी और कालोमियेत्सव बैठे ताश खेल रहे थे कि तभी एक नौकर ने अन्दर आकर खबर दी कि कोई अजनबी मिस्टर पाक्लिन आये हैं, जो बोरिस एन्द्रिच से किसी अत्यंत महत्वपूर्ण और जरूरी काम से मिलना चाहते हैं।

'इतने रात गये!' वालेन्तिना मिखालोवना ने आश्चर्य प्रकट किया।

'एँ? बोरिस ऐन्द्रिच ने अपनी खूब सूरत नाक को सिकोड़ते हुए पूछा। 'क्या बताया तुमने, महाशय का नाम?'

'हुजूर उन्होंने बतलाया—पाक्लिन।'

पाक्लिन!' कालोमियेत्सव चिल्लाया। यह तो बिल्कुल देहाती नाम है। पाक्लिन' (अर्थात—करना—भरना) सालोमिन' (अर्थात—छिड़कना) 'एक दम से देहाती मामला!'

और तुम कहते हो', बोरिस ऐन्द्रिच ने नौकर की ओर उन्मुख होते हुए उसी

प्रसन्नचित्त और जल्दबाज़ी से पूछा 'कि उसका काम महत्त्वपूर्ण और ज़रूरी है?'

'उन सज्जन ने ऐसा ही कहा हुज़ूर।

'हूँ कोई भिखमंगा या ठग होगा' (या एक साथ दोनों हो', कालोमियेत्सव ने बीच में जोड़ दिया)। 'बहुत सम्भव है। उसे मेरे कमरे में बुलाओ।' बारिस ऐन्द्रिच उठ खड़ा हुआ। 'मुझे ज़रा माफ करना। तब तक आप खेलो या मेरी प्रतीक्षा भी कर सकते हो। मैं अभी वापिस आया।

'कुछ घोटाला लगता है—घोटाला!' कालोमियेत्सव ने कहा। जब सिप्यागिन अपने कमरे में पहुँच कर पाक्लिन के दयनीय दुर्बल शरीर को अँगीठी और दरवाज़े के बीच में दीवाल के सहारे मुड़ी मुड़ी हुआ उँडगा खड़ा था तो उसके मन में उसके प्रति मन्त्रीपदोचित उपेक्षापूर्ण दया और कृपा का भाव उमड़ आया जो पीटर्सबर्ग के उच्च अधिकारियों की खास चारित्रिक विशेषता है।

'हे भगवान! कैसा छोटा नाटा सा पंखहीन चिड़िया जैसा आदमी है!' उसने सोचा 'और मैं देखता हूँ कि यह लँगड़ा भी है।'

'तशरीफ रखिए' उसने उदार मधुर स्वर में कहा और अपने आचरण में विनम्रता और मिलनसारिता प्रकट करते हुए वह स्वयं आगन्तुक के सामने बैठ गया।

'आप थक गए होंगे अपनी यात्रा से, मैं समझता हूँ, कृपया तशरीफ रखिये और फरमाइये क्या है वह महत्त्वपूर्ण कार्य, जिसके लिए इतनी रात में आपने मेरे पास आने की तकलीफ की।

महामहिम' पाक्लिन ने कुर्सी पर बैठकर कहना शुरू किया, मैंने आप तक आने का साहस किया—

ठहरो ठहरो' सिप्यागिन ने बीच में रोक दिया मैंने तुम्हें पहले भी कहीं देखा है। मैं एक बार मिले चहरे को फिर कभी नहीं भूलता,

मैं हमेशा उसे पहचान लेता हूँ। एँ ऍ ऍ ठीक ठीक मैं तुमसे कहाँ मिला था?

महामहिम आप सही कह रहे हैं मुझे पीटसबर्ग में एक व्यक्ति के यहाँ आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जो' तब से दुर्भाग्य से उसने अपने आपको आप का कोप भाजन बना लिया है।

सिप्यागिन एकाएक अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

'मिस्टर नेज्दानोव के यहाँ! अब मुझे याद आ गया। तुम उसके पास से तो नहीं आये हो?'

'ओह नहीं, महामहिम, ठीक इससे विपरीत मैं " "

सिप्यागिन फिर बैठ गया। 'तो ठीक है। क्योंकि अगर तुम उसके पास से आये होते तो मैं तुमसे तुरन्त घर से निकल जाने को कहता। मैं अपने और नेज्दानोव के बीच किसी मध्यस्थ की बात सुनने को तैयार नहीं और न उसे अपने यहाँ आने ही दे सकता हूँ। मिस्टर नेज्दानोव ने मेरा ऐसा अपमान किया है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता मैं उससे बदला लेने की भावना से ऊपर हूँ, लेकिन मैं उसके बारे में कुछ जानना भी नहीं चाहता हूँ और न उस लड़की के बारे में ही—जिसका दिमाग दिल की अपेक्षा ज्यादा भ्रष्ट हो गया है' (सिप्यागिन ने मरिआना के भागने के बाद यह वाक्य कम से कम तीन बार तो दुहराया ही होगा) — जो इतनी नीचे गिर सकी कि एक निम्न कुल के आवारा के साथ घर छोड़कर भाग गई! उनके लिए यही बहुत है कि मैं उन्हें भूल जाने के लिए सहमत हूँ।

इस अन्तिम शब्द का उच्चारण करते समय सिप्यागिन ने अपनी कलाई पुराणसूचन से नीचे की ओर झटकी।

मैं उन्हें भूल गया हूँ, जनाब।

'महामहिम मैंने आपसे पहले ही अर्ज किया कि मैं यहाँ उनकी ओर से नहीं आया हूँ यद्यपि मैं श्रीमान जी को और बातों के साथ

साथ यह बतला दूँ कि उन दोनों ने कानूनी रूप से शादी के बन्धन में अपने आपको बाँध लिया है। ('यह एक ही बात है इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।' पाफ्निन ने सोचा मैं कह आया था मैं यहाँ थोड़ा सा झूठ बोलूँगा और मैं झूठ बोल रहा हूँ कोई बात नहीं।)

सिप्यागिन ने बेचैनी से अपनी आराम कुर्सी की पीठ के सहारे अपने सिर को दायें-बायें घुमाया।

'जनाब यह मेरे लिए कोई दिलचस्पी की बात नहीं है। संसार में एक और मूर्खता भरी पागलपन की कहानी हुई बस। लेकिन वह महत्वपूर्ण अत्यन्त जरूरी काम कौन सा है, जिसने मुझे आपके दर्शनों का सौभाग्य दिया?

ओह! सरकारी विभाग का एक भूतपूर्व कम्बख्त संचालक। पाफ्निन ने फिर सोचा। 'तुम्हारा यह नेत्र और शान बहुत हो भी कुरूप अँगरेज बन्दर के चेहरे।

आपकी पत्नी के भाई साहब उसने सत्वर कहा—मिस्टर मार्केलोव—को किसाना ने पकड़ लिया उन्हीं किसाना ने जिनको वह विद्रोह के लिए भड़का रहे थे और अब वे गवर्नर के मकान पर पुलिस की हिरासत में बन्द हैं।

सिप्यागिन दूसरी बार कुर्सी से उछल पड़ा।

क्या आपने क्या कहा? वह हकलाया, अपने गौरवपूर्ण स्वर में नहीं, वरन् दयनीय स्वर में।

मैंने कहा, आपके साले साहब गिरफ्तार कर लिए गये हैं। जैसे ही मुझे खबर मिली वैसे ही मैं घोड़े लेकर आपको खबर देने के लिए भागा आया हूँ। मैंने सोचा कि शायद इस प्रकार मुझे आपको और उस अभागे व्यक्ति की जिनको आप शायद बचा सकें कुछ सेवा करने का अवसर मिल जाय!'

'मैं आपका बड़ा ही आभारी हूँ,' सिप्यागिन ने वैसी ही कमजोर आवाज में कहा और कुकुरमुत्ते के पलंग की घंटी पर जोर का हाथ

मारा, जिसकी गूँज से सारा घर गूँज उठा। 'मैं आपका बड़ा ही आभारी हूँ, उसने जरा तेज स्वर से दुहराया 'हालांकि मैं आपको यह साफ बता दूँ कि जिस आदमी ने सारे मानवीय और दैवी कानूनों को अपने पैरों तले रौंदा है, वह भले ही सौबार मेरा रिश्तेदार हो, मेरी आँखों में वह दया का पात्र नहीं, वरन् एक अपराधी है !'

एक नौकर ने कमरे में प्रवेश किया।

'आज्ञा, हुजूर ?'

बग्घी तैयार कराओ ! अभी इसी क्षण और चार घोड़ों की ! मैं शहर जा रहा हूँ। फिलिप और स्तेपान मेरे साथ चलेंगे !' नौकर बाहर चला गया। हाँ, जनाब, मेरा साला एक अपराधी है, और मैं शहर जा रहा हूँ, उसकी रक्षा करने के लिए नहीं ! ओह नहीं !'

'लेकिन महामहिम'

'मेरे ऐसे ही सिद्धान्त हैं जनाब, और मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप इस मामले में और कुछ कहने का कष्ट न करिए।'

सिप्यागिन कमरे में इधर उधर टहलने लगा पाक्लिन की आँखें तश्तरी सी गोल हो गई। ओह, शैतान !' वह सोच रहा था 'और तुम अपने को उदारपंथी कहते हो ! तुम तो फाड़खाने को तैयार शेर हो !' दरवाजा खुला और आगे आगे तेज कदमों से वालेन्तिना मिखालोवना न और उसके पीछे कालोमियेत्सेव ने प्रवेश किया।

क्या माने हैं, इस सबके, बोरिस ? तुमने बग्घी निकालने का आदेश दिया है ? तुम शहर जा रहे हो ? क्या हो गया है ?'

सिप्यागिन अपनी पत्नी के पास गया, कलाई और कुहनी के बीच से उसका हाथ पकड़ते हुए बोला 'तुम्हें हिम्मत से काम लेना होगा, मेरी प्यारी। तुम्हारा भाई गिरफ्तार हो गया है।

'मेरा भाई ? सर्जी ? किस लिए ?

'वह किसानों में समाजवादी सिद्धान्तों का प्रचार कर रहा था, (यह सुनकर कालोमियेत्सेव के मुँह से हल्की सी सीटी की आवाज

निकल गई।) 'हाँ! वह क्रान्ति का प्रचार कर रहा था! वह लोगों को भड़का रहा था! उन्होंने उसे पकड़ लिया, और पुलिस के हवाले कर दिया। अब वह शहर में है।

'पागल कहीं का! लेकिन तुम्हें यह सब बताया किसने?'

'मिस्टर मिस्टर क्या नाम है इसका? मिस्टर कानोप्टिन यह खबर लाए हैं।

वालेन्तिना मिखाइलोवना ने पाक्लिन पर दृष्टि डाली। उसने झुक कर अभिवादन किया। 'ये मेरे खुदा! कैसी गजब की आन मारा औरत है!' उसके मन में बात उठी। ऐसे दुखपूर्ण क्षण में भी अफसोस है कि बेचारा पाक्लिन नारी सौन्दर्य से कितना प्रभावित हो रहा था।

और तुम शहर जाना चाहते हो—अब इतनी रात गए?'

'शायद मुझे गवर्नर अब भी जगता मिल जाय।'

'मैं तो पहिले से ही जानता था कि इसका अन्त ऐसे ही होगा,' कालोमियेत्सेव ने कहा। 'इसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता था! लेकिन हमारे रूसी किसान कितने शानदार हैं! बस मजा आ गया। माफ कीजिए श्रीमती जी उन्होंने बहुत ही बुद्धिमानी का काम किया है, इसमें सन्देह नहीं।

'क्या तुम सचमुच ही जा रहे हो, बोरिस?' वालेन्तिना मिखाइलोवना ने पूछा।

'मेरा तो पक्का विश्वास है,' कालोमियेत्सेव ने कहा, कि उन महाशय, मास्टर महोदय मिस्टर नेज्दानोव का भी इसमें हाथ है। कम्बख्त कहीं का! सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। क्या वह भी पकड़ा गया है? तुम नहीं जानते?'

सिप्यागिन ने फिर अपनी कलाई नीचे की ओर झटकी।

मैं नहीं जानता, और जानना भी नहीं चाहता!' और अपनी

पत्नी की ओर उन्मुख होकर उसने जोड़ा, उन दोनों ने शादी कर ली है।

'किसने कहा? इन्हीं महाशय ने?' वालेन्तिना मिखाईलोवना ने फिर पाक्लिन की ओर देखा लेकिन अबकी अपनी आँखें सिकोड़ कर।

'हाँ।

'तब तो,' कालोमियेत्सेव ने कहा, यह महाशय निश्चय ही जानते हैं कि वे लोग कहाँ हैं। क्या तुम जानते हो, वे लोग कहाँ हैं? तुम जानते हो, वे लोग कहाँ हैं? ए-ए-ए? तुम जानते हो?' कालोमियेत्सेव ने पाक्लिन के सामने चक्कर काटते हुए कहा, जैसे उसका रास्ता रोकना चाहता हो, हालाँकि पाक्लिन भागने की इच्छा जरा भी प्रगट नहीं कर रहा था। 'बोलो। उत्तर दो। ए? ए? जानते हो तुम? क्या तुम जानते हो?'

अगर मैं जानता भी हूँ,' पाक्लिन ने रोषभरी झुँझलाहट से कहा—अन्त में उसका क्रोध उमड़ पड़ा और उसकी छोटी आँखें चमक उठीं—अगर मैं जानता भी हूँ, तो भी तुम्हें नहीं बताऊँगा।

'ओह' ओह ओह!' कालोमियेत्सेव बुदबुदाया। 'तुम सुन रहे हो''' सुन रहे हो! यह, यह हजरत भी यह हजरत भी उन्हीं की थैली के हैं।

बग्घी तैयार है!' नौकर ने आकर बताया। सिप्यागिन ने बड़ी दृढ़तापूर्ण अदा के साथ अपना हैट उठाया, लेकिन वालेन्तिना मिखाईलोवना ने उससे ऐसा विनय पूर्ण आग्रह किया कि वह सबेरे तक जाना टाल दे—उसने उनके सामने ऐसे तर्क रखे कि सड़क पर अँधेरा होगा, सब कोई नगर में सो रहे होंगे, वह सिर्फ अपने को परेशान करेगा और हो सकता ठण्ड लग जाय—कि सिप्यागिन को अन्त में जाना स्थगित करना ही पड़ा, 'आपका हुक्म सिर माथे।' उसी अदा—किन्तु अब की दृढ़ता से नहीं—के साथ उसने कहा, और अपना हैट मेज पर रख दिया,

'चाहे खोज दा ! उसने नौकर को आदेश दिया 'लेकिन सवेरे ठीक छः बजे बग्घी तैयार रहे ! सुन रहे हो ? अब तुम जा सकते हो ! ठहरो आगन्तुक महोदय' का सवारी वापस भेज था ! उस आदमी का किराया चुका ना। एँ ? आपने कुछ कहा मिस्टर कोनोप्टिन ! मिस्टर कोनोप्टिन आप हमारे साथ कल सवेरे बाहर चलेंगे। आपने क्या कहा ? मैंने सुना नहीं आप थोड़ी सी वोदका पीएँगे ? मिस्टर कोनोप्टिन के लिए थोड़ी वोदका लाओ ! नहीं ! आप नहीं पीते ? तब फिर, फिलारेट, महाशय जी को ठहरने का हरा कमरा दिखाओ ! नमस्ते मिस्टर कोनो—

पाविलन अब धैर्य न रख सका ।

'पाविलन !' वह गूँजती आवाज में बोला, मेरा नाम पाविलन है !'

'ओ, हाँ, हाँ, वह एक ही बात है। कोई ज्यादा फरक नहीं है। लेकिन आपके शरीर के मुकाबिले में आपकी आवाज कितनी जोरदार है। नमस्ते, मिस्टर पाविलन अब तो ठीक कहा न ! एँ ?'

पाविलन को अतिथिशाला में ले जाकर ठहरा दिया गया और बाहर से ताला लगा दिया गया। जैसे ही वह कमरे में जाकर बिस्तर पर बैठा कि उसने दरवाजे पर अँधेरा वाले में चाबी घूमने की आवाज सुनी। उसने झुँझलाते हुए अपने बुद्धि का अद्भुत सूझ को कोसा। उसे ठीक से नहीं नींद आयी।

दूसरे दिन सवेरे ठीक साढ़े पाँच बजे उसे जगाया गया। उसे काफी पीने को दी गई, जब वह पी रहा था, एक नौकर जो कन्धा पर कर्म हुई पोशाक पहिने था, दूँ लिए वहाँ खड़ा रहा। वह कभी एक पैर। बस,तो कभी दूसरे पैर के बल खड़ा रहा, जैसे वह कहना चाहता हो 'जल्दी कीजिए, श्रीमान्, आप श्रीमान् जी का प्रतीक्षा कर रहे हैं।' तब वह नीचे ले जाया गया। मकान के सामने बग्घी पहिले ही से जुत खड़ी थी। वहाँ कालोमियत्सेव की एक खुली बग्घी भी जुती खड़ी थी सिम्फाशिन खिड़िया पर दिखाई पड़ा। वह ऊँट के बालों का सफा

पहिने था जिसके फास्टर गोल थे। ऐसे लबादे काफी वर्षों से सिवाय कुछ विशिष्ट वर्ग के लोगों के जिन्हें सिप्यागिन प्रसन्न करने और उनका अनुकरण करने की कोशिश कर रहा था और कोई नहीं पहनता था। इसीलिए महत्वपूर्ण और सरकारी अवसरों पर सिप्यागिन इस लबादे को पहिना करता था।

सिप्यागिन ने बड़ी सौजन्यता के साथ पाक्लिन का अभिवादन किया। और बड़े उत्साहपूर्ण भंगिमा से उस बग्घी में बैठने का संकेत किया। 'मिस्टर पाक्लिन आप मेरे साथ चलेंगे। मिस्टर पाक्लिन का थैला ऊपर रख ना। मैं मिस्टर पाक्लिन को साथ ले जा रहा हूं।' उसने पाक्लिन शब्द और पा अक्षर पर जोर देते हुए कहा जैसे वह कहना चाहता हो 'तुम्हारा नाम ही ऐसा है और जब लोग उसे बदल देते हैं तो अपमानित अनुभव करते हो। तो लो फिर! खूब लो! तुम जितना चाहते हो मैं तुम्हें दूंगा। मिस्टर पाक्लिन! पाक्लिन!' यह अभागा नाम सबेरे की शीतल ताजी हवा में गूंजता रहा। सबेरे की हवा इतनी ठंडी थी कि ठंड के मारे कालोमियेत्सेव व र र र। व र र र। व र र र। बड़बड़ाता हुआ आया और अपने लबादे में अपने को अच्छी तरह लपटते हुए वह अपनी शानदार बग्घी में बैठ गया। उसके गरीब मित्र सर्विया के राजकुमार मिखाममोवे मोविच ने भी उस बग्घी का देखकर ठीक ऐसी ही बग्घी बिन्देर के मेन से खरीदी थी) शयनकक्ष की अधखुली खिड़की में से वासन्तिना मिखालोवना कवि के शब्दों में—'रात्रि के रेशमी फरफराते वस्त्रों में' झांक रही थी।

सिप्यागिन बग्घी में बैठ गया और उसने वासन्तिना मिखालोवना की ओर देखकर उसे चूमने के संकेत में अपना हाथ चूमा।

आप आराम से बैठे हैं, न मिस्टर पाक्लिन? चलो बग्घी बढ़ाओ।'

'तुम लोगों क यात्रा शुभ हो।'—वालेन्तिना मिखायोवना ने ऊपर स कहा।

'धन्यवाद, आप भी सानन्द रहें।' कालामियत्सेव ने तपाक से उसकी ओर अपनी माथा के समय पहिनी जान वाली टोपी जिसकी डिजाइन उसने खुद बनवाई थी के नीच म ऊपर देखते हुए चिल्लाकर कहा!

'चलो!' सिप्यागिन ने दुहराया। मिस्टर पाक्लिन भारका ठंड तो नहीं लग रही? चलो बढ़ाओ जी।

दो बग्घियाँ चौक से बाहर निकलीं।

पहिले दस मिनट तक तो दोनों सिप्यागिन और पाक्लिन चुप बैठे रहे। बग्घी के भीतर की गहर नील रंग की रेशमी पोशिश की पृष्ठ भूमि में चीमट जीर्ण कपड़ा में पाक्लिन की आकृति और भी दयनीय लग रही थी। चुप बैठा वह हल्के नील रेशमी पर्दे पड़ी खिड़कियाँ जो बटन दबाते ही ऊपर नीचे हो जाती थीं और सफेद भेड़ की मुलायम खाल के कालीन को जो पैरों के नीचे पड़ा था, और लाल लकड़ी के बोक्स का जो सामने लगा था, जिसमें खता के रखने के लिए घूमदार ट्रे—मेज और किताबों की छोटी आलमारी भी फिट थी देख रहा था। (बोरिस एन्द्रिच बग्घी में बैठ कर काम नहीं करता था, पर हाँ, वह लोगों को यह जरूर दिखाना चाहता था कि वह यात्रा में भी काम करता है।) पाक्लिन कुछ सकपकाहट का अनुभव कर रहा था। सिप्यागिन ने दो बार अपने दोन किए गए धीर्घ स चमकते मुह को उसकी ओर घुमा कर देखा और बड़ी अदा और ध्यान से अपनी बगल की जेब स चाँदी का सिगारों का डिब्बा निकाला, जिस पर पुरान सल्वोनिक टाइप म उसका नाम खुदा था, और उसकी ओर बढ़ाया पीले कुत्ते की खाल क अंग्रेजी दस्ताने पहिने हाथ की दूसरी और तीसरी उँगलियों के बीच में सिगार दबाकर उस देने को हाथ बढ़ाया।

मैं नहीं पीता,' पाक्लिन ने धीमे स्वर में कहा।

'ओह! और सिप्यागिन ने स्वय एक सिगार जला लिया, जो सबसे अच्छा रिगेलिया सिगार था।

'मै आपको बताऊँ प्रिय मिस्टर पाक्लिन,' उसने सौजन्यता से अपने सिगार का कश खींच और उसके सुगन्धित धूँए के छल्ले हवा में उड़ाते हुए कहा 'कि मैं वास्तव में मै बहुत ही आभारी हूँ आपका आपको इस कुछ अनुग्रह लगा है हालाँकि यह मेरा स्वभाव नहीं है बिल्कुल भी नहीं है' सिप्यागिन जानबूझ कर अपने वाक्य को बीच-बीच म काट कर बोल रहा था) मै आपको इसका विश्वास दिलाना चाहता हूँ। लेकिन, मिस्टर पाक्लिन, आप अपने को मेरी स्थिति में रखकर देखिए (सिप्यागिन ने सिगार अपने मुँह के एक कोने से दूसरे कोने तक जीभ से लुढ़का दिया)। मैं जिस पद पर हूँ कहना चाहिए उससे मेरी स्थिति बड़ी अजीब उलझन पूर्ण हो जाती है, और एकाएक मेरी पत्नी का भाई ऐसी अजीब स्थिति में फँस गया है और मैं एक अजीब उलझन में हूँ! मिस्टर पाक्लिन? शायद आप सोचते होंगे कि यह तो कोई बड़ी बात नहीं है?'

'मैं ऐसा नहीं सोचता, महामहिम!

'आप नहीं जानते कि ठीक ठीक किस मामले में और कहाँ, वह गिरफ्तार किया गया?

मैंने सुना कि ट—जिले में।

आपने किससे सुना।

'एक एक आदमी स।'

जाहिर है, चिड़िया से तो नहीं सुना होगा। लेकिन किस आदमी स?

'गवनर के आफिस के एक संचालक के एक सहयोगी स।

'क्या नाम है उसका?'

'संचालक का?'

'नहीं उसके सहयोगी का!'

'उसका 'उसका नाम है उस्पायेविच। वह बड़ा अच्छा अफसर है श्रीमान। जब मैंने यह घटना सुनी, तो मैं जल्दी से आपके पास भागा आया।'

जरूर, जरूर! और मैं फिर कहता हूँ कि मैं आपका बड़ा आभारी हूँ। लेकिन कैसा पागलपन है! यह पागलपन नहीं है क्या? क्या मिस्टर पाक्लिन?'

'बिल्कुल पागलपन है।' पाक्लिन ने कहा और गरम धारा सी पसीने की धार उसकी पीठ पर बह गई। वह आगे बोला, 'इसका कारण है रूसी किसानों को बिल्कुल भी न समझना। जहाँ तक मैं जानता हूँ मिस्टर मार्केलाव अत्यन्त दयावान और उदार हृदय के व्यक्ति हैं, लेकिन उन्होंने रूसी किसानों को नहीं समझा। (पाक्लिन ने सिप्यागिन की ओर नजर डाली जो उनकी ओर घूम कर उसके मनोभावों को पढ़ने की कोशिश कर रहा था पर कटुता से नहीं)। रूसी किसानों को कभी विद्रोह के लिए नहीं भड़काया जा सकता, हाँ बस, उच्च अधिकारी वर्ग तथा जार के प्रति उनकी श्रद्धा भक्ति के नाम पर ही उन्हें भड़काया जा सकता है। किसी किंवदंती का गढ़ना जरूरी है—आपको उस कृत्रिम दिमित्रियस की याद है—किसी तरह का, सीने पर तपे हुए शाह की जलन के चिन्ह जरूरी हैं '

'हाँ, हाँ, पुगाचेव जैसे, सिप्यागिन ने बीच में ऐसे स्वर में कहा जैसे कह रहा हो, मैं अपना इतिहास भूला नहीं हूँ तुम्हें विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है! और जाओ यह पागलपन है! पागलपन! वह अपने सिगार से निकलते धुएं के छल्लों के साथ विचारों में खो गया।

श्रीमान जी!' पाक्लिन ने साहस बटोरते हुए कहा, 'मैंने अभी आपसे अर्ज किया था कि मैं सिगार नहीं पीता' लेकिन यह बात बिल्कुल सही नहीं है। मैं कभी कभी पी लेता हूँ, और आपके सिगार की सुगंधि इतनी रुचिकर है कि '

'ए ? क्या कहा आपने ?' सिप्यागिन ने कहा, जैसे सोते से जगा हो, और पाक्लिन को दुबारा कहने का मौका न देते हुए, उसने यह सिद्ध कर दिया कि उसने उसकी बात सुनली है और यह प्रश्न उसने सिर्फ अपना रौब दिखाने के लिए ही किया था, और खुला हुआ सिगार का डिब्बा उसकी ओर बढ़ा दिया।

पाक्लिन ने शर्माते हुए और आभार प्रकट करते हुए सिगार लेकर जला लिया।

अब मेरा ख्याल है, यह अच्छा मौका है', उसने सोचा लेकिन सिप्यागिन ने उसके मन की बात ताड़ ली, और अपनी ओर से बात शुरू कर दी।

आपने मुझ से यह भी कहा था शायद आपको याद हो! उसने अपने सिगार की ओर देखते हुए लापरवाही से कहा, और उसने अपने हैट को थोड़ा आगे की ओर सरकाया 'आपने कहा था ""?' आपने अपने उस मित्र के बारे में जिसने मेरी रिश्तेदार से शादी करली है, कहा था। क्या आपने उन्हें देखा है? वे शायद यहीं कहीं पास में ही है?'

'आहा! पाक्लिन ने सोचा 'सिला सावधान हो जाओ!'

'मैंने उन्हें सिर्फ एक बार देखा है श्रीमान। वे वास्तव में वे यहीं से कहीं पास में ही रह रहे हैं।

'तुम शायद समझ ही गये होगे', सिप्यागिन उसी तरह कहता गया 'कि मुझे अब उसमें कोई दिलचस्पी नहीं रही है, जैसा मैंने तुम्हें पहले ही साफ कर दिया था न तो उस चरित्रहीन, दुष्ट लड़की में और न तुम्हारे उस दोस्त में। ईश्वर ही जानता है! मुझे उनसे कोई द्वेष भी नहीं लेकिन आप मुझसे सहमत होंगे यह तो हद हो गई। यह मूर्खता है। यद्यपि मैं यह जानता हूँ कि वे दोनों एक दूसरे के प्रति राजनीतिक रूप से अधिक आकर्षित हैं, ('राजनीतिक।' उसने कंधे मिचकाते हुए दुहराया? बजाय और किसी भावना के।

'निश्चय ही मैं भी यही सोचता हूँ, श्रीमान !'

'हाँ, मिस्टर नेज्दानोव बहुत ही उग्र प्रजातन्त्रवादी हैं। मैं यह स्वीकार करके उनके साथ न्याय किये बिना नहीं रह सकता कि उन्होंने अपने विचारों को छिपाया नहीं।

'नेज्दानोव' पाक्लिन ने हिचकिचाते हुए साहस किया 'प्रभाव में बह गये शायद, लेकिन उनका दिल '

'अच्छा है' सिप्यागिन ने बात पूरी की, निश्चय ही निश्चय ही मार्केलोव की ही तरह। उन सबके दिल बड़े अच्छे हैं। शायद उन्होंने भी इस सबमें भाग लिया है—और शायद वह भी 'हमें उनकी रक्षा भी करनी होगी।

पाक्लिन ने अपने सीने पर दोनों हाथ सख्ती से बाँधे।

'आह हाँ हाँ, श्रीमान ! महामहिम आप अपने संरक्षण का हाथ उनकी ओर भी बढ़ाइए। जरूर उन्हें भी आपकी सहायता और सहानुभूति की आवश्यकता है।

हूँ, हूँ सिप्यागिन ने कहा, तुम्हारा यही विचार है? अगर उसके लिए नहीं तो कम से कम अपनी भांजी के लिए ही सही उसकी पत्नी के लिए ! (हे भगवान् ! हे भगवान् !' पाक्लिन मन में सोच रहा था, 'मैं कितना झूठ बोल रहा हूँ !)

सिप्यागिन ने अपनी आँखें झपकी।

'आप मुझे लगता है, उनके बड़े सच्चे दोस्त हैं। यह बहुत अच्छी बात है, बहुत ही प्रशंसनीय, मेरे युवक मित्र। तो तुम्हारा कहना है कि वे यहीं कहीं पास में रहते हैं?

'हाँ श्रीमान महामहिम, एक बड़े कारखाने में पाक्लिन ने अपनी जीभ काटी।

मैं मैं मैं मालामिम के यहाँ ! तो वे वहीं हैं ! मैं यह जानता था -निश्चय ही मुझे यह बताया गया था, मुझे यह सूचना

ई थी हाँ।' (मिस्टर सिप्यागिन इस बारे में बिल्कुल भी नहीं ते थे, और न किसी ने उन्हें कुछ बताया ही था, लेकिन सोलोमिन अपने यहाँ आगमन और आधीरात के समय उन दोनों से उसकी बातचीत की याद करके उसने यह दाँव खेला और पाक्लिन तुरन्त उसके चक्कर में आ गया।)

'जब आप जानते ही हैं तो, उसने दुबारा अपनी जीभ काटी लेकिन अब गाड़ी हाथ से निकल चुकी थी। सिप्यागिन ने इस पर तो एक उड़ती हुई नजर डाली, उसी से वह समझ गया था कि वह लगातार अब तक उससे खेल रहा था वैसे ही जैसे एक बिल्ली चूहे से खेलती है।

'मैं श्रीमान को बताऊँ यद्यपि वह अभागा हिचकिचाया 'कि मैं वास्तव में कुछ नहीं जानता

और मैं तुमसे कुछ पूछता भी नहीं विश्वास रक्खो। लेकिन तुम्हारा मतलब क्या है? तुम मुझे और अपने को समझते क्या हो? सिप्यागिन ने तन हाते हुए कहा और तुरन्त अपने उच्च पदीय गौरव के स्तर पर वापस आ गया।

और पाक्लिन जाल में फँसे दयनीय तुच्छ प्राणी का सा अनुभव करने लगा अब तक वह सिगार अपने होठों के एक कोने में दबाये हुए था और सिगार के कश खींचकर एक ओर धुँआ उड़ा रहा था, लेकिन अब उसने उसे मुँह से बाहर निकाल लिया और करा हाथना बन्द कर दिया।

'हे भगवान्! यह मन ही मन कराहा—और पहले से भी अधिक पसीना उसके कंधों पर से होकर बह चला। 'मैं क्या कर बैठा! मैंने सब कुछ खोल दिया और सबसे गद्दारी की! मैं मूर्ख बन गया एक बढ़िया सिगार से खरीद लिया गया! मैं एक भेदिया हूँ' अब इसका कैसे मिटाया जा सकता है? आह, मेरे ईश्वर!

अब कुछ करना बाकी नहीं रहा था। सिप्यागिन ऊँट की ऊन के बने लबादे में अपने को लपेटे उसी गर्वपूर्ण मुद्रा में झपकी लेने लगा था और थोड़ी देर बाद दोनों बग्घियाँ गवर्नर के भवन के सामने जाकर ठहर गईं।



'नहीं तो, मेरे मित्र, मैं नहीं समझ पाया, मिलनसार रसिक गवर्नर ने उत्तर दिया। उसके गुलाबी गालों में मुस्कान से बल पड़ गए, जो मूँछों में से उसके घने दाँतों की झलकी दिखा रही थी।

'क्या! क्या तुम मार्केलोव के बारे में नहीं जानते?'

'तुम्हारा मतलब क्या है?—मार्केलोव?' गवर्नर ने उसी लहजे में दुहराया। उसे यह याद ही नहीं था वास्तव में, कि जो आदमी कल गिरफ्तार हुआ है उसका नाम मार्केलोव है, और फिर वह यह भी भूल गया था कि सिप्यागिन की पत्नी का भाई भी इसी नाम का है। 'लेकिन तुम खड़े क्यों हो, बोरिस? बैठो न चाय पीयोगे।

लेकिन सिप्यागिन चाय पीने के मूड में नहीं था।

जब सिप्यागिन ने गवर्नर को सारा किस्सा बताया और अपने तथा कालोमिएत्सेव के आगमन का कारण बताया तो गवर्नर ने बड़ा दुख प्रगट किया उसके चेहरे पर दुख पूर्ण भाव आगए और उसने अपने माथे को पीटा।

'हाँ हाँ हाँ! उसने दुहराया कैसा दुर्भाग्य है! और अब वह यहाँ है—आज थोड़ा देर के लिए तुम तो जानते ही हो कि ऐसे लोगों को हम लोग एक रात से अधिक अपने पास नहीं रखते, लेकिन पुलिस का कमाण्डर शहर से बाहर गया हुआ है, इसलिए तुम्हारा साला यहाँ रोक लिया गया है लेकिन उसे वे लोग आगे भेज देंगे। मेरे प्यारे दोस्त! कैसा दुर्भाग्य है! तुम्हारी पत्नी कितनी दुखी होगी! तुम्हारी इच्छा क्या है?

'मैं उससे कुछ बात करना चाहूँगा नहीं—यह कानून के विरुद्ध तो नहीं है!

'मेरे अजीज दोस्तो! कानून तुम जैसे लोगों के लिए नहीं है। मुझे सचमुच बहुत दुख है!

उसने एक विशेष प्रकार की घंटी बजाई। एक सैनिक अफसर हाजिर हुआ।

उसने उसे सारी बातें समझाईं, और वह वापस चला गया। फिर सिप्यागिन की ओर उन्मुख होकर बोला। 'उन लोगों ने उसकी मुश्कें कस दीं और खूब पिटाई की बस मरा नहीं यह समझ लो। और उसे बाँध कर यहाँ ले आए। और तमाशा तो देखिए कि वह उससे जरा भी नाराज नहीं है—जरा भी शिकन नहीं है उसके चेहरे पर। वह ऐसा अपने में ही खोया हुआ है कि मैं तो देख कर दंग रह गया! तो अब तुम खुद ही देख लेना।

'यह तो और भी बुरी बात है,' कालोमिएत्सेव ने कहा।

गवर्नर ने उसे नहिरुष्य दृष्टि से देखा।

'लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता दूँ मिस्यान पयोत्रिच।'

'क्या क्या बात है?'

'कुछ असंगत बात है।'

'क्या बात है?'

'तो मुझे तुम्हें बता ही देना चाहिए तुम्हारा वह कर्मगार किसान, जो मेरे पास एक शिकायत लेकर आया था—'

'तो?'

'उसने अपने को फाँसी लगा ली तुम्हें मालूम है?'

'कब?'

'कल, यह कोई खास बात नहीं है लेकिन बुरी जरूर है।'

कालोमिएत्सेव ने अपने कंधे बिचकाए और बड़े छैलापन से खिड़की के पास चला गया। तभी सैनिक अफसर मार्केलोव को लेकर भीतर आया।

गवर्नर ने उसके बारे में सही ही बताया था वह स्वाभाविक रूप से शान्त था। उसकी हमेशा की यह गम्भीरता भी उसके चेहरे से गायब हो गई थी और एक अजीब उदासीन भाव ने उसकी जगह ले ली थी। अपने बहनोई को वहाँ देखकर भी उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया बस अपने सैनिक अफसर का वह अपनी बदलती नजरों से

देखता रहा शायद इसमें उसको जमन जाति के प्रति पुरानी घृणा उभर आई थी। उसका कोट जहाँ-तहाँ से फट गया था और मोटे डोरों से बड़े भद्दे ढंग से सिला था, एक भौंह के ऊपर उसके माथे पर और नाक के ऊपर चोट के निशान दीख पड़ रहे थे, जिन पर खून जम गया था। वह नहाया भी नहीं था, लेकिन बालों में कंघा उसने अवश्य कर लिया था। एक दूसरे हाथ की आस्तीनों में कुहनी तक अपने हाथ घुमाए वह दरवाजे के पास खड़ा हो गया। उसकी साँस में घबराहट नहीं थी।

सर्गी मिखासोविच! सिप्यागिन ने दो कदम उसकी ओर आगे बढ़कर और अपना दाहिना हाथ उसकी ओर आगे बढ़ा कर ताकि वह उसका स्पर्श कर ले या अगर वह आगे बढ़ना चाहे तो उसे रोक ले, व्यग्र स्वर में कहा। 'सर्गी मिखासोविच! मैं यहाँ तुमसे यह जाहिर करने नहीं आया कि हमें यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ, बड़ा दुःख हुआ, यह तुम सन्देह नहीं कर सकते! तुमने स्वयं अपना नाश चाहा! और तुमने अपना नाश कर भी लिया! लेकिन मैं तो तुमसे सिर्फ इसलिए मिलना चाहता था कि तुमसे कहूँ कि कि तुम वि तु ह एक बार अकल की बात सुनने का आदर और निष्ठता का अवसर दिया जाय! तुम अब भी अपना जीवन सुधार सकते हो और विश्वास रखो, मैं भरसक, अपनी पूरी शक्ति से तुम्हारी सहायता करूँगा और हमारे प्रान्त के आदरणीय प्रधान इसमें हमारी सहायता करेंगे।' यहाँ सिप्यागिन ने अपनी आवाज थोड़ी ऊँची की 'अपने दोषों के प्रति शुद्ध मन से पश्चात्ताप प्रकट करो और बिना कुछ छिपाए सब कुछ बता दो और स्वीकार करता, यह सब ऊपर के अधिकारियों के पास आवश्यक सिफारिश के साथ भेज दिया जायगा

'महामहिम, मार्केलाव ने एकाएक गवर्नर को सम्बोधित करके कहना शुरू किया। उसका स्वर यद्यपि थोड़ा भर्राया हुआ था, लेकिन शान्त था, मैंने तो समझा था कि आपने मुझे कुछ पूछ-ताछ करने के

लिए या और किसी काम मे बुलाया है। लेकिन अगर आपने मुझे महज मिस्टर सिप्यागिन की इच्छा पर ही बुलाया है, तो कृपया मुझे वापस मे जाने की आज्ञा दीजिए। हम एक दूसरे का कभी नहीं समझ सकते। वह जो कुछ भी कहते हैं वह मेरे सिर और है, दुर्बोध है।'

'ठीक निश्चय ही। कालामिएत्सेव ने सीना उत्तेजित अभिव्यक्ति के बीच में दखल दिया लेकिन किसानों को विद्रोह के लिए भड़काना ठीक नहीं है? ऐं?'

आपने यहाँ किन किन को जमा कर लिया है? गुप्तचर विभाग के अफसर लोगों को? अपने काम में आप बड़े चुस्त हैं? मार्केलोव ने पूछा और उसके मलिन पीले होठों पर हल्की सी दर्पपूर्ण मुस्कान की रेखा दौड़ गई।

कालोमिएत्सेव ने गुस्से से पैर पटक नेकिन गवर्नर ने उसे रोक दिया।

यह तुम्हारी ही गलती है सीम्योन पेत्रोविच जो तुम्हारा काम नहीं उसमें तुम दखल ही क्यों दे रहे हो?

मेरा काम नहीं? मुझे कहना चाहिए, यह जनता का काम है सभी नागरिक लोगों का!

मार्केलोव देर तक उपेक्षा पूर्ण दृष्टि से कालोमिएत्सेव को घूरता रहा जैसे मन्थन बार देख रहा हो फिर थोड़ा सिप्यागिन की ओर उन्मुख हुआ। जीजाजी चूँकि आप चाहते हैं कि मैं आपको अपने विचार बताऊँ, तो सुनिए। मैं मानता हूँ कि किसानों को यदि मेरा बात पसन्द नहीं आयी तो उन्हें मुझे गिरफ्तार कर पुलिस के हवाले करने का पूरा अधिकार है। मैं क्षमा करने को पूरी तरह स्वतन्त्र हूँ। मैं उनके पास आया था मैं नि व मेर पास। और अगर सरकार मुझे साइबेरिया भेजती है तो मुझे इसकी भी कोई शिकायत नहीं— हालांकि मैं अपने को हारा नहीं समझता। यह अपना अपना काम

करने की बात है। वह ऐसा करेगी क्योंकि उसे अपनी रक्षा करनी है। कहिए, बस, सन्तुष्ट हैं अब आप ?

सिप्यागिन ने अपने हाथ फैला दिए।

'बस! क्या बात कही है! यह सवाल नहीं है, सरकार के कामों की आलोचना करना हमारा काम नहीं है। मैं तो बस इतना जानना चाहता हूँ, कि क्या तुम अनुभव करते हो क्या तुम, प्रिय सर्जी, अनुभव करते हो'—(सिप्यागिन ने उसकी भावना को उभारना चाहा) 'कि तुम्हारा काम कितना मूर्खता पूर्ण, निरर्थक ? और महज एक पागलपन था ? क्या तुम अपने कार्य के लिए पश्चाताप करने को तैयार हो ? और क्या मैं उत्तरदायी, एक हद तक उत्तरदायी, हो सकता हूँ, तुम्हारे लिए सर्जी ?'

मार्केलोव ने अपनी घनी भौंहों को सिकोड़ा।

मुझे जो कहना था सो कह दिया मैं अब बार बार उसे दुहराना नहीं चाहता।'

'लेकिन पश्चाताप! तुम्हारे पश्चाताप का क्या हुआ ?'

मार्केलोव एकाएक उद्धत हो उठा।

'अपने 'पश्चाताप' से मुझे बख्शिए! क्या तुम मेरी आत्मा के भीतर रेंग जाना चाहते हो ? कृपया मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो!'

सिप्यागिन ने अपने कंधे झटकारे।

'यह तो तुम्हारी हमेशा की जिद है, तुम कभी कायदे की बात नहीं सुनोगे। अब तो बिना किसी बदनामी या अपमान के तुम्हारे बच सकने का अवसर है।

बिना किसी बदनामी और अपमान के ' मार्केलोव ने व्यंग भरित लहजे मे दुहराया। हम इन वाक्यों को खूब जानते हैं। यह य मनुष्य को हमेशा नीचे झुकाने के लिए सुनाए जाते हैं। यही नका अभिप्राय है।

'हमें तुम्हारे साथ हमदर्दी है,' सिप्यागिन फिर ने मार्केलोव को उपदेश देता रहा, 'और तुम हमसे घृणा करते हो।'

'बड़ी अच्छी हमदर्दी है!' तुम हमें कड़ी सजा देकर साइबेरिया भेज दो बस, यही हमदर्दी दिखाओ हमारे साथ और मुझे अकेला रहने दो, अकेला खुदा के सामने, मेरा पिंड छोड़ दो!'

और मार्केलोव का सिर उसके सीने पर झुक गया। उसकी आत्मा में भयंकर द्वन्द्व चल रहा था किन्तु बाहर से वह बिल्कुल शान्त था। गोलोप्ल्योक के येरेमी ने ही उसके साथ गद्दारी की, यह विचार उसे सबसे ज्यादा परेशान कर रहा था। येरेमी ने गद्दारी की, जिस पर वह आँख मूँद कर विश्वास करता था। मार्केलोव के लिए येरेमी रूसी किसानों का प्रतीक था और उसीने उसके साथ गद्दारी की। तब यह सब, जिसके लिए मार्केलोव खून-पसीना एक कर रहा था, सब गलत था, एक भूल थी? और क्या किस्ल्याकोव झूठा है? और क्या वासिली निकोलाइविच के आदेश गलत थे, और सारे लेख और किताबें, समाजवादियों और महान विचारकों के विचार और पुस्तकें, जिनका एक एक अक्षर उसके लिए अपार विश्वास की वस्तु थे, अकाट्य और त्रुटि रहित थे—सब, क्या वे सब व्यर्थ, गलत बेकार हैं? क्या यह हो सकता है? और क्या—'समाज के पके हुए नासूर पर बस नश्तर चलाने भर की देर है'—वाक्य केवल थोथा वाक्य ही है? नहीं! नहीं!' उसने मन ही मन बुदबुदाया, और उसके ताँबे जैसे गालों पर ईंट की धूल के रंग की हल्की रेखा बह चली। 'नहीं यह सब सही है, दोषी मैं ही हूँ, मेरी समझ का दोष है, मैं सही बात लोगों को नहीं समझा पाया, मेरे काम करने के ढंग में दोष था! मुझे सिर्फ आदेश देने चाहिए थे, और तब अगर किसी ने बाधा डालने की कोशिश की होती, तो उसकी खोपड़ी में गोली मार देनी चाहिए थी। समझाने बुझाने की क्या जरूरत थी? जो हमारे साथ नहीं है, उसे जीने का अधिकार नहीं। गद्दार और भेड़िये, कुत्ते की मौत मारे जाते हैं।'

और मार्केलाव के मस्तिष्क में अपनी गिरफ्तारी का सारा दृश्य साकार हो उठा पहिले चुप्पी और निस्तब्धता और फिर एक दूसरे की ओर कनखियों से देखा-दाखी और एकाएक चीख-पुकार। एक आदमी का योगे वह आना, मानों उसे सलाम करने आया हो। और फिर एकाएक यह रेल-म पेल, सबका झपट पड़ना। और कैसे उसे उन्होंने नीचे धर दबोचा था। 'आइयो। आइयो! यह सब तुम क्या कर रहे हो? तुम्हें क्या हो गया है?' और उनकी चीख, 'लाओ, एक रस्सा लाओ! बाँधो इसे।' अपनी हड्डियों की चरचराहट और विवशता पूर्ण क्रोध वह उसके मुँह में और नाक में दुर्गन्ध पूर्ण धूल का भर जाना 'गाड़ी में फेंक दो इसे गाड़ी में। कोई भारी आवाज में चीख कर कह रहा था उफ!

मैंने काम करने का ठीक ढंग नहीं अपनाया काम करने का ठीक ढंग। यही विचार उसे बेचैन और दुखी बना रहा था, कि वह स्वयं ही अपनी मूर्खता से और अपने दुर्भाग्य से इस संकट में फँस गया था। इससे साधारणतः उद्देश्य में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इस सबको तो वह सहन कर लेगा लेकिन एरेमी! एरेमी!

इधर जब मार्केलोव अपने अव्यवस्थित विचारों में निमग्न सीने पर सिर लटकाए खड़ा था तो उधर सिप्यागिन गवर्नर को एक ओर ले गया और उसके साथ धीरे धीरे फुसफुसा कर बातें करने लगा। वह मुँह बना बना कर और अपने माथे पर दो उँगलियाँ घुमाता हुआ कुछ कह रहा था, जैसे मानों वह यह समझा रहा था कि बेचारे के दिमाग का कोई पेच ढीला है और उस बेचारे पागल आदमी के लिए अगर सहानुभूति नहीं तो कम से कम कुछ दया का भाव गवर्नर के मन में पैदा करने की कोशिश कर रहा था और गवर्नर ने अपने कंधे मिचकाए, आँखें नचाई और फिर आँखें बन्द कर लीं और लाचारी प्रगट की, लेकिन कुछ अनिश्चित से वायदे भी किए अपने सरसक तो ध्यान रखूँगा निश्चय समझो, विश्वास करो पूरा ख्याल रखूँगा,' कोमलता

से कहे गए। उसकी सुगंधित मूँछों के नीचे से बड़े धीमे स्वर में सुनाई पड़े "लेकिन, मेरे प्यारे भाई, तुम तो जानते ही हो कानून, कानून है।" 'यह बात तो है!' सिप्यागिन ने एक प्रकार की निरीह विवशता के साथ उसकी बात स्वीकार की।

जब इधर एक कोने में खड़े यह दोनों आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे तो कालामिएत्सेव को चुपचाप खड़ा रहना दूभर हो रहा था, वह इधर से उधर चक्कर काटता रहा खाँस-खखार कर अपना गला साफ कर, हुँ—हाँ करता वह हर प्रकार से अपनी अधीरता प्रगट कर रहा था। जब उससे रहा नहीं गया तो वह सिप्यागिन के पास जाकर जल्दी से बोला 'उस दूसरे आदमी के बारे में तो आप भूल ही गए हैं।'

'ओह, हाँ! सिप्यागिन ने ज़ोर से कहा। 'बड़ा अच्छा किया, याद दिला दी। महामहिम से मुझे कुछ और भी कहना है', उसने गवर्नर की ओर उन्मुख होते हुए कहा। (उसने अपने मित्र वोल्देमर के लिए यह आदर सूचक सम्बोधन जान बूझ कर किया था, ताकि एक क्रान्तिकारी के सामने एक उच्च पदाधिकारी का सम्मान कम न हो।) 'मेरे पास यह अनुमान करने के लिए काफी कारण हैं कि मेरे साले साहब के इस पागलपन भरे कार्यों की धारें इधर उधर और भी फैली हुई हैं, और उसकी एक शाख, इनके गुट का एक और व्यक्ति इस शहर से कोई अधिक दूरी पर नहीं है।' और उसने आहिस्ते से कहा, 'उस आदमी को यहाँ बुला लीजिए वह आपके ड्राइंग रूम में बैठा है। मैं उसे अपने साथ ही लेता आया हूँ।'

गवनर ने सिप्यागिन की ओर नजर डाली और श्रद्धा से सोचा, 'कमाल का आदमी है।' और आवश्यक आदेश दे दिया। एक मिनट के बाद ही 'ईश्वर का सेवक' सिला पाकिन उसके सामने खड़ा था।

सिला पाकिन झाड़ा फुला कर गवनर को सलाम करने जा ही रहा था कि उसकी नजर मार्केलाव पर पड़ गई और वह अपना सलाम पूरा

न कर सका—जैसा था वैसा ही रह गया, माथा झुका हुआ, अपनी टोपी को मरोड़ता हुआ। मार्केलोव ने एक अनमनी सी दृष्टि उस पर डाली, लेकिन शायद ही उसने पहचाना हो, क्योंकि वह फिर अपने विचारों में डूब गया।

'क्या यही है वह शाखा?' पाक्लिन की ओर अपनी सफेद उंगली से जो हीरे जड़ी अँगूठी से सजी थी, इशारा करते हुए गवर्नर ने जिज्ञासा की।

'ओह, नहीं! सिप्यागिन ने मृदु मुस्कान के साथ कहा। 'लेकिन,' क्षणभर सोचकर उसने जोड़ा, यह, महामहिम' उसने फिर तेज आवाज में कहना शुरू किया 'आपके सामने मिस्टर पाक्लिन हैं। मेरा विश्वास है कि यह भी पीटर्सबर्ग के ही निवासी हैं और उस व्यक्ति के परम मित्र हैं जो मेरे यहाँ शिक्षक का काम करता था और जो सब काम छोड़ गया और—मुझे कहते शर्म आती है—अपने साथ मेरी एक रिश्तेदार जवान लड़की को भी भगा ले गया है।

ओह! हाँ—हाँ, गवर्नर ने अपने सिर का झटका देते हुए कहा, 'मैंने कुछ ऐसा सुना तो था ~ काउन्टेस मुझे बता रही थी '

सिप्यागिन ने अपनी आवाज ऊँची की—

'उस व्यक्ति का नाम मिस्टर नेज्दानोव है और मुझे पूरा-पूरा सन्देह है कि उसके विचार और सिद्धान्त भी ऐसे ही खतरनाक और दूषित हैं'

'छटा हुआ गुन्डा है साहब, नम्बर एक का। कालोमियेत्सेव ने कहा।

निःसन्देह उसके विचार और सिद्धान्त खतरनाक और दूषित हैं।' सिप्यागिन ने और भी स्पष्टता के साथ दुहराया, और निश्चय इस प्रकार में उसका भी पूरा-पूरा हाथ है इसमें जरा भी सन्देह नहीं है वह जैसा कि मुझे मिस्टर पाक्लिन ने बताया है, व्यापारी फालेएव के कारखाने में छिपा हुआ है'

'जैसा कि मुझे बताया है', यह सुनकर मार्कलाव ने दूसरी बार पाक्लिन पर दृष्टि डाली और धीरे से और उपेक्षा से मुस्कुराया।

'क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए महामहिम', पाक्लिन ने चीखकर कहा, 'और आप... मिस्टर सिप्यागिन... मैंने यह कभी नहीं... कभी नहीं...'

'तुम ने व्यापारी फालएव का नाम लिया।' गवर्नर ने सिप्यागिन से कहा और पाक्लिन की ओर अपनी उँगली उठाई, मानो उससे कह रहा हो, 'आप जरा मना आमोद रहिए'। 'हमारे उन सम्मानित दाढ़ी वाले दुकानदारों का क्या हो गया है? कल भी एक उसी तरह की साजिश में पकड़ा गया है। तुमने शायद उनका नाम सुना हो—गालुश्किन बड़ा अमीर आदमी है। लेकिन वह, वह कभी फरार नहीं हो सकता। अब वह पैरों में गिरकर गिड़गिड़ा रहा है।'

'व्यापारी फालएव बकसूर है। उसका इस मामले में कोई हाथ नहीं है', सिप्यागिन ने कहा। 'मैं उसके विचारों के बारे में कुछ नहीं जानता। मैं तो केवल उसके कारखाने की बात कर रहा हूँ जहाँ, जैसा कि मिस्टर पाक्लिन ने बताया मिस्टर नेज्दानोव इस समय मिल सकते हैं।'

'मैंने तो ऐसा नहीं कहा!' पाक्लिन ने फिर रिरियाते हुए कहा, 'यह सब तो आप खुद ही बना कर कह रहे हैं!'

'क्षमा कीजिए मिस्टर पाक्लिन', सिप्यागिन ने उसी तरह प्रत्येक शब्द को स्पष्ट उच्चारित करते हुए कहा। 'आप जिस मित्रता के कारण अब इन्कार कर रहे हैं मैं उसका आदर करता हूँ। (गवर्नर मन में सोच रहा था 'यह तो बड़ा चालाक है!') 'किन्तु मैं अपने आपको आपके सामने उदाहरण रूप में रखना चाहता हूँ। क्या आप सोचते हैं कि मेरे दिल में आपकी मित्रता की भावना से मेरी रिश्तेदारी की भावना कुछ कमजोर है? लेकिन और भी भावना है,

श्रीमान्, जो इससे भी ज्यादा बलवती है, और जिसे हमें अपने हर काम में अपना पथप्रदर्शक बनाना है—और वह है, कर्तव्य की भावना।'

'वह भावना जो सबसे महान है, सबसे ऊपर है,' फालोमिएल्सेव ने स्पष्ट किया।

मार्केलोव ने दाना सक्वार्मा की ओर गौर से देखा।

'श्रीमान गवर्नर महोदय उसने गवर्नर को सम्बोधन करते हुए कहा 'मैं आपसे फिर विनती करता हूँ कि आप कृपा करके मुझे इन व्यर्थ के बकवासी लोगों के सामने से हटाए जाने का आदेश दीजिए।'

लेकिन इस पर गवर्नर कुछ झल्ला उठा।

'मिस्टर मार्केलोव! उसने कहा, मैं आपको सलाह दूँगा कि अपनी वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखकर अपनी भाषा को जरा संयत रखें, और अपने से बड़ों के प्रति अधिक सम्मान प्रगट करें खासतौर से तब जब कि वे देश की समस्या पर अपने ऐसे देशभक्ति पूर्ण विचार प्रगट कर रहे हों जैसे अभी आपने अपने बहनोई साहब के मुख से सुने। प्रिय बोरिस मैं बहुत खुश हूँ गवर्नर ने सिप्यागिन की ओर उन्मुख होते हुए कहा 'मैं तुम्हारी इस कारगुजारी का जिक्र श्रीमान मन्त्रीजी से अवश्य करूँगा। लेकिन यह मिस्टर नेज्दानोव ठीक ठीक कहाँ मिलेंगे—इस कारखाने में?'

सिप्यागिन की आशा में बस पड़ गया।

'वह कारखाने के किसी ओवरसियर मिस्टर सोलोमिन के यहाँ छिपा है—ऐसा ही मिस्टर पाकिलन ने मुझे बताया है।'

लगता था कि गरीब सिमा को छेड़ने में सिप्यागिन को विशेष सन्तोष मिल रहा था वह अब गाड़ी में दिए गए सिगार का, अपनत्व पूर्ण व्यवहार का और जो थोड़ी सी उसकी खुशामद की थी, उस सब का बदला चुकाए ले रहा था।

'और यह सोलोमिन भी, फालोमिएल्सेव ने कहा, 'निःसन्देह पक्का प्रभाव-वयारी क्रान्तिकारी है, महामहिम यदि आप उसकी

भार भी थोड़ा ध्यान द और उसे भी गिरफ्तार करा दें तो ठीक होगा।'

आप जानते हैं, इन लोगों को सालामिन और क्या नाम है उसका नेज्मानोव को ?' गवर्नर ने कुछ अधिकार पूर्ण नाक के स्वर में पूछा।

मार्केलाव के नथुने क्रोध से फूल उठे।

और क्या आप श्रीमान महामहिम कन्फ्यूशियस और लिबी को जानते हैं।

गवर्नर ने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया।

इससे बात करना ही व्यर्थ है। उसने कन्धे मिचकाते हुए कहा, बैरन, इधर तो आना जरा!

सहायक लपक कर उसकी ओर गया और इस अवसर का लाभ उठाकर पाक्लिन लंगड़ाता हुआ तेजी से सिप्यागिन के पास जाकर उससे धीरे से बोला

क्या कर रहे हैं आप यह ? क्या आप अपनी आँखों का जीवन बर्बाद करने पर ही तुले हैं ? यह भी उसी के साथ है, नज्दानोव के साथ'

'महाशयजी, मैं किसी का जीवन नहीं बर्बाद कर रहा हूँ' सिप्यागिन ने ऊँचे स्वर में उत्तर दिया, 'मैं तो केवल अपनी आत्मा के आदेशों का पालन कर रहा हूँ और'

और अपनी पत्नी, यानी कि मेरी बहन के आदेशों का, जो आपको अपनी दाब में रखती है! मार्केलाव ने भी उतने ही ऊँचे स्वर में कहा। सिप्यागिन के कानों पर जूँ तक न रेंगी। यह बात उसके सम्मान के लिए इतनी ओछी थी, कि उसने उस पर कान देने की भी आवश्यकता न समझी।

मेरी बात तो सुनिए' पाक्लिन ने फुसफुसाते हुए कहा, उसका सारा शरीर उत्तेजना और कायर भय से काँप रहा था। उसके नेत्रों

में घृणा की चमक थी और आँसुओं से दूसरों के लिए दया के आँसुओं से उसका गला रुँध गया था और अपने पर उसे क्रोध आ रहा था, 'सुनिए तो, मैंने आपको बताया था कि मरियाना ने उससे विवाह कर लिया है, यह सही नहीं है मैंने यों ही झूठ-मूठ कह दिया था। पर उन दोनों का विवाह होने ही वाला है और अगर आप उसमें कुछ रुकावट डालेंगे, यदि पुलिस ने वहाँ छापा मारा तो आपकी आत्मा पर कलंक का एक ऐसा टीका लग जायगा, जो फिर किसी तरह भी नहीं धुल सकेगा और आप '

'अभी आपने जो बात बताई है' सिप्यागिन ने और भी ऊँचे स्वर में बात काटते हुए कहा 'यदि वह वास्तव में सही है, जिसमें मुझे पूरा सन्देह है तब तो मुझे और जल्दी ही उचित कदम उठाना चाहिए। और मेरी आत्मा के कलंकित होने की बात सो महाशय जी आप उसकी फिकर न करें।

उस पर रंग चढ़ा हुआ है, भाई मेरे' मार्केलोव ने फिर बीच में एक फबती जड़ दी। अरे उस पर पीटर्सबर्ग की वार्निश का एक गहरा कोट हो रहा है, अब उस पर और किसी चीज का रंग नहीं चढ़ने का। मिस्टर पाक्लिन आप चाहे जितना सिर मारिए, फुसफुसाइए, पर इस घोटाले से बचने का अब कोई रास्ता नहीं है, कोई डर नहीं!

गवर्नर ने इस परस्पर की छींटाकशी को बन्द करना ही उचित समझा।

'मेरा ख्याल है,' उसने कहना शुरू किया, 'आप लोगों को जो कुछ कहना-सुनना था, वह आप लोग कह सुन चुके। इसलिए बैरन आप मार्केलोव को यहाँ से ले जा सकते हैं। आरिस, अब तो तुम्हें इनकी कोई जरूरत नहीं'

सिप्यागिन ने तिरस्कार का भाव प्रगट किया।

मैं जो कुछ कह सकता था कह चुका।

'बहुत अच्छा प्रिय बैरन' ।

पहरदार मार्कलाव की ओर बढ़ा और आगे की ओर हाथ से इशारा करते हुए बोला – 'चलिए।'

मार्कलाव दरवाजे की ओर मुड़ा और बाहर चला गया। पाक्लिन ने—केवल कल्पना में ही यह स्वीकार करना चाहिए लेकिन कद्र सहानुभूति के साथ और दया के साथ—उससे हाथ मिलाया।

मैं अभी कारखाने पर छापा मारने के लिए आदमी भेजता हूँ गवर्नर ने कहा। लेकिन वारिस एक बात है। मेरा ख्याल है—इन सज्जन ने—(उसने अपने मुँह के संकेत से हो पाक्लिन की ओर इशारा किया।)—तुम्हें तुम्हारी रिश्तेदार के बारे में कुछ सूचना दी है सम्भव है यह वहीं हो कारखाने में यदि ऐसा हो, कारखाने में यदि ऐसा हो ।

उस तो किसी तरह भी गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। सिप्यागिन ने गम्भीरता से कहा सम्भव है उसे अक्ल आ जाए और वह रास्ते पर लौट आए। अगर आप आज्ञा दें तो मैं उसे एक छोटा सा पत्र लिख दूँ ।

'अगर तुम लिख दोगे तो मैं तो कृतज्ञ हूँगा। और मेरी ओर से तुम हर तरह से आश्वस्त रहो ।

'लेकिन आप उस सोलोमिन के बारे में तो कोई कदम उठा ही रहे हैं। कालामियत्सेव ने चिल्लाते हुए कहा। वह सिप्यागिन और गवर्नर की एकान्त में हुई बातों का सार समय बड़े ध्यान से कान लगा कर सुनने की कोशिश कर रहा था।

'मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वही उन सबका सरगना है। बड़ी चिड़िया वही लगता है, इसमें कभी धोखा नहीं होता।

'जरूरत से ज्यादा उत्साह भी ठीक नहीं है, सम्मान्य पैन्टेलिच,' गवर्नर ने कहा क्या बात है? अगर युद्ध आगया हुआ तो यह

म घृणा की चमक थी और आँसुओं से दूसरों के लिए दया के आँसुओं से उसका गला रुंध गया था और अपने पर उसे क्रोध आ रहा था 'सुनिए तो मैंने आपको बताया था कि मरियाना ने उससे विवाह कर लिया है यह सही नहीं है मैंने यों ही झूठ-मूठ कह दिया था। पर उन दोनों का विवाह होने ही वाला है और अगर आप उसमें कुछ रुकावट डालेंगे, यदि पुलिस ने वहाँ छापा मारा तो आपकी आत्मा पर कलंक का एक ऐसा टीका लग जायगा जो फिर किसी तरह भी नहीं घुल सकेगा, और आप

'अभी आपने जो बात बताई है' सिप्यागिन ने और भी ऊँचे स्वर में बात काटते हुए कहा 'यदि वह वास्तव में सही है, जिसमें मुझे पूरा सन्देह है तब तो मुझे और जल्दी ही उचित कदम उठाना चाहिए। और मेरी आत्मा के कलंकित होने की बात, सो महाशय जी आप उसकी फिक्र न करें।

उस पर रंग चढ़ा हुआ है, भाई मेरे' मार्केलोव ने फिर बीच में एक फब्ती जड़ दी। 'अरे उस पर पोटसबय की वार्निश का एक गहरा कोट हो रहा है अब उस पर और किसी चीज का रंग नहीं चढ़ने का। मिस्टर पाक्लिन आप चाहे जितना सिर मारिए, फुसफुसाइए पर इस घाटाले से बचने का अब कोई रास्ता नहीं है, कोई डर नहीं।

गवर्नर ने इस परस्पर की छींटाकशी को बन्द करना ही उचित समझा।

'मेरा ख्याल है, उसने कहना शुरू किया, 'आप लोगों को जो कुछ कहना-सुनना था, वह आप लोग कह सुन चुके। इसलिए बैरन, आप मार्केलोव को यहाँ से ले जा सकते हैं। बोरिस, अब तो तुम्हें इनकी कोई जरूरत नहीं

सिप्यागिन ने तिरस्कार का भाव प्रगट किया।

'मैं जो कुछ कह सकता था कह चुका।

'बहुत अच्छा ... 'प्रिय वैरन' ... ।'

पहरेदार मार्केलोव की ओर बढ़ा और आगे की ओर हाथ से इशारा करते हुए बोला—"चलिए।"

मार्केलोव दरवाजे की ओर मुड़ा और बाहर चला गया। पाक्लिन ने—केवल कल्पना में ही यह स्वीकार करना चाहिए, लेकिन कटु सहानुभूति के साथ और दया के साथ—उससे हाथ मिलाया।

'मैं अभी कारखाने पर छापा मारने के लिए आदमी भेजता हूँ,' गवर्नर ने कहा। 'लेकिन वारिस एक बात है। मेरा ख्याल है—इन सज्जन ने'—(उसने अपने मुँह के संकेत से हो पाक्लिन की ओर इशारा किया।)—'तुम्हें तुम्हारी रिश्तेदार के बारे में कुछ सूचना दी है ... सम्भव है यह वहाँ हो ... कारखाने में ... यदि ऐसा हो, कारखाने में ... 'यदि ऐसा हो ... ।

उसे तो किसी तरह भी गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। सिप्यागिन ने गम्भीरता से कहा ... 'सम्भव है उसे अक्ल आ जाय और वह रास्ते पर लौट आए। अगर आप आज्ञा दें तो मैं उसे एक छोटा सा पत्र लिख दूँ।'

'मगर तुम लिख सकते हो। मैं तो कृतज्ञ हूँगा। और मेरी ओर से तुम हर तरह से आश्वस्त रहो ... ।'

'लेकिन आप उस सोलोमिन के बारे में तो कोई कदम उठा ही नहीं रहे हैं।' कालोमियत्सेव ने चिल्लाते हुए कहा। वह सिप्यागिन और गवर्नर की एकान्त में हुई बातों का सारे समय बड़े ध्यान से कान लगा कर सुनने की कोशिश कर रहा था।

'मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वही उन सबका सरगना है। मैं उड़ती चिड़िया भाँप लेता हूँ। इसमें कभी धोखा नहीं खाता।'

जरूरत से ज्यादा उत्साह भी ठीक नहीं है, सेम्यान पैत्रोविच, गवर्नर ने कहा, बनारस की जड़ है? अगर कुछ जानना हुआ तो वह

हमें भी नहीं बख्शेगा। अच्छा हो आप अपनी खैर मनाइए।' और गवर्नर ने अपने हाथ से गले के फंदे का संकेत किया 'और देखो,' सिप्यागिन की ओर उन्मुख होते हुए और अपने मुंह के सचालन से पाक्लिन की ओर सकेत करते हुए कहा, 'यह तो मुझे कोई ऐसा खतरनाक आदमी नहीं जान पड़ता, मेरा ख्याल है इसे जाने दें,

हाँ, इन्हें जाने दीजिए" सिप्यागिन ने कोमल स्वर से कहा। किसी अज्ञात कारण से उसने अनुमान किया कि यह गेटे की पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा है।

अब आप जा सकते हैं जनाब। गवर्नर ने ऊंचे स्वर में कहा। हमें अब आपकी जरूरत नहीं है। फिर मिलने तक नमस्कार।

पाक्लिन ने सबको झुककर नमस्कार किया और बाहर सड़क पर निकल आया। वह पूरी तरह से कुचला हुआ और अपमानित अनुभव कर रहा था। हे भगवान! इस घातक भूरण ने उसको हर तरह से मुरदा कर दिया था।

मैं क्या हूँ? उसने अवर्णनीय निराशा से सोचा, दोनों ही—कायर भी और जासूस भी? ओह, नहीं' नहीं, मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूँ, एक शरीफ और मैं मनुष्यत्व से भी अभी रहित नहीं हुआ हूँ।

लेकिन गवर्नर की सीढ़ियों पर खड़ा वह व्यक्ति कौन है, जो जाना पहचाना सा लगता है और जो उसकी ओर नैराश्यपूर्ण और भर्त्सनापूर्ण दृष्टि से देख रहा है" अरे यह तो वही मार्केलाव का पुराना बूढ़ा नौकर है। वह लगता है अपने मालिक की खोज खबर लेने शहर आया है और उसके जेलखाने से टलेगा नहीं लेकिन वह पाक्लिन की ओर ऐसे क्यों घूर रहा है? उसने तो मार्केलाव के साथ विश्वासघात नहीं किया।

'और मुझे भी क्या भूत सवार हुआ कि जिस काम को करने की तमीज नहीं उसमें टाँग अड़ा बैठा?' वह फिर निराश भाव से सोचने

लगा 'मैं चुप क्या न रह सका और अपने काम से ही काम क्या न रख सका ? और सब लोग-बाग कहाँ। और बहुत सम्भव है सिसेरो भी 'एक मिस्टर पाकिन्स थे, जिन्होंने विश्वासघात किया था 'अपने मित्रों को शत्रु के हाथ में सौंप दिया था। तभी उसे याद आया कि मार्कोलास ने किस तरह उसकी ओर देखा था और उसके वे आखिरी शब्द भी याद आए अब तुम्हारे लिए निकलने का कोई रास्ता नहीं रहा डरो मत। और तब वे बड़ी निराश उदास बुझी हुई आँखें। और फिर जैसा कि धम्मपद में लिखा रहता है, वह फूट-फूट कर रोया, और निखलिस्तान की ओर फोमुश्का, फिमुश्का और स्नानदुलिया के पास चला गया ।



पतोस

उसी दिन प्रातःकाल जब मरिम्माना अपने कमरे के बाहर आई तो उसने देखा कि नेज्मानाव कपड़े पहिने एक हाथ पर अपना सिर टिकाए और दूसरे हाथ को बेजान और निश्चल रूप से अपने घुटने पर रखे साफे पर बैठा है। वह उसके पास गई।

नमस्कार अलैक्सी तुमने कपड़े नहीं बदले? साए भी नहीं? तुम्हारा चेहरा कितना पीला पड़ गया है।

उसकी नाग्नि पलकें धीरे-धीरे ऊपर को उठीं।

'नहीं, मैंने कपड़े नहीं बदले और न सोया ही।'

'क्या तुम बीमार हो, या यह कल का परिणाम है।

नेज्मानाव ने अपना सिर हिलाया।

सालोमिन के तुम्हारे कमरे में आने के बाद से मैं सो न सका।

'क्यों?

कल शाम को।'

'क्या तुम्हें ईर्षा हो रही है, मर्लैक्सी ? यह तो बिल्कुल नई बात है। और ईर्षा के लिए तुमने समय भी क्या चुना है! वह मेरे साथ कुल पन्द्रह मिनट रहा होगा...और हम लोगों ने उसके नतीजे पुरोहित के बारे में और शादी की व्यवस्था के बारे में बातें कीं।

मुझे मालूम है कि वह तुम्हारे पास केवल पन्द्रह मिनट ही ठहरा था मैंने जब वह बाहर आया था तो उसे देख लिया था, और मैं ईर्षालु नो नहीं हो रहा हूँ ओह बिल्कुल भी नहीं! लेकिन फिर भी उसके बाद मैं सो न सका।

क्या ?

नेय्यानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। थोड़ी देर बाद बोला, 'मैं सोचता रहा सोचता रहा सोचता रहा!

क्या ?

'तुम्हारे बारे में और उसके और अपने बारे में।

'और किस नतीजे पर पहुंचे तुम ?'

'क्या तुम्हें बताना ही होगा मारियाना ?'

'हाँ, मुझे बताओ।'

मैंने सोचा कि मैं तुम्हारे और उसके और स्वयं अपने भी, रास्ते की बाधा हूँ।'

'मेरे ? उसके ? मैं पूछती हूँ, तुम्हारा इससे मतलब क्या है ? यद्यपि तुम कहते हो कि तुम्हें ईर्षा नहीं हो रही है। लेकिन तुम्हारी बात खुद जाहिर करती है कि तुम्हें ईर्षा हो रही है! लेकिन तुम अपने आप ही अपने रास्ते की बाधा बन रहे हो।'

'मारियाना मेरे भीतर दो आदमी हैं, और एक दूसरे को जिन्दा नहीं रहने देना चाहता। इसलिए मैं सोचता हूँ कि दोनों ही जिन्दा न रहें, तो ही अच्छा है।

'चुप, चुप, अलेक्सी, ईश्वर के वास्ते चुप करो। क्यों तुम मुझे और अपने को भी त्रस्त करना चाहते हो? इस समय तो हमें यह सोचना-विचारना चाहिए कि हमें क्या कदम उठाने हैं। तुम तो जानते ही हो कि ये लोग हमें यहाँ चैन से न बैठने देंगे।'

नेख्लुदोव ने प्यार से उसका हाथ थाम लिया।

'मेरे करीब बैठ जाओ, मरिआना, मेरी बगल में, और आओ अभी जब तक कुछ समय है, हम कुछ बातें करलें, दोस्तों की तरह। लाओ मुझे अपना हाथ दे दो। मैं सोचता हूँ कि हमें आपस में एक दूसरे को, अपने आपको समझा देना अच्छा होगा, हालांकि कहा तो यह जाता है कि हर तरह का स्पष्टीकरण और अधिक उलझन ही बढ़ाता है। लेकिन तुम दयालु और बुद्धिमान हो, तुम यह सब समझ लोगी, और मैं जो न कह पाऊँगा, उसे तुम स्वयं समझ लोगी। बैठ जाओ।

नेख्लुदोव के स्वर में बड़ी कोमलता थी, और उसकी आँखों में एक विशिष्ट स्नेह पूर्ण कोमलता और स्निग्धता थी जिनसे वह एकटक मरिआना को देख रहा था।

वह बड़ी प्रसन्नता के साथ उसकी बगल में बैठ गई और उसका हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

धन्यवाद, मेरी प्रिय मरिआना! लो, अब सुनो! मैं तुम्हें बहुत देर तक नहीं रोकूँगा। मैं जो कुछ तुमसे कहना चाहता हूँ उस पर मैंने खूब अच्छी तरह सोच विचार लिया है। रात भर मन ही मन उसे दुहराता रहा हूँ। तुम यह मत सोचना कि कल की घटना ने मुझे विचलित कर दिया है, इसमें सन्देह नहीं, कि काम मैंने बड़ा ही मूर्खतापूर्ण किया था और झुंझलाहट पैदा करने वाला भी, पर मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे बारे में तुमने कोई गन्दी या तुच्छ बात नहीं सोची होगी तुम मुझे अच्छी तरह समझती हो। मैंने जो अभी तुमसे कहा कि कल की घटना ने मुझे विचलित नहीं किया है, यह सही नहीं

है, यह सब बकवास है इसने मुझे निष्प्रेरित कर दिया है, इसलिए नहीं कि मुझे नशे की हालत में घर लाया गया बल्कि इसलिए कि यह मेरी असफलता का अन्तिम प्रमाण था सिर्फ इसमें नहीं कि मैं हसिया की तरह शराब नहीं पी सकता बल्कि हर बात म। हर बात में। मरिम्याना अब यह कह देना जरूरी हो गया है कि जो समान उद्देश्य हम दोनों को करीब लाया था जो हमारे मिलन का आधार था और जिसके लिए हम लोगों ने घर छोड़ा था उस पर अब मुझे तनिक भी विश्वास नहीं रहा है। सच बात बताऊँ कि मेरा जोश तो काफी पहिले ही ठंडा पड़ चला था लेकिन तुम्हारा जोश मुझे अब तक लगातार बढ़ावा देता रहा था और उसने फिर एक बार मेरे अन्दर जोश की लौ जला दी थी। लेकिन मुझे अब उसमें कोई विश्वास नहीं है। मुझे उसमें जरा भी आस्था नहीं है।

उसने अपने खाली हाथ स अपनी आँखें बन्द करलीं और क्षणभर मौन रहा। मरिम्याना भी मौन रही और निगाह नीचे किए रही - उसे अनुभव हो रहा था कि उसने उसे कोई नई बात नहीं बताई।

'मैं सोचा करता था नेज्दानोव ने अपनी आँखों पर स हाथ हटा कर, लकिन मरिम्याना की ओर देखते हुए फिर कहना शुरू किया कि मैं उद्देश्य पर तो आस्था रखता हूँ सन्देह है मुझे अपने ही ऊपर है, अपनी शक्ति पर, योग्यता पर, और मैं सोचता कि मैं ही उद्देश्य के योग्य नहीं हूँ पर अब ऐसा लगता है कि इन दोनों को अलग अलग नहीं किया जा सकता और फिर अपने आपको धोखा देने स क्या लाभ? नहीं मुझे उद्देश्य पर ही विश्वास नहीं है। और क्या तुम्हें विश्वास है, मरिम्याना, उस पर?'

मरिम्याना सीधी बैठ गई और उसने अपना सिर ऊपर उठाया, बोली।

हाँ, अलेक्सी, मुझे उस पर पूरा पूरा विश्वास है। मैं अपनी आत्मा की समस्त शक्ति से उस पर आस्था रखती हूँ, और इस ...,

चाहे कितना भी नीच क्या न होऊँ। तुम्हें एक साथी अवश्य मिलेगा इसमें सन्देह न करो।'

मरियाना नेज्वानोव के और निकट झुक आई और उसके मुख के पास अपने मुख को लेजा कर अत्यन्त उत्सुकता और कौतूहल से उसने उसकी आँखों में उसकी आत्मा में—उसकी अपनी आत्मा की गहराई में झाँकने का प्रयास किया।

'तुम्हें हो क्या गया है, अलेक्सी? तुम्हारे मन में क्या है? मुझे साफ साफ बताओ! तुम मुझे भयभीत कर रहे हो। तुम्हारे शब्द इतने पहेली जैसे और अजीब हैं और तुम्हारा चेहरा! मैंने तुम्हारा ऐसा चेहरा कभी नहीं देखा!'

नेज्वानोव ने स्नेह से, आहिस्ते से उसका मुख अपने मुख के पास से हटा दिया और उसका हाथ चूम लिया। इस बार मरियाना ने विरोध नहीं किया, और न हँसी ही और तब भी सशंकित दृष्टि से उसकी ओर देखती रही।

'घबराओ मत कृपया! इसमें कोई अजूबा बात नहीं है। सारी मुश्किल तो यह है लोग कहते हैं कि मार्केलोव को किसाना ने मारा पीटा है, उसने उनके लात-घूँसे सहे हैं, उन्होंने उसकी पसलियाँ तोड़ दी हैं 'मुझे किसाना ने नहीं पीटा—बल्कि उन्होंने मेरे साथ शराब भी पी, मेरे स्वास्थ्य के लिए पी लेकिन उन्होंने मार्केलोव की पसलियों से भी अधिक मेरी आत्मा को घायल कर दिया, उसे चूर चूर कर दिया। मैं पैदा खंडित हुआ मैंने अपने को सुधारने की लाख कोशिश की पर जितनी कोशिश की उतना ही और भी अधिक खंडित होता गया। यही तुम मेरे चहरे में देख रही हो।'

अलैक्सी,' मरियाना ने मद्धिम स्वर में कहा, 'मुझे अपने मन की सारी बातें साफ साफ न बताना, मेरे साथ तुम्हारा बहुत बड़ा अन्याय होगा। नेज्वानोव ने फिर उसका हाथ अपने हाथ में दबा लिया।

'मरियाना, मेरा समस्त व्यक्तित्व तुम्हारे सामने है, यह कहा जाय कि तुम्हारे हाथ में है, और मैं जो भी करूँगा, तुम्हें पहिले बता कर करूँगा, तुम्हें किसी बात पर आश्चर्य नहीं होगा, सचमुच किसी भी बात पर नहीं।'

मरियाना ने उन शब्दों का अर्थ पूछना चाहा, पर न पूछ सकी और फिर उसी समय सोलोमिन ने कमरे में प्रवेश किया। उसकी गति पहिले की अपेक्षा अधिक तीखी और तेज थी। उसकी आँखों में तनाव था, उसके चौड़े होंठ कसकर भिंचे हुए थे, उसके समस्त चेहरे पर एक पैनापन व्याप्त था और उस पर नीरस, कठोर, और लगभग अक्खड़पन का भाव था।

'दोस्तो,' उसने कहना शुरू किया, 'मैं तुम लोगों को यह बताने आया हूँ कि अब अधिक देर करने का समय नहीं है—जल्दी से तैयार हो जाइए। घन्टे भर में ही आप लोगों के जाने का समय आ गया है। अब आप लोगों को अपने विवाह के लिए जाना चाहिए। पावेल की ओर से कोई समाचार नहीं मिला है, पहिले तो उसका घोड़ा अर्ज़ामा में रोका गया, फिर वापस भेज दिया गया है। वह वहीं ठहर गया है। शायद वे उस नगर में आ गए हैं। वह भेद तो नहीं खोलेगा, पर फिर भी कुछ कहा नहीं जा सकता, शायद कोई बात उसके मुँह से निकल जाय, और फिर शायद वे घोड़े से ही पता लगा लें। मेरे भतीजे को तुम लोगों की प्रतीक्षा करने का संदेश भेज दिया गया है। पावेल तुम लोगों के साथ जायगा। वह गवाह होगा।'

'और तुम, सोलोमिन ... वासिली?' नेज़्दानोव ने पूछा। 'क्या तुम नहीं चल रहे हो? मैं देख रहा हूँ कि तुमने यात्रा के कपड़े पहिन रखे हैं,' उसने सोलोमिन के ऊँचे जूतों को देखते हुए कहा।

'ओह, यह तो मैंने वैसे ही पहिन लिए हैं, बाहर कीचड़ हो रही है।'

'लेकिन क्या तुम्हें हम लोगों का उत्तरदायी नहीं बनना पड़ेगा, वासिली ?

'मेरा तो ऐसा विचार नहीं है खैर, यह मेरा अपना मामला है, इसे मुझ पर छोड़ो। हां, एक घन्टे में। और मरिग्राना दास्माना तुमसे मिलना चाहती है। वह वहाँ कोई चीज बना रही है।

ओह, हाँ ! मैं तो उसके पास खुद ही जा रही थी

मरिग्राना दरवाजे की ओर बढ़ी

कुछ विचित्र कुछ-कुछ आतंक सा, और व्यथापूर्ण सा नेज्दानोव के चेहरे पर छा गया।

प्रिय मरिग्राना क्या तुम जा रही हो ?' उसने एकाएक टूटती सी आवाज में कहा।

वह रुक गई।

'मैं अभी आध घन्टे में लौट कर आई। मुझे बाँधा-बूँधी में देर नहीं लगेगी।

हाँ, ठीक है, लेकिन जरा मेरे पास आओ

'अवश्य, लेकिन किस लिए ?'

'मैं तुम्हें एकबार और जी भर कर देख लेना चाहता हूं।' उसने उसे देर तक धीरे धीरे देखा। 'अलविदा, अलविदा, मरिग्राना!' वह भौंचक्की हो गई।

'क्यों मैं क्या व्यर्थ की बकवास करने लगा था ? तुम आध घन्टे में लौट आओगी न, लौट आओगी न ? क्यों ?'

जरूर।

'जरूर मुझे माफ करना। जागने के कारण मेरा सिर चकरा रहा है। मैं भी जल्दी ही सामान बाँधे लेता हूं।

मरिग्राना कमरे के बाहर चली गई। सोलोमिन भी उसके पीछे ही जाने वाला था।

लेकिन नेख्मानाथ ने उसे रोक लिया।

'वासिली।

'हाँ, क्या बात है?'

'मुझे अपना हाथ दो। तुम्हारे अतिथिसत्कार के लिए मुझे तुम्हें धन्यवाद देना है, मेरे दोस्त।

सोलामिन हँसा।

क्या ख्याल है। फिर भी उसने उसे अपना हाथ दे दिया।

और एक बात और कहनी है, नेख्मानाथ ने आगे कहा अगर मुझे कुछ हो जाय तो क्या मैं तुम पर विश्वास कर सकता हूँ, वासिली कि तुम मरियाना को नहीं छोड़ोगे।

तुम्हारी होने वाली पत्नी को।

हाँ मरियाना को।

'पहली बात तो यह कि मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि तुम्हें कुछ नहीं होगा लेकिन फिर भी तुम निश्चिन्त रहो मरियाना मेरे लिए उतनी ही प्रिय है जितनी कि वह तुमको प्रिय है।

आह! यह मैं जानता हूँ जानता हूँ। तब ठीक है, धन्यवाद। तो फिर एक घण्टे में?

'हाँ।

'मैं तैयार रहूँगा। अलविदा।

सोलामिन बाहर चला गया और उसने मरियाना को सीढ़ियों पर पकड़ लिया। नेख्मानाथ के बारे में उससे कहने को कोई बात उसके मन में थी लेकिन उसने कही नहीं। और मरियाना भी अपने मन में समझती थी कि वह उससे कुछ कहना चाहता है लेकिन वह कह नहीं रहा है, और वह भी चुप ही रही।





रास्तोस

सोलामिन जैसे ही कमरे से बाहर गया नेख्लानोव सोफा पर से तुरत उठकर खड़ा हो गया, एक कोने से दूसरे कोने तक दो बार चक्कर काट और फिर कमरे के बीचों बीच जड़वत विचार मग्न खड़ा रहा फिर एकाएक अपने को झकझोरते हुए उसने अपने को संयत किया और त्यागवाला भेष बदला ठोकर मार कर उन कपड़ों को एक कोने में फेंक दिया और अपने कपड़े निवास पर पहिन लिए। तब वह तीन पाया वाली मेज पर गया, दराज में से उसने दो सीलबन्द लिफाफे और एक छोटी सी चीज निकाली। उस चीज को उसने अपनी जेब में ठूंस लिया और लिफाफों को मेज पर ही छोड़ दिया। तब वह अंगीठी के पास झुक गया और उसका छोटा सा दरवाजा खोला। अंगीठी में राख का ढेर लगा हुआ था। मेग्यानोव की पाण्डुलिपि, उसकी कविताओं का ग्रंथ यही अवशेष बचा था उसने उन सबको राख में जला डाला था। लेकिन मार्कोनोव को दी हुई

मरियाना की तस्वीर बची हुई थी। वह अंगीठी म दीवास क सहार चिपकी पड़ी थी। ऐसा लगता था कि उस तस्वीर को भी जला डालने का उसे साहस नहीं हुआ। मज्यानोव ने सावधानी स चित्र को बाहर निकाला और लिफाफा क पास ही मेज पर रख दिया। तब हड़ता क भाव क साथ उसने अपनी टोपी उठाई और दरवाज की ओर बढ़ा लेकिन वह रुक गया पीछे मुड़ा और मरियाना क कमर म गया। वहाँ वह एक मिनट तक खड़ा रहा चारा ओर देखा और उसक छोट स सकरे बिस्तर क पास जाकर झुका और रुखी हुई सिसकी भरत हुए उसने अपने होंठ गड़ा लिया उसक तकिए पर नहीं बल्कि पैरा की जगह पर तब वह एकाएक उठ खड़ा हुआ और अपनी आँखा पर अपनी टोपी खींचत हुए तेजी स बाहर निकल गया।

बरामद या सीढ़ियों पर नज्दानोव की किसी स भी भेंट नहीं हुई। वह सीधा पिछवाड़े के हाते में जा पहुँचा। नीचे झुक बादला स आकाश धूसरित और उदास सा हो रहा था। नम हवा के झोका स घास की नोकें और पेड़ा की पत्तियाँ झूम रही थीं। आज कारखान म और दिना की अपेक्षा कम शोर और गड़गड़ाहट हो रही थी। उसक अहाते स कोयले तारकोल और चर्बी की गंध आ रही थी। नेज्दानोव न चारा ओर एक पैनी, तेज कुछ खोजती हुई सी नजर डाली और सीधा उस पुराने सब प बृक्ष क पास जा पहुँचा जिसन उसक यहाँ आने क पहिले ही दिन जब उसने अपने कमरे की खिड़की स बाहर झाँका था तो उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। इस पड़ के तन पर सूखी काई जम गई थी उसकी टेढ़ी मेढ़ी नंगी शाखें जिन पर बस कहीं कहीं लालिमायुक्त हरी पत्तियाँ झाँक ल रही थीं इधर उधर किसी बूढ़े की भीख माँगती सी बाहा की तरह हवा में उठी हुई थीं। नेज्दानोष पड़ की जड़ा में पास की काली मिट्टी पर दृढ़ चरणा स खड़ा हो गया और उसन अपनी जेब स वह छोटी सी चीज निकाली जो उसन मज की दराज में स निकाल कर अपनी जेब म रख ली थी।

तब उसने उस छोटे से मकान की खिड़कियों की ओर ध्यान से देखा।

'अगर कोई मुझे अब भी देख ले', उसने सोचा, 'तो मैं टास जाऊँ।' लेकिन कहीं किसी मानव चेहरे का चिह्न भी नहीं दिखाई दिया। हर चीज मरी हुई सी जान रही थी, हर चीज ने उससे मुँह मोड़ लिया था और उसे उसके भाग्य पर छोड़ दिया था। केवल कारखाना मानो भारी मन से गुर्रा रहा था, और ऊपर से सुहाने ठंडे मेंह की पैनी बूँदें गिरने लगी थीं।

तब उसने पेड़ की झुकी हुई डाला के बीच से, जिसके नीचे वह खड़ा था, नीचे झुके धुँधले, उदास शून्य नम आकाश को देखा, अम्हाई ली, अपने कन्धे झकझोरे और सोचा अब कुछ शेष नहीं रहा—मैं अब पाटसवग वापस नहीं जाऊँगा, न जेल में जाऊँगा। उसने टोपी एक ओर फेंकी। उसे लगा जैसे एक अनन्त क्लान्ति ने उसे दबोच लिया है। उसने पिस्तौल भाल पर रखी और उसका घोड़ा दबा दिया।

उसे लगा जैसे किसी चीज ने उसे एकदम धक्का दिया हो, पर बहुत जोर से भी नहीं, लेकिन वह पीठ के बल गिर पड़ा था और समझने की कोशिश कर रहा था कि उसे क्या हो गया है, और कैसे उसने अभी-अभी कारखाना का देखा है। उसने उसे पुकारने की भी कोशिश की, और कहना चाहा, कि 'आह, मैं मरना नहीं चाहता।' लेकिन अब वह पूरी तरह से सुन्न पड़ गया था और एक धुँधले हरे रंग की एक लहर उसके मुख पर, उसकी आँखों में उसके सिर पर उसकी हड्डियों के भीतर घुसकर काट रही थी—लग रहा था कि कोई एक चपटा भयानक बोझ उसे पृथ्वी पर दबाये जा रहा है।

वास्तव में नेज्यानोव ने सामने की खिड़की में सोलोमिन की झलक उसी समय देखी थी जब उसने अपनी पिस्तौल का घोड़ा दबाया था। वह ऊपर एक खिड़की के पास गई थी और उसने नेज्यानोव को सब के

पेड़ के नीचे खड़े देख लिया था। उसे यह सोचने का अवसर ही न मिला कि वह इस समय पानी बरसते में सेब के पेड़ के नीचे नंगे सिर खड़ा क्या कर रहा है कि उसने देखा कि वह धनाख की वाली की तरह पीठ के बल पीछे को मुड़क गया। उसने गोली की आवाज नहीं सुनी—उसकी आवाज बड़ी मद्धिम थी—लेकिन उसने तुरन्त अनुमान लगा लिया कि जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है और वह बद हवास नीचे बगीचे की ओर दौड़ी और दौड़कर नेज्दानोव के पास पहुंची। 'अलेक्सेई दिमित्रिच, क्या बात है?' लेकिन तब तक तो अन्धकार उस पर छा चुका था। मारियाना उसके ऊपर झुकी, तो खून देखा।

'पावेल!' वह इतनी जोर से चीखी कि जैसे वह आवाज उसकी न हो—'पावेल!'

दूसरे ही क्षण मारियाना, सोलोमिन, पावेल और कारखाने के दो और मजदूर बगीचे में जा पहुंचे। उन्होंने तुरन्त नेज्दानोव को उठाया और कमरे में लाए और उसे उसी सोफे पर लिटा दिया जिस पर उसने अपनी अन्तिम रात बिताई थी।

वह पीठ के बल लेटा था और उसकी अधखुली आँखें जड़ हो रही थीं और उसका चेहरा तेजी से स्याह पड़ता जा रहा था। वह धीमी और भारी सांस ले रहा था, कभी-कभी सिसकी भी भरता, जैसे मानो उसका दम घुट रहा हो। अभी जीवन ने उसका साथ नहीं छोड़ा था। मारियाना और सोलोमिन सोफे के अगल-बगल खड़े थे। दोनों का चेहरा भी वैसा ही पीला था, जैसा कि नेज्दानोव का। अभिभूत, झकझोरे हुए से, उत्तेजित और त्रस्त से थे दोनों ही—विशेषकर मारियाना—लेकिन होश हवास नहीं खोए थे। 'पहिले हम लोगों ने यह बात क्या नहीं सोचा।' वे दोनों ही सोच रहे थे और साथ-साथ यह भी सोच रहे थे कि उन्हें पहिले ही से इसका आभास हो गया था। जब नेज्दानोव ने मारियाना से कहा था 'मैं जो कुछ भी करूंगा तुम्हें बता कर करूंगा, तुम्हें किसी बात पर आश्चर्य नहीं करना होगा',

और फिर जब उसने अपने भीतर के दो अलग अलग व्यक्तियों की बात कही थी, जो साथ-साथ नहीं रह सकते, तो क्या मरियाना के हृदय में एक धुंधली सी आशंका नहीं उत्पन्न हुई थी ? क्यों नहीं उसने तभी उस आशंका पर विचार किया ? क्यों अब वह सोलोमिन की ओर देखने का साहस नहीं जुटा पा रही है, जैसे मानों वह भी उसका साथी रहा हो मानों वह भी आत्मा की घुटन का अनुभव कर रहा हो ? इस समय क्यों वह नेज्दानोव के लिए न केवल असीम अनुकम्पा और दया का अनुभव कर रही है, वरन् एक प्रकार का भय और कंप और लज्जा का भी अनुभव कर रही है ? क्या यह सम्भव है कि उसे बचा सकना उसके हाथ में था ? क्या दोनों को ही बोलने का साहस नहीं हो रहा है ? मुश्किल से सांस ले पा रहे हैं—और प्रतीक्षा कर रहे हैं किस बात की ? हे, दयालु भगवान् !

सोलोमिन ने डाक्टर को बुला भेजा, यद्यपि यह साफ था कि अब कोई आशा नहीं थी। उस छोटे से घाव पर, जो अब काला और रक्तहीन हो गया था, तात्याना ने ठंडे पानी का बड़ा सा फाया बना कर रख दिया था, उसने उसके बालों को भी ठंडे पानी और सिरके से भिगा दिया था। एकाएक नेज्दानोव ने लम्बी-लम्बी गहरी सांसें लेना बन्द किया और थोड़ा हिला डुला भी।

'अब होश आ रहा है इसे', सोलोमिन ने फुसफुसाया।

मरियाना सोफा के पास अपने घुटनों के बल बैठी थी

नेज्दानोव ने उसकी ओर देखा, अब तक उसकी आँखों में मरते हुए व्यक्ति की जड़ता थी।

ओह, मैं अभी तक जीवित हूं', उसने अत्यन्त क्षीण स्वर में कहा कि उसको सुनना भी कठिन था। 'फिर असफल रहा मैं तुम्हें रोके हुए हूं।

अल्योशा ! मरियाना सिसकने लगी।

'ओह, हाँ अभी याद है तुम्हें, मरियाना, मेरी कविता

में "फूलों से मुझे सजा देना·····" कहाँ हैं फूल? लेकिन उसके बदले तुम यहाँ हो वहाँ, मेरे पत्रों में'

वह एकाएक ऊपर से नीचे तक काँप उठा।

'आह, यह रखो' एक दूसरे को दो दोनों अपने हाथ—मेरे सामने' 'जल्दी पकड़ो

सालोमिन ने मरिआना का हाथ पकड़ लिया। उसका सिर तकिए पर टिका हुआ था और चेहरा नीचे की ओर झुका था, घाव के पास।

सालोमिन सतर और स्थिर खड़ा था, और रात की तरह से काला दिखाई पड़ रहा था।

'हाँ ठीक हाँ

नेज्दानोव फिर सुबक उठा, किन्तु एक विचित्र असाधारण ढंग से 'उसकी छाती फूली और जोर की निश्वास निकली

वह उन दोनों के आपस में जुड़े हाथों पर अपना हाथ रखने की कोशिश कर रहा था लेकिन उसके हाथ तो पहिले ही निर्जीव हो चुके थे।

'वह जा रहे हैं अब', तात्याना बुदबुदाई, जो दरवाजे पर खड़ी थी, और क्रास का चिह्न बनाने लगी थी।

सिसकियाँ धीरे-धीरे कम होती जा रही थीं उसकी आँखें अब भी मरिआना को खोज रही थीं पर एक प्रकार की खोफ़नाक, धीरे की सी जड़ सफेदी उन पर छाती जा रही थी

'ठीक है ' उसके अन्तिम शब्द थे।

उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे और सालोमिन और मरिआना के आपस में जुड़े हाथ अब भी उसकी छाती पर पड़े थे।

उसने अपने अन्तिम दो पत्र छोड़े थे। एक सिलिन के नाम था जिसमें कुछ पंक्तियाँ ही थीं

'अलविदा भाई, मित्र अलविदा! जब तक यह कागज का टुकड़ा तुम्हें मिलेगा, मैं इस संसार में जा चुका हूँगा। यह मत पूछो कि

क्यों और कैसे, और शोक भी मत करो, विश्वास करो कि अब मैं मजे में हूं। अगर पुश्किन की 'एव्गेनी ओनेगिन' में लेन्स्की की मृत्यु पर उसकी कृति पढ़ना। तुम्हें याद है?—"खिड़कियां पर सफेदी हो गई है, मालकिन चली गई है " बस। तुमसे अब और बात करना व्यर्थ है क्योंकि मुझे बहुत कुछ कहना है और उस सबको कहने के लिए समय नहीं है। लेकिन तुम्हें सूचित किए बिना मैं जा भी तो नहीं सकता था, नहीं तो तुम मुझे अभी जीवित ही समझते, और यह हमारी दोस्ती के प्रति अन्याय भी होता। अलविदा, जिन्दा रहो।

तुम्हारा मित्र—अ० ने०।'

दूसरा पत्र जरा कुछ इससे बड़ा था। यह पत्र सोलोमिन और मरिआना दोनों के नाम था। उसमें लिखा था 'मेरे बच्चो!' (इन शब्दों के बाद ही कुछ जगह छूटी हुई थी कुछ मिट गया था या उस पर धब्बा पड़ गया था, जैसे उस पर आंसू पड़ गए हों।) 'तुम्हें शायद यह अजीब सा लगे कि मैं तुम्हें उस तरह से सम्बोधित कर रहा हूं। मैं खुद भी अभी एक बच्चा ही हूं और तुम सोलोमिन, मुझसे तो उमर में बड़े ही हो। लेकिन मैं मर रहा हूं, और अपने जीवन के द्वार पर खड़ा हूं अपने को बुजुर्ग समझ रहा हूं। मैं तुम दोनों के ही आगे बहुत दोषी हूं, विशेषकर तुम्हारे आगे मरिआना, तुमको इतना दुःख देने के लिए (मैं जानता हूं, मरिआना, तुम्हें दुख होगा) और मैं तुम्हें इतना बेचैन और उद्विग्न करता रहा हूं। लेकिन मैं करता भी क्या? मेरे सामने और कोई रास्ता ही न था। मैं अपने को 'सरल' नहीं बना सका, मेरे लिए केवल एक ही रास्ता बचा था कि अपने आपको ही मिटा दूं। मरिआना, मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए भी एक बोझ बन कर रहता। तुम्हारा हृदय विशाल है, तुम बोझ सहन करने में भी आनन्द का अनुभव करतीं, एक और त्याग करने में लेकिन मुझे तुमसे ऐसा त्याग पाने का कोई अधिकार

नहीं था, तुम्हें और भी महान् और अच्छे काम करने हैं। मेरे अच्छो भाग्यो, मैं तुम्हें एक सूत्र में बाँध दूँ, अपनी कब्र में से। तुम दोनों साथ साथ प्रसन्न रहोगे। मरिमाना, तुम निश्चय ही सोलामिन से प्रेम करने लगोगी, और वह! वह तो तुमसे तभी से प्रेम करता है, जब उसने पहिले पहिले तुम्हें सिप्पागिन के यहाँ देखा था। यह मुझसे छिपा न था, यद्यपि उसके कुछ दिन बाद ही हम दोनों साथ साथ भागे थे। आह, वह प्रात कितनी शानदार थी कितनी मधुर और जवान! अब उसकी याद मेरे लिए एक प्रतीक के रूप में है, तुम्हारे सहगामी जीवन के प्रतीक रूप में—तुम्हारे और उसके—और मैं तो उस दिन अनायास, बस संयोगवश ही उसकी जगह पर था। लेकिन अब उसे समाप्त करने का समय आ गया है मैं तुम्हारी भावनाओं को उत्तेजित नहीं करना चाहता मैं तो सिर्फ अपने कार्य को न्यायोचित ठहरा रहा हूँ। बस तुम्हारे कुछ क्षण बड़े ही दुख के बीतेंगे— लेकिन कोई चारा नही। और कोई और रास्ता भी नहीं, है क्या? अलविदा मरिमाना मेरी भोली, भली सच्ची लड़की, अलविदा! अलविदा सोलामिन! मैं उसे तुम्हारी देख रेख में छोड़ रहा हूँ। आनन्द से जीवन व्यतीत करना—दूसरों की भलाई के लिए जीवित रहना और तुम, मरिमाना मेरे बारे में तभी सोचना जब तुम खुश हो। और मेरी याद करना कि वह भी एक सच्चा और भला आदमी था, लेकिन ऐसा, जिसके लिए जीवित रहने की अपेक्षा मर जाना ही उचित था। मैं तुम्हें सचमुच ही प्यार करता था, मैं नहीं जानता, मेरी प्यारी, लेकिन इतना मैं जानता हूँ कि इतनी गहरी भावना जितनी तुम्हारे लिए अनुभव की, पहिले कभी और किसी के लिए भी अनुभव नहीं की, और यदि यह भावना मरने के समय कब्र में अपने साथ ले जाने के लिए मेरे पास न होती, तो मरना मेरे लिए बड़ा ही कष्टकर हो जाता।

'मरिमाना! अगर कभी मशूरिना नाम की लड़की से तुम्हारी भेंट हो, तो, मेरा ख्याल है, सोलामिन उसे जानता है, और शायद तुमने

भी उसे देखा है—उससे कहना कि अपनी मृत्यु से थोड़ी देर पहिले मैंने बड़ी कृतज्ञता से उसकी याद की थी' वह समझ आयगी।

'लेकिन अब मुझे यह सब छोड़ना ही चाहिए। मैंने अभी खिड़की के बाहर देखा है, जल्दी-जल्दी चलते बादलों के बीच में एक प्यारा सा तारा। बादल चाहे जितनी जल्दी चलें पर उसे छिपा नहीं पाते। उस तारे को देखकर, मरिआना, मुझे तुम्हारी याद हो आई है। इस समय तुम बगल के कमरे में सो रही हो और तुम्हारे मन में कोई आशंका नहीं है मैं तुम्हारे दरवाजे तक गया था, और मैंने तुम्हारी पवित्र और शान्त साँसों को सुना' अलविदा, अलविदा मेरी प्यारी। अलविदा मेरे बच्चो, मेरे दोस्तो! अलविदा!'

तुम्हारा—अ०।

पुन'—'ओफ, धिक्कार है मुझे, कि मरने से पहिले अपने इस अन्तिम पत्र में मैंने अपने महान उद्देश्य के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा? सम्भवत' इस लिए कि मृत्यु के समय आदमी झूँठ नहीं बोल सकता' मरिआना, मुझे इस पुनश्च के लिए क्षमा करना' झूँठ मेरे ही मन में है, उसमें नहीं, जिसमें तुम्हारी आस्था है।

'ओह! एक बात और तुम शायद सोचो मरिआना, वह जेल से डर गया, जहाँ उसे निश्चय ही बन्द कर दिया जाता, और उससे बचने की उसने यह तरकीब निकाल ली। नहीं, जेल जाना कोई बड़ी बात नहीं है, पर उस उद्देश्य के लिए जेल जाना, जिस पर विश्वास न हो, सचमुच ही मूर्खता है। और मैं जेल की यातनाओं से घबरा कर अपना अन्त नहीं कर रहा हूँ। अलविदा मरिआना! मेरी पवित्र, निष्कलंक, लड़की, अलविदा!

बारी-बारी से मरिआना और सोलोमिन ने इस पत्र को पढ़ा। उसके बाद उसने इन दोनों पत्रों और अपने चित्र को अपनी जेब में रखा और स्थिर खड़ी रह गई।

तब सोलोमिन ने उससे कहा

'सब तैयारी पूरी है, मरियाना चाओ अब हम चलें। हमें उसकी इच्छाएँ पूरी करनी चाहिएँ।

मरियाना नेज्दानोव के पास गई और अपने होंठों से उसकी शीतल भौंहों का स्पर्श किया और सोलोमिन की ओर मुड़कर बोली चलो।

सोलोमिन ने उसका हाथ पकड़ लिया और दोनों कमरे से बाहर चले गए।

कुछ घण्टा बाद जब पुलिस ने कारखाने पर छापा मारा तो उन्हें नेज्दानोव मिला था, पर लाश के रूप में। तल्याना ने सब सम्हाल कर बाहर रख दिया था, उसके सिर के नीचे एक सफेद तकिया लगा दिया था और उसके हाथों से क्रास का चिन्ह बना दिया था और उसके पास ही एक छोटी सी मेज पर कुछ फूल भी रख दिए थे। पबेल ने, जिसे सोलोमिन चलते समय तमाम जरूरी हिदायतें दे गया था पुलिस का स्वागत किया और उनकी ऐसी चापलूसी भी की और खिल्ली भी उड़ाई कि वे यही नहीं तै कर पाए कि उसको धन्यवाद दें या उस तिरस्कार करें। उसने विस्तार से उन्हें बता दिया कि आत्म हत्या कैसे हुई, और पुलिस वालों को बढ़िया पनीर और शराब पिलाई और इस समय वासिली फैदोतिच और उक्त महिला कहाँ हैं इस पर अपनी अनभिज्ञता प्रगट की। वह बार बार यही कहता रहा कि वासिली फैदोतिच कभी अपने काम की वजह से देर तक बाहर नही रह और वे आते ही, और नही तो कल तक तो वापस लौट ही आएँगे और तब वह उसी दम पुलिस वालों को उनके आने की सूचना दे देगा। वह पक्का भरोसे का आदमी है।

सो इस तरह सुयोग्य पुलिस अधिकारी खाली हाथ वापस लौट गए, और लाश की निगरानी पर एक सिपाही नियुक्त कर गए और उससे वायदा कर गए कि वे शीघ्र ही आकर दण्डाधिकारी को भेजेंगे।

— ❀ —

अड़तीस

इन सारी घटनाओं के दो दिन बाद 'आसानी से बात मान लेने वाले' पादरी जोसिम के हाते में एक छोटी सी गाड़ी आकर रुकी। उस गाड़ी में एक स्त्री और पुरुष बैठे थे, जो पाठकों के अच्छी तरह जाने-पहचाने हैं। आने के दूसरे ही दिन दोनों का विधिवत विवाह हो गया। विवाह सम्पन्न होने के तुरन्त बाद ही वे दोनों वहाँ से लापता होगए और उसे पादरी जोसिम को अपने काम के लिए कभी पश्चाताप नहीं हुआ। सोलोमिन कारखाने में अपने मालिक के नाम एक पत्र छोड़ गया था, जो पवेल ने उसे देदिया था, जिसमें कारखाने की व्यवस्था का, जो मुनाफे पर चल रहा था पूरे विस्तार के साथ ब्योरा दिया हुआ था। उसी पत्र में उसने मालिक से तीन महीने की छुट्टी माँगी थी। यह पत्र नेज्दानोव की मृत्यु के दो दिन पहिले की तारीख में लिखा गया था, जिससे प्रगट होता है कि सोलोमिन ने नेज्दानोव और मरिआना के साथ साथ जाकर स्वयं भी कुछ दिन छिपे रहने का निश्चय

पहिले ही कर लिया था। मज्धानोव की श्रात्म हत्या के सम्बन्ध में जाँच हुई, पर किसी को कुछ सूराग न लग सका। लाश को दफना दिया गया था, और सिप्यागिन भी अपनी भांजी की खोज-खबर से हाथ धो बैठा था।

नौ महीने बाद मार्केलोव का मुकदमा पेश हुआ। मुकदमे के समय भी उसने वैसा ही बर्ताव किया जैसा गवर्नर के यहाँ किया था, जिसमें आत्म सम्मान भी था आत्म संयम भी और नैराश्य का भाव भी। उसका वह स्वाभाविक तीखापन अब कुछ मुलायम पड़ गया था, लेकिन कायरता से नहीं, वरन् इसके मूल में एक दूसरी ही महती भावना थी। उसने अपनी कोई सफाई नहीं दी और न कोई पश्चाताप ही प्रगट किया, न किसी को दोष दिया और न किसी दूसरे का नाम ही प्रगट किया। उसकी बुझी हुई आँखों और कुम्हलाए मुख पर बस एक ही भाव विद्यमान था—दृढ़ता के साथ जो सामने है उसे सहने का भाव, उसे अपना भाग्य मान कर। उसके सरल सच्चे उत्तरों ने न्यायाधीशों तक के हृदयों को पिघला दिया और उनके हृदय भी उसके प्रति सहानुभूति से भर उठे। जिन किसानों ने उसे पकड़ा था और उसके खिलाफ गवाही दी थी उनके मन में भी उसके प्रति करुणा उमड़ आई और उन्होंने भी उसे एक सरल सीधा और सच्चा आदमी बताया। लेकिन उसका अपराध तो साफ था ही। अपराध के दंड से बचने का तो उसके लिए कोई रास्ता था ही नहीं। और वह शायद स्वयं अपने को दंड का भागी समझता भी था। उसके सभी सहयोगी बिखर गए थे। मशूरिना का कहीं पता नहीं लगा था। श्रौस्त्रोदुमोव को एक व्यापारी ने, जिसे वह क्रान्ति के लिए उकसा रहा था, मार डाला था। गोलुश्किन भय के मारे पागल सा हो गया था और उसने अपने कारनामों के लिए पश्चाताप प्रगट किया था। उसका ख्याल करके उसे साधारण सा ही दंड दिया गया, किस्लायाकोव को एक महीने तक कैद में बन्द रखकर घर में रिहा कर दिया गया था और उसके एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में घूमने-फिरने रहने पर भी किसी प्रकार की कोई रोक नहीं

ई नेज्यानोव को तो उसकी मृत्यु न ही मुक्त कर दिया था। ामिन के खिलाफ कोई सबूत नहीं था, अतः उसके विरुद्ध कुछ हो तो न सका, पर उस पर सन्देह बना ही रहा। उसने अपने पड़ताल से बचने की भी कोशिश नहीं की, और जब भी पूछ-ताछ के लिए उसकी जरूरत पड़ी, वह स्वयं आकर हाजिर हो गया। मरियाना तो तस्वीर से बिल्कुल बाहर ही रही और पाक्लिन सारी मुसीबतों से साफ बच गया सच तो यह है कि उसकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

इस बीच में लगभग डेढ़ बरस बीत गया और जाड़े का मौसम आ गया। सिप्यागिन, पीटसबर्ग में अब राज्य परिषद का सदस्य और राजभवन का प्रमुख प्रबन्धकर्ता हो गया था और वह दिन पर दिन तरक्की करता जा रहा था।

उसकी पत्नी संगीत और कला की संरक्षिका बन गई थी, हर शाम को उसके घर पर संगीत गोष्ठी जमती और खाना पीना होता। उसने शरबत की भोजन-शालायें स्थापित कीं। मिस्टर कालोमियेत्सेव भी अपने विभाग के एक अत्यन्त उदीयमान सचिव माने जाने लगे थे।

उसी पीटसबर्ग की एक वासिली ओस्त्रोव सड़क पर एक नाटे कद का आदमी फटा सा बिल्ली की खाल के कॉलरवाला ओवरकोट पहने लंगड़ाता हुआ चला जा रहा था, वह पाक्लिन था। विगत दिनों में वह बिल्कुल बदल गया था। उसकी बालदार टोपी के नीचे सिर के बालों की निकली हुई लटों में अब कुछ चांदी के से सफेद धागे दिखाई पड़ने लगे थे। जब वह सड़क पर जा रहा था तो सामने से एक लम्बे कद की भारी भरकम बदन वाली महिला भी मोटे कपड़े के लबादे में अपने शरीर को पूरी तरह लपेटे चली आ रही थी। पहले तो पाक्लिन ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और उस पर एक उड़ती हुई नजर डालता हुआ आगे बढ़ गया लेकिन थोड़ी दूर पर ही वह एकदम ठक से खड़ा रह गया, क्षण भर सोचता रहा और फिर अपने हाथों को ऊपर उछालता हुआ जल्दी से पीछे का

उस ओर महिला के समीप आ पहुंचा और उसकी टोपी के नीचे से झुककर गौर से उसकी ओर देखने लगा।

'मथुरिना ?' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

महिला ने बड़े रौब से उसको सिर से पैर तक घूरा और एक शब्द भी बोले बिना आगे बढ़ गई।

'प्रिय मथुरिना मैं तुम्हें पहिचानता हूं' पाक्लिन कहते हुए मर्गाड़ाता हुआ उसके पीछे लपका लेकिन डरो मत। मैं तुम्हारे साथ विश्वास घात नहीं करूंगा। तुमसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं पाक्लिन हूं सिला—पाक्लिन जानती हो नेज्दानोव का दोस्त आओ मेरे साथ आओ। मैं यहां से सिर्फ दो कदम पर ही रहता हूं। कृपया चलो न।

'मैं काउंटेस रोकादीसांतोपियुम हूं, महिला ने धीमे संयत आर जनक रूप से शुद्ध रूसी उच्चारण में उत्तर दिया।

'चलो भी बेकार की बात मत करो। क्या खूब काउं हो! आओ मेरे साथ। बैठकर कुछ बातें करेंगे

'पर तुम रहते कहां हो ?' इटलियन काउंटेस ने यकायक शु रूसी भाषा में पूछा। मेरे पास समय बरबाद करने को नहीं है।

'मैं यहीं रहता हूं, इसी सड़क पर, देखो वह रहा मेरा घर, भू भूरा सा तिमंजिला मकान। तुमने बड़ी दया की कि तुमने रहस्यमयी बनने की कोशिश नहीं की। आओ मुझे अपना हाथ दो और मेरे साथ चलो। क्या तुम्हें यहां आये काफी दिन हो गए ? और यह तुम काउंटेस कैसे हो गई ? क्या तुमने किसी इटली के काउंट से विवाह कर लिया है ?'

'मथुरिना ने इटली के किसी भी काउंट से वास्तव में शादी नहीं की थी। असल बात तो यह है कि उसका पासपोर्ट किसी काउंटेस रोकादीसांतोपियुम के नाम में बनवाया गया था, जो अभी पिछले दिनों ही मरी थी। इस पासपोर्ट के द्वारा वह बड़ी शान से बिना किसी बाधा

के क्स लौट आई थी, यद्यपि वह इटली भाषा का एक शब्द भी नहीं जानती थी और उसका चेहरा भी एकदम विशिष्ट रूप से रूसी था।

पाक्लिन उसे अपने अत्यन्त साधारण निवासस्थान पर ले गया। उसकी कुबड़ी बहन भी रसोई घर के दरवाजे पर पड़े पर्दे के पीछे से आगन्तुका से मिलने के लिये बाहर निकल आई।

'यह हैं स्नापोल्गिना,' पाक्लिन ने परिचय दिया, 'मेरी एक घनिष्ठ मित्र। जितनी जल्दी सम्भव हो सके हमें थोड़ी सी चाय बनाकर दो।'

पाक्लिन ने यदि नेज्दानोव का नाम न लिया होता तो मशुरिना उसके साथ न आती। उसने अपनी टोपी उतारी और अपना पुरुषों जैसा हाथ अपने छंटे सँवारे बालों पर फेरा और अभिवादन कर चुपचाप बैठ गई। उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया था यहाँ तक कि वह कपड़े भी वही पहिने थी जो दो वर्ष पहिले पहिने थी, किन्तु उसकी आँखों में अचल स्थिर पीड़ा थी, जिसने उसके चेहरे की स्वाभाविक कठोरता में एक अजीब मर्मस्पर्शिता उत्पन्न कर दी थी।

स्नान्दुलिया चाय बनाने चली गई और पाक्लिन मशुरिना के सामने बैठ गया, उसके घुटना को कोमलता से थपथपाया और सिर झुका लिया, लेकिन जब उसने बोलने की कोशिश की, तो उसे अपने गले को साफ करना पड़ा, पर उसकी आवाज भर्रा गयी और स्वर टूट गया आँखों में आँसू डबडबा आए। मशुरिना अचल, स्थिर और कुर्सी की पीठ से बिना टिके सीधी तन कर बैठी थी और उदास आँखों से शून्य में ताक रही थी।

'हाँ, हाँ' पाक्लिन ने कहना शुरू किया। 'कैसे थे वे दिन!' तुम्हें देख कर मेरी याद ताजी हो रही है, बहुत सी बातें ~ मुझे याद आ रही हैं, और बहुत से लोग, मृत और जीवित, मरे वे छोटे भी मर गए बेचारे लेकिन तुम तो उन्हें नहीं जानतीं, और दोनों मरे भी एक ही दिन, जैसा मैंने पहिले ही कहा था। नेज्दानोव ~ बेचारा नेज्दानोव! 'तुम तो जानती होगी, निश्चय ही '

'हाँ, जानती हूँ' मर्गुरिना ने कहा वह मन भी शून्य में ताक रही थी।

'और तुम भ्रोल्यावुमाव के बारे में भी जानती होगी?' मुर्गुरिना ने उत्तर में केवल सिर हिलाया। वह नेज्वानोव के बारे में ही बातें करती रहना चाहती थी पर वह पाक्लिन से उसके बारे में और कुछ पूछने का साहस नहीं कर सकी। लेकिन इसके बिना भी वह मर्गुरिना के मन की बात समझ गया।

'मुझे पता चला था कि वह जो पत्र छोड़ गया है, उसमें तुम्हारे बारे में उसने कुछ लिखा है—क्या यह सच है?'

मर्गुरिना तुरन्त कोई उत्तर न दे सकी।

'सच है' अंतत वह किसी तरह न कह सकी।

'बड़ा प्यारा आदमी था वह! सिर्फ जरा अपने रास्ते से भटक गया था। वह मुझ जैसा ही क्रान्तिकारी था। जानती हो, वह वास्तव में क्या था? यथार्थ आदर्शवादी! समझीं मेरी बात?'

मर्गुरिना ने उस पर एक उड़ती सी नजर डाली। उसने उसकी बात नहीं समझी थी और वास्तव में उसने उसे समझने की कोशिश भी नहीं करनी चाही। उसे बड़ा अजीब और अनुपयुक्त लगा कि पाक्लिन नेज्वानोव के साथ अपनी तुलना करने का साहस करे, लेकिन उसने सोचा 'चलो, बघारने दो इस शेखी।' (यद्यपि वह शेखी बिल्कुल भी नहीं बघार रहा था, बल्कि अपने विचार से तो वह अपने को और भी विनीत बना रहा था।)

'सिलिन नाम के एक व्यक्ति ने मुझे यहाँ खोज निकाला,' पाक्लिन ने अपनी बात जारी रखी। 'नेज्वानोव ने मृत्यु से पहिले उसे भी एक पत्र लिखा था। वह सिलिन पूछ रहा था कि क्या वह उसके कुछ कागज-पत्तर कहीं पा सकता है। लेकिन अल्योशा का सारा सामान तो मुहर बन्द कर दिया गया है। और फिर उसमें कोई कागज थे भी नहीं। उसने सब जला डाले थे, यहाँ तक कि अपनी कविताएँ

भी। तुम शायद नहीं जानतीं कि उसने कविताएँ भी लिखी थीं। मुझे उनका बड़ा दुख है मेरा विश्वास है कि उनमें से कुछ तो बड़ी ही सुन्दर रही होंगी। सब कुछ उसके साथ ही नष्ट हो गया एक भँवर में डूब ही गया सदा सदा के लिए मर गया। कुछ भी नहीं बचा, सिवाय उसके मित्रों के मन में उसकी स्मृतियों के और यह भी तभी तक जब तक कि वे भी अपनी अपनी बारी से इस संसार से चल ही नहीं जाते।

थोड़ी देर के लिए पाक्लिन मौन हो गया, और फिर उसने कहना शुरु किया 'सिप्यागिन! याद है तुम्हें उस रोबीले दर्पी कुलीन आदमी की? अब उसकी पौ बारह है। वह इस समय तक शक्ति और यश की चोटी पर चढ़ चुके हैं!

मशूरिना को सिप्यागिन की जरा भी याद न थी लेकिन पाक्लिन को सिप्यागिन दम्पत्ति से बड़ी घृणा थी, विशेषकर मिस्टर सिप्यागिन से उतनी ज्यादा कि वह उनकी धज्जियाँ उड़ाने के लोभ को न छोड़ सकता था। उसका कहना है कि उनके घर में बड़ी अच्छाई का वातावरण है। वे सदैव अपने गुणों की बढ़ बढ़ कर शान मारा करते हैं। लेकिन मैंने देखा है कि जो अपने गुणों के बारे में अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हैं और बढ़ बढ़ कर बातें करते हैं, वे वैसे ही दुर्गन्धित होते हैं जैसे रोगियों का कमरा निश्चय जानो तुम, कि उनमें कोई न कोई कलुषता निश्चय ही होती है। यह सन्देहास्पद चिन्ह है। बेचारा अलैक्सी! वे ही उसके नाश के कारण थे, वह सिप्यागिन दम्पत्ति।'

'सोलोमिन के क्या हाल-चाल हैं?'

मशूरिना ने पूछा। एकाएक नेज्दानोव के बारे में पाक्लिन से और कुछ जानने की उसकी इच्छा समाप्त हो गई।

'सालोमिन! पाक्लिन ने ऊँचे स्वर में कहा। वह बड़ा शानदार आदमी है। बड़े मजे में कट रही है उसकी। उसने अपना पुराना कारखाना छोड़ दिया और अपने साथ अच्छे अच्छे मजदूरों को भी

लेता गया, उनमें एक था सुनते हो, बड़ा तेज था। उसका नाम पवेल था—वह उसे भी अपने साथ लेता गया। अब सुनते हैं उसने अपना कारखाना स्थापित कर लिया है छोटा सा ही है। कहीं पम नगर की ओर है। यह कारखाना उसने सहकारिता के आधार पर स्थापित किया है। वह एक ऐसा जीवट का आदमी है कि जिस काम के पीछे पड़ जाता है उसे करके ही छोड़ता है। कोई बाधा उसके रास्ते को रोक नहीं सकती। बड़ा ही तेजतर्रार और जीवट का आदमी है, और मजबूत इरादे का भी अटूट व्यक्ति। निःसन्देह बड़ा ही शानदार आदमी है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह शहर भर के पचड़े से बीमार नहीं है। वह सारे समाज की बुराइयों को चुटकियों में सुधारने का ठेकेदार नहीं बनता। क्योंकि तुम तो जानती ही हो, हम रूसी बड़े अजीब लोग हैं, हम आशा करते हैं कि सब कुछ एक साथ और एक दिन में हो जाय। हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं। चाहते हैं कि कुछ ऐसा हो जाय कोई ऐसा व्यक्ति पैदा हो जाय, जो पलक मारते ही एक दिन में सारे दुःख दर्द दूर कर दे हमारी सारी मुसीबतें और हमारे कष्ट हमारे जीवन से दूर कर दे ठीक दुखते दाँत की तरह। ऐसा क्या जादू हो सकता है भला—सोवियतें, ग्राम पंचायतें, अफीम पेपेन्स्तेय विदेशी युद्ध या जो भी तुम चाहो! हम तो बस यह चाहते हैं कि हमारा दुखता दाँत कोई निकाल दे। यह सब काहिली, निकम्मापन और ओछे विचार हैं। लेकिन सालामिन ऐसा नहीं है—नहीं, वह नीम हकीम नहीं है, वह नम्बर एक का आदमी है।

मतुरिना ने अपना हाथ हिलाया, मानो वह कहा, 'छोड़ो, छोड़ो, तो उसकी बात छोड़ो।'

'अच्छा और वह लड़की', उसने पूछा, 'नाम भूल गई मैं उसका—जो उसके साथ भागी थी लेव्यानाव के साथ?

मरियाना? ओह, वह अब उसी सालामिन की पत्नी है। अब तो एक साल से भी ऊपर हो गया उनके विवाह को हुए। पहले तो वह

सिर्फ लोगों को दिखाने के लिए ही था, पर अब तो सुना है यह सचमुच उसकी पत्नी हो गई है। हाँ, हाँ उसकी पत्नी हो गई है।'

मर्युरिना ने फिर अपना हाथ हिलाया। एक बार उसे नेख्यानोव के कारण मरियाना से ईर्ष्या हुई थी, अब वह उससे नाराज थी कि उसने उसकी स्मृति के साथ विश्वासघात किया। 'मेरा ख्याल है कि अब तक तो बाल-बच्चा भी हो गया है उनके।' उसने तिरस्कार के स्वर में कहा।

'हो सकता है, पर मुझे पता नहीं। लेकिन तुम किधर चला? पाक्लिन ने, यह देखते हुए कि वह जाने के लिए अपना हैट उठा रही है कहा। 'थोड़ी देर और रुको न स्नापाच्का अभी चाय लाती ही होगी। यह बात नहीं है कि उसे मर्युरिना को रोक रखने में ही कोई विशेष दिलचस्पी हो, वह तो किसी के सामने अपने सीने में अब तक जमा हुए और व्यक्त होने के लिए उमड़ते भावों को अभिव्यक्त करने के लिए लालायित था। और इस अवसर को वह हाथ से नहीं जाने देना चाहता था। पाक्लिन पीटर्सबर्ग में लौटने के बाद बहुत कम लोगों से मिला था, खास कर नयी पीढ़ी के लोगों से। नेख्यानोव काड ने उसे डरा दिया था, वह बड़ा चौकन्ना हो गया था और सभा सोसाइटी से कन्नी काटता था, और उधर नौजवान भी उसे सशंकित दृष्टि से देखते थे। यहाँ तक कि एक नौजवान ने तो उसके मुँह पर ही उसे पुलिस का मुखबिर तक कह दिया था। और पुरानी पीढ़ी के लोगों से मिलने-जुलने की उसे कोई इच्छा नहीं होती थी। इसलिए कभी कभी तो ऐसा होता कि हफ्ता यह बिना बोले ही रह जाता। यह अपनी बहन से भी खुल कर न बात पाता था—इसलिए नहीं कि यह उसे इसके योग्य नहीं समझता था, नहीं यह बात नहीं थी। उसकी साधारण बुद्धि के बारे में उसकी बड़ी ऊँची धारणा थी लेकिन उसके साथ उसे बड़ी गम्भीरता और सच्चाई से बात करनी होती थी, जैसे ही वह उसके साथ 'तुरुप चाल चलने लगता' कहते हैं वह

उसकी ओर ऐसी अर्थपूर्ण करुण दृष्टि से देखने लगती कि वह शर्म से पानी-पानी हो जाता। और भला आदमी 'तुरुप चाल' के बिना भले ही कभी-कभी ही सही कैसे रह सकता है? इस लिए पीटर्सबर्ग का जीवन उसके लिए अत्यन्त ही नीरस और थकाने वाला हो गया था और वह सोचता कि यहाँ से वह कहीं और चला जाय, शायद मास्को। बन्द तालाब के पानी की तरह, तरह-तरह के विचार, कल्पनाएँ, तरह-तरह की उड़ानें, सूझें, सुन्दर वाक्य उसके मन में इकट्ठे होते जा रहे थे बाँध टूटने की नौबत ही न आती थी, पानी में अब सड़ाँध आने लगी थी। तभी मार्गरिटा से उसकी भेंट हो गई और उसने बाँध के दरवाजे खोल दिए, और बोलता गया बोलता गया। " वह पीटर्सबर्ग वहाँ के जीवन, और चखूव क्लब के बारे में बोलता रहा, कुछ नहीं छूटा उससे। मार्गरिटा को उन सब बातों से कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी पर उसने कहीं टोका नहीं और न अपनी ओर से ही कोई बात कही, बस चुपचाप सुनती रही और वह चाहता भी यही था।

'हाँ निश्चय ही,' उसने कहा, 'बड़े अजीब दिन आ गए हैं, मैं तुम्हें विश्वास दिला सकता हूँ। समाज में एक ठहराव आ गया है हर आदमी सिर तक ऊबा हुआ है। साहित्य में एक खोखलापन छाया हुआ है। आलोचना के क्षेत्र में' अगर किसी उन्नतिशील आलोचक का कहना है कि 'मुर्गी की विशेषता है अंडे देना" तो इस महान सत्य की स्थापना करने के लिए भी वह पूरे बीस पेज लगाएगा और फिर भी बात साफ नहीं होगी। और मैं तुम्हें बताऊँ, कि यह लोग पवा के ढेर की तरह मुलायम और ठंडे गोश्त की तरह चिकने होते हैं और इतनी बातें करते हैं कि मुँह से थूक निकलने लगता है और वह भी अत्यन्त साधारण ज्ञान। विज्ञान में हा! हा! हा! अलबत्ता हमारा भी एक प्रसिद्ध फाट है लेकिन वह हमारे इंजीनियरों के कालरों पर टँके फीते के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। कला में भी यही हाल है।

मगर आज तुम संगीत सुनने जाओ तो वहाँ तुम्हें राष्ट्रीय एग्रेमेन्तस्की का संगीत सुनने को मिल जायगा 'आज कल बड़े हल्ले हैं उसके। और मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि गधा भी उससे अच्छा गाता होगा। और स्कोरोफिन भी—हमारी समझ से सम्मानित अरिस्टारकस को तो तुम जानती ही हो—वह भी उसकी तारीफ के पुल बाँधता है। वह कहता है कि यह कुछ पाश्चात्य कला से भिन्न वस्तु है। वह हमारे निकम्मे चित्रकारों की प्रशंसा करते नहीं थकता। एक जमाना था, वह कहता है कि वह योरप और इटली वाले कलाकारों का बड़ा गुन गाता था पर उसने रासिनी को सुना है और सोचा 'वाह! वाह!" और उसने राफेल के चित्र देखे—"वाह! वाह!" और वह वाह वाह हमारे नौजवानों के लिए काफी है वह भी स्कोरोफिन के साथ-साथ वाह वाह चिल्लाते हैं। और सन्तुष्ट है। और उधर जनता की गरीबी भयानक रूप धारण करती जा रही है, करों के बोझ से दबे जा रहे हैं। सुधार के नाम पर बस इतना ही हुआ है—सबने टोपी पहनना शुरू कर दिया है और उनकी पत्नियों ने टोपियाँ उतार दी हैं और भुखमरी! शराब खोरी! सूद खोरी!

लेकिन अब मशुरिना को जम्हाई आने लगी थी और पाखिलन ने अनुभव किया कि अब बात का विषय बदलना चाहिए।

उसने विषय बदलते हुए मशुरिना से पूछा, कि अरे तुमने अभी यह तो बताया ही नहीं कि पिछले दो वर्षों तक तुम कहाँ-कहाँ रहीं, अब यहाँ कितने दिनों से हो और क्या कर रही हो यहाँ, और इटैलियन कैसे बन गई तुम, और '

'तुम्हें यह सब बातें जानने की कोई आवश्यकता नहीं', मशुरिना ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'तुम्हें क्या काम है? तुम्हारे नेत्र से तो यह सब अब बाहर के विषय हैं।'

इस बात से पाखिलन के दिल को ठेस लगी, पर वह इस ठेस के भाव को छिपाने के लिए जबरदस्ती की हँसी-हँसा।

'खैर, तुम्हारी मर्जी', उसने कहा 'मैं जनता हूँ कि वर्तमान पीढ़ी के लोग मुझे पुराना पड़ गया समझते हैं और वास्तव में मैं अपने को 'उन सालों की ... पंक्ति में नहीं गिन सकता ... जो' उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। 'लो स्तोपोल्का हमारे लिए चाय ले आई। लो एक प्याला जरूर पियो और जरा मेरी बात सुनो शायद मेरी यात्रा में तुम्हें कुछ अपने मतलब की बात मिल जाय।

मरियुरिना ने एक प्याला चाय और एक टिकिया चीनी ले ली और उसके साथ चाय की चुस्की लेने लगी।

इस बार पाक्लिन की हँसी सच्ची थी।

'यह अच्छा ही है कि यहाँ इस समय कोई पुलिस वाला नहीं है, नहीं तो इटली की काउन्टेस ... क्या भला सा नाम है?'

'रोकादीसान्तापियूम' मरियुरिना ने अपनी चाय की चुस्की लेते हुए अनुद्विग्न गम्भीरता के साथ कहा।

'रोकादीसान्तापियूम।' पाक्लिन ने दुहराया, 'और वह चानी की टिकिया के साथ चाय की चुस्की लेती है! यह बड़ी बेमेल बात है! एक मिनट में पुलिस सावधान हो जायगी।

'हाँ' मरियुरिना ने कहा 'विदेश में एक वर्दीधारी मेरे पीछे पड़ गया, और सवालों की झड़ी लगा दी उसने आखिर जब मुझसे सहन न हुआ तो मैंने आजिज आकर उससे कहा 'खुदा के वास्ते मेरा पिंड छोड़िए जनाब!

'क्या यह तुमने इटैलियन भाषा में कहा?'

'नहीं, रूसी में।'

'और उसने क्या किया?'

'उसने? वह वहाँ से चलता बना।'

'शाबाश!' पाक्लिन ने ऊँचे स्वर में कहा। 'काउन्टेस जिन्दाबाद! एक प्याला और लो! हाँ, मैं तुमसे यह कहना चाहता था कि तुम

अगर आज तुम संगीत सुनने आओ तो वहाँ तुम्हें राष्ट्रीय एप्रेमेन्तस्की का संगीत सुनने को मिल जायगा आज कल बड़े हल्ले हैं उसके। और मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि गधा भी उससे अच्छा गाता होगा। और स्कोरोफिन भी—हमारी समझ से सम्मानित अरिस्टोक्रस को तो तुम जानती ही हो—वह भी उसकी तारीफ के पुल बाँधता है। वह कहता है कि यह कुछ पाश्चात्य कला से भिन्न वस्तु है। वह हमारे निकम्मे चित्रकारों की प्रशंसा करते नहीं अघाता। एक जमाना था, वह कहता है कि वह योरप और इटली वाले कलाकारों का बड़ा गुन गाता था पर उसने रोसिनी को सुना है और सोचा 'वाह! वाह!" और उसने राफल के चित्र देखे—"वाह! वाह!" और यह वाह वाह हमारे नौजवानों के लिए काफी है, वह भी स्कोरोफिन के साथ-साथ वाह वाह चिल्लाते हैं। और सन्तुष्ट हैं। और उपर जनता की गरीबी भयानक रूप धारण करती जा रही है, करों के बोझ से दबे जा रहे हैं। सुधार के नाम पर बस इतना ही हुआ है—सबने टोपी पहनना शुरू कर दिया है और उनकी पत्नियों ने टोपियाँ उतार दी हैं और भुखमरी! शराब खोरी! सूद खोरी!"

लेकिन अब मधुरिना को जम्हाई आने लगी थी और पाक्लिन ने अनुभव किया कि अब बात का विषय बदलना चाहिए।

उसने विषय बदलते हुए मधुरिना से पूछा, कि अरे तुमने अभी यह तो बताया ही नहीं कि पिछले दो वर्षों तक तुम कहाँ-कहाँ रहीं, अब यहाँ कितने दिनों से हो और क्या कर रही हो यहाँ और इटेलियन कैसे बन गई तुम, आरे '

तुम्हें यह सब बातें जानने की कोई आवश्यकता नहीं', मधुरिना ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'तुम्हें क्या लाभ है? तुम्हारे क्षेत्र से तो यह सब अब बाहर के विषय हैं।

इस बात से पाक्लिन के दिल को ठेस लगी, पर वह इस ठेस के भाव को छिपाने के लिए जबर्दस्ती की हँसी-हँसा।

'ख़ैर, तुम्हारी मर्जी' उसने कहा मैं जानता हूँ कि वर्तमान पीढ़ी के लोग मुझे पुराना पड़ गया समझते हैं और वास्तव में मैं अपने को 'उन लोगों की पंक्ति में नहीं गिन सकता जा उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। 'लो ल्लोपोल्का हमारे लिए चाय ले आई। लो, एक प्याला जरूर पियो और जरा मेरी बात सुनो शायद मेरी बातों में तुम्हें कुछ अपने मतलब की बात मिल जाय।

मर्गुरिता ने एक प्याला चाय और एक टिकिया चीनी ले ली और उसके साथ चाय की चुस्की लेने लगी।

इस बार पाक्लिन की हँसी सच्ची थी।

'यह अच्छा ही है कि यहाँ इस समय कोई पुलिस वाला नहीं है नहीं तो इटली की काउन्टेस क्या भला सा नाम है?'

'रोकादीसान्तोफियूम' मर्गुरिता ने अपनी चाय का घूँट लेते हुए अनछिन्न गम्भीरता के साथ कहा।

'रोकानेसान्तोफियूम।' पाक्लिन ने दुहराया और वह चाय की टिकिया के साथ चाय का चुस्की लेती है। अब बड़ा अमन चैन है। एक मिनट में पुलिस सावधान हो जायगी।

हाँ, मर्गुरिता ने कहा 'पिछले में एक कर्मचारी ने ... गया, और सवालों की झड़ी लगा दी उसने, आखिर वह ... सहन न हुआ तो मैंने आजिज आकर उससे कहा "... पिंड छोड़िए, जनाब।

क्या यह तुमने इटैलियन भाषा में कहा?

'नहीं रूसी में।

और उसने क्या किया?'

'उसने? वह वहाँ से चलता बना।'

शाबाश! पाक्लिन ने ऊँचे स्वर में कहा। ... एक प्याला और लो! हाँ, मैं तुमसे ...

सोलोमिन के बारे में बड़े ठंडे स्वर में बोल रही थीं। लेकिन क्या तुम
जानती हो कि मैं तुम्हें किस बात का विश्वास दिला सकता हूँ। उसकी
तरह के लोग ही—वास्तविक मानव हैं। पहिले तो ये समझ में नहीं
आते, लेकिन ये वास्तविक मानव हैं, इसमें जरा भी सन्देह नहीं, यह
तुम विश्वास मानो, और भविष्य उन्हीं के हाथ में है। न तो ये
महापुरुष या नेता हैं और न 'अमधीर' ही हैं, जिनके बारे में किसी
अजीब मछली वाले अमरीकी ने या अंग्रेज ने—हम गरीबों के निस्तार
के लिए एक किताब लिख डाली है, ये लोग मजबूत, अनगढ़ सुस्त
जनता के आदमी हैं। लेकिन आज ऐसे ही लोगों की जरूरत है।
सोलोमिन को ही देखो, उसकी बुद्धि दिन के प्रकाश की तरह साफ
और मछली की तरह स्वस्थ है क्या आश्चर्य नहीं! और हमारे
यहाँ रूस में यही होता रहा है कि अगर आप भावुक, सचेत और
सजीव व्यक्ति हैं, तो निश्चय ही आप अपाहिज हैं। लेकिन दावे से कह
सकता हूँ कि सोलोमिन का दिल उन्हीं बातों से दुखता है, जिनसे हमारा
दिल दुखता है, और वह उनसे घृणा करता है, जिनसे हम घृणा
करते हैं—लेकिन वह शान्त स्वभाव का आदमी है, और उसका सारा
शरीर उसी रूप में क्रियाशील होता है जैसा वह चाहता है इसी
लिए तो वह शानदार आदमी है। हाँ, निश्चय ही, एक आदर्श का
व्यक्ति है, व्यर्थ की बातों से मतलब नहीं रखता, शिक्षित—और
जनता के बीच का आदमी है, सरल—पर चतुर और तुम्हें क्या
चाहिए ?

और तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो', पाक्लिन ने अपनी
बात जारी रखी। वह जोश में आता जा रहा था और जोश के आवेश
में उसे इस बात का भी ध्यान नहीं रहा कि मशुरिना काफी देर से
उसकी बात नहीं सुन रही है और फिर एक बार दूर शून्य में उसकी
नजर खो गई है। कोई चिन्ता की बात नहीं कि रूस में हर तरह के
लोग हैं—स्लावाफिल, अफसर और जनरल, सादे और सरल और

बर्फ़ सड़क वाले भी आनन्दवादी भी और नकलची हर तरह के लोग, बड़े विचित्र-विचित्र! मैं एक महिला को जानता हूँ जिसका नाम था ह्रावरोम्या त्रिस्तेहाव, जो बिना किसी तुक-तान या तर्क के राजभक्त हो गई थी और हर व्यक्ति का यह विश्वास दिलाती फिरती थी कि उसके मरने पर यदि उसका हृदय चीर कर देखा जायगा तो उसके हृदय पर ह्रावरोम्या त्रिस्तेहाव के हृदय पर हेनरी पंचम का नाम अंकित मिलेगा! इसलिए मेरी प्यारी मशुरिना इस सब की चिन्ता मत करो, लेकिन एक बात मैं तुम्हें बताता हूँ और वह यह कि हमारा सच्चा रास्ता सोलोमिन के साथ है, सीधे सच्चे समझदार सालोमिन के साथ! जरा ध्यान दो यह बात मैं तुमसे जब १८७० के आड़े में कह रहा हूँ तब जर्मनी फ्रांस को कुचलने की तैयारी कर रहा है—जब—

सिलुश्का' पाकिन के पीठ पीछे से स्नानदुनिया की कोमल आवाज सुनाई दी 'मेरे ख्याल से तुम अपनी इन भविष्य सम्बन्धी कल्पनाओं में मग्न थे और उसके प्रभाव का दूर जा रहे हो' और फिर उसने जल्दी से जोड़ा 'बेचारी मशुरिना तुम्हारी बात नहीं सुन रही' अच्छा हो तुम उन्हें एक प्याला चाय और दो।'

पाकिन संभल गया।

'ओह, हाँ! क्या एक प्याला और नहीं लोगी?'

लेकिन मशुरिना ने अपनी उदास और दुखी हुई आँखें धीरे धीरे उसकी ओर फेरी और खोई-खोई सी बोली 'पाकिन मैं तुमसे पूछना चाहती थी कि क्या तुम्हारे पास नेज्दानोव के शुभ पत्र या उसका कोई तस्वीर है।'

'हाँ मेरे पास एक तस्वीर तो है और मेरा ख्याल है, वह काफी अच्छी भी है, इस मेज की दराज में है। अभी देता हूँ ढूँढ कर।'

जब वह दराज में तस्वीर ढूँढने लगा तो स्नानदुनिया मशुरिना के निकट आई और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से उस पर उस एक टक

देखती रही और एक साथी की भाँति उसका हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

'यह रहा। मैंने पा लिया!' पाविलन ने चीख कर कहा और तस्वीर मधुरिना को थमा दी। मधुरिना तस्वीर को अच्छी तरह देखे बिना और धन्यवाद का एक शब्द भी न कहते हुए, एक दम गुलाबी होते हुए तस्वीर को जल्दी से जेब में रख और टोपी पहनती हुई दरवाजे की ओर बढ़ी।

'जा रही हो तुम?' पाविलन ने पूछा। 'कम से कम, हमें यह तो बताती जाती कि तुम रहती कहाँ हो?'

'जहाँ पैर फैलाने को जगह मिल जाय।

'ठीक है, समझ गया, तुम नहीं चाहतीं कि मैं जानूं। खैर! अच्छा कम से कम यह तो बता दो कि क्या तुम अब भी वासिली निकोलायेविच के नेतृत्व में काम करती हो?'

'तुमसे मतलब?'

'या संभवतः किसी और के—सिदोर सिदोरिच के नेतृत्व में?'

मधुरिना ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'या कोई गुम नाम व्यक्ति तुम्हारा नेतृत्व करता है?'

मधुरिना दरवाजे के बाहर निकल चुकी थी।

हाँ कोई गुम नाम ही है!

उसने जोर से दरवाजा बन्द किया।

बहुत देर तक पाविलन बन्द दरवाजे के आगे खड़ा रहा।

'गुम नाम रुस!' अन्ततः उसने कहा।



धामरा प्रदत्त आर्ट प्रेस अहीर पाड़ा, आगरा।